

१) वदनसिंघनदेरियाकामस्तानागिदि  
जडना

गौरंगजेबके मुजतानजानेका हुपम

बादशाहका झूठ दिहनी को

राजवंशरकोरुखसंत.

बादशगह दिहनीमें:

शहर और किले शाहजहानाबाद की आबादी और वहाँ की इमारतों का हाल:

२१ बादशाह का किलेशाह जहांनाबा  
दमेदा तबिल होकर खुशी करना.

३३ बलरत्न की मोहिम:-

बुधवार के अर्द्धदुल अजीज रात  
ता नजरब को घेरना और बादशा  
ह का राजा बिहल दास वंगरा को  
भेजना -

२४ राजरायोंकाबनारससेफिरना  
रबादशाहीनोकरहोना-

पुरादबखश का कश्मीर से आना और दकरन की सूबेदारी पर नैजा जाना

२१ अजयतकासूबादादाशिकोहको  
औरउडीसेकायुनाम्नकोइनाय  
तहोना-

॥ शाह ईरान का कंधार लेलेना.

२० ज्यौरंगजेब और सादुल्लाहरवां-  
की कंधार पर नहीं जाती-

अमली मरदान रवांका काफु रवां  
नौराजा अमर सिंध वगेराका का  
बुल से कंधार पर जे जनर.

२३ वां वरस

चौरंगजेबको १५ हजार मन सब.

रामईशानके कंधार लेनेकी खबर  
 पहुँचता श्रीर औरंगजेबको कं  
 धारजानेकी ताकीद-

ہاں سنگ پود و رہ کا ست پانہی سے

رنگ زیب کو ملتان جانے کا حکم

شاہزادہ کوچ دہلی کو

ج. نور کور محنت  
اشاء و علم بر سر

ہر قلعہ شاہ جہاں آباد کی آبادی

رواں کی غارتگوں کا حال

یہاں کی مہم جوئی

بذلتني فاس والى بكار الإبحر كوا

بلکہ وہ دے واسطے نہیں

نئے رایان کا شمار سب سے پہر

ایک دہائی پہلے، ہمارے اخبارات پر  
ادنیٰ بخش کا لکھا ستھیر سے آنا اور

لہن کے صوبہ داری پر پہنچا

بانی -  
نور محمد علی شاہ

اور اوڑسہ کا شاہ شعلہ

لو عنایت ہوگا

شاہ ایران کا قند ہارے لے

اور ہم زیب اور سعد اللہ  
کی قسیدہ ہر تبرقینا فی

علی مردا خاں شاہ کا کٹر خان

اور راجہ امر سنگھ وغنیہ

ہو کا بل کے بندہ کا رہا  
ہیچنا

*[Signature]*

۲۳ وال بریں  
اور رنگ زرب کا شذرہ ہزار ہا

شاہ ایران کے قہندہ مارے

خبر ہو چکا اور اورنگ زیب تک

فشد باز جانیکی تاکید

\_\_\_\_\_

|    |                                 |                                 |
|----|---------------------------------|---------------------------------|
| 30 | राजा जसवतसिंघ राजा विहजदा       | राजे जीवत सिंह राजे सिंह        |
|    | सगोड़ कंधार की फौज में          | को फौजदारी की फौज में           |
| 31 | बलख से नजर मोहम्मद खां के ए     | खुश से नजर मोहम्मद खां के       |
|    | लची का आना                      | अली का आना                      |
|    | बादशाह का कूच काबुल को          | बादशाह का कूच काबुल को          |
|    | कंधार के किलेदार खांवासा का     | कंधार के किलेदार खांवासा का     |
|    | कंधार शाह ईरान को दे देना       | कंधार शाह ईरान को दे देना       |
| 32 | औरंगजेब और सरदुस्त्रा खां वजी   | औरंगजेब और सरदुस्त्रा खां वजी   |
|    | रक्षा मुशफिज राक्षसों से बड़ी ख | रक्षा मुशफिज राक्षसों से बड़ी ख |
|    | रादी के साथ कंधार पहुंच कर कि   | रादी के साथ कंधार पहुंच कर कि   |
|    | ले को घेरना                     | ले को घेरना                     |
| 33 | ईरान के दबील कर आना             | ईरान के दबील कर आना             |
|    | बादशाह का कूच पहुंचना           | बादशाह का कूच पहुंचना           |
| 34 | नजर मोहम्मद खां के कबीलों को    | नजर मोहम्मद खां के कबीलों को    |
|    | बलख में जैजना और उसको 2 व       | बलख में जैजना और उसको 2 व       |
|    | ठों खुसरो सुलतान और बहरा        | ठों खुसरो सुलतान और बहरा        |
|    | मसुलतान का हिन्दुस्तान में र    | मसुलतान का हिन्दुस्तान में र    |
|    | हजाना                           | हजाना                           |
| 35 | कंधार की मोहिम - औरंगजेब        | कंधार की मोहिम - औरंगजेब        |
|    | दुस्त्रा खां का दमला फिले कंधार | दुस्त्रा खां का दमला फिले कंधार |
|    | पर और फिले फतह होने से जै       | पर और फिले फतह होने से जै       |
|    | ट आना                           | ट आना                           |
| 36 | राह ईरान की फौज से लड़ाई        | राह ईरान की फौज से लड़ाई        |
|    | रफतह                            | रफतह                            |
| 37 | खुशार का हाल                    | खुशार का हाल                    |
|    | पहादुर खां के बेटे की परवरिश    | पहादुर खां के बेटे की परवरिश    |
|    | बादशाह का नजर काबुल से          | बादशाह का नजर काबुल से          |
|    | ईरानियों पर फतह पाग की खुशी     | ईरानियों पर फतह पाग की खुशी     |
|    | राशरीर सुन्ना प्रिय डल दु       | राशरीर सुन्ना प्रिय डल दु       |
|    | कंधार की मोहिम का हाल           | कंधार की मोहिम का हाल           |
| 38 | कंधार का हाल                    | कंधार का हाल                    |
|    | नजर मोहम्मद का हाल              | नजर मोहम्मद का हाल              |
|    | नादरगह विश्वास में              | नादरगह विश्वास में              |
|    |                                 | राजे जीवत सिंह राजे सिंह        |
|    |                                 | को फौजदारी की फौज में           |
|    |                                 | खुश से नजर मोहम्मद खां के       |
|    |                                 | अली का आना                      |
|    |                                 | बादशाह का कूच काबुल को          |
|    |                                 | कंधार के किलेदार खांवासा का     |
|    |                                 | कंधार शाह ईरान को दे देना       |
|    |                                 | औरंगजेब और सरदुस्त्रा खां वजी   |
|    |                                 | रक्षा मुशफिज राक्षसों से बड़ी ख |
|    |                                 | रादी के साथ कंधार पहुंच कर कि   |
|    |                                 | ले को घेरना                     |
|    |                                 | ईरान के दबील कर आना             |
|    |                                 | बादशाह का कूच पहुंचना           |
|    |                                 | नजर मोहम्मद खां के कबीलों को    |
|    |                                 | बलख में जैजना और उसको 2 व       |
|    |                                 | ठों खुसरो सुलतान और बहरा        |
|    |                                 | मसुलतान का हिन्दुस्तान में र    |
|    |                                 | हजाना                           |
|    |                                 | कंधार की मोहिम - औरंगजेब        |
|    |                                 | दुस्त्रा खां का दमला फिले कंधार |
|    |                                 | पर और फिले फतह होने से जै       |
|    |                                 | ट आना                           |
|    |                                 | राह ईरान की फौज से लड़ाई        |
|    |                                 | रफतह                            |
|    |                                 | खुशार का हाल                    |
|    |                                 | पहादुर खां के बेटे की परवरिश    |
|    |                                 | बादशाह का नजर काबुल से          |
|    |                                 | ईरानियों पर फतह पाग की खुशी     |
|    |                                 | राशरीर सुन्ना प्रिय डल दु       |
|    |                                 | कंधार की मोहिम का हाल           |
|    |                                 | कंधार का हाल                    |
|    |                                 | नजर मोहम्मद का हाल              |
|    |                                 | नादरगह विश्वास में              |

|     |   |     |   |
|-----|---|-----|---|
| ۶۰  | رستم کے وکیل کا آنا                     | ۶۱  | رستم کے وکیل کا آنا                     |
| ۶۱  | نجر مہا محمد درواں کا مرننا             | ۶۲  | نجر مہا محمد درواں کا مرننا             |
| ۶۲  | سولتان رستم کے خط کا جواب               | ۶۳  | سولتان رستم کے خط کا جواب               |
| ۶۳  | راجہ بیہا اس کا مرننا اور               | ۶۴  | راجہ بیہا اس کا مرننا اور               |
| ۶۴  | راجہ و غیرہ اس کے بیٹوں                 | ۶۵  | راجہ و غیرہ اس کے بیٹوں                 |
| ۶۵  | کو مناصب ملنا                           | ۶۶  | کو مناصب ملنا                           |
| ۶۶  | سعد الدخان کی فوج کی حاضری              | ۶۷  | سعد الدخان کی فوج کی حاضری              |
| ۶۷  | ۲۶ واں برس                              | ۶۸  | ۲۶ واں برس                              |
| ۶۸  | سعد خان ظفر جنگ کا مرننا                | ۶۹  | سعد خان ظفر جنگ کا مرننا                |
| ۶۹  | اور مہابت خان کا صوبہ دار کا بل         | ۷۰  | اور مہابت خان کا صوبہ دار کا بل         |
| ۷۰  | لاہور میں اگر سے ایک کرد                | ۷۱  | لاہور میں اگر سے ایک کرد                |
| ۷۱  | روپیہ آنا                               | ۷۲  | روپیہ آنا                               |
| ۷۲  | بادشاہ کو ۶۱ واں برس                    | ۷۳  | بادشاہ کو ۶۱ واں برس                    |
| ۷۳  | موتیوں کا مینا کا تخت                   | ۷۴  | موتیوں کا مینا کا تخت                   |
| ۷۴  | اورنگ زیب کو کابل جانے کا حکم           | ۷۵  | اورنگ زیب کو کابل جانے کا حکم           |
| ۷۵  | بادشاہ کا کوچ لاہور سے کابل کو          | ۷۶  | بادشاہ کا کوچ لاہور سے کابل کو          |
| ۷۶  | سعد الدخان وزیر راجہ جی سنگھ راجہ       | ۷۷  | سعد الدخان وزیر راجہ جی سنگھ راجہ       |
| ۷۷  | راجہ روپ راو سردستار وغیرہ کو خد        | ۷۸  | راجہ روپ راو سردستار وغیرہ کو خد        |
| ۷۸  | بھیجا                                   | ۷۹  | بھیجا                                   |
| ۷۹  | اورنگ زیب کا منصب میں ہزاری ہونا        | ۸۰  | اورنگ زیب کا منصب میں ہزاری ہونا        |
| ۸۰  | بادشاہ کابل میں                         | ۸۱  | بادشاہ کابل میں                         |
| ۸۱  | شاہزادہ شجاع کا بنگالہ سے آنا اور       | ۸۲  | شاہزادہ شجاع کا بنگالہ سے آنا اور       |
| ۸۲  | ادسکا میں ہزاری ہونا                    | ۸۳  | ادسکا میں ہزاری ہونا                    |
| ۸۳  | ۲۶ ویں جلوس سالگرہ کی خوشی              | ۸۴  | ۲۶ ویں جلوس سالگرہ کی خوشی              |
| ۸۴  | اورنگ زیب کا قلعہ قند ہار کو گھیرنا     | ۸۵  | اورنگ زیب کا قلعہ قند ہار کو گھیرنا     |
| ۸۵  | اور راجہ کی کوشش قلعہ کی میں            | ۸۶  | اور راجہ کی کوشش قلعہ کی میں            |
| ۸۶  | قند ہار کا فتح ہونا اور اورنگ زیب       | ۸۷  | قند ہار کا فتح ہونا اور اورنگ زیب       |
| ۸۷  | کا واپس آنا                             | ۸۸  | کا واپس آنا                             |
| ۸۸  | دربار کا حال                            | ۸۹  | دربار کا حال                            |
| ۸۹  | دارا شکوہ کا قند ہار فتح کرنے           | ۹۰  | دارا شکوہ کا قند ہار فتح کرنے           |
| ۹۰  | کو تیار ہونا                            | ۹۱  | کو تیار ہونا                            |
| ۹۱  | دارا شکوہ اور سلیمان شکوہ کے            | ۹۲  | دارا شکوہ اور سلیمان شکوہ کے            |
| ۹۲  | منصب میں اضافہ                          | ۹۳  | منصب میں اضافہ                          |
| ۹۳  | اورنگ زیب کو ملتان سے                   | ۹۴  | اورنگ زیب کو ملتان سے                   |
| ۹۴  | لوہن کے چاروں صوبوں کی صوبہ دار         | ۹۵  | لوہن کے چاروں صوبوں کی صوبہ دار         |
| ۹۵  | چاروں صوبوں کی سب داری پر چلنا          | ۹۶  | چاروں صوبوں کی سب داری پر چلنا          |
| ۹۶  | ۱۔ رستم کے وکیل کا آنا                  | ۹۷  | ۱۔ رستم کے وکیل کا آنا                  |
| ۹۷  | ۲۔ نجر مہا محمد درواں کا مرننا          | ۹۸  | ۲۔ نجر مہا محمد درواں کا مرننا          |
| ۹۸  | ۳۔ سولتان رستم کے خط کا جواب            | ۹۹  | ۳۔ سولتان رستم کے خط کا جواب            |
| ۹۹  | ۴۔ راجہ بیہا اس کا مرننا اور            | ۱۰۰ | ۴۔ راجہ بیہا اس کا مرننا اور            |
| ۱۰۰ | ۵۔ راجہ و غیرہ اس کے بیٹوں              |     | ۵۔ راجہ و غیرہ اس کے بیٹوں              |
|     | ۶۔ کو مناصب ملنا                        |     | ۶۔ کو مناصب ملنا                        |
|     | ۷۔ سعد الدخان کی فوج کی حاضری           |     | ۷۔ سعد الدخان کی فوج کی حاضری           |
|     | ۸۔ ۲۶ واں برس                           |     | ۸۔ ۲۶ واں برس                           |
|     | ۹۔ سعد خان ظفر جنگ کا مرننا             |     | ۹۔ سعد خان ظفر جنگ کا مرننا             |
|     | ۱۰۔ اور مہابت خان کا صوبہ دار کا بل     |     | ۱۰۔ اور مہابت خان کا صوبہ دار کا بل     |
|     | ۱۱۔ لاہور میں اگر سے ایک کرد            |     | ۱۱۔ لاہور میں اگر سے ایک کرد            |
|     | ۱۲۔ روپیہ آنا                           |     | ۱۲۔ روپیہ آنا                           |
|     | ۱۳۔ بادشاہ کو ۶۱ واں برس                |     | ۱۳۔ بادشاہ کو ۶۱ واں برس                |
|     | ۱۴۔ موتیوں کا مینا کا تخت               |     | ۱۴۔ موتیوں کا مینا کا تخت               |
|     | ۱۵۔ اورنگ زیب کو کابل جانے کا حکم       |     | ۱۵۔ اورنگ زیب کو کابل جانے کا حکم       |
|     | ۱۶۔ بادشاہ کا کوچ لاہور سے کابل کو      |     | ۱۶۔ بادشاہ کا کوچ لاہور سے کابل کو      |
|     | ۱۷۔ سعد الدخان وزیر راجہ جی سنگھ راجہ   |     | ۱۷۔ سعد الدخان وزیر راجہ جی سنگھ راجہ   |
|     | ۱۸۔ راجہ روپ راو سردستار وغیرہ کو خد    |     | ۱۸۔ راجہ روپ راو سردستار وغیرہ کو خد    |
|     | ۱۹۔ بھیجا                               |     | ۱۹۔ بھیجا                               |
|     | ۲۰۔ اورنگ زیب کا منصب میں ہزاری ہونا    |     | ۲۰۔ اورنگ زیب کا منصب میں ہزاری ہونا    |
|     | ۲۱۔ بادشاہ کابل میں                     |     | ۲۱۔ بادشاہ کابل میں                     |
|     | ۲۲۔ شاہزادہ شجاع کا بنگالہ سے آنا اور   |     | ۲۲۔ شاہزادہ شجاع کا بنگالہ سے آنا اور   |
|     | ۲۳۔ ادسکا میں ہزاری ہونا                |     | ۲۳۔ ادسکا میں ہزاری ہونا                |
|     | ۲۴۔ ۲۶ ویں جلوس سالگرہ کی خوشی          |     | ۲۴۔ ۲۶ ویں جلوس سالگرہ کی خوشی          |
|     | ۲۵۔ اورنگ زیب کا قلعہ قند ہار کو گھیرنا |     | ۲۵۔ اورنگ زیب کا قلعہ قند ہار کو گھیرنا |
|     | ۲۶۔ اور راجہ کی کوشش قلعہ کی میں        |     | ۲۶۔ اور راجہ کی کوشش قلعہ کی میں        |
|     | ۲۷۔ قند ہار کا فتح ہونا اور اورنگ زیب   |     | ۲۷۔ قند ہار کا فتح ہونا اور اورنگ زیب   |
|     | ۲۸۔ کا واپس آنا                         |     | ۲۸۔ کا واپس آنا                         |
|     | ۲۹۔ دربار کا حال                        |     | ۲۹۔ دربار کا حال                        |
|     | ۳۰۔ دارا شکوہ کا قند ہار فتح کرنے       |     | ۳۰۔ دارا شکوہ کا قند ہار فتح کرنے       |
|     | ۳۱۔ کو تیار ہونا                        |     | ۳۱۔ کو تیار ہونا                        |
|     | ۳۲۔ دارا شکوہ اور سلیمان شکوہ کے        |     | ۳۲۔ دارا شکوہ اور سلیمان شکوہ کے        |
|     | ۳۳۔ منصب میں اضافہ                      |     | ۳۳۔ منصب میں اضافہ                      |
|     | ۳۴۔ اورنگ زیب کو ملتان سے               |     | ۳۴۔ اورنگ زیب کو ملتان سے               |
|     | ۳۵۔ لوہن کے چاروں صوبوں کی صوبہ دار     |     | ۳۵۔ لوہن کے چاروں صوبوں کی صوبہ دار     |
|     | ۳۶۔ چاروں صوبوں کی سب داری پر چلنا      |     | ۳۶۔ چاروں صوبوں کی سب داری پر چلنا      |

मुलतानका सूबा दाराशिकोहको-  
 काबुलका मुलेमानशिकोहको और  
 गुजरातका शायस्तेरवांको इनायत होना  
 शाहजादे शुजाउद्दौलाको बंगाले जाने की सू-  
 खसत और १ किरोड दामका इनाम  
 सरदुस्त्राली अलीमरदानरवां और राजा  
 जयसिंघका कंधारसे हजिर आना-  
 बादशाहका कूचकाबुलसे  
 और गजिबका कंधारसे आना और द-  
 खनकोरवाने होना और उसको १  
 किरोड दामका इनाम-  
 बादशाहलाहोरमें-  
 सरहिन्दमें रायरुघनाथको तन और  
 रसालसे कादफतरी इनायत होना-  
 २७ वां बरस-  
 बादशाह शाहजहानाबादमें  
 मुलेमानशिकोहका इजाफा  
 मुसतररांको इनाम और इजाफा  
 शुक्रनिसाबिगम का इस्तकाल  
 शाहजादे दाराशिकोहका कंधारजा  
 ने के वास्ते रिपल अत और इनाम-  
 कस्तमरवां राजा जयसिंघ राजारा-  
 यसिंघ रावशत्रुसाज राजा पहाड  
 सिंघरूपसिंघ रामसिंघ राजा अ-  
 मरसिंघ नरवरी बगैराका दाराशि-  
 कोहके साथ तईनात होना-  
 २८ राजा राजसिंघकी अज्ञाती और उस  
 को पहजारी मनसब-  
 कंधारकी मोहिम-  
 २९ दाराशिकोहका लाहोरसे मुलता-  
 न और मुलतानसे कंधारको रवा-  
 ने होना और रस्ते की तकलीफ-  
 ३० कंधारको घेरना राजा जयसिंघ और  
 रबदनसिंघके मोरचे-  
 ३१ किलेबस्तका फतह होना-  
 ३२ शाहजादे की ताकीद अमीरोंको

پڑا ہوتا تھا  
ملتان کا صوبہ دار اشکوہ کو کابل کا  
سلطان شکوہ کو اور گجرات کا شایستہ  
خاں کو عنایت ہونا  
شاہ شجاع کو ننگال جانشین کی رخصت  
اور ایک کروڑ دام کا انعام  
سعد الدین خاں علی مرداں خاں اور  
راجہ جیسنگ کا قند ہار سے حاضر آنا  
بادشاہ کا کوچ کابل سے  
اور ننگ زب کا قند ہار سے آنا  
دکھن کو روانہ ہونا اور اسکوا ایک  
کروڑ دام کا انعام  
بادشاہ لاہور میں  
سرحد میں رلے کے رہنا اور کون  
اور خالصہ کا دختر عنایت ہونا  
۲۷ سال بریں  
بادشاہ شاہجہاں آباد میں  
سلطان شکوہ کا افتادہ  
نصرت خاں کو انعام اور افتادہ  
شکر النساء بیگم کا انتقال  
شاہزادہ داراشکوہ کو قند ہار پر جانے  
کے واسطے خلعت اور انعام سے ننگ  
رستم خان - راجہ جیسنگ - راجہ  
راو سہو سال راجہ تیار سنگ  
روپ سنگ رام سنگ راجہ امر سنگ  
نروڑی وغیرہ کا داراشکوہ کے ہمراہ  
لعینات ہونا  
رانا راج سنگ کی عرضی اور اسکوا  
پانچ ہزاری منصب  
داراشکوہ کا لاہور سے ملتان آؤ  
ملتان سے قند ہار کو روانہ ہونا  
اور راستہ کی حلیف  
قند ہار کو گہنڑا راجہ جیسنگ اور  
بدن سنگ کے مورچے  
قند بست کا فتح ہونا  
شاہزادہ کی تاکید امیروں کو

کیلا فٹتھ کرنے کے واسطے۔

48 موہم دجا فرکی کو شیشی اور کی

25 لے والے کاسرے بت کوا بیلا کرنا۔

26 2 فکریوں اور 1 جوتیوی کی آنجن

27 کارستانی۔

28 کیلے پر کولی چرنا اور راجا ج

29 سیٹھ وگیا کا ہڈیا اور کیلے والوں

30 کا آگاہ کرنا اور ہڈیا والوں

31 کھانا کا فٹتھ نہ ہونا اور دھارا

32 شیکو ہکا کا پست آنا۔

33 دھارا کا حال۔

34 اورنگ زیب کے بیٹے محمد اعظم

35 کا پیدا ہونا۔

36 بھارتیوں کے بھائی غریبوں

37 بھارتیوں کو اسکا حال کا خطاب

38 بادشاہ کو بیچ دی سے اگر کو

39 بادشاہ اور بیس

40 اگر کو میں جامع مسجد کا تیار ہونا

41 عمارت طیار ہونا

42 راجہ جگت سنگھ کے بھائی غریبوں

43 کا بنا دھخت جلا جانا

44 بادشاہ دہلی میں

45 دارا شکوہ اور سکیمیاں شکوہ کا

46 سلطان سے آنا

47 بادشاہ کا موشوں کے پیدا کار

48 تخت پر بیٹھ کر خوشی کرنا

49 راجہ جیت سنگھ کو مہاراجہ

50 کا خطاب ملنا

51 سلطان شکوہ کے منصب کا ہونا

52 اور دارا شکوہ کو یہ ایک کردار

53 نام کا ہونا

54 شہزادہ اور شہزادہ کا مہاراجہ

55 بیٹے بیٹے خوشی کے مہاراجہ

56 گواہت میں رہنے والے

57 سلطان کے بیٹے

58 سلطان کے بیٹے

59 سلطان کے بیٹے

60 سلطان کے بیٹے

61 سلطان کے بیٹے

62 سلطان کے بیٹے

63 سلطان کے بیٹے

64 سلطان کے بیٹے

65 سلطان کے بیٹے

66 سلطان کے بیٹے

67 سلطان کے بیٹے

68 سلطان کے بیٹے

69 سلطان کے بیٹے

70 سلطان کے بیٹے

71 سلطان کے بیٹے

72 سلطان کے بیٹے

73 سلطان کے بیٹے

74 سلطان کے بیٹے

75 سلطان کے بیٹے

76 سلطان کے بیٹے

77 سلطان کے بیٹے

78 سلطان کے بیٹے

79 سلطان کے بیٹے

80 سلطان کے بیٹے

81 سلطان کے بیٹے

82 سلطان کے بیٹے

83 سلطان کے بیٹے

84 سلطان کے بیٹے

85 سلطان کے بیٹے

86 سلطان کے بیٹے

87 سلطان کے بیٹے

88 سلطان کے بیٹے

89 سلطان کے بیٹے

90 سلطان کے بیٹے

91 سلطان کے بیٹے

92 سلطان کے بیٹے

93 سلطان کے بیٹے

94 سلطان کے بیٹے

95 سلطان کے بیٹے

96 سلطان کے بیٹے

97 سلطان کے بیٹے

98 سلطان کے بیٹے

99 سلطان کے بیٹے

100 سلطان کے بیٹے

नसरुपमेडितियाकाबादशाहपरत  
नवारलेकरदीडनाऔरचांदीकेक  
हरेकेबाहरहीमारजाना  
दादशाहकादाराशिकोहकेमकान  
परजाना-

मोहम्मदजाफ़र को मीरजातिश  
का विवताब-

किरोड दामकाटनाम द्वारा शिकोहको।

सुखतानन्त्रम् केवकीजकाश्रान्

सुखतानकासतः आरुद्रफान्तरकरः  
उत्तमानवेसकीनिर्देशः १५०००/मिथुन

काराचबोगकेवकीनकरकेअजत

नरसिंह के पास नैजना-

बादशाहका सुजेमान शिकोहके

मकानपरजाना-  
शरद्वर्षवदनास्मीदकाभयनाः.

आखरूप ये कामालमहे कोनेजन

ब्रह्मशास्त्रं ब्रह्मज्ञानं चैव

नेए गिराने की प्रोजेक्शन.  
राज्य की प्रमुख संस्थाएँ

बादशाह अजमेर में

सादृष्ट्या रवां काची तोड काकिन

गिराकर वापस रवाने होना.

रानाके नडे बेटे का हाजिर होना.

हाजीअहमदसरिदकास्तुसेम

श्री नगरकेनमीदरपरफोनजे

२६ वां बरस.

बादशह का फूचन जमेर से -

नामोऽखकानामसोऽनामि

घटखानाः

मादुध्वाखाकाचिताडुसवापस  
श्रानाः

पनाकेबरेकोरुखसत-

श्रीगणेशाय नमः

सैनिकाला जिराफाना.  
बादशाहक वल्लभ में-

माद शङ्ख का आगरे हो कर दि

~~—कन्दनहाना—~~

۹۸۔ عسکر و خیمہ میں کما بادشاہ پر  
 شہنشاہ کیج کر دور نما اور جاندی کے  
 کپڑے کے اسی مارا جانا  
 بادشاہ کا دارا کے مکان

محمد جعفر کو میرا کش کا خطاب

۱۲ گز و نیم دایم کا الغام دار اشکوہ کو

سلیٹین روم کے ویل کا آنا سلیٹ  
محافظ اور تحفظ نہ کر کے

پشاور میں ملے۔

ہاؤس آف سلیمان سکول کے

شیخ عبد الحمید کاظمی

۱۰۔ اوشاد کا اجیر جلا اور قلعہ جتوڑ کے

پادشاه امیر من  
را ایا معافی ساخت

سعد الدخان قلمو چتور گرا کر  
والیو روئے سے ناز

رائے کے برصغیر کے کا حاضر ہونا

واپس آئے۔

۲۹ دال برش  
۱۰۰ شاہ کا کوٹہ اجیر سے

کاملاً خیرات اور اوستی کا نام

سودھائی کے لئے رہا جاتا  
تھوڑا عرصہ کی جسٹس سے واپسی  
ان کے لئے کہ شخصیت

بدرنگ زیب کتب خطی احمدیہ سلسلہ

بادشاہ فتح پور میں  
بادشاہ کا آکرہ ہو کر وہی کو

روزنامه



भीरुमस्ताका औरंगजेबसे मिला  
औरंगजेबका बाद  
शाहू उसफेनासे पस्तुारी मनस  
बमगेयाना.

शास्त्रजन्मकेबेटकासंगालेसे  
श्राना.

६५ बीं साल ग्रहमें दा  
शिकोह का मन सब ४० हजार  
जाना-

२ मानशिक्षाएक पदगारी हो  
ना और गृहे की सूनैदारी मिलना  
३ गृहशुजा न के बेटे जे नुल ग्रावदी  
न हो ७ दगारी मन सब मिलना

६६ नीसाजयदेकेदरबारमें दस्तर  
रूपयशुगान्त्रको श्रीर९ जारव भौरंग  
जेबकंधेदोंसोइनायतहौना-

१ काशगरकेवकीलकान्त्राना.

सुलतानमनुल आबदीन को राख  
सत  
नबारके जमीदार भी पतकी जमी  
दरबार करण को हुना मत होना.

३° बांजल्लूसीसन.

कामरना और  
दरिशा:

॥ रायरूपनाथको रायरथोंका शिव  
नैऋदीवानकृष्णाम्.

नानकारयकाहितानपाक  
हिन्दुगुनशीयोपरप्रकसरदोन.  
नजीरकेगए प्रोउस

१. दरबारकाह्वज.

पेशक शेंमाना.

रोगमीश्वरबलदुरंधरका  
प्रेमाभीरुसकोरपदग

۱۱۲ میر جلال کا اور نرب سے سازش  
کرنا اور اورنگ زیب کا بادشاہ سے  
اوس کے واسطے پانچ ہزاری منصب  
منگوانا  
” شاہ تجار کے بیٹے کا بنگال سے

بادشاہ کی ۲۵ ویں سالگرہ میں  
دارالحکومت کا پچھل ہزاری منصب  
میں

سیلیاں شکوہ کا آئینہ نزاری  
ہونا اور شہید کی معجزہ داری ملنا  
شاہ شجاع کے بیٹے زین العابدین  
سات نزاری مصعب ملنا

۶۶ میں سالگرہ کے دربار  
میں ہاکہ رو بہ شجاع کو  
اور ایک لاکھ اورنگ زرب سب بیوں  
کو حمایت ہونا  
۶۷ غور کے بکس ہوا آنا

سلطان زمین و آسمان کبریا  
مهر و رحمت ز جنت و بهشت  
ز جنت و بهشت ز جنت و بهشت  
مهر و رحمت ز جنت و بهشت

سعد اللہ خان وزیر کمر مرزا  
اور اس کے بیٹوں کی بیوی  
بے رازمان و خطا راست  
رکھتے تھے کہ ان کو دیکھ کر  
عین دین کا راستہ کے خطا  
کے لئے تھے جو کہ نہایت  
خوش تھا

[illegible]





۱۳ موہممدسولتان کے واسطے جہاز کی  
ممنوعیہ ہوئی

۱۴ کتوتولمولا کے کتوتوں کی مافی  
کا فرماں آنا مگر اور رنج  
کا اس کو بڑا دیکھنا اور کتوت  
تولمولا کے تانگہ کرنا

۱۵ کتوتولمولا کا اپنی ماں کو نہ  
جنا اور اس کا اپنے بچے کے کتوت  
رماں کرنا کہ موہممدسولتان  
کی شادی اپنی بہن سے ہر راجا  
در بنیوں سے اور بادشاہ کی ج  
سے لڑائی ہو جانا

۱۶ میر جملہ کا کرنا دیکھ سے اور رنج  
جہ کے پاس آنا

۱۷ موہممدسولتان کا نیکار کتوت  
تولمولا کی بہن سے ۱۰ لاکھ روپے  
یا اور رام گد کا شلہ کا ڈاٹھ جہ  
آنا

۱۸ اور رنج کا میر جملہ کے مکان  
پر آکر اس کے دربار میں

۱۹ اور رنج کا کچھ گولہ کتوت سے اور  
رنگہ بادشاہ

۲۰ میر جملہ کے واسطے فرماں اور  
وہ رنج کا ریتا اور اس کا  
بادشاہ کی ریتا دیکھ سے اور رنج

۲۱ میر جملہ کے ریتا اور رنج کا ریتا  
رنگہ کے ریتا دیکھ سے اور رنج

۲۲ کتوتولمولا کے ۱۵..... کی مافی  
باندھا گد کے زمیندار آنا پتھر  
کا ہزار ہونا

۲۳ بادشاہ کا ریتا اور کتوت ہی بند  
ریتا کے ساپ سے کتوت کی سزا  
اور رنج کا ریتا دیکھ سے اور رنج

۲۴ کتوتولمولا کے واسطے فرماں اور  
ریتا کے ساپ سے کتوت کی سزا  
اور رنج کا ریتا دیکھ سے اور رنج

۲۵ میر جملہ کا ریتا دیکھ سے اور رنج  
ریتا کے ساپ سے کتوت کی سزا  
اور رنج کا ریتا دیکھ سے اور رنج

۲۶ کتوتولمولا کے واسطے فرماں اور  
ریتا کے ساپ سے کتوت کی سزا  
اور رنج کا ریتا دیکھ سے اور رنج

۲۷ کتوتولمولا کے واسطے فرماں اور  
ریتا کے ساپ سے کتوت کی سزا  
اور رنج کا ریتا دیکھ سے اور رنج

۱۳ محمد سلطان کے واسطے سات  
میر جملہ کے واسطے سات

۱۴ قطب الملک کے قتل و قتل و قتل  
معافی کا فرماں آنا اور رنج کا ریتا

۱۵ کتوتولمولا کے واسطے فرماں اور  
ریتا کے ساپ سے کتوت کی سزا  
اور رنج کا ریتا دیکھ سے اور رنج

۱۶ کتوتولمولا کے واسطے فرماں اور  
ریتا کے ساپ سے کتوت کی سزا  
اور رنج کا ریتا دیکھ سے اور رنج

۱۷ کتوتولمولا کے واسطے فرماں اور  
ریتا کے ساپ سے کتوت کی سزا  
اور رنج کا ریتا دیکھ سے اور رنج

۱۸ کتوتولمولا کے واسطے فرماں اور  
ریتا کے ساپ سے کتوت کی سزا  
اور رنج کا ریتا دیکھ سے اور رنج

۱۹ کتوتولمولا کے واسطے فرماں اور  
ریتا کے ساپ سے کتوت کی سزا  
اور رنج کا ریتا دیکھ سے اور رنج

۲۰ کتوتولمولا کے واسطے فرماں اور  
ریتا کے ساپ سے کتوت کی سزا  
اور رنج کا ریتا دیکھ سے اور رنج

۲۱ کتوتولمولا کے واسطے فرماں اور  
ریتا کے ساپ سے کتوت کی سزا  
اور رنج کا ریتا دیکھ سے اور رنج

۲۲ کتوتولمولا کے واسطے فرماں اور  
ریتا کے ساپ سے کتوت کی سزا  
اور رنج کا ریتا دیکھ سے اور رنج

۲۳ کتوتولمولا کے واسطے فرماں اور  
ریتا کے ساپ سے کتوت کی سزا  
اور رنج کا ریتا دیکھ سے اور رنج

۲۴ کتوتولمولا کے واسطے فرماں اور  
ریتا کے ساپ سے کتوت کی سزا  
اور رنج کا ریتا دیکھ سے اور رنج

۲۵ کتوتولمولا کے واسطے فرماں اور  
ریتا کے ساپ سے کتوت کی سزا  
اور رنج کا ریتا دیکھ سے اور رنج

۲۶ کتوتولمولا کے واسطے فرماں اور  
ریتا کے ساپ سے کتوت کی سزا  
اور رنج کا ریتا دیکھ سے اور رنج

۲۷ کتوتولمولا کے واسطے فرماں اور  
ریتا کے ساپ سے کتوت کی سزا  
اور رنج کا ریتا دیکھ سے اور رنج

۲۸ کتوتولمولا کے واسطے فرماں اور  
ریتا کے ساپ سے کتوت کی سزا  
اور رنج کا ریتا دیکھ سے اور رنج

۲۹ کتوتولمولا کے واسطے فرماں اور  
ریتا کے ساپ سے کتوت کی سزا  
اور رنج کا ریتا دیکھ سے اور رنج

۳۰ کتوتولمولا کے واسطے فرماں اور  
ریتا کے ساپ سے کتوت کی سزا  
اور رنج کا ریتا دیکھ سے اور رنج

۳۱ کتوتولمولا کے واسطے فرماں اور  
ریتا کے ساپ سے کتوت کی سزا  
اور رنج کا ریتا دیکھ سے اور رنج

۳۲ کتوتولمولا کے واسطے فرماں اور  
ریتا کے ساپ سے کتوت کی سزا  
اور رنج کا ریتا دیکھ سے اور رنج

बीजापुरकी मोहिम-  
 आदिलशाह के गुलामों का  
 लीनाम १ शरवस को तरबत पर बैठा  
 ना और औरंगजेब को उस मुल्क के  
 फतह करने का हुक्म मिला जमखान  
 नजीर बगेरा भीरो का शाहजादे  
 की मदद पर जाना-  
 रायदाया का कायम खुका म बजी  
 रहोना-  
 महाबत खां राजा रायसिंघ राजा सु  
 जानसिंघ बुंदेला बगेरा की तरफ नाती  
 दिल्ली में मरी और बादशाह का  
 सेरो की तरफ जाना-  
 बादशाह दिल्ली में और ६६ वीं सा  
 लग्रह-  
 दाराशिकोह का इजाफा-  
 सिपेहर शिकोह और मोहम्मद अ  
 मीन खां का इजाफा-  
 बहादुर खां को काबुल की सूबेदारी  
 फिर मरी का फैलना और बादशा  
 ह का मुरवलिसपुर को जाना-  
 मुरवलिसपुर में मफात बनाने के  
 लिये दाराशिकोह और सिपेह शि  
 कोह को रुपये देना-  
 शाहजहाना बाद का कोट-  
 ३१ बांजलूसीसन-  
 रजपूत के वकील का आना-  
 मुबुलसुल्फ की पेशकशें-  
 बादशाह दिल्ली में-  
 अलीमरदान खां का इन्तकाल-  
 बीजापुरकी मोहिम-  
 औरंगजेब का किले निदुर को फतह  
 करना-  
 रियापुरवालों पर महाबत खां और  
 १५ शत्रुसाल बगेरा की फतह-  
 देवा और पनगी में सत्ते के मुकाबले  
 अनुसरत और रावकर राव बगता का  
 तईनात होना-

बीजापुरकी मोहिम  
 फादल खां मरना- ओके फामस  
 का एली नाम एक شخص को खोज  
 भूमाना और गंगेब को ओस  
 मलक के फतेह करने का हुक्म मिला  
 और औरंगजेब को बादशाहजादे  
 और गंगेब की मदद पर जाना  
 राई राया का फामकाम और भूमाना  
 १५१ मهابत खां राजा राई राई  
 राजा सिकान सिकान  
 और औरंगजेब की फामकाम  
 १५२ दिल्ली में मरना और बादशाह का  
 सेरो की तरफ जाना  
 बादशाह दिल्ली में और ६६ वीं सा  
 १५३ दाराशिकोह का इजाफा  
 सिपेह शिकोह और मोहम्मद अ  
 १५४ मीन खां का इजाफा  
 बहादुर खां को काबुल की सूबेदारी  
 फिर मरी का फैलना और बादशा  
 १५५ ह का मुरवलिसपुर को जाना  
 मुरवलिसपुर में मफात बनाने के  
 लिये दाराशिकोह और सिपेह शि  
 १५६ कोह को रुपये देना  
 शाहजहाना बाद का कोट-  
 ३१ बांजलूसीसन-  
 रजपूत के वकील का आना-  
 मुबुलसुल्फ की पेशकशें-  
 बादशाह दिल्ली में-  
 अलीमरदान खां का इन्तकाल-  
 बीजापुरकी मोहिम-  
 औरंगजेब का किले निदुर को फतह  
 करना-  
 रियापुरवालों पर महाबत खां और  
 १५७ १५ शत्रुसाल बगेरा की फतह-  
 देवा और पनगी में सत्ते के मुकाबले  
 अनुसरत और रावकर राव बगता का  
 तईनात होना-



- ۲۰۶ شاہزادے  
= امراو  
۲۰۷ شاہزادوں کی  
ان کی تفصیل  
تفصیل  
۲۰۸ مسلمان امرا  
ہندو امرا  
۲۰۹ ہفت ہزاری  
۲۱۰ پانچ ہزاری  
۲۱۱ تین ہزاری  
۲۱۲ دو ہزاری  
۲۱۳ ایک ہزاری  
۲۱۴ دو ہزار  
۲۱۵ ایک ہزار  
۲۱۶ نو صدی  
= آٹھ صدی  
۲۱۷ سات صدی  
۲۱۸ چھ صدی  
۲۱۹ دکن کی سلطنت  
۲۲۰ دکن کی سلطنت  
۲۲۱ شاہجہان بادشاہ کے اوصاف  
۲۲۲ خط و خال بادشاہ  
۲۲۳ بادشاہ کی زبان دانی  
۲۲۴ بیان قلعہ و شہر و صوبہ اگر  
۲۲۵ عمن و طول سلطنت شاہ جہاں  
۲۲۶ بڑے بڑے شہر و نکاحا حاصل دہلی سے  
۲۲۷ اگر سے  
۲۲۸ سلطنت ہم ہند  
۲۲۹ توران  
۲۳۰ ایران  
۲۳۱ تاتاریا

- ۲۰۶ شاہزادے  
= امراو  
۲۰۷ شاہزادوں کی  
ان کی تفصیل  
تفصیل  
۲۰۸ مسلمان امرا  
ہندو امرا  
۲۰۹ ہفت ہزاری  
۲۱۰ پانچ ہزاری  
۲۱۱ تین ہزاری  
۲۱۲ دو ہزاری  
۲۱۳ ایک ہزاری  
۲۱۴ دو ہزار  
۲۱۵ ایک ہزار  
۲۱۶ نو صدی  
= آٹھ صدی  
۲۱۷ سات صدی  
۲۱۸ چھ صدی  
۲۱۹ دکن کی سلطنت  
۲۲۰ دکن کی سلطنت  
۲۲۱ شاہجہان بادشاہ کے اوصاف  
۲۲۲ خط و خال بادشاہ  
۲۲۳ بادشاہ کی زبان دانی  
۲۲۴ بیان قلعہ و شہر و صوبہ اگر  
۲۲۵ عمن و طول سلطنت شاہ جہاں  
۲۲۶ بڑے بڑے شہر و نکاحا حاصل دہلی سے  
۲۲۷ اگر سے  
۲۲۸ سلطنت ہم ہند  
۲۲۹ توران  
۲۳۰ ایران  
۲۳۱ تاتاریا

# تیسرا حصہ

۲۱ ویں برس کا بقیہ حال

بلخ کی مہم

روز پنجشنبہ عرہ جمادی الثانی

۱۶۲۴ء مطابق ۲۶ جون ۱۶۲۴ء

آساٹسودیر ۲۷ ہسپتیا وار

سبوت ۱۶۰۳ کو ۲۱ واں جلدی

برس شروع ہوا

ماہیک نوروں کی روضہ کے

جل سے دھو

آساٹسودیر ۷ کو بادشاہ

نے جہانگیر کے بلخ پر

نے کیر و بر سر ناکر شاہ جہان

میراد کو اس طرف روانہ

کیا مگر وہ چارے کا

ک پہنچ کر دوسرا کھ پھ

چنے سے ۷۰۰۰۰ پانچ لاکھ

کے فوجیوں نے اپنا

راہ بدل دیا

جب شاہ جہان میراد

ہا جیر ہوا تو بادشاہ

ت کو ریلنگز اور پتوں

سیر پے دے کر کشمیر

بے داری پر نہ دیا

کو اکبر کو اس سبب

ہوا معمول کے موافق

کے جشن آراستہ ہوئے

بادشاہ نے اوز بکوں

بخشان ہر آنے کی خبر

۵ جمادی الثانی کو

مراد بخش کو اس طرف

کیا مگر پھر سنا کہ

اپنا ارادہ فسخ کر دیا

شاہزادہ کو واپسی کا

لکھا جے پہنچے پرچہ

بعد اس کے مقام چار

مراجعت کی

جب شاہزادہ مراد بخش

خانہ آیا تو بادشاہ

زمرہ کا سر ہج ویکر

پیرہ انکر دیا

نذر محمد خان نے ایران

سے

|                     |                             |
|---------------------|-----------------------------|
| ناظم دے دیا پھر شاہ | موت کر شاہ زادہ             |
| جہانگیر سے سیوا     | دنگ زیب کو صلح کے           |
| ری کی شاہ جہان دے   | اسطے خط بھیجا شاہ زادہ      |
| کو امر جی لیروی     | نے وہ خط معہ اپنی عرضی      |
| نے جواب دیا         | شاہ کے پاس پہنچا            |
| رہو محمد دے دیا     | بادشاہ نے جواب بھیجا کہ اگر |
| جہانگیر سے ملنا     | مرد محمد خان آکر تھے ملے تو |
| دشاہی فوجیں         | ہم اور بدخشان اور سکوک      |
| اور بدشاہ           | بن فوجین وہاں سے            |
| آج                  | اٹھائو                      |
| جہانگیر کو          | سلطان جب کو بادشاہ          |
| کابل سے             | کابل سے لاہور کو روانہ      |
| نے دے               | ہوئے اور شاہ زادہ           |
| اور شاہ جہان        | شجاع سے کہہ آئے             |
| کو اورنگ زیب        | کہ جب اورنگ زیب             |
| کابل کے             | کابل کے حرمین آجاوے         |
| تو تم چلے آنا       | تو تم چلے آنا               |
| مہرنگی              | مہرنگی                      |
| حسن خدمت            | حسن خدمت                    |
| خوش ہو کر           | خوش ہو کر بادشاہ            |
| نے اسکی             | نے اسکی منصب میں            |
| پانصدی              | پانصدی ذات کا اضافہ         |
| کیا کہ              | کیا کہ جواب                 |

ناظم دے دیا پھر شاہ  
 جہانگیر سے سیوا  
 ری کی شاہ جہان دے  
 کو امر جی لیروی  
 نے جواب دیا  
 رہو محمد دے دیا  
 جہانگیر سے ملنا  
 دشاہی فوجیں  
 اور بدشاہ  
 آج  
 جہانگیر کو  
 کابل سے  
 نے دے  
 اور شاہ جہان  
 کو اورنگ زیب  
 کابل کے  
 تو تم چلے آنا  
 مہرنگی  
 حسن خدمت  
 خوش ہو کر  
 نے اسکی  
 پانصدی  
 کیا کہ

बच्चसल और इजाफे से रह  
जारी जात और रहजार सवा  
रका होगया

जब बादशाह की सवारी अ  
टक से उतरी तो शाहजादे दा  
राशिकोह अपने बेटे सुलेमा  
नशिकोह के समेत लाहोर से  
पेशवाई को आया बादशाह ने  
१हीरा १०० रतीजरका जिस  
की कीमत १ लाख रुपये की  
थी रिवल अत और घोड़ों स  
मेत उसको इनायत किया

कातिक सुद ७ को बादशाह  
लाहोर में पहुंचे और मंगसर  
वद ५ को आगरे की तरफ रवा  
ने हुवे-

मंगसर सुदि ४ को सहरंद  
में दरवन के सूबेदार इसलाम  
रवां के मरने की खबर पहुंची  
बादशाह ने उसके नाई और  
दों को रिवल अत नेज कर

१०-११-१२ शाहनवाज  
लिरवा कि औरंगाबा

اصل اور اضافہ سے  
دو ہزاری دو ہزار سوار کا  
ہو گیا اور اسکو راجہ کا  
خطاب ہی مرحمت فرمایا -  
جب بادشاہ کی سواری دریائے  
ایک سے اوتری تو شاہزاد  
داراشکوہ نے لاہور سے  
آکر ملازمت کی بادشاہ نے اسکو  
ایک سپہاقتی ایک لاکھ روپیہ کا  
جو وزن میں سورتی پر تھامہ  
خلعت اور گہوڑوں کے عنایت  
کیا -

۵ سوال کو بادشاہ لاہور  
میں پہنچے اور ۱۹ کو  
آگرہ کی طرف روانہ  
ہوئے -

۳۰ دی قعدہ کو مقام سہرند میں  
دکن کے وقایع سے بادشاہ کو  
عرض ہوئی کہ اسلام خان صوبہ دار دکن  
مر گیا بادشاہ نے اس کے بیٹے اور بیٹوں  
کو اسلئے مامی کر خلعت پہنکے مالوہ کے صوبہ دار  
شاہ نواز خان کو لکھا کہ تاجپوشی  
دوسرے صوبہ دار کے اورنگ آباد



दमें पहुंचकर वहांके वंदोबस्त  
से खबरदार रहै-

बलखकी मोहिमका

खातमा

नज़रमोहम्मदरवां की अरज़ी  
पहुंची कि शाहज़ादेके पास  
हाज़िर होनेसे पहिले मेंमने  
का क़िला मुभ्तको इनायत  
होजावे बादशाह ने जवाबमें  
लिखा कि हाज़िर होने के बाद  
उसकी दरखास्तसे बढ़कर  
आयत होगी मगर नज़रमोह  
म्मदरवां मारे वहम के खुदतो  
बीमारीका वहानाकरके शा  
हज़ादे के पास हाज़िर नहु  
आ और अपने पोते कासम  
सुलतान को नेजदिया बाद  
शाहज़ादिने उसको गहीपर  
अपने बराबर बैठाया उस व  
क्त नाजफा कालथा और ब  
रफ़नी गिरने वाला था इस  
के सिवाय बलख के सूबेका  
खुस्वनी आमदनी से ज़ियादा

अप्रीदبان کا بندوبست کرنے

بلخ کی محم کا

خاتمہ

نہ خان کی عرضی پہونچی کہ

شاہ زادہ کے پاس حاضر

ہونے سے پہلے میں نے کاقلو

میں کو عنایت ہو جائے بادشاہ

لکھا کہ حاضر ہونے کے

بعد اسکی درخواست

سے بڑھ کر رعایت ہوگی مگر

نذر محمد خان نے تو ہم سے

شیخ عزم حاضر ہی کرکے

اپنے پوتے محمد قاسم کے

ہاتھ بیماری کا عذر لکھ

بیجا اور خود حاضر ہوا

بادشاہ زادہ نے محمد

قاسم سلطان کو اپنے برابر

گدھی پر بیٹھایا اور اچھی طرح سے

ملاقات کی

دوسرے وقت غلہ کیاب تھا اور برف پڑی

کرنے والا تھا ملاوہ اسکے آمدنی

کے برخلاف زیادہ

धा और उज्जब कंहर वक्त फि  
साद करने को तैयार रहते थे  
सलिये औरंगजेब ने बादशा  
हफे हुक्म का इन्तजार न कर  
के बलख और बदखशा

खुल्क नज़र मोहम्मद रवांके  
से छोड़कर फेजाबाद से कूच  
किया और बलख का किला  
द्वार रूपये की रोकड़ और  
जिनस समेत कासिम सुल  
तान और कफ़श कलमांको  
सौंप दिया-

राजा जयसिंघ जी 'त्रिमिज'  
से आकर शामिल होगया-  
शुरू मोहिम बलख से उस  
दिन तक कि शाहजादे ने ब  
लख छोड़ा २ किरौड़ रुपया  
तो तनखाहों में और २ किरौड़  
सामानों में खर्च हुआ था और  
रलड़ाईयों में बहुत से आ  
दमी दोनों तरफ के मारे गये  
थे खासकर के ७ दिन की ल  
ड़ाई में जो रात दिन बराबर

तथा और ओर बक हर وقت फाद  
करने पर आदह रहते थे सल  
और रंग زیب ने بلا انتظار  
हकम बादशाह के بلخ और بخشان  
का ملک نذر محمد خان के दा

चौड़ कर فیض آباد سے مراجعت  
کی اور بلخ کا قلعہ مع نقد و جنس  
قیمتی ۶ لاکھ روپیہ کے  
قاسم سلطان اور کفش  
قشلاق کو سونپ دیا راجہ  
جیسنگہ بھی ترند سے آکر  
شامل ہو گیا

شروع مہم بلخ سے  
اوس تاریخ تک کہ شاہ زاد  
نے مراجعت کی دو کروڑ  
روپیہ تو تنخواہوں میں  
خرچ ہوا لڑائیوں میں  
بہت سے آدمی دونوں  
طرف کے مارے  
گئے خاص کر کے  
دن کی لڑائی میں جرات  
دن برابر

ہوتی رہی تھی چھ ہزار سوار اور ایک  
اور پانچ ہزار سوار بادشاہی  
کام آئے تھے

۱۷ رمضان کو شاہ زاد نے  
بلخ سے کوچ کیا  
۱۸ کو لشکر گہاٹی سے اوترا اور کبوں  
اور امانون نے تعاقب کیا جس پر  
تہوڑے آدمی دیکھتے تھے  
مسد کر دیتے تھے شاہ زاد  
ہر روز واسطے حفاظت غلہ  
لشکر کے ایک فوج بھیجتا  
تھا۔

۱۹ رمضان کو شمشیر خان وغیرہ  
کا شغریوں کا امانون سے مقابلہ  
ہوا مہار خان نے کا شغریوں  
کی مدد پر بیچو نچکر امانون کو  
شکست دی  
۲۵ کو شاہ زاد وغیرہ  
میں بیچو نچا اور ایک  
دو طرف سے نمودار  
ہوئے۔ امیر الامرا  
اور مستبد خان نے  
معاہدہ فوج ہزاروں کے

۲۰ کو شاہ زاد  
۲۱ کو شاہ زاد  
۲۲ کو شاہ زاد  
۲۳ کو شاہ زاد  
۲۴ کو شاہ زاد  
۲۵ کو شاہ زاد  
۲۶ کو شاہ زاد  
۲۷ کو شاہ زاد  
۲۸ کو شاہ زاد  
۲۹ کو شاہ زاد  
۳۰ کو شاہ زاد  
۳۱ کو شاہ زاد  
۳۲ کو شاہ زاد  
۳۳ کو شاہ زاد  
۳۴ کو شاہ زاد  
۳۵ کو شاہ زاد  
۳۶ کو شاہ زاد  
۳۷ کو شاہ زاد  
۳۸ کو شاہ زاد  
۳۹ کو شاہ زاد  
۴۰ کو شاہ زاد  
۴۱ کو شاہ زاد  
۴۲ کو شاہ زاد  
۴۳ کو شاہ زاد  
۴۴ کو شاہ زاد  
۴۵ کو شاہ زاد  
۴۶ کو شاہ زاد  
۴۷ کو شاہ زاد  
۴۸ کو شاہ زاد  
۴۹ کو شاہ زاد  
۵۰ کو شاہ زاد  
۵۱ کو شاہ زاد  
۵۲ کو شاہ زاد  
۵۳ کو شاہ زاد  
۵۴ کو شاہ زاد  
۵۵ کو شاہ زاد  
۵۶ کو شاہ زاد  
۵۷ کو شاہ زاد  
۵۸ کو شاہ زاد  
۵۹ کو شاہ زاد  
۶۰ کو شاہ زاد  
۶۱ کو شاہ زاد  
۶۲ کو شاہ زاد  
۶۳ کو شاہ زاد  
۶۴ کو شاہ زاد  
۶۵ کو شاہ زاد  
۶۶ کو شاہ زاد  
۶۷ کو شاہ زاد  
۶۸ کو شاہ زاد  
۶۹ کو شاہ زاد  
۷۰ کو شاہ زاد  
۷۱ کو شاہ زاد  
۷۲ کو شاہ زاد  
۷۳ کو شاہ زاد  
۷۴ کو شاہ زاد  
۷۵ کو شاہ زاد  
۷۶ کو شاہ زاد  
۷۷ کو شاہ زاد  
۷۸ کو شاہ زاد  
۷۹ کو شاہ زاد  
۸۰ کو شاہ زاد  
۸۱ کو شاہ زاد  
۸۲ کو شاہ زاد  
۸۳ کو شاہ زاد  
۸۴ کو شاہ زاد  
۸۵ کو شاہ زاد  
۸۶ کو شاہ زاد  
۸۷ کو شاہ زاد  
۸۸ کو شاہ زاد  
۸۹ کو شاہ زاد  
۹۰ کو شاہ زاد  
۹۱ کو شاہ زاد  
۹۲ کو شاہ زاد  
۹۳ کو شاہ زاد  
۹۴ کو شاہ زاد  
۹۵ کو شاہ زاد  
۹۶ کو شاہ زاد  
۹۷ کو شاہ زاد  
۹۸ کو شاہ زاد  
۹۹ کو شاہ زاد  
۱۰۰ کو شاہ زاد

جا کر ان کو بہکا دیا۔

بادشاہ کا حکم آیا تھا کہ غوری اور کہہ دو کو مالک محروسہ میں داخل رکھ کر قلعہ دارون کو بحال رکھیں اس واسطے شاہ زادہ نے وہاں دو مقام کر کے نورالحسن اور ذوالقدر خان مقرر کیا ۲۹ کو خواجہ زاہد کے راستہ سے کوچ ہوا دیر سے خاب کے کنارہ پہنچے تھے مگر راستہ میں ایک گھاٹی پر اوزبک اور ہزارہ سلاہ اور ہونے اور شکریوں کا اسباب ٹوٹ کر خزانہ پر جا گرنے رات تک لڑائی ہوئی آخر الامیر امیر الامرانے مدد کر کے ان کو بہکا دیا

۲۹ کا تیکسود ۱ کو راجا جاہید کے رست سے کچھ دھڑا ڈیرے سواروں بن ندی کے کنارے پر ڈھوے مگر رستہ میں غاٹی پر اوزبک اور ہزارہ کے لوگوں نے گھاٹی سے دھیر آئے اور رستہ شکر والوں کا اسباب ٹوٹ کر رستہ پر جا گرنے رات تک لڑائی ہوئی آخر الامیر امیر الامرانے مدد کر کے ان کو بہکا دیا۔

۳۰ کا تیکسود ۳ کو کچھ کر کے پانچ تہائی تہائی میں دشمنوں نے چوم کیا بہت سے آدمی اور

بادشاہ کا حکم آیا تھا کہ غوری اور کہہ دو کو مالک محروسہ میں داخل رکھ کر قلعہ دارون کو بحال رکھیں اس واسطے شاہ زادہ نے وہاں دو مقام کر کے نورالحسن اور ذوالقدر خان مقرر کیا ۲۹ کو خواجہ زاہد کے راستہ سے کوچ ہوا دیر سے خاب کے کنارہ پہنچے تھے مگر راستہ میں ایک گھاٹی پر اوزبک اور ہزارہ سلاہ اور ہونے اور شکریوں کا اسباب ٹوٹ کر خزانہ پر جا گرنے رات تک لڑائی ہوئی آخر الامیر امیر الامرانے مدد کر کے ان کو بہکا دیا

اور جانور دھارا ہٹ میں پھاڑ  
سے لڑکھکھڑ مہر گئے۔

بانور گہرا ہٹ میں پیڑ سے  
لڑاہٹ کر مر گئے۔

ہندو کوہ کے نا کے میرات  
آئندہ سزار اور نہ کیوں  
جیو غاس چارا لینے کے لیے  
نے شمشیر خان کو جو گہی لینے  
کے واسطے گیا تھا چاروں  
طرف سے گہیر لیا اور بہت  
سے اونٹ اور گھوڑے  
چہرے لگا کر آدمیوں کو مقتول و مجروح  
کیا بیاد و رخاں نے جا کر شمشیر خان  
کو اوس تہلکہ سے بچایا  
م کو ہندو کوہ کی گھاٹی سے  
گزرے وہ برف گرنے سے  
بچ بستی تھی اسلئے وہاں  
سے گزر زمین بھی آدمیوں کو  
بہت تکلیف ہوئی  
کو غور بندین اورے کو چارک  
میں مقام ہوا  
غور بند پہونچنے تک  
اوس طرح تین بار اور  
اوز کیوں سے مشاہد ہوا  
برسفا بلہ میں بہت سے  
آدمی دو نوٹہ خون کے

کا تیک سدی ۶ کو ہندو کوہ  
کی غاٹی سے اترنا پڑا وہ برف  
ف سے ڈٹی ہوئی اس لیے وہاں  
جیو آدمیوں کو بہت تک  
لی فٹ ہوئی۔

کا تیک سدی ۶ کو "گور بند"  
میں اور دوسرے دن چاری کار میں  
مکام مل گیا۔

گور بند پہونچنے تک اسی طرح  
۳ بار اور اوز کیوں سے مشاہد  
ہوا ہر نو کا بیجہ میں بڑھ  
ت سے آدمی دو نوٹہ خون کے

م کو ہندو کوہ کی گھاٹی سے  
گزرے وہ برف گرنے سے  
بچ بستی تھی اسلئے وہاں  
سے گزر زمین بھی آدمیوں کو  
بہت تکلیف ہوئی  
کو غور بندین اورے کو چارک  
میں مقام ہوا  
غور بند پہونچنے تک  
اوس طرح تین بار اور  
اوز کیوں سے مشاہد ہوا  
برسفا بلہ میں بہت سے  
آدمی دو نوٹہ خون کے

गये और जरबमी हुवे-  
 "गौरबंद मेथाना बैठा कर और  
 १० लाख रुपये जो वह मोजूद थे  
 लेकर बाने हुवे जिस दिन कि गौर  
 बंद की घाटी से उतरे हजारों आदमी  
 कौम हजारों के चढ़ आये और  
 माल असबाब जो हाथ लगा उ  
 सको लूट कर खजाने पर जा गि  
 रे यहा बादशाही बंदे बहुत काम  
 आये और जरबमी हुवे पहरात  
 गये तक लड़ाई होती रही किसी  
 को उमेद बचने की न थी जुलफि  
 कार खा और नूरुल हसन जो  
 खजाने के साथ थे जरबमी हो क  
 र नी खूब लड़े और खजाने को  
 बचा लाये-

जब हिन्दू कुश के घाटे में पहुंचे  
 चेतोरस्ते की तंगी और बरफ  
 रसने की तकलीफ से बहुत  
 से जानवर बारबार दारी को न  
 छुड़े जो गिरा आदमियों के  
 रचोपगों के पैरों में डलता  
 या इसी तरह जिस सवार  
 पैदल ने गोकर खाई वह  
 रन उट सक्ता-

मजروح و مقتول ہوئے غور  
 بند میں تہانہ بیٹھا کر اور دس  
 لاکھ روپیہ کا خزانہ جو وہاں  
 موجود تھا لیکر روانہ ہوئے  
 جس دن غور کے درہ  
 سے گذرے ہزاروں  
 آدمی قوم ہزارہ کے شانہ  
 کے لشکر پر گہر کر اڑنے  
 لگے اور مال اسباب  
 جو کچھ ہاتھ آیا اس کو لوٹ  
 کر خزانہ پر لوٹ پڑے یہاں  
 بادشاہی آدمی بہت مجروح اور  
 مقتول ہوئے پہرات گئے تک  
 صدائے دار و گیر بلند نہی اور  
 کسی کو امید نہی تھی نہ ہی نہی مگر  
 ذوالفقار خان اور نور الحسن جو  
 خزانہ کے ساتھ تھے باوجود زخمی ہونے  
 کے خوب لڑے اور خزانہ کو بچا لائے  
 جب ہندو کش کے گہاڑ میں  
 پہنچے تو راستے کی تنگی اور برف  
 آدمی سے بہت سے جانور کھف  
 ہوئے یہ جانور کہ گہرا آدمیوں  
 اور چاہوں سے نہ ختم کیا گیا  
 جس سواری پیدل نے بڑا کر کہا  
 وہ ہرگز اوجھ نہ سکتا

شاہجہاں دا تو مہنگ سر پر رکھ کو

شاہزادہ تو ۲۲ شوال کو کابل

۱۱ پھول میں پھنچ گیا لیکن بہادر خان روپیہ

بن بیچ گیا لیکن بہادر خان روپیہ

ہا دھڑک رہا تھا جھول فیکاروں

اور الفقار خان اور خواجہ نور الحسن

اور کھلے ہاتھ کے ساتھ چھپے رہ گئے

ہو خانہ کے ساتھ چھپے رہ گئے

خجانیہ کے ساتھ پیٹھ پر رکھ گئے

ہو خانہ کے ساتھ چھپے رہ گئے

یہ اس قدر برف گری کہ پل

س مارنے کی فرصت نہ ملی

کھانپنے کی کھانپنے کی کھانپنے

اوتی اور جانور مارے ہوئے

پھر بھڑک سے آدھی اور ج

لف ہو گئے۔

نہر مارے ڈنڈ کے مارے

بہادر خان و الفقار خان

اب بھڑک رہا تھا جھول فیکاروں

بچ گیا اور آدھے سے زیادہ

سے سے بھڑک گیا اور آدھے سے

نہ کے بار کش جانور ٹھکانے

جیہاں جانور رکھ جانے کے

تب و الفقار خان نے

کھانے لگے تب جھول فیکاروں

بقدر کہ خزانہ باقی کے اوتوں

نہا کی کے کھانے پر جیتنا

لہر کا لاد کر شاہزادہ

خجانیہ لاد سکا اس کو تو

پاس روانہ کیا اور باقی خزانہ بار

لا کر شاہجہاں کے پاس

باری نہ لے سے اپنے پاس رکھا

رہا نہ کیا اور باقی بار

میں اور برف ہر روز

پر داری نہ ملنے سے اپنے

میں تھا اور اس پر

سارے لیا برف ہر روز

ہی قوم ہزارہ نے فوج

رہتا تھا اس پر نہ کو

سگین سے خزانہ

ہزارانہ اس میں نہ سے

پر حملہ کر کے ایسی

جانیہ کے کھانے پر رکھ کے

نہ بار کی جس

میں کم

سوکا مال اسباب اور ناموس  
محفوظ رہا چار پانچ ہزار گھوڑے  
اور بہت سے آدمی  
باربر واری کے چار پائون  
کے جو باقی رہ گئے تھے کٹ گئے  
اور بہت سے جانور برف  
کے نیچے دب گئے

جیسر دار اور سیپاہی جंग  
جیتے دے اور کام کیے دے  
سب کو جاننے کے اور جنم کر ل  
دے اور سب کی جی کو چھوڑ ک  
ر اپنی جانوں کو سب جاننے کے سا  
پکچالایے تو جی بے شمار  
تھ ہزار والوں کے ہاتھ آئی جی  
سکو بے لے جاگے -

بھادور خان نے جہانگیر کو  
کہہ دیا کہ جس کی کسی کا  
جانور دے دے پکڑ کر جلال  
کار خان کے پاس نہ جے مگر  
پٹانوں نے جانور نہیں دیے  
اس پر ان سے لڑائی ہوئی تہا  
بھادور خان نے اپنے اور اپنے  
نہا دیے تو کے رواسا اور وار  
گیر لڑتے جلال کار خان کے  
پاس دیے اور خود جی اپنی

جنگ  
دیدہ اور کار آمد سودہ تھے  
وہ سب خزانہ کے اوپر  
بھکر لڑے اور تمام چیزوں  
کو چھوڑ کر اپنی جانیں اور خزانہ  
ہزاروں کے ہاتھوں سے  
بچا لائے اسپر بھی اون لوگوں  
کو ہتھ پٹا روٹا لگی جس کو ایک بیگ گھر  
بھادور خان نے جب یہ سنا تو حکم دیدیا کہ  
جس کسی کا جانور دیکھیں کہہ کر ذوالفقار  
خان کو پاس بھیج دیں مگر پٹانوں نے جانور  
دیے جو درخ کیا اور اسپر اور  
لڑائی ہوئی آخر بھادور خان کو ہار ہوئی  
پٹانوں کے خاصہ اور باربر واری کی  
اونٹ ذوالفقار خان کے پاس  
پہنچائے اور پیچھے سے خود بھی



شاہزادہ تو در شوال کو کابل  
 پہنچ گیا لیکن بہادر خان و دیگر  
 الفقار خان اور خواجہ نور الحسن  
 بہادر کے ساتھ پیچھے رہ گئے  
 تھے اور ان کے اوپر اس قدر برف  
 پڑ چکی تھی کہ مارنے کی فرصت نہ ملی  
 بہادر نے اور جانور مارے تھے  
 کے تلف ہو گئے۔  
 اب بہادر خان و الفقار خان  
 سے پیچھے گیا اور آٹھ سے زیادہ  
 خزانہ کے بار کشیں جانور شہر لائے  
 گئے تب ذوالفقار خان نے  
 جہد کر کے خزانہ باقی کے اوٹوں  
 پر لے لیا اور شاہ زادہ  
 کے پاس روانہ کیا اور باقی خزانہ بار  
 برداری نہ لے کر اپنے پاس رکھا  
 میٹھ اور برف ہر روز  
 بڑھتا تھا اور اس پر  
 ہی قوم ہزارہ نے فوج  
 سنگین سے خزانہ  
 پر حملہ کر کے ایسی  
 توفان مار کی جس  
 میں کم

سیکامال اسباب اور ناموس  
محفوظ رہا چار پانچ ہزار گھوڑے  
اور بہت سے آدمی مسہ  
بار برداری کے چار پائیوں  
کے جو باقی رہ گئے تھے کٹ گئے  
اور بہت سے جانور برف  
کے نیچے دب گئے

سیکامال اسباب اور ناموس  
محفوظ رہا چار پانچ ہزار گھوڑے  
اور بہت سے آدمی مسہ  
بار برداری کے چار پائیوں  
کے جو باقی رہ گئے تھے کٹ گئے  
اور بہت سے جانور برف  
کے نیچے دب گئے

جنگ جو سردار اور سپاہی  
دیدہ اور کار آزمودہ تھے  
وہ سب خزانہ کے اوپر  
ہمکر رہے اور تمام چیزوں  
کو چھوڑ کر اپنی جانیں اور خزانہ  
ہزارہ کے ہاتھوں سے

بچا لائے اس سیر بھی اون توٹوں  
کر ہاتھ پٹاروٹ لگی جساو یکہر باگ گھر  
ہباد نشان نہ جب یہ سنا تو حکم دیدیا کہ  
جس سیکہ جانور دیکھیں پھر کرنا و انقتار  
خان کو پاس پہنچدین مگر پٹانوں اور جانور  
دیوید و برنج کیا اور اس سیر اور نہ

لڑائی جوئی آخر یہ بادشاہان اور ہزار  
ہیون کے خاصہ اور ہزار ہزار ہی  
اونٹ وواقتار خان کے پاس  
پونچائے اور پیچھے سے خود بھی

جہاں سردار اور سپاہی جنگ  
جیتے دے اور کام کیے دے دے  
جانے کے اوپر جان کر ل  
ڈے اور سبھی جہاں کو بھاڑ کر  
رکھ پڑی جانوں کو رکن جانے کے سا  
پکچالایے تو جی بے شمار ل  
تھنار والوں کے لٹا کر آئی جی  
سکو بے لے جاوے -

بھادور رکن نے جہاں دے سو تو ڈ  
کندے دیا کہ جس کی کسی کا  
جانور دے وہ پکار کر لڑ لک  
کار رکن کے پاس نہ جہاں مگر  
پٹانوں نے جانور نہیں دیے  
اس پر جن سے لڑا ڈھکڑھکڑ تھو  
بھادور رکن نے اپنے اور اپنے  
دے کے رکن اور وار  
میر لٹ لڑ لک کار رکن کے  
بے اور خود کئی اور

फौज समेत वहां पहुंचा मगर उस  
के पहुंचने तक ५-६ हजार आदमी  
वरफ और जाड़े से गिर कर मर गये  
ये बाकी काय हहा जथा कि वा  
प बेटे को छोड़ कर अपनी जान  
बचाना चाहता था-

हादुर खां ने वहां पहुंच कर  
देखा कि बार वरदारी के जानवर  
खजाना ले जाने के लिये पूरे न  
हीं हैं और जो हैं वे जाड़े और बर-  
फ के मारे अधमूर हो रहे हैं इस  
लिये खजाने की थेलियां गिनकर  
कल जमादगरो को दी और वे घोड़े  
पर लाद कर खानेहु वे हजारों लो-  
ग फिर रस्त रोक कर लड़े मगर ब-  
हादुर खां और जुलफिकार खां बड़ी  
मुश्किलों से तमाम खजाने को उन  
घाटों से निकाल कर काबुल में ले गये

معد اپنی فوج کے پہونچا  
مگر اسکے پہونچنے تک ۵-۶ ہزار  
ہزار آدمی برف سے ٹھہر کر مر گئے  
تھے اور باقی کا یہ حال تھا کہ با-  
پے کو چھوڑ کر اپنی جان بچانا  
چاہتا تھا

بہادر جان نے وہاں پہونچ کر  
دیکھا کہ جانور ان بار برداری خزانہ  
کے لیجانے کے واسطے کافی  
نہیں ہیں اور جو ہیں وہ جاڑ  
اور برف سے ادھ سوئے ہو  
سے ہیں اس لئے خزانہ کی  
تہیلان گن گن کر جماعہ واروں  
کے حوالہ کیں جنکو وہ اپنی کھوپڑیوں پر لا  
کر روانہ ہو ہزارہ لوگ پہر سر راہ آگے  
اڑی مگر بہادر خان و ذوالفقار خان  
بیشکل تمام خزانہ کو معد اپنی جانوں کا و  
کہا بیوں صحیح و سالم نکال کر بلخ میں لے گئے

(۱) امیر کے راجہ نے سیٹھی فوج میں سے  
ہوں نے سیٹھی لاشوں اور خزانہ کی بچاؤ  
میں بہت کوشش کی تھی بہار کی  
سی کا یہ وہاں اسی راجہ کی طرف سے

امیر نے راجہ جی سنگھ ہی اس فوج میں  
ہوں انہوں نے سیٹھی لاشوں اور خزانہ کی بچاؤ  
میں بہت کوشش کی تھی بہار کی  
سی کا یہ وہاں اسی راجہ کی طرف سے

دو ہا  
یوں دل کا پتہ ہو بلخ میں  
پہنچ گئے  
اور کہا سر کے  
جیوں پر گئے تو

یوں دل کا پتہ ہو بلخ میں  
پہنچ گئے  
اور کہا سر کے  
جیوں پر گئے تو

## دربار کا حال

بادشاہ لاہور سے کوچ کر کے پٹنہ  
کا نواہن میں لڑے  
۷ ذی قعدہ کو وہاں سے  
روانہ ہوئے۔ سستہ میں ۹ ذی  
شاہزادہ داراشکوہ کا دوسرا بیٹا  
مہر شکوہ چار سال ۹ ماہ کا ہو کر  
مر گیا بادشاہ نے اس کی لاش  
لاہور کو بھیجی جہاں اس کی مان کے  
بلخ میں دفن ہوئی  
بہ ذی الحجہ کو بادشاہ دہلی پہنچے  
نورگڑہ میں ٹہرے دوسرے دن  
سوار ہو کر واسطے ملاحظہ و تجویز کائنات  
جدیدہ قلعہ کے جو آٹھ برس تیار ہو رہا  
تھا تشریف لگئے اور یہ تاکید حکم  
دیکر کہ نوروز آئندہ تک سب  
تیار ہو جاویں اگر کو  
زوانہ ہوئے۔

دربار کا حال  
بادشاہ لاہور سے کوچ کر کے پٹنہ  
کا نواہن میں لڑے

۷ ذی قعدہ کو وہاں سے  
روانہ ہوئے۔ سستہ میں ۹ ذی  
شاہزادہ داراشکوہ کا دوسرا بیٹا  
مہر شکوہ چار سال ۹ ماہ کا ہو کر  
مر گیا بادشاہ نے اس کی لاش  
لاہور کو بھیجی جہاں اس کی مان کے  
بلخ میں دفن ہوئی

بہ ذی الحجہ کو بادشاہ دہلی پہنچے  
نورگڑہ میں ٹہرے دوسرے دن  
سوار ہو کر واسطے ملاحظہ و تجویز کائنات  
جدیدہ قلعہ کے جو آٹھ برس تیار ہو رہا  
تھا تشریف لگئے اور یہ تاکید حکم  
دیکر کہ نوروز آئندہ تک سب  
تیار ہو جاویں اگر کو  
زوانہ ہوئے۔

یعنی بیچ میں شکر کو سطح سے نکالا  
تو نے اسے راجہ جیسنگہ کہ جیسے کہا ہے  
دراکشش اس کے پیٹ میں ٹپکے  
گوایوں اور گایوں کو بیگوان  
نے نکالا ہے۔

مہر شکوہ چار سال ۹ ماہ کا ہو کر  
مر گیا بادشاہ نے اس کی لاش  
لاہور کو بھیجی جہاں اس کی مان کے  
بلخ میں دفن ہوئی  
بہ ذی الحجہ کو بادشاہ دہلی پہنچے  
نورگڑہ میں ٹہرے دوسرے دن  
سوار ہو کر واسطے ملاحظہ و تجویز کائنات  
جدیدہ قلعہ کے جو آٹھ برس تیار ہو رہا  
تھا تشریف لگئے اور یہ تاکید حکم  
دیکر کہ نوروز آئندہ تک سب  
تیار ہو جاویں اگر کو  
زوانہ ہوئے۔

بادشاہ لاہور سے کوچ کر کے پٹنہ  
کا نواہن میں لڑے  
۷ ذی قعدہ کو وہاں سے  
روانہ ہوئے۔ سستہ میں ۹ ذی  
شاہزادہ داراشکوہ کا دوسرا بیٹا  
مہر شکوہ چار سال ۹ ماہ کا ہو کر  
مر گیا بادشاہ نے اس کی لاش  
لاہور کو بھیجی جہاں اس کی مان کے  
بلخ میں دفن ہوئی  
بہ ذی الحجہ کو بادشاہ دہلی پہنچے  
نورگڑہ میں ٹہرے دوسرے دن  
سوار ہو کر واسطے ملاحظہ و تجویز کائنات  
جدیدہ قلعہ کے جو آٹھ برس تیار ہو رہا  
تھا تشریف لگئے اور یہ تاکید حکم  
دیکر کہ نوروز آئندہ تک سب  
تیار ہو جاویں اگر کو  
زوانہ ہوئے۔

نہا کاش کے ہسٹا ب میں ہمارے پاس  
 نہ جہدے کہ تو بولنے لکھنے کے حکم  
 پہنچنے سے پہلے وہ گڑبہ کو دے  
 کر ۱۰ رتی اس میں سے چیلوا  
 لیا مگر تا دھکم پہنچنے  
 کے اسی دن روانہ کر دیا  
 ہاں پہنچنے پر ۱۰ رتی اور  
 اس میں سے تارا شہ گیا تو  
 رات بھر داغ دھبے کے رہ گیا  
 جس کی قیمت ڈیڑھ لاکھ روپے  
 کی تھی اور ۲۰۰۰۰ کا چھرا  
 کا گیا اس کی قیمت اسی دن  
 ۱۰۰۰۰ تو لے کر آکر ۱۰۰  
 لاکھ ۵۰۰۰۰ میں رات بھر  
 یا اس کی پٹا کھینچ کر  
 تھی اس لیے بادشاہ نے  
 دیا کہ اس چھرا کا کھینچ  
 سونے اور جواہرات سے  
 کر کے پورے اس ہونے کو  
 ڈیڑھ رتی اس کے چھرا  
 جگہ جگہ جگہ رہے جب  
 رہے یہ کھینچ کر تیار  
 ڈیڑھ لاکھ کی قیمت

پیشکش مقررہ کے حساب  
 ہمارے پاس پہنچنے کے  
 نے حکم پہنچنے سے پہلے  
 حکاک کو دیکر دس رتی  
 سے چھرا کا کھینچ کر  
 کے اسی دن روانہ کر دیا  
 یہاں آنے پر شہر رتی اور  
 اوس میں سے تارا شہ گیا تو  
 ایک سو رتی بے عیب رہ گیا  
 جس کی قیمت ڈیڑھ لاکھ روپے  
 ہوئے اور بیس ہزار کے  
 شمار ہوئے اتفاق وقت  
 سے اسی دن سو تو لے کر  
 چھرا کا ایک کھینچ کر  
 کی شکل میں پچاس ہزار روپے  
 کو خرید کر آیا بادشاہ نے  
 حکم دیا کہ اس چھرا کا  
 سونے اور جواہرات سے  
 یہ ریزے بھی اوس میں  
 سب کے اوس سو رتی  
 والی میری کو چھرا میں  
 کھینچ کر تیار ہو گیا  
 ڈیڑھ لاکھ روپے کی

२२वां बरस

माहसुदि ३ संवत १०४८ से

माहसुदि २ संवत १०५१ तक

माहसुदि ४ को शाहजहाँ दा

शुजाअपने बडे बेटे जेनुल

आबदीनं समेत काबुल से द

रबार में हाज़िर आया-

फागणबदि १० को बादशाह

हने वह अंबर का कंदील जो

३५००० में तैयार हुआ था हाजी

सईद के हाथ मदीने को रवाने

किया उसको १६००० मक्के के

गरीबों को बाँट दे कर यह हुक्म

दिया कि आधे रुपये में अहमदा

बाद से वह माल कि जिसके और

चें नेंदूने हो जाते हैं खरीद ले जा

वे उसमें से आधा तो मक्के के शरी

र (महंत) को मय ५०००० रुकड़ के

देवे और बाकी रुपया और माल

महं को गरीबों को बाँट दे और

कंदील को मदीने में ले जाकर

मिसवान परस

सन् १०५१

जुन १०५१ से १०५२ तक

महमूद को शाह फिज का बल

से आया उस का बड़ा بیٹا سلطان

بن العابدین بھی اوس کے

ساتھ تھا

۲۳ محرم کو بادشاہ نے

دو غنیمت کا قندیل جو معہ ہیرے

کے ساڑھے تین لاکھ روپیہ کی قیمت

کا تھا حاجی سعید کے ہمراہ مدینہ

کو روانہ کیا اور مساکین کو بکواسے

ایک لاکھ ساٹھ ہزار روپیہ دس

کے حاکم کے حکم دیا کہ آدھ

قندیل بکاوے اور آدھے میں

جمہا بارت سے وہ شائع خریدے

رہے جو ب میں دوئے ہو جاتے

ہیں۔ اور نیمہ بیچ اس ہزار کی

میں دقت نو شریف کو کورٹ

اور باقی غریبوں کو تقسیم کرے

اور قندیل کو مدینہ لے جا کر بیٹھ

رہے۔ وہ میں نے دیکھا ہے

फागण सुदि २ को बादशाहने शाहजहाँदे शुजाअको १ लाख रुपये कीमत का जड़ाऊ सर पेच इनायत करके पीछा बंगाले की तरफ बिदा किया -

शाहजादामुरादकशमीरसे दकनकी सूबेदारीके वास्ते बुलाया गया चेतवदि ४-५ को राणाजगतसिंघका पाटवी बिदा राजकुंवर अपने बापकी अरज़ी वावत सुबारक बाद फतहवलरव और वदरवशों के लेकर हाज़िर आया -

१ दिन राजा वदनसिंघ बादशाहके रूबरू खड़ा था पीछे से १ मस्तहाथी ने भूषट कर राजाको १ आदमी समेत जो उसकी मदद के वास्ते आया था दांतोंके नीचे दबालिया राजाने नीचे से ही जम धर खेंच कर उसकी सूंडमें मारी उधर घररवीवानने चरखियोंमें (१) आग दे दी जिससे राजा अपने नोकर समेत उसके दांतोंसे निकल गया बादशाहने राजाको बहुत शाबाशी दी और खिलवात देकर उसके जिम्मे की बाकी माजियुजारीमें से ५००० नाफा

عزہ حضور کو بادشاہ نے ایک لاکھ روپے کا سر پہنچ عنایت کر کے شاہ شجاع کو بنگالہ کی طرف رخصت کیا شاہ زادہ مراد کشمیر سے دکن کی صوبہ داری کے واسطے طلب کیا مراد کو رانا جगत سنگھ کا جانشین بیٹا راج کنور اپنے باپ کی عرضی بابت مبارکباد فتح پنجاب و خشان کی لئے کر بار شاہ کی خدمت میں حاضر آیا -

ایک دن راجہ بدن سنگھ بادشاہ کو رو برو کھڑا تھا چھپے سے ایک مست ہاتھی نے جھپٹ کر راجہ کو دھکے دے کر ایک آدمی کے جوہر کے واسطے آیتھاد اتوں کے نیچے دبا لیا راجہ نے نیچے سے ہی مجرہ کھینچ کر اسکی سونڈ میں مارا اور ہرجی بان سے جریون میں آگ دہی جس سے اسنے اپنے نوکر کے اوکے دونوں اٹوں میں سڑ کر لگ گیا بادشاہ نے اسکی عزت اور بہت پرہیز فرین کی اور خلعت و کمرے کے کھٹالہ میں سے پکاس ہیرے روپے بطور انعام کر اوکو صاف کر دیا

چیتاؤدی ۱۲ کو نیرو ج کے دین با  
دشاہ نے شاہجہان آباد کے نا  
م جو بکسر سے آکر آٹک کے کی  
لوہے پر دھکم سے دھرا دھڑا دھڑا  
لیرا کہی ملتان کو اپنی جا  
گہر میں سمجھ کر پرچارا وہاں چلا  
جاوے اور اپنی جو ۱۲ لاکھ روپے  
سایا نہ ہوتی ہے ملتان کے  
خزانہ سے نقد بٹا رہے

چیتاؤدی ۱۸ کو بادشاہ آگرہ  
سے دہلی کو روانہ ہوئے اور راج  
کونور کو محل و موراہد  
کی مالا اور ہاتھی گھوڑے ویکر  
رخصت کیا۔

بیسارکھ دیہہ کو بادشاہ کی س  
واری شاہجہان آباد کے پاس پونچھ  
کیلا شاہجہان آباد  
اور شاہر۔

بادشاہ نے آگرہ اور لاہور کے  
کوچوں اور جلو خانوں کو تنگ  
دیکھ کر دہلی کے سواوہین  
نورگڑہ کے قریب ایک جدید  
شہر آباد کرنے کا حکم دیا تھا  
جہاں قلعہ کی بنیاد شہر جہم  
۲۵ ذی الحجہ ۱۰۲۸ کو  
۱۶۵۸ء کی رات کو

۱۵ صفر کو کہ روز جشن نوروز  
تھا بادشاہ نے شاہزادہ اورنگ  
زب کو راج کے نام جو پونچھ سے آکر  
آٹک کے کیلوہے پر دھکم سے دھرا  
دھڑا دھڑا لیرا کہی ملتان کو  
اپنی جاگہر میں سمجھ کر پرچارا  
وہاں چلا جاوے اور اپنی جو ۱۲  
لاکھ روپے سایا نہ ہوتی ہے  
ملتان کے خزانہ سے نقد بٹا رہے

۲۲ ربیع الاول کو بادشاہ کی س  
واری شاہجہان آباد کے قریب پونچھ  
کیلا شاہجہان آباد  
اور شاہر۔



اساتاد احمد و حامد متار ان کی  
تجو یز سے کہو دی گئی تھی اور شب  
جمعہ ۵ غرم ۱۰۲۵ھ کو عمارت کی بنیاد  
رکھی گئی وہ قلعہ اب پچاس لاکھ  
روپیہ کے خرچ سے تیار ہو گیا تھا  
اور اسبقدر روپیہ شاہی عمارات اور  
زنانہ محلات میں صرف ہوا تھا  
قلعہ شاہ جہان آباد ۶۰ لاکھ گز  
زمین میں بسخ چھتر اثر  
کر بنایا گیا تھا۔ اس کی دیوار  
بیس ہزار گز لمبی ۶۰ گز  
چوڑی اور ۲۵ گز اونچی تھی  
فیروز شاہ کی نہر جو اسے  
اپنی شکار گاہ خضہ آباد  
سے نکالی تھی اور بہت  
برسوں سے بے مرمت ہو کر  
بند پڑی تھی دوبارہ کھود کر قلعہ کے اندر  
سے نکالی گئی۔

کلیلاہ لار بگن جمنی میں  
لال پتھر کا ٹانگی بند ونا  
یا اس کا کوٹ ۲۰ ہزار گن  
۶۰ گن چوڑا اور ۲۹ گن اونچا  
تھا جس میں ۵ دروازے اور ۲ ریل  
ڈکیاں تھیں اور فیردوس شاہ  
لی نھر جمنی کی جو بدھ تیرہ  
سے بند پڑی تھی بھاگ کر اور سا  
فر کے اس قلعہ کے اندر سے نکال  
لی گئی۔

قلعہ میں اتر کی طرف بادشاہ  
کے رہنے کے واسطے دولت خانہ  
ہذا ت پرورش ہماں شاہ محل  
ر بے گم کے واسطے مہم تیا  
ج محل،  
سورہری محل اور دوسرے مکان  
م  
کارنے کے بنائے گئے۔

باغ کے پاس تالاب اور دولت  
خانہ سے ملتا ہوا ایک حوض  
شستہ

تفصیل عمارات  
اور تکریم بادشاہ کے رہنے کا دو تخت  
باغ حیات بخش حمام شاہ محل اور بیگم  
ہاں سے امتیاز محل سو نہری محل اور  
دوسرے مکان سنگ مرمر بنائے گئے تھے  
باغ کے پاس تالاب اور دولت  
خانہ سے ملتا ہوا ایک حوض شستہ

तक हर रोज ५००० सिलावट और रवा  
ती वगेरा काम किया करते थे यह म  
सजिद ६० गज लंबी और ३२ गज  
चौड़ी थी इसके ऊपर ३ बड़े गुंबद  
और २ ऊँचे मीनारे बनाये गये थे य  
ह ६ वरस में १० लारवरूपये के रक्च  
से बनी थी इसके चोक में दकबन के  
मंदर से और उत्तर को शफारवानों के  
मकान थे -

### बादशाह कानये किले में प्रवेश करना.

चैसात व बदि ११ को मंगल के दिन  
घड़ी दिन चढ़े सिंह लम्ह में दरिया के  
रस्ते से नये किले के अंदर दरिबल  
हुवे और बड़ी धूम धाम से दल बाद  
लंडेरे में दरवार किया जो ७० गज  
लंबा और ४० गज चौड़ा १ लारवरूप  
पयों की लागत से अहमदाबाद के  
बादशाही कारखाने में तैयार हु  
आया और जिसको २२ गज ऊँचा  
चौकों पर ३००० फरसों ने बड़ी म  
हनत से खड़ा किया था -

फिर गुसल खाने में होकर महल  
में पधार गये इस दिन शाहजादे द  
राशिको हु कामन सब १० हजारी जात

हर रोज पाँच हजार सलावट  
हानी وغیره काम किया  
ते सहे १००० गज लंबी  
२२ गज चौड़ी थी  
पर ३ बड़े गुंबद  
और २ ऊँचे मीनारे  
बनाये गये थे  
यह ६ वरस में  
१० लारवरूपये के  
रक्च से बनी थी  
इसके चोक में  
दकबन के मंदर  
से और उत्तर को  
शफारवानों के  
मकान थे -

रोज ५००० सिलावट  
हानी وغیره काम किया  
ते सहे १००० गज लंबी  
२२ गज चौड़ी थी  
पर ३ बड़े गुंबद  
और २ ऊँचे मीनारे  
बनाये गये थे  
यह ६ वरस में  
१० लारवरूपये के  
रक्च से बनी थी  
इसके चोक में  
दकबन के मंदर  
से और उत्तर को  
शफारवानों के  
मकान थे -

बादशाह का किला  
जहाँ बादशाह  
मिन داخل हुना  
रोज ५००० सिलावट  
हानी وغیره काम किया  
ते सहे १००० गज लंबी  
२२ गज चौड़ी थी  
पर ३ बड़े गुंबद  
और २ ऊँचे मीनारे  
बनाये गये थे  
यह ६ वरस में  
१० लारवरूपये के  
रक्च से बनी थी  
इसके चोक में  
दकबन के मंदर  
से और उत्तर को  
शफारवानों के  
मकान थे -



اوپر بٹائی کر کے ولایت کو دے کر لیا  
 یا ہے اس پر حکم دیا کہ وہاں  
 رواج اور راجا ویرل داس کے پاس  
 انہیں اور انہیں مرادانہ کے پاس  
 کر کے اس کی تاج و تخت کے ساتھ  
 انہیں مرادانہ کے پاس  
 ہو

### دربار کا حال

راہی راہی کو کھل کر سونے سے  
 گار چوڑ کر بنار س میں جا بیٹھا  
 فیر دنا داری کی ہوس سے ہزار  
 ہزار آجیاد شاہ نے اس کو  
 کھجاری جات اور ۲۵۰ سوار کا  
 من سب سے کر در بن کے کھل کر  
 کی دیوانی مہم فوج داری بگلا  
 نے کے دنا یات فرما دی

اساتھ سوار کو ۲۲۰ جلیبی  
 ہر سوار کو ۲۲۰ جلیبی  
 فیک دربار اور جلیبی  
 سا بن بدار کو شاہجہان  
 کاشمیر سے آیا

بادشاہ نے جشن نوروز سے  
 پاکر بادشاہ زاد و مراد بخش کو  
 عیادت کو سرفراز کر کے  
 صوبہ داری پر بلائے اسلام خان

۱۶۲۷ء  
 بادشاہ شہنشاہ  
 ۲۸

دربار کا حال  
 راہی راہی جو دت سے ترک  
 عیادت کو سرفراز کر کے بنار س میں  
 نشین تھا پیر خد جب جاہ سے حضور  
 میں حاضر آیا بادشاہ نے اس کو  
 منصب ہزاری ذات اور ۲۵۰  
 سواروں کا دیکر کل صوبہ جات  
 کی دیوانی مہم فوج داری والہ  
 بگلانہ کے عنایت فرمائی

یکم جمادی الثانی کو ۲۲۰ وان جلیبی  
 سال شروع ہوا اور معمول کے موافق  
 جلسہ اور دربار ہوئے  
 ۱۶ جمادی الثانی کو شاہزادہ مراد  
 کشمیر سے آیا  
 بادشاہ نے جشن نوروز سے فرصت  
 پاکر بادشاہ زاد و مراد بخش کو انوع  
 عیادت کو سرفراز کر کے دکن کی  
 صوبہ داری پر بلائے اسلام خان

اسلامی رواج کی جگہ جو مرگیا تھا  
 بکری کر کے نہ جاتا اور شاہنشاہ  
 رواج کو مالت سے دکان میں نہ جاتا  
 یا شاہ جاد کا آتالیق مقرر  
 کر دیا اور غنیمت خان سے بطور  
 شایستہ بنو سکا تھا اس کے دو  
 داراشکوہ کو غنیمت ہو اور اس کا  
 نائب باقی بیگ جو آباد کا صوبہ  
 قبا اصل و اضافہ سے دو  
 ہزاری ذات اور پانچ سو اور  
 کے منصب و خطاب عزت خان  
 سے مشرف ہو کر گجرات  
 کے انتظام بر گیا ۔  
 اور یہ کا صوبہ شاہزادہ  
 شجاع کو عنایت ہوا

جڑی سے کاٹوا شاہ جادہ شجاعت  
 کو دینا یا تھوڑا ۔  
 بکری سے رات پر پھنچی کہ اب  
 لڑائی جی رواج نے نجر موہ  
 مہر سے سیل لہ کر لی اس لیے  
 بادشاہ نے بھادور رواج کو  
 واپسی کا حکم لکھا ۔

شاہ ایران کا قتل ہوا  
 ۱۶۵۷ء کو بادشاہ شجاعت  
 خاص شکار میں مصروف  
 شکار تھے کہ خواص خان

شاہ ایران کا قتل ہوا  
 ۱۶۵۷ء کو بادشاہ شجاعت  
 خاص شکار میں مصروف  
 شکار تھے کہ خواص خان



ہا کیم پاشا شاہجہان آباد کو لاہور سے  
 گئے نہایت ہی دیر کا حکم لکھا اور  
 ہر طرف آہستہ آہستہ کے نام سے لشکر  
 حضورین حاضر ہوئے گئے واسطے تاکہ  
 احکام جاری ہوئے۔

۲ شوال کو بادشاہ شکار گاہ سے  
 قلعہ شاہجہان آباد میں پہنچے اس  
 عرصہ میں شاہ ایران کی آمد آمد کی  
 خبر گرم ہوئی جس سے بادشاہ نے  
 سعد اللہ خان وزیر کو مع ۲۰۰۰ فوج  
 شاہ زادہ اور نگ زیب کی ماتحتی  
 میں قندھار بھیجے گئے تیار کیا اور  
 حکم دیا کہ ساتھ ہزار سوار اس  
 بر قندھار کاٹھار متبکرین جن میں  
 اکثر سادات بارہہ اور بک افغان  
 اور راجپوت ہوں ایڑیوں میں سے  
 بہت کم لوگ اس ہندو فوج  
 میں داخل کئے جاویں۔

اسی اثنا میں عرض ہوئی  
 کہ خیر و ان خان نے جو جب خبر  
 قلعہ قندھار کے پہنچے اور  
 بر قندھار کاٹھار متبکرین  
 نور الحسن بخشی اعدیان کی  
 سرداری میں کابل سے  
 روانہ کر دے ہیں اور پانچ لاکھ

ہا کیم پاشا شاہجہان آباد کو لاہور سے  
 گئے نہایت ہی دیر کا حکم لکھا اور  
 ہر طرف آہستہ آہستہ کے نام سے لشکر  
 حضورین حاضر ہوئے گئے واسطے تاکہ  
 احکام جاری ہوئے۔

۲ شوال کو بادشاہ شکار گاہ سے  
 قلعہ شاہجہان آباد میں پہنچے اس  
 عرصہ میں شاہ ایران کی آمد آمد کی  
 خبر گرم ہوئی جس سے بادشاہ نے  
 سعد اللہ خان وزیر کو مع ۲۰۰۰ فوج  
 شاہ زادہ اور نگ زیب کی ماتحتی  
 میں قندھار بھیجے گئے تیار کیا اور  
 حکم دیا کہ ساتھ ہزار سوار اس  
 بر قندھار کاٹھار متبکرین جن میں  
 اکثر سادات بارہہ اور بک افغان  
 اور راجپوت ہوں ایڑیوں میں سے  
 بہت کم لوگ اس ہندو فوج  
 میں داخل کئے جاویں۔

اسی اثنا میں عرض ہوئی  
 کہ خیر و ان خان نے جو جب خبر  
 قلعہ قندھار کے پہنچے اور  
 بر قندھار کاٹھار متبکرین  
 نور الحسن بخشی اعدیان کی  
 سرداری میں کابل سے  
 روانہ کر دے ہیں اور پانچ لاکھ

اسی اثنا میں عرض ہوئی  
 کہ خیر و ان خان نے جو جب خبر  
 قلعہ قندھار کے پہنچے اور  
 بر قندھار کاٹھار متبکرین  
 نور الحسن بخشی اعدیان کی  
 سرداری میں کابل سے  
 روانہ کر دے ہیں اور پانچ لاکھ

... اور یہ کہ خزانہ بھی بلا حکم اس کے ساتھ  
... دیوا ہے۔

۱۲ مئی قندھار کو بادشاہ اورنگزے  
اور اس کے ہمراہیوں کو باغیچہ  
غزالیات میں داخل کر کے خود بھی لاہور  
اور روانہ ہوئے۔ ۱۲ مئی کو لاہور  
سے اورنگزے کو بیاس ندی  
سے اورنگزے کو ۱۲ مئی کو  
لاہور پہنچے۔

بادشاہ کا پہلے تو یہ ارادہ  
ہوا تھا کہ شاہزادہ اورنگزیب  
کو بیشتر روانہ کر دیں پھر یہ بات  
ٹھہری کہ لاہور اور کابل تک ساتھ  
ساتھ جا دیں آرام طلب امیروں  
بانتھار خیر خواہی خلافت عرض کی  
اور دس سے بہت ان تین مہینوں  
تقریباً شونہ کو سفر اور ہم کی تاب نہ  
ہوئی ہے پس اندون میں جو شاہ  
عباس کے قندھار پر پہنچے

خبر مشہور ہوئی ہے وہ خلاف  
عقل ہے اور اس کے ساتھ ہی  
اوس ضلع میں فتنہ جارہ اور گنہگار  
کے کیا ہوئے کی خبر بھی ہوئی  
نو بادشاہ نے یہ  
بات پسند کی کہ

... اس کے کंधار پہنچے  
... ہوا  
... ریکلاف ہے اور اس کے  
... ۱۶۲۸  
... ۱۶۲۸



فی الواقع این مین چار سپہنویز  
 کہ برف اور ٹھنڈ سے مسافر مجاہد  
 کرنے مین اکثر قریب با شش سفر  
 نہیں کرتے پھر محاصرہ و تخیقند  
 واسطے کیوں گھر سے نکلے اور جنگی کرکڑ لگاتار  
 اس طرح کابل جانی کا ارادہ  
 جو قرار پا چکا تھا فتح ہو گیا اور سپہ  
 شہری کہ برف اور جبار سے کے دن  
 لاہور میں ہی شیر کریں -  
 ۲۳ وان برس  
 ۱۰۵۹ھ ہجری  
 ۶ جنوری ۱۶۵۹ء ۲۵ دسمبر ۱۶۵۸ء تک  
 ۱۲ نوم کو جشن وزن شمسی شروع  
 سال ۵۸ کا ہوا جس میں اور  
 کا منصب پندرہ ہزاری ذات اور  
 آٹھ ہزار سوار و اسپیہ  
 کا ہو گیا اکثر امیروں کے  
 منصب میں اضافہ ہوا  
 بعض کھانا بھی ملا -  
 اعظم خان ۶۲ برس کا  
 ہو کر مر گیا

بیشک دشمنی نہایت مہم کی برف  
 اور جڈ سے مسافر مجاہد  
 تھے اکسار کج لبا شاس فر نہ  
 کرتے फिर کंधार کے ऊपर कौ चढ़ा  
 ई करने लगे -  
 इस तरह का बुल जाने का इरादा  
 जो दुश्मना मोक्ष कर रहा था और य  
 ह बात ठहरी कि बर्फ और जडे के  
 दिन लाहोर में ही तेरे करें -

बरस ۲۳वां  
 माह सुदि ۳ सं. ۱۰۰۵ سے -  
 पोस सुदि ۱ सं. ۱۰۰۶ तक:

फागण सुदि ۱۳ को बादशाह को ज  
 न्मपत्री के हिसाब से ۵८वां बरस  
 लगा जिसके तुलादान की खुशी  
 में शाहजादे औरंगजेब काममें स  
 ۱۵ हजारी जात और ८॰॰॰ सवार  
 दुश्मना और सिंह अस्या का होगा  
 या उस दिन अक्सर अमीरों का इ  
 जाफा दुश्मना और इनाम नीमिला  
 आज मरवा ۷۲ बरस का होकर मर गया -

बादशाह अनी तक तईनाती अमी  
 रों के पुं चने कारस्ता देख रहे थे जिन  
 के लाने को गुर्जरदार गये हुवे थे -  
 और जो बादशाह ईران के मशहद سے  
 بادشاہ ابھی تک امر ای  
 اطراف کے پونچنے کا انتظار میں تھے کہ جب  
 لائے کو گزربردار بھیج گئے تھے اور  
 شاہ ایران کے مشہد سے

رخوانے ہونے کی اور ترقی تھی اور  
راست و دروغ ہونے کی تحقیق  
کو دیکھتے فراغت جو امیر چھاوئی  
ڈالنے کی فکر میں تھے اور بے  
بضاعت سردار خیمہ میں گذر  
کرنے کو قصد یحییٰ سفر زمستان  
سے غنیمت سمجھ کر ہرج مرج کو بچ  
مقام کا شکر کر رہے تھے کہ دفعۃً  
شاہ ایران کے قصد ہمارے  
پہنچ جانے کی خبر قلعہ دار کی  
دھڑکی سے نازل ہوئی حسین  
لہا تھا کہ شاہ نے سخت جانے  
کر اس موسم برف و باران میں  
طریق یلغار سے کچھ اس ہزار نہر کے تاجیک  
فرزلباشوں اور نو جوانہ سنگین  
۱۰ ماہ و النچ کو قید ہمارے چکر قلعہ  
کا محاصرہ کر لیا ہے مدد بہت جلد  
پہنچنی چاہئے۔

اس خبر کے پہنچنے ہی بادشاہ نے  
شاہ زادہ اور نگ زیب کو کہا کہ  
لہان و بال بالاقبہ ہمارے واسطے مقابل  
شاہ ایران کے روانہ ہو جاؤ اور اس کے ساتھ  
کو واسطے سعد اللہ خان وزیر بہادر خان  
راجہ جیونت سنگھ علی خان راجہ جیونت  
کو وزیر تھان نجابت خان سردار خان و

رخوانے ہونے کی اور ترقی تھی اور  
راست و دروغ ہونے کی تحقیق  
کو دیکھتے فراغت جو امیر چھاوئی  
ڈالنے کی فکر میں تھے اور بے  
بضاعت سردار خیمہ میں گذر  
کرنے کو قصد یحییٰ سفر زمستان  
سے غنیمت سمجھ کر ہرج مرج کو بچ  
مقام کا شکر کر رہے تھے کہ دفعۃً  
شاہ ایران کے قصد ہمارے  
پہنچ جانے کی خبر قلعہ دار کی  
دھڑکی سے نازل ہوئی حسین  
لہا تھا کہ شاہ نے سخت جانے  
کر اس موسم برف و باران میں  
طریق یلغار سے کچھ اس ہزار نہر کے تاجیک  
فرزلباشوں اور نو جوانہ سنگین  
۱۰ ماہ و النچ کو قید ہمارے چکر قلعہ  
کا محاصرہ کر لیا ہے مدد بہت جلد  
پہنچنی چاہئے۔

وغیرہ ۱۲۲ مسیرون کو معہ  
 پچاس ہزار سوار کے ساتھ  
 خواہ پیشگی دیکر لاہور سے  
 روانہ کیا  
 شاہزادہ کی رخصت احتیاط  
 ساعت و عظم فرست سے بغیر  
 لازمہ یعنی خلعت وغیرہ کے بل میں  
 آئی تھی اسلئے اس کے واسطے خلعت  
 اسپہا پر اور ہاتھی سعد اللہ خان  
 ہمراہ بھیجے گئے اور اسکو نذر دیکر رات  
 بنگلہش روڈ سے کابل ہو کر قندہار پہنچے  
 کا حکم دیا گیا اور خرچ کے واسطے  
 ارشاد ہوا کہ بندہ ہائے قدیم  
 نقدی کو سوا سے طلب نہایت  
 حالہ کے فی فقر ایک سو روپیہ معہ  
 یاتیموں کے دین اور نو لازم  
 بندوں کو کہ جنگی سند تیار نہیں  
 ہوئی اور منصب داران قدیم و جدید کو  
 جاگیر رکھنے میں تین مہینے نقد و بدینہ سے  
 دلائی گئے سزا دل بھر ہو کر اور سزا  
 شکر کو بھی گندہ بردار یعنی لاکھوں تکرار کو  
 متعلق فخر و شرف برہم کر کے بہت بلند ہوا  
 منہ یک ترکمان توچی باشی شاہزادہ  
 کو قندہار پر جب ہو کر منوچین حاضر ہوا  
 خلعت اسپہا پر اور ہاتھی و نقد

وگرا ۱۳۲۳ آدمیوں کے ۵۰۰۰۰ سواروں  
 سے ۳ مہینے کی پشانی تارواہ دے کر  
 ویدا کیا شاہجہان دے کی رخصت  
 جلدی کا مہر تارواہ سے پھر لیا  
 جہانیاں ویدل و تارواہ کے دے  
 اسلئے اس کے واسطے رخصت و تارواہ  
 رھا پھی اور دے کو رھا پھی سے سا  
 لاروا کے ساتھ جے گئے اور اسکو  
 نذر دیکر رات سے جانے  
 کا حکم دیا گیا اور خرچ کے واسطے  
 ارشاد ہوا کہ بندہ ہائے قدیم  
 نقدی کو سوا سے طلب نہایت  
 حالہ کے فی فقر ایک سو روپیہ معہ  
 یاتیموں کے دین اور نو لازم  
 بندوں کو کہ جنگی سند تیار نہیں  
 ہوئی اور منصب داران قدیم و جدید کو  
 جاگیر رکھنے میں تین مہینے نقد و بدینہ سے  
 دلائی گئے سزا دل بھر ہو کر اور سزا  
 شکر کو بھی گندہ بردار یعنی لاکھوں تکرار کو  
 متعلق فخر و شرف برہم کر کے بہت بلند ہوا  
 منہ یک ترکمان توچی باشی شاہزادہ  
 کو قندہار پر جب ہو کر منوچین حاضر ہوا  
 خلعت اسپہا پر اور ہاتھی و نقد

وگرا ۱۳۲۳ آدمیوں کے ۵۰۰۰۰ سواروں  
 سے ۳ مہینے کی پشانی تارواہ دے کر  
 ویدا کیا شاہجہان دے کی رخصت  
 جلدی کا مہر تارواہ سے پھر لیا  
 جہانیاں ویدل و تارواہ کے دے  
 اسلئے اس کے واسطے رخصت و تارواہ  
 رھا پھی اور دے کو رھا پھی سے سا  
 لاروا کے ساتھ جے گئے اور اسکو  
 نذر دیکر رات سے جانے  
 کا حکم دیا گیا اور خرچ کے واسطے  
 ارشاد ہوا کہ بندہ ہائے قدیم  
 نقدی کو سوا سے طلب نہایت  
 حالہ کے فی فقر ایک سو روپیہ معہ  
 یاتیموں کے دین اور نو لازم  
 بندوں کو کہ جنگی سند تیار نہیں  
 ہوئی اور منصب داران قدیم و جدید کو  
 جاگیر رکھنے میں تین مہینے نقد و بدینہ سے  
 دلائی گئے سزا دل بھر ہو کر اور سزا  
 شکر کو بھی گندہ بردار یعنی لاکھوں تکرار کو  
 متعلق فخر و شرف برہم کر کے بہت بلند ہوا  
 منہ یک ترکمان توچی باشی شاہزادہ  
 کو قندہار پر جب ہو کر منوچین حاضر ہوا  
 خلعت اسپہا پر اور ہاتھی و نقد

اور رکناری جات ۵۵ سوار کامنسا  
۷۷ ناہت کیا -

مہ منصب ہزاری ذات اور  
نوسوار کے عنایت ہوا -

نجر گودم دروا کے وکی نجر گود  
جان کو جو رکت اور کھو تو ہ کے  
لے کر آ یا تھا رینک پرت دھاڑی  
۲۱۵۰۰۰ نکر دے کر رکت سہ کیا -

مرد محمد خان کے وکیل خواجہ جان  
جو جو مہ نامہ اور بعض تحائف  
لے آیا تھا خلعت اسب اور بار  
ہزار روپیہ نقد دیکر رخصت کیا گیا -

چیت سدی ۱۳۰۶ کو بادشاہ  
مردنی لاہور سے کابل کو روانہ ہوئے  
چیت سدی ۱۳ کو چینا بن دی سے جت  
رہے تھے کیتس گورنر دار نے جو  
رنگ جے کے پاس فرمان لے کر

عزہ بیع الاول کو بادشاہ خود بھی  
کابل کی طرف کوچ کر کے ۱۲ کو چلا  
سے اور ترے تھے کہ اس وقت اور  
زبردار نے جو اور رنگ زیب

یا تھا جاکر رکنامی رکت شہ کے ڈیر  
میں پہنچ کر جاہر کیا کیتس  
دتر رکنامی سا دھار رکنامی کو  
کیتس کا گام سدی ۱۳ کو رکنامی نے

پاس فرمان لیگیا تھا جعفر خان  
جیشی کے ویرہ میں پہنچ کر ظاہر کیا  
لہ سیادت خان کا نوشتہ  
خان کے نام اس مضمون کا پہنچا

کیتس کا گام سدی ۱۳ کو رکنامی نے  
کیتس کا گام سدی ۱۳ کو رکنامی نے  
کیتس کا گام سدی ۱۳ کو رکنامی نے  
کیتس کا گام سدی ۱۳ کو رکنامی نے

ہے کہ ۸ صفر کو خواص خان قلعہ دار  
قدما رنے قلعہ شاہ ایران کو  
دیدیا ہے اور اس صوبہ کے  
قلعہ زندا اور سب وغیرہ پر بھی

کیتس کا گام سدی ۱۳ کو رکنامی نے  
کیتس کا گام سدی ۱۳ کو رکنامی نے  
کیتس کا گام سدی ۱۳ کو رکنامی نے  
کیتس کا گام سدی ۱۳ کو رکنامی نے

کا قبضہ ہو گیا ہے - اور اسی کے  
ساتھ ساتھ غزنی میں بھی اسی مضمون  
مضمون میں ہے ان امور و احوال کے  
بات پر بھی مضمون ہے جو حقیقت تھا

کیتس کا گام سدی ۱۳ کو رکنامی نے  
کیتس کا گام سدی ۱۳ کو رکنامی نے  
کیتس کا گام سدی ۱۳ کو رکنامی نے  
کیتس کا گام سدی ۱۳ کو رکنامی نے

میں بادشاہ نے عرض کی -  
میں نے ان امور کو دیکھا تھا  
میں نے ایک دیکھا تھا

کیتس کا گام سدی ۱۳ کو رکنامی نے  
کیتس کا گام سدی ۱۳ کو رکنامی نے  
کیتس کا گام سدی ۱۳ کو رکنامی نے  
کیتس کا گام سدی ۱۳ کو رکنامی نے

میں نے ان امور کو دیکھا تھا  
میں نے ایک دیکھا تھا  
میں نے ایک دیکھا تھا

لڑنے میں گجرات اندر سے اس کے لشکر  
پر رقبہ گولے برسائے گئے اور  
کیلے والے باہر نکل کر چلی  
ڈیمگر کیلے دار نے کج لباہوں  
کے غیر سے غبارا کر دینا دیا  
شاہ کے لشکر میں رسد کی ک  
میں اور ہندوستان سے فوج روانہ  
ہونے کی خبر سے گڑبڑ پڑی  
یہی جیس کا پر ۱۱ مورخہ نے تیس  
باندھ کر کیلے میں فک دیا  
کیلے دار مدد پھونچنے تک نہ  
سکا اور ۱۵ دین تک شاہ کو  
لہ کا سندھ سے جتا رہا  
ر جب شاہ نے منہ کر لیا تو  
گاہ ۱۰ کو کیلے سے باہر نکل  
ل آیا اور ۲ دین کی مہلت  
لے کر اپنے مال اسباب اور  
ل بچوں کو چلی نکال لایا  
۲ دین ایران کا کیلے دار  
کیلے میں داریاں دھڑا  
بادشاہ کے کبڑے سے نکل گیا۔

فیر خاں واسوا کیلے دار کا  
ڈرہا اور ابولحسن وغیرہ کے  
شاہ کی ملازمت میں گیا اور ایک  
لحہ بیچ کر

اور مقابلہ میں گدرا اندر سے  
بھولی اور کے لشکر پر گولے  
کی گئی اور قلعہ واسے باہر  
لشکر سے لڑے مگر قلعہ دار  
نے قریباً شوں کے محاصرہ  
سے تنگ آ کر دل چھوڑ دیا  
مگر جب کہ شاہ کے لشکر میں  
کمی غلہ و رسد و خبر و انکی  
فوج ہندوستان سے زائل  
پڑا ہوا تھا اور ایک منجنیق  
میں خبر کا غدر لکھ کر تیر کے  
ذریعہ سے قلعہ کے اندر پہنچا  
بھی دی تھی تو بھی قلعہ دار  
پہنچنے کا انتظار نہ کر سکا اور  
پندرہ دن تک شاہ صلح کا  
کر بار اور جب شاہ نے منظور کیا  
تو وہ صفر کو قلعہ سے باہر آکر دو  
دن مہلت انچو رہا اور بال بچوں کے  
کا لٹو کوئی تیس دن ایران کا قلعہ دار  
میں خاں قلعہ میں اٹل ہوا اور وہ  
سورہ بادشاہ قبضہ سے نکل گیا۔  
پہر خواں خاں معہ کا کڑ  
خاں اور ابولحسن وغیرہ کے  
شاہ کی ملازمت میں گیا اور ایک  
لحہ بیچ کر

اور ہزار سی ہزار اور مع منصب ہزار سی ہزار اور  
۵۰۰ سوار کا مناس و ہزار سی ہزار اور  
۵۰۰ سوار کے غایت ہوا۔

نذر محمد خان کے وکیل خواجہ جان  
جو منہ نامہ اور بعض تحائف

لے آیا تھا خلعت اسب اور بارہ  
ہزار روپیہ نقد دیگر خست کیا گیا۔

عزہ ربیع الاول کو بادشاہ خود  
کابل کی طرف کوچ کر کے ۱۲ کو چلا

سے اور ترے تھے کہ اس وقت او  
ر سردار نے جو اور رنگ زیب

پاس فرمان لیا تھا جعفر خان  
بخشی کے و میرہ بین پہو چکر ظاہر کیا

سیادت خان کا نوشتہ  
خان کے نام اس مضمون کا پہو چکا

ہے کہ ۸ صفر کو خواص خان قلعہ  
قدار نے قلعہ شاہ ایران کو

دہ پایا ہے اور اس صوبہ کے دو  
قلعہ زمیندار اور سب وغیرہ پر بھی

قبضہ ہو گیا ہے۔ اور اسی کے  
مضمون

اس کے گزنی سے جی کاغ  
کا سی دیوں اور جیلو داروں کے ہاتھ

جن کو جا فرسوا نے باد  
بید مات میں جا کر آکر کیا  
کیں شاہ کو ۹  
کیلے کے دھرنے اور

बगेरा बारबर दारी के जानवर रखे  
दने के लिये १५ दिन वहां बहरना  
पड़ा फिर कूच कर के गजनी पहुंच  
चातोय हांघास का काल था खास  
खास आदमियों के वास्ते ५ का सेर  
जरनाज और १॥ सेर घास मिलता  
था जिससे लशकर का बहुत पत  
ला हाज हो गया और शाहजादे ने  
बादशाह को जरजी लिरवी किय  
हं रूपये सेर नाज है और घास ना  
मिद है आगे कुछ चीजन हीं मिलती  
है इस सब व से लशकरी और मि  
राही बहुत तंग आगये हैं बादशाह  
ने लिखा कि मुज्जगीरी में आराम  
नहीं होता है ऐसी बातों का खयाल  
न कर के फौरन कंधार को रवाने हो  
जाओ और कजल बाशों को किले  
में नया जखीराज मां करने और ठ  
हरने की फुरसत न दो और फसल  
जो तैयार है उसको उनके हाथ में न  
पड़ने दो खुद काट लो और हमको  
नी पहुंचा जानो— इस पर शाहजादे  
और कजीर ने लशकर में डोड़ी पिट  
दी कि सब लोग गजनी न सेर स्ते  
के वास्ते रसद ले लें वें और १५ दिन

और जो जानवर दारी के  
खरिदने के लिये नंदे वन  
पड़ा पर कोच कर के खरिद  
तो वहां गेहस का ल तहा खास  
खास आदमियों के वास्ते एक  
रूप का एक सिर घाला और ठीक  
लता तहा जिस लशकर का बहुत तला  
हो गया और शाहजादे ने बादशाह को  
खुशी लकी कि वहां रुपिये सिर  
है और गेहस ना पड़े के आगे  
चिन्तन नहीं मत्ती है इस  
लशकरी का सहाय बहुत  
मैं बादशाह ने लकी कि लकी  
मैं आराम नहीं होता ऐसी बातों  
का खयाल न कर के नूरु फंदार को  
हो जाओ और फसल को  
नया खेर جمع करने और  
खरिद नंदे वन में नया  
सिरी वन के अंतर्गत  
को लो लकी वन में  
शाहजादे और नंदे वन  
मनादी करादी कि  
से से के वास्ते  
ने ली और पंद्रह  
बंद

बरफ़ इतना गिरा है कि जो फिर न गि  
रे तो १ महीने में सुश किल से रस्ता  
निकल सकता है इसी दरम्यान में  
शाह के कंधार को घेरने और फूत ह  
करने की खबर और बादशाह की  
ताकी दे जलदी रवाने होने के वास्ते  
पहुंची और फिर तुरत ही शाह के कू  
च करने की नी खबर आई तब तो शा  
ह जादे और वज़ीर को कूच करना  
ही पड़ा और वे उस रस्ते को कि जिध  
र से जाना मंजूर था छोड़ कर २७००  
गज़ ऊंचे पहाड़ों पर से पैदल मय कौ  
ज के गुज़रे और जो कुछ सामान अ  
सबाब साथ था उसको जहां काल  
हां छोड़ गये इस दोड़ में बहुत लोग  
जाड़े से ठिठकर मर गये और बहु  
त से भाग गये खाना दाना कुछ पा  
सन रहान बइस हाल से जेठ बदि  
को काबुल में पहुंचे तो वहां इतनी गर्मी  
गई थी कि ७ कागे हूं ५ सेर और घा  
स ४ सेर नी हाथ नहीं आता था आ  
दमी और जानवर का पेट ७ में नी  
नहीं चरता था और बादशाह की ता  
की कंधार पहुंचने के वास्ते हद से  
जि यादा थी तो नी शाह जादे को घोड़े

परफ़ इस قدر ग्राहाने के जो  
अर्द्ध करने तो एक खिन्ने में  
बंश्ल रस्ते निकल सकता है  
वही एवम में शाह के محاصر  
रुखि फंदे की खबर आई और  
असके साथ ही बादशाह की ताकी  
भी जल्द रवाने होने के वास्ते  
पहुंची और शाह के फंदे की  
कोच कर जाने की भी खबर आई  
तब जाचार शाह ने राहें ७०  
के बंदे गए मानसपुर तब जाचूर को  
निरासत सुगर्भ लंबा ओछी भाटू  
बैठे पैदल मय फौज के कंधार  
और जो कभी सामान शिबाने राहें सब  
जो नैना प्यासित लोग जाटों से  
छुट्टे कर गये और बहुत से  
बाग़ लूट लूट चारे चिजे नर बाज  
अस साल १०५९ रبيع الثاني को काबुल  
में पहुंचे वहां स قدر गर्मी  
थी कि रोपिके की बूतों पान्छ  
और गैस चार सेर भी अतने फंदे की  
तब जाचूर का पैंथ अकबरे  
में भी नहीं चरता था बादशाह की  
ताकी फंदे की खबर आई तब तो  
नैना शिबाने राहें ७०



बगेरा बारबर दारी के जानवर रवरी  
दने के लिये १५ दिन वहां दहरना  
पड़ा फिर कूच कर के गजनी पहुँ  
चा तो यहाँ घास का काल था रास  
रास आदि मियों के वास्ते ७ का सेर  
जरना ज और ११ सेर घास मिलता  
था जिससे लशकर का बहुत पत  
ना हाल हो गया और शाहजादे ने  
बादशाह को अरजी लिखी किय  
हं रुपये सेरना ज है और घास ना  
पैद है आगे कुछ चीज नहीं मिलती  
है इस सब व से लशकरी और सि  
पाही बहुत तंग आ गये हैं बादशाह  
ने लिखा कि मुल्क गीरी में आराम  
नहीं होता है ऐसी बातों का खयाल  
न कर के फौरन कंधार को रवाने हो  
जाओ और कजल बाशों को किले  
में नया ज राजीराज मां करने और ठ  
हरने की फुरसत न दो और फसल  
जो तैयार है उसको उनके हाथ में न  
पड़ने दो खुद काट लो और हमको  
नी पहुँचा जानो— इस पर शाहजादे  
और बजीर ने लशकर में उड़ी पिट  
दी कि सब लोग गजनी न सेर से  
के वास्ते रसद ले लें वें और १५ दिन

और खाने वारन बारबर दारी के  
खर्च के लिये पंद्रह दिन ठहरना  
पड़ा फिर कूच कर के गजनी पहुँ  
चा तो यहाँ घास का काल था रास  
रास आदि मियों के वास्ते ७ का सेर  
जरना ज और ११ सेर घास मिलता  
था जिससे लशकर का बहुत पत  
ना हाल हो गया और शाहजादे ने  
बादशाह को अरजी लिखी किय  
हं रुपये सेरना ज है और घास ना  
पैद है आगे कुछ चीज नहीं मिलती  
है इस सब व से लशकरी और सि  
पाही बहुत तंग आ गये हैं बादशाह  
ने लिखा कि मुल्क गीरी में आराम  
नहीं होता है ऐसी बातों का खयाल  
न कर के फौरन कंधार को रवाने हो  
जाओ और कजल बाशों को किले  
में नया ज राजीराज मां करने और ठ  
हरने की फुरसत न दो और फसल  
जो तैयार है उसको उनके हाथ में न  
पड़ने दो खुद काट लो और हमको  
नी पहुँचा जानो— इस पर शाहजादे  
और बजीर ने लशकर में उड़ी पिट  
दी कि सब लोग गजनी न सेर से  
के वास्ते रसद ले लें वें और १५ दिन

बद

वरफ़्तना गिरा है कि जो फिर न गि  
रे तो १ महीने में मुश्किल से रस्ता  
निकल सकता है इसी दरम्यान में  
शाह के कंधार को घेरने और फ़तह  
करने की ख़बर और बादशाह की  
ताकी दे जलदी रवाने होने के वास्ते  
पहुंची और फिर तुरत ही शाह के कू  
च करने की नी ख़बर आई तब तो शा  
हजादे और बज़ीर को कूच करना  
ही पड़ा और वे उस रस्ते को कि जिध  
र से जाना मंजूर था छोड़ कर २७००  
गज़ ऊंचे पहाड़ों पर से पैदल मय कौ  
ज के गुज़रे और जो कुछ सामान आ  
सबाब साथ था उसको जहां का त  
हां छोड़ गये इस देड़ में बहुत लोग  
जड़े से ठिठकर मर गये और बहु  
त से भाग गये खाना दाना कुछ पा  
सन रह जा बस हाल से जेठ वदि  
को का बुल में पहुंचे तो वहां इतनी गर्मी  
गई थी कि ७ कागे हूं ५ सेर और घा  
स ४ सेर नी हाथ नहीं आता था आ  
दमी और जानवर का पेट ७ में नी  
नहीं चरता था और बादशाह की ता  
की कंधार पहुंचने के वास्ते हद से  
ज़ियादा थी तो नी शाहजादे को छोड़े

बर्फ़ इस قدر ग़रा हुआ है कि जो  
उरुं करने नौकरी में  
बैठल रस्ते निकल सकता है  
अब इसी मरु में शाह के महार  
दुखी फंदे की ख़बर आई  
और उसके साथ ही बादशाह की ताकी  
भी जल्द रवाने होने के वास्ते  
पहुंची और शाह के फंदे की  
कोच कर जाने की भी ख़बरी  
तब आचार शान्दारों ने  
कि जेठ से जाना منظور था चोड़ कर  
निरासत सुकरीलें और चोड़  
पर से पैदल मय फ़ौज के कंधार  
और जो कि सामान शिबाना  
चोड़ना पड़ा तब लोग जार  
क़श्त कर मर गये और बहुत  
पहाड़ों के ग़ल्ले और चारों  
असमालों के बीच शिबाना  
में पहुँचे और इस फंदे की  
ख़बरी के कंधारों पर  
और ग़स चारों से भी  
तब दुखी और जानवर का पेट  
में भी नहीं चरता था और बादशाह की  
ताकी फंदे की ख़बरी के  
नौकरी शान्दारों को

बगेरा बार बार दारी के जानवर रखे  
दने के लिये १५ दिन वहां ठहरना  
पड़ा फिर कूच कर के गजनी पहुंच  
चा तो यहां घास का काल था स्वास  
स्वास आदमियों के वास्ते ५ का सेर  
अरनाज और १॥ सेर घास मिलता  
था जिससे लशकर का बहुत पत  
ला हाल हो गया और शाहजादे ने  
बादशाह को अरजी लिखी कि य  
हां रुपये सेरनाज है और घास ना  
मिद है आगे कुछ चीजन ही मिलती  
हैं इस सब से लशकरी और सि  
पाही बहुत तंग आगये हैं बादशाह  
ने लिखा कि मुज्जगीरी में आराम  
नहीं होता है ऐसी बातों का खयाल  
न कर के फौरन कंधार को रवाने हो  
जाओ और कजल बाशों को किले  
में नया जखीरा जमा करने और ठ  
हरने की फुरसत न दो और फसल  
जो तैयार है उसको उनके हाथ में न  
पड़ने दो खुद काट लो और हमको

और खानदान बार बरदारी के  
खर्च के लिये १५ दिन वहां ठहरना  
पड़ा फिर कूच कर के गजनी पहुंच  
चा तो यहां घास का काल था स्वास  
स्वास आदमियों के वास्ते ५ का सेर  
अरनाज और १॥ सेर घास मिलता  
था जिससे लशकर का बहुत पत  
ला हाल हो गया और शाहजादे ने  
बादशाह को अरजी लिखी कि य  
हां रुपये सेरनाज है और घास ना  
मिद है आगे कुछ चीजन ही मिलती  
हैं इस सब से लशकरी और सि  
पाही बहुत तंग आगये हैं बादशाह  
ने लिखा कि मुज्जगीरी में आराम  
नहीं होता है ऐसी बातों का खयाल  
न कर के फौरन कंधार को रवाने हो  
जाओ और कजल बाशों को किले  
में नया जखीरा जमा करने और ठ  
हरने की फुरसत न दो और फसल  
जो तैयार है उसको उनके हाथ में न  
पड़ने दो खुद काट लो और हमको

इस पर शाहजादे

मनोयी क्रावी के खर्च  
से १५ दिन वहां ठहरना  
पड़ा फिर कूच कर के गजनी पहुंच  
चा तो यहां घास का काल था स्वास  
स्वास आदमियों के वास्ते ५ का सेर  
अरनाज और १॥ सेर घास मिलता  
था जिससे लशकर का बहुत पत  
ला हाल हो गया और शाहजादे ने  
बादशाह को अरजी लिखी कि य  
हां रुपये सेरनाज है और घास ना  
मिद है आगे कुछ चीजन ही मिलती  
हैं इस सब से लशकरी और सि  
पाही बहुत तंग आगये हैं बादशाह  
ने लिखा कि मुज्जगीरी में आराम  
नहीं होता है ऐसी बातों का खयाल  
न कर के फौरन कंधार को रवाने हो  
जाओ और कजल बाशों को किले  
में नया जखीरा जमा करने और ठ  
हरने की फुरसत न दो और फसल  
जो तैयार है उसको उनके हाथ में न  
पड़ने दो खुद काट लो और हमको

کچکار کے ۳ دین میں کج لکھاؤ کے  
 ۱ کھیلے پر پھنچے جس کو وہ لوگ  
 لے کر گئے تھے۔

لوہ کر کے تین روز میں قریباً  
 کے ایک قلعہ پر پہنچے جس کو وہ  
 لے کر گئے تھے۔

بادشاہی لشکر سات فوج ہو کر  
 اسرا جادی الاول کو قلعہ فتح ہوا  
 کے پاس پہنچا اور گنج علی کے  
 باغ میں ویرانہ میں سے دن بہاؤ  
 سنگہ وغیرہ کئی بہادر سپہ سالاروں  
 نے قلعہ کو ایک طرف ضابطہ کے  
 خالی دیکھ کر بغیر اطلاع شاہزادہ  
 وہاں موجود رہا جاتا تھا قلعہ والوں  
 نے خبر پا کر ایسی آگ برساتی کہ  
 بہت بادشاہی آدمی مارے گئے  
 درمیان میں ہو گیا سعد اللہ خاں  
 نے راجہ سے کہلا بھیجا کہ اگرچہ  
 بغیر حکم کے ایسی جرات کرنا بیجا  
 تھا مگر اب وہیں جنگل کے درختوں  
 کی آگ لیکر جے ہو ورنہ قلعہ اسے  
 زیادہ شہوت ہو جائیگا اس طرح  
 بمشکل تمام بہت جانیں ضائع  
 ہونے کے بعد قلعہ کا محاصرہ ختم ہوا

بادشاہی لشکر سات فوج ہو کر  
 اسرا جادی الاول کو قلعہ فتح ہوا  
 کے پاس پہنچا اور گنج علی کے  
 باغ میں ویرانہ میں سے دن بہاؤ  
 سنگہ وغیرہ کئی بہادر سپہ سالاروں  
 نے قلعہ کو ایک طرف ضابطہ کے  
 خالی دیکھ کر بغیر اطلاع شاہزادہ  
 وہاں موجود رہا جاتا تھا قلعہ والوں  
 نے خبر پا کر ایسی آگ برساتی کہ  
 بہت بادشاہی آدمی مارے گئے  
 درمیان میں ہو گیا سعد اللہ خاں  
 نے راجہ سے کہلا بھیجا کہ اگرچہ  
 بغیر حکم کے ایسی جرات کرنا بیجا  
 تھا مگر اب وہیں جنگل کے درختوں  
 کی آگ لیکر جے ہو ورنہ قلعہ اسے  
 زیادہ شہوت ہو جائیگا اس طرح  
 بمشکل تمام بہت جانیں ضائع  
 ہونے کے بعد قلعہ کا محاصرہ ختم ہوا

### دربار کا حال

جب بادشاہ کا کوہِ حسن پر  
 سے بہار شاہ عباس لپٹی شاہزادی  
 ایک کے ساتھ

دربار کا حال  
 جب بادشاہ کا کوہِ حسن پر  
 سے بہار شاہ عباس لپٹی شاہزادی  
 ایک کے ساتھ

पहुंचने की खबर आई बादशाह ने  
 उसको लगाने को गुर्जरदार ने जा-  
 बादशाह बैसारबसुदिह को नी  
 लाबसे उतरे और ४ कूच में विशेषर  
 पहुंचे वहां बाग फरहबर शके सु  
 काम पर शाह बैगनी आपहुंचा मग  
 र बादशाह ने उसको अपने रुब रू  
 जुलाया और शयस्त रवां वजाफ  
 र रवां से फरमाया कि उसको अपने  
 डैरे में ठहराकर उसके पास से रवली  
 ता तो नहीं लेवे और हमारी तरफ  
 से कहें कि हमने शाह ईरान की पुश  
 तेनी देसती पर जरो सा करके अप  
 ने १ खवास को कंधार के किले में  
 रख छोड़ा था अगर यह जानते कि  
 उनकी तरफ से ऐसी हरकत होगी  
 तो १ तजरु बेकार जंगी अमीर को  
 रखते जो जीते जी किले को न छोड  
 ता अव इस उमेद के खिलाफ कर  
 त्त के बदले का नी और लंचान  
 ही देना चाहिये पहिले शाह कुली  
 के आने की खबर आई थी फिर शा  
 ह के कंधार पहुंचने की खबर आई  
 तो शाह कुली को लाहोर में रखने  
 का हुक्म दिया गया गरज न इस

पहुंचने की खबर पहुंची बादशाह  
 ओं के लांको गुरजरदार भेजा-  
 बादशाह ने तारख हर रस  
 को निलाले भेज दिया और जार को च  
 पेशावर पहुंचे बाग फरख अफ  
 में शाह बैग को मिल पान के जब  
 जार में ईरान ने फंदार से  
 को च करने के बाद भी जाता  
 आया मगर बादशाह ने अपने रوبر  
 भलाया और शायسته खान  
 को फरमाया कि उसने एक मजल  
 के अंस पास से नामे न  
 लीं और हमारी तरफ से  
 कि शाह ईरान की मूर्तों को  
 पे नजर करके अपने एक  
 फंदार के किले में रखे  
 त्हा अगर भी जाने कि  
 इसी حرکت होगी तो  
 جنگی امیر को कंधार  
 کی حفاظت نہ چھوڑنا اس  
 عمل کے بارے میں  
 شاہ قلی کی خبر  
 کے فندہ پہنچنے کی  
 شاہ قلی کو لاہور میں  
 دیا گیا غرض جب اس طرح

ترہدوسہ سہری کا چشما گدلا ہوگا  
یا تو رات اور رات کی لکڑی کے چنے میں  
کھانا مٹا ہے۔

چشمہ الفت غبار کدوست بہر گیا  
نواہ اور بلجی پہنچے ہیں کیا  
لطف ہے۔

فیر فرمایا کہ شاہ و رات کے  
گسے کہہ دو کہ جلالا باد میں جا  
کر ٹہرے کا بول پھونک کر ہم کو  
دینوں کی لکڑی کے چنے کے ساتھ۔

پہر فرمایا کہ شاہ و رات کے  
سے کہہ دو کہ جلالا باد میں جا کر  
ٹہرے کا بول پھونک کر ہم کو  
دینوں کی لکڑی کے چنے کے ساتھ۔

رور و سہری کے گسے اور شاہ و رات کے  
کیت کلتی کا حال سن کر ۱۷۰۷ھ  
جس کو دینا یث فرمایا۔

کر شہ و رات کے گسے اور شاہ و رات کے  
عشرت کا حال سن کر دس ہزار  
روپیہ عنایت فرمائے۔

شاہ و رات کے گسے اور شاہ و رات کے  
ر وانی ہو گیا تھا اس منزل میں  
بواہ اور بلجی کا بول پھونک کر ہم کو  
دینوں کی لکڑی کے چنے کے ساتھ۔

بادشاہ نے ارادہ دارا شکوہ جو  
روانی ہو گیا تھا اس منزل میں  
بواہ اور بلجی کا بول پھونک کر ہم کو  
دینوں کی لکڑی کے چنے کے ساتھ۔

بادشاہ نے ارادہ دارا شکوہ جو  
ر وانی ہو گیا تھا اس منزل میں  
بواہ اور بلجی کا بول پھونک کر ہم کو  
دینوں کی لکڑی کے چنے کے ساتھ۔

شروع جمادی الاول میں  
بادشاہ کا بول پھونک کر ہم کو  
دینوں کی لکڑی کے چنے کے ساتھ۔

بادشاہ نے ارادہ دارا شکوہ جو  
ر وانی ہو گیا تھا اس منزل میں  
بواہ اور بلجی کا بول پھونک کر ہم کو  
دینوں کی لکڑی کے چنے کے ساتھ۔

بادشاہ نے ارادہ دارا شکوہ جو  
ر وانی ہو گیا تھا اس منزل میں  
بواہ اور بلجی کا بول پھونک کر ہم کو  
دینوں کی لکڑی کے چنے کے ساتھ۔

جس کو اسکا وکیل مراد لیکر آیا اسکے ساتھ یادگار رہا جہاں بھی تھا

نذر محمد خاں کے بیٹے سبجان قلی خاں شیخ بیگ علی قطخان اور محمد بیگ بیچارہ وغیرہ بانیوں کو قتل کر کے ان کے سر نذر محمد خاں کے پاس بھیجے تھے وہ بھی نذر محمد خاں نے با ظہار اخلاص واسطے ملاحظہ بادشاہ کے شانہ و ذہن ملا شکوہ پاس بھیج دیے اور اب چونکہ کتب اور خشتان میں نذر محمد خاں کا بستر قبضہ ہو گیا تھا اس لئے اس کے بیٹے فرزندوں و متعلقوں کو بادشاہ سے طلب کیا اور کچھ خرچہ بھی نکھوایا غور جہاں دہلی کے ۲۲ والوں جنوی سال شروع ہوا جس کے بارے میں بادشاہ نے نذر محمد خاں کے بیٹے عبد اللہ حسن سلطان خلعت جینو خیر و شمشیر معہ ساز و سامان سب سے بڑا روپیہ عینیت فرما کر شیخ و بیانی خست دی و شانہ و ذہن ملا شکوہ سے بھی جہاں دہلی کی تربیت کرتا تھا

نجر محمد خاں کے بیٹے سبجان قلی خاں شیخ بیگ علی قطخان اور محمد بیگ بیچارہ وغیرہ بانیوں کو قتل کر کے ان کے سر نذر محمد خاں کے پاس بھیجے تھے وہ بھی نذر محمد خاں نے با ظہار اخلاص واسطے ملاحظہ بادشاہ کے شانہ و ذہن ملا شکوہ پاس بھیج دیے اور اب چونکہ کتب اور خشتان میں نذر محمد خاں کا بستر قبضہ ہو گیا تھا اس لئے اس کے بیٹے فرزندوں و متعلقوں کو بادشاہ سے طلب کیا اور کچھ خرچہ بھی نکھوایا غور جہاں دہلی کے ۲۲ والوں جنوی سال شروع ہوا جس کے بارے میں بادشاہ نے نذر محمد خاں کے بیٹے عبد اللہ حسن سلطان خلعت جینو خیر و شمشیر معہ ساز و سامان سب سے بڑا روپیہ عینیت فرما کر شیخ و بیانی خست دی و شانہ و ذہن ملا شکوہ سے بھی جہاں دہلی کی تربیت کرتا تھا

جس کو اسکا وکیل مراد لیکر آیا اسکے ساتھ یادگار رہا جہاں بھی تھا

نذر محمد خاں کے بیٹے سبجان قلی خاں شیخ بیگ علی قطخان اور محمد بیگ بیچارہ وغیرہ بانیوں کو قتل کر کے ان کے سر نذر محمد خاں کے پاس بھیجے تھے وہ بھی نذر محمد خاں نے با ظہار اخلاص واسطے ملاحظہ بادشاہ کے شانہ و ذہن ملا شکوہ پاس بھیج دیے اور اب چونکہ کتب اور خشتان میں نذر محمد خاں کا بستر قبضہ ہو گیا تھا اس لئے اس کے بیٹے فرزندوں و متعلقوں کو بادشاہ سے طلب کیا اور کچھ خرچہ بھی نکھوایا غور جہاں دہلی کے ۲۲ والوں جنوی سال شروع ہوا جس کے بارے میں بادشاہ نے نذر محمد خاں کے بیٹے عبد اللہ حسن سلطان خلعت جینو خیر و شمشیر معہ ساز و سامان سب سے بڑا روپیہ عینیت فرما کر شیخ و بیانی خست دی و شانہ و ذہن ملا شکوہ سے بھی جہاں دہلی کی تربیت کرتا تھا

दरगशिकोहनेजीवादशाहकेहुकमसे  
दियेक्योंकिअबदुलरहमानकीसं  
जालउसकेजिमेकीगईथी-

नजरमोहम्मदखांको१००००० तो  
पहिलेकाबुलकेखजानेसेइनायत  
हुवेथेऔर१०००००अबफिरउसके  
वास्तेऔर५००००जडाऊतलवारसमे  
तसुबहानकुलीखांकेवास्तेअबदु  
लरहमानसुलतानकेहाथनेजेगये

दूसरेअसादकीसुदि३कोनजर  
मोहम्मदखांकीऔरतेऔरबेटियां  
जीलाहोरसेकाबुलमेंपहुंचगई  
थीबलखकोरवानेहुईउनकीजीक  
ईलारखरुपयेकीनकदीऔरजिनस  
इनायतहुईइनबेगमोंकोअबतक  
३लारखरुपया मदद खरचकामिल  
चुकायाऔरजोवादशाहीबेगमोंने  
दियाथावहइसकेअजानेथा नजर  
मोहम्मदखांकेवास्तेइनकेसाथजी  
१लारखरुपयाऔर१हाथीनेजागया-  
येलोग२बरसऔर१०महीनेके  
करीबहिन्दुस्तानमेंरहेथे-

नजरमोहम्मदखांके२बड़ेबेटेसु  
सरोसुलतानऔरबहरामसुलता  
नहिन्दुस्तानकेमजेनछोडसकेऔर

मोहम्मदखांकोअबदुलरहमानके  
दियेक्योंकिअबदुलरहमानकीसं  
जालउसकेजिमेकीगईथी-

नजरमोहम्मदखांको१००००० तो  
पहिलेकाबुलकेखजानेसेइनायत  
हुवेथेऔर१०००००अबफिरउसके  
वास्तेऔर५००००जडाऊतलवारसमे  
तसुबहानकुलीखांकेवास्तेअबदु  
लरहमानसुलतानकेहाथनेजेगये  
दूसरेअसादकीसुदि३कोनजर  
मोहम्मदखांकीऔरतेऔरबेटियां  
जीलाहोरसेकाबुलमेंपहुंचगई  
थीबलखकोरवानेहुईउनकीजीक  
ईलारखरुपयेकीनकदीऔरजिनस  
इनायतहुईइनबेगमोंकोअबतक  
३लारखरुपया मदद खरचकामिल  
चुकायाऔरजोवादशाहीबेगमोंने  
दियाथावहइसकेअजानेथा नजर  
मोहम्मदखांकेवास्तेइनकेसाथजी  
१लारखरुपयाऔर१हाथीनेजागया-  
येलोग२बरसऔर१०महीनेके  
करीबहिन्दुस्तानमेंरहेथे-



بادشاہی نوکری پر راجی ہو کر بول  
رکھ کو نہیں گئے =

### کंधार کی موہिम

دوسرے افسار کی بدلی کو سا دھڑا  
رکھ نے شاہجہاں سے کہا کہ قلعہ دار  
نے مگر رستہ سے رکنے اور بے سکرانے  
در باجی کو آج تک بند نہیں کیا  
ہے اس بات سے اپنے لشکر کی سہ  
سہتی اور بے خبری ظاہر ہوتی ہے۔

شاہجہاں دوسرے دن قلعہ کی طرف  
بڑا قلعہ والوں نے مارے تو پوچھے  
تو پوچھے کہ قلعہ والوں نے مارے  
کیوں نہیں کیڑے ہوئے قلعہ دار  
نے کچھ دین پوچھے ۵-۶ سالہ لڑکے  
بھاگ کر ۲۲ گز جہاں سے وہی اور  
قلعہ کی رستہ سے رکنے اور بے سکرانے  
در باجی کو آج تک بند نہیں کیا  
ہے اس بات سے اپنے لشکر کی سہ  
سہتی اور بے خبری ظاہر ہوتی ہے۔

اس طرح بادشاہی لشکر نے  
کو شش اور چالیس سال میں  
کوئی نہ کی مگر قلعہ گری  
کا مصالحہ بالکل تباہ  
نہ ہوا

اور صاحب مناسب بر راضی  
ہو کر بند و ستائیں رہ گئے  
قندھار کی موہیم  
۱۶۵۷ء جمادی الثانی کو سعد  
خال بادشاہ سے کہا کہ قلعہ دار  
نے دیر سے آج تک بند نہیں کیا  
۱۶۵۷ء فرسین دروازوں بند  
نہیں کیا ہے اس بات سے بادشاہی  
لشکر کی سہتی بے خبری اور قلعہ دار  
کی خیر چشمی پر عمل ہوتا ہے  
شاہزادہ دوسرے دن قلعہ  
کی طرف بڑا قلعہ والوں نے مارے  
تو پوچھے کہ قلعہ والوں نے مارے  
کیوں نہیں کیڑے ہوئے قلعہ دار  
نے کچھ دین پوچھے ۵-۶ سالہ لڑکے  
بھاگ کر ۲۲ گز جہاں سے وہی اور  
قلعہ کی رستہ سے رکنے اور بے سکرانے  
در باجی کو آج تک بند نہیں کیا  
ہے اس بات سے اپنے لشکر کی سہ  
سہتی اور بے خبری ظاہر ہوتی ہے۔

जडिकामोसमजीआगयाथाइस  
 लिथेलौटचलनेकीसजाहहरी  
 मगरइतनेहीमेंखबरपहुंचीकि क  
 जलबाशोंके ३०००० सवारतुरतिजा  
 कुलीखवांगेरा ३१बडे २अमीरोंकी  
 अफसरोंमेंचलेआतेहैं शाहजादे  
 नेयहसुनकरसावणसुद १४ कोरुस्त  
 तमखवा औरकुलीखवांगेराकोउ  
 नकेसुकाविलेपरचेजाबड़ीघमसा  
 नलडाईहुईदोनोतरफसेखूबको  
 शिशऔरमरदानगीदिरवलाईग  
 ईआखिरकोबादशाहीआदमीए  
 कदमसेहल्लाकरकेदुशमनोंपरज  
 गिरेऔरबहादुरीसेउनकोचगा  
 कबडेरोंकीतरफलौटेदूसरेदिन  
 शाहजादेकेपासपहुंचेशाहजादा  
 इसफतहकीकंधारकीफतहसेबढ़  
 करसमझकरपीछालौटाऔरकं  
 धारकीफतहकोअगलेसालपर  
 छोड़आया-+

तवारीखमुन्तरिवजलजुबाबमें  
 लिखाहै किघेरेकेपीछे ९ तरफसे  
 सादुघनाखवानेऔरदूसरीतरफसे  
 रुस्तमखवाऔरकासमखवांगेराने  
 यहहाजमुत्तज्जाहिदकेबादशाह  
 नामसेलिखागयाहै-

औरदुसरेसाथहीफरिबपहुंचा  
 नहासलेमصلحتوقتमें  
 مراجعت کی صلاح پٹری  
 لتے ہی میں خبر پہنچی کہ  
 قہر باشوں کے تیس ہزار سوار  
 مرتضیٰ قلیخان تورجی باسی  
 وغیرہ ۳۱ برسے بڑے امیر  
 کی فہرست میں چلے آتے ہیں  
 شانزادہ نے یہ سنکر دشمنانہ  
 کورستم خان قلیح خان وغیرہ  
 کو دیکھے مقابلہ پر بھیجا بڑی  
 سخت لڑائی ہوئی دونوں طرف  
 سے خوب کوشش و محنت  
 ظہور میں آئی لیکن آخر کو بادشاہ  
 آدمی کیبارگی دشمنوںپر حملہ آور  
 ہوا اور جلالت مرزا اور کو شکست  
 پہنچانے و منصوبانہ خیموں کو لے کر  
 شانزادہ کی خدمت میں پہنچا شانزادہ  
 اس فتح کو قندہار کی فتح سے بڑھ کر  
 محبت مرا قرار دیا اور قندہار کو سال بند  
 آیا۔ تواریخ منتخب للباب میں لکھا کہ  
 کہ بعد محاصره قندہار کی بطریق السد  
 خاں اور دوسری طرف کورستم خان  
 وقاسم خان وغیرہ نے سوزے

حال ملالہ کہ بادشاہ مسعود  
 نے یہ لکھا ہے

قلعہ کے پاس تک بڑا ہوا اور  
 سیرنگیں بھی خندق تک پہنچا کر  
 لیکن انہیں قلعہ اور محرابوں  
 کی ہوشیاری اور تجربہ کاری سے  
 جس نے ہم کی لڑائیوں میں فتح جنگ  
 اور قلعہ دہری کی تھی کچھ پیش نہ  
 گئی وہ قلعہ میں رات دن رہا کرتے  
 گولے اور گولیاں برساتا تھا کہ وہ  
 کو مورچوں پر کی فرصت نہ دیتا  
 تھا اور اکثر سرنگوں کو بھی مار دیتا  
 کے اور ادبیتا تھا اور ہر سے جو حملے  
 کے جانتے تھے وہ نہیں بھی ہڑا رہا  
 کے سرور سپاہیوں کے بدن  
 خندق کی پہرہ بھی بہرے میں  
 کام آئے تھے تو بھی  
 کچھ کام نہیں نکلتا تھا  
 تو انہی کو کچھ کام نہ ہی نیکل لیتا تھا۔

اوپر سے جو قبلاش لڑتے  
 کو باہر نکلتے تھے تو بھی بڑی  
 بڑی لڑائیاں ہوتی تھیں جو  
 قیدی دیکھ کر ہاتھ لگتے تھے اور انکو  
 وہ قلعہ میں لیجا تھے اور جو بادشاہ  
 لڑ کر ہاتھ آتے تھے اور انکو وہ  
 انکو دیکھ نہیں آتے

کھیلے کے پاس تک بڑا ہوا اور  
 سیرنگیں بھی خندق تک پہنچا کر  
 لیکن انہیں قلعہ اور محرابوں  
 کی ہوشیاری اور تجربہ کاری سے  
 جس نے ہم کی لڑائیوں میں فتح جنگ  
 اور قلعہ دہری کی تھی کچھ پیش نہ  
 گئی وہ قلعہ میں رات دن رہا کرتے  
 گولے اور گولیاں برساتا تھا کہ وہ  
 کو مورچوں پر کی فرصت نہ دیتا  
 تھا اور اکثر سرنگوں کو بھی مار دیتا  
 کے اور ادبیتا تھا اور ہر سے جو حملے  
 کے جانتے تھے وہ نہیں بھی ہڑا رہا  
 کے سرور سپاہیوں کے بدن  
 خندق کی پہرہ بھی بہرے میں  
 کام آئے تھے تو بھی  
 کچھ کام نہیں نکلتا تھا  
 تو انہی کو کچھ کام نہ ہی نیکل لیتا تھا۔

اوپر سے جو قبلاش لڑتے  
 کو باہر نکلتے تھے تو بھی بڑی  
 بڑی لڑائیاں ہوتی تھیں جو  
 قیدی دیکھ کر ہاتھ لگتے تھے اور انکو  
 وہ قلعہ میں لیجا تھے اور جو بادشاہ  
 لڑ کر ہاتھ آتے تھے اور انکو وہ  
 انکو دیکھ نہیں آتے



२३. चर जितने कुछ ला सका ले कर श  
 हजादे के पास हाजिर हुआ और सब  
 ने उसकी इस बहादुरी की बड़ी तारीफ की  
 दूसरे दिन तडके ही रवबर पहुंची  
 कि ३०००० सवार कुली चारों ओर  
 नजर आली रवां हा किम अर्द बेल  
 गली कुली रवां और मुरतजारवां  
 वगेरा कई अमीरों की आफसरी में  
 बहुत करीब पहुंच गये हैं इधर से  
 रुस्तम रवां और कुली चरवां वगे  
 रा कई अमीर दस हजार सवार और  
 बहुत सा तोपरवाना लेकर उनके  
 मुकाबिले पर गये जों ही घन की फौ  
 ज नजर आई सैयदे पठानों मुगलों  
 और राजपूतों ने घेड़े उठाये ईरानी  
 ठहर गये मगर जब इधर से गोलें  
 रवान चलने लगे तो उन्होंने ३ तर  
 फ से हद्दा कर के हिन्दुस्तानियों के  
 ऊपर हमला किया और कई बार अ  
 मने सामने की फौज को हटा दिया  
 मगर रुस्तम रवां कुली चरवां और  
 बहादुर राजों ने मस्त हाथियों को अ  
 गेर रवकर और अपनी सवारी के  
 हाथियों के पावों में जंजीरें डाल कर



دربار کا حال

دوسرے آستانہ کی سudi ۱۰ کو کंधार  
के अखवार से मालूम हुआ कि वहा  
दुरवां पवान मर गया बादशाह ने उ  
सके हवेली में से बड़े दिलावर को ह  
जारी जात का मनसब दिया और व  
कियों की नी परवरिश की-

नादों सुदि २ को बादशाह का बुलसे  
हिन्दुस्तान को रवाने हुवे और शाह  
जादे दाराशिको हको औरंगजेब  
के पहुँचने तक का बुल में रहने का  
हुक्म दे गये-

नादों सुदि ५ को बादशाही लश्कर  
के ईरानियों पर फतह पाने की खबर  
रपहुँची बादशाह ने खुश होकर शा  
हजादे औरंगजेब और अकसर अ  
मीरों को जिन्होंने उस लड़ाई में अ  
च्छा काम दिया था इजाफे और इना  
म से सरबलंद किया-

अन्तरि वज्रजलु बाव में लिखा है कि  
जब पहिली फतह की खबर बादशाह  
के पास पहुँची तो उन्होंने फिर शाहपर  
दीवेग ईरान के वकील से कहलाया कि  
बड़े शाह अस्त १० वरस तक हमारे साथ

۱. رجب کو واقعات قندار  
۲. سے معلوم ہوا کہ بہادر خان  
افغان مرگیا بادشاہ نے اس کے  
۳. بیٹوں میں سے بڑے دلاور کو  
۴. ہزاری ذات کا منصب دیا  
۵. اور باقی کی سبھی پرورش کی۔ و  
۶. صلح شعبان کو بادشاہ کا بل  
۷. سے ہندوستان کو روانہ ہوئے  
۸. اور شاہزادہ داراشکوہ کو اوند تک پہنچنے  
۹. کے پہونچنے تک کابل میں رہنے  
کا حکم دے گئے۔

۱۰. اور عثمان کو بادشاہی لشکر  
۱۱. کے ایرانوں پر فتح پانے کی خبر  
۱۲. پہونچی بادشاہ نے خوش ہو کر  
۱۳. شاہزادہ اورنگ زیب اور  
۱۴. اکثر امیروں کو جنہوں نے اس  
۱۵. جنگ میں اتھار ترود و جلازیر  
۱۶. کیا تھا ان کو انعام و عطا کیے  
۱۷. منتخب المہاب میں لکھا ہے  
۱۸. کہ جب پہلی فتح کی خبر بادشاہ  
۱۹. کے پاس پہونچی تو انہوں نے دوبارہ  
۲۰. وکیلان سے کہہ دیا کہ جس  
۲۱. سب سے سب سے تمہارا دوست

मोहबत रव ते थे उनके पीछे जो उ  
 मेहम उनके खानदान से रव ते थे  
 इस साल उसके खिलाफ जहर में  
 आया अब हम नी जो हम से हो स  
 केगा कमी नहीं करेंगे और १००००  
 रनायत कर के उसको गुर्जबरदार  
 के साथ शहाजादे औरंगजेब के पा  
 सरवाने किया और शहाजादे को  
 लिरवा कि वह नी इसी तरह गुर्जबर  
 को साथ कर के शहा के पास पहुंचा दे  
 लशकर पर जो कुछ मिहनत और  
 रत कलीफ कंधार के घेरे में गुजरता  
 थी और जिससे कुछ मतलब नही  
 निकलता था उसकी लगातार रव  
 रंदाद शहा ने सुन कर जान लिया  
 कि घेरा जियादा दिनों तक रहने फूट  
 ज के तबाह होने के सिवाय और कु  
 छ काम नही निकलेगा इसलिये  
 शहाजादे को लिरवा कि अब मस  
 लिहत वक्त यही है कि कंधार क  
 फतह कर ना दूसरे साल पर मोहफ  
 र रव कर किले के नीचे से उठ आओ  
 और शहाजादे दरगशि को इसे फरम  
 या कि औरंगजेब के गुजनी पहुंचने  
 को गुज आने तक तुम काबुल में

محبت رکھے تھے اور ان کے بعد جو امید  
 ہو کہ اور ان کے خاندان سے تھی اس  
 سال اور ان کے خلاف ظہور میں آیا  
 اب ہم بھی جو سے ہو سکیگا اور  
 کرینگے۔ پھر دستل ہزار روپیہ  
 عایت کر کے اور سکو گرز بر دار  
 کے ساتھ شاہزادہ اورنگ  
 زیب کے پاس روانہ کیا اور شاہزادہ  
 کو لکھا کہ وہ بھی اس طرح گرز بر دار ساتھ  
 رکے شاہ کے پاس پہنچا دے  
 شکریہ جو کچھ سختی اور  
 تکلیف قندہار کے محاصرہ میں  
 ندرنی تھی اور جس سے کچھ فائدہ  
 نہ نکلا تھا اور اسکی خبر میں بادشاہ  
 نے متواتر سنکر جان بیا کہ محاصرہ  
 کے طول پکڑنے میں سوا سے  
 ضایع ہونے سپاہ کے اور  
 کچھ نتیجہ مرتب نہ ہوگا اسلئے شاہزادہ  
 کو لکھا کہ اب بنظر مصلحت وقت  
 قندہار کا فتح کرنا سال دیگر پر تو  
 رکھ کر قلعہ کے نیچے سے اوٹھ  
 آؤ گے اور بادشاہزادہ داراشکوہ  
 سے فرمایا کہ اورنگ زیب  
 کے ساتھ پہنچا دے



رہنا اور آپنا دہوں سیدی میں ہیندوستان کی تر فرمانے دے مگر-  
 مہلی میں جیل میں بادشاہ کی لاش کے  
 سے کچلوا شہ کے شاکستہ ربا کر  
 ناگ جانے کی ربا ربا آئی اس سے باد-  
 شاہ کو بھڑکے ہوئے ہوئے کہیں کہیں  
 کو بھڑکے ہوئے ہوئے ہوئے ہوئے  
 کے پھونکنے ہی ۳۰ دن تک شادیان  
 جانے کا دھم دیا سا دھم دیا  
 ربا ربا اور کولی چر رہے  
 ربا ربا اور کولی چر رہے  
 ربا ربا اور کولی چر رہے  
 ربا ربا اور کولی چر رہے

### کندھار کا حال۔

شاہجہان اورنگ زیب کا بادشاہ کا  
 دھم پھونکنے پر ۸ مہینے کا  
 ربا ربا کے جبکہ ۲۰۰۰ ہزار  
 دمی اور ۸-۹ ہزار جانور تل  
 فہو بھوکے تھے کیلئے کے  
 کربا بادشاہ کی ربا ربا میں

### دربار کا حال۔

آسیان بادی ۱۱ کو بادشاہ  
 شہر میں پھونکنے کا  
 اور وہاں سے چل کر آسیان  
 ۱۳ کو ہمسایہ آباد میں  
 کادی ۹ کو لاہور میں

رہے اور آپ اوایل رمضان  
 کا بل سے لاہور کو روانہ ہوئے  
 جون ہی منزل اول میں پہنچے  
 قزلباشوں کے بادشاہی لشکر  
 سے مغلوب ہو کر بھاگ جانے  
 کی خبر آئی اس سے  
 بادشاہ کو بہت خوشی  
 ہوئی کیونکہ انکو بہت تشویش  
 تھی اور تین روز تک شادیان  
 بجانے کا حکم دیا سعد الدخان  
 رستم خان اور قلیچ خان وغیرہ تمام  
 امیروں کے منصب میں اضافہ کیا۔

### قندھار کا حال

شاہزادہ اورنگ زیب کا بادشاہ  
 کا حکم جو پہنچے پر ۸ مہینے  
 قندھار کے کہ دو تین ہزار آدمی اور  
 ہزار پانچ ہزار جانور تلف ہو چکے  
 تھے قلعہ کے نیچے سے اور ٹھکانے  
 کی خدمت میں رہا ہوا۔

### دربار کا حال

۲۴ رمضان کو بادشاہ  
 ہیشو رہیو نیکر باغ تھیں  
 میں فساد کش ہوئے  
 ۲۶ جون بادل کر باغ میں ٹھہرے  
 ۲۷ جولائی کو لاہور میں داخل ہوئے

سواں چاندین میں کابل سے آیا۔

کاتیک سید کو شاہ جہاں دادا دیا۔

شیکوہ اپنے بے سولہ مان شیکوہ

سمت ہاجر آیا۔

مگسرسو دی ۷ کو اورنگزب

نے بے سولہ مہم سلطان محمد اور

ماتینا تیلوں کے مہم قندار سے

ہم سے ہاجر آیا کسے رے خٹا

کے تو پے اور نیشن کج لہا شے

کے لہی نے بے بادشاہ کے نجر کی

بے بادشاہ نے اس کو بھڑت شاہ

شہیدی اور اکسر امیروں کو

جہاں کے نام اور ریتا بے رے

شاہ جہاں بادشاہ کا سچہ دار

کرم ترے جس نے اپنی عمر وہاں

کے ہمارے کے تمام کرنے

رے کی پھر گیا بادشاہ نے

سکی جہاں فرے کو ہزار

وار دے اس کے جہاں سے کسے

سولہ تان کا سوا تو پہلے سے

اورنگزب کے پاس تھا اور

رے تان کا اور سرکار نکر

سواں چاندین میں اس کو دیا

مگسرسو دی ۱۸ کو بادشاہ نے

سید اللہ خان نے کابل سے

اکثر روز میں حاضر ہو کر ملازمت

کی وادی قند کو شانہ ارشد کو

پہلے سید سلیمان شکوہ حاضر آیا۔

۵ ذی الحجہ کو شانہ ارشد ونگ

نے سولہ پے سلطان محمد اور

تمام تعیناتوں کے مہم قندار سے

اکثر ملازمت کی اکثر امیر تمام خطا

اور اضافہ منصب ہر فرزند ہو

رستم خان نے جو کئی مہین

اور شان قزلباشوں کے چہ

تھے وہ نذر کر کے صدر کج

آفرین ہوا۔

شاہ جہاں آباد کا صوبہ

خان جس نے اپنی عمر وہاں

عمارتوں کے تمام کرنے

مین صرف کی تھی مر گیا بادشاہ

نے اس کی جگہ جعفر خان مقرر کیا اور

اس کو منصب میں لکھنؤ سوار و سپہ

کا اضافہ فرمایا

صوبہ ملتان پہلے اورنگزب کے متعلق

ہو چکا تھا اب شہرہ کج اور سولہ

پہلے و سکو محنت ہوئے

۱۲ ذی الحجہ کو بادشاہ نے

شاہجہان آباد کی طرف کیا  
علیمردان خان کو جو کابل  
سے حاضر آیا ہنہا کشمیر کی یہی  
صوبہ داری ملی اور حکم ہوا کہ خود  
نوکابل کو جاوے اور عبدالغنی  
کو اپنا نائب مقرر کر کے  
کشمیر میں بھیج دے۔

۲۸واہر س

پوسسودیر سنہ ۱۶۰۵ء سے =

پوسسودیر سنہ ۱۶۰۷ء تک

پوسسودیر ۱۲ کو بادشاہ شاہجہان

ہانا آباد کے قلعہ میں دارالخلافہ

وہی دن شاہجہان پورا دہلی میں

نہی دکن سے آیا کیونکہ گلی بڑی ہو

اور سکے مزاج کو موافق نہیں

آئی تھی اور وہاں کا ہندو

یہی چھی طرح سے قائم ہوا تھا

بادشاہ نے شاہزادہ میراد

منصب میں دو ہزاری ذات

اضافہ کر کے اسکا منصب

ہزارہی ذات اور دس ہزار

دوا سید کو سپاہی کر دیا اور

۲۵ محرم نو کابل کی صوبہ داری

پر رخصت کیا

شاہزادہ داراشکوہ جو

شاہجہان آباد کی طرف کیا  
علیمردان خان کو جو کابل  
سے حاضر آیا ہنہا کشمیر کی یہی  
صوبہ داری ملی اور حکم ہوا کہ خود  
نوکابل کو جاوے اور عبدالغنی  
کو اپنا نائب مقرر کر کے  
کشمیر میں بھیج دے۔

چو بیوان برس

سنہ ۱۶۰۷ء

۲۶ دسمبر سنہ ۱۶۰۹ء اور ۱۶۱۰ء

۱۱ محرم کو بادشاہ قلعہ شاہ

جہان باد میں داخل ہوئے

اور سیدان شاہزادہ مراد بخش

بھی دکن سے آیا کیونکہ گلی بڑی ہو

اور سکے مزاج کو موافق نہیں

آئی تھی اور وہاں کا ہندو

یہی چھی طرح سے قائم ہوا تھا

بادشاہ نے شاہزادہ میراد

منصب میں دو ہزاری ذات

اضافہ کر کے اسکا منصب

ہزارہی ذات اور دس ہزار

دوا سید کو سپاہی کر دیا اور

۲۵ محرم نو کابل کی صوبہ داری

پر رخصت کیا

شاہزادہ داراشکوہ جو



हाजिर होकर अपने बनाये हुवे नीत  
जो बादशाह के नाम पर बनाये थे सु  
नाये बादशाह ने उसको खिलना  
और १०००० देकर अपनी सरकार में  
नोकर रख लिया -

इसी दिन बादशाह ने मेवातियों  
को सजा देने के वास्ते जिन्होंने आ  
गे और दिल्ली के बीच में के गांवों  
को लूट कर ऊजड़ कर दिया था -  
राजा जयसिंह के दूसरे बेटे की रत  
सिंह को सुकर कर के कामा पहा  
ड़ी का परगना बतन बनाने के वा  
स्ते उसकी जागीर में इनायत किया

इसी दिन सादुल्ला खां वजीर  
के पेशकार रुधनाथ की जयाक  
त और कारगुजारी पसंद कर के  
राय का खिताब तन दिवानी का  
काम और सोने का कलम दान  
इनायत किया -

बृहस्पतवार की पेशकश  
जतक ताहर खां के इनाम में सु  
कर हुई -

जेठ सुदि को २५ बाबरस बादशाह  
के जलसी सन का खुल्लु -  
बादशाह ने खाजा का सिम को

हाजिर होकर अपनी तस्वيف जो बादशाह के  
नाम खजाने की काय्या बादशाह ने  
खुश होकर خلعت और दस हजार  
रुपये نقد ओसक दिया और अपनी सरकार  
में नोकर रख लिया -

असिदन बादशाह -  
की सजा दी की वास्ते के जेहनों ने  
मواضعत दरिया की अक्रा बादशाह  
शाह جهان आबाद को लूट मारने  
द्वारा क्रूराना खाजा जेहिने के  
दुसरे बेटे की रत सिंह को  
मदद कर के कामा पहाड़ी का  
परगना बनाने के वास्ते उसकी  
जागीर में इनायत किया

असिदन बादशाह -  
खान वजीर के पेशकार रुधनाथ की  
जयाकत और कारगुजारी पसंद कर के  
राय का खिताब तन दिवानी का  
काम और सोने का कलम दान  
इनायत किया -

बृहस्पतवार की पेशकश  
जतक ताहर खां के इनाम में सु  
कर हुई -

जेठ सुदि को २५ बाबरस बादशाह  
के जलसी सन का खुल्लु -  
बादशाह ने खाजा का सिम को

५१

खत और १ लाख रुपये के जवाहर  
देकर नजर मोहम्मद रवां के पास  
जेजा और १००० खान के छोटे बेटे  
अबदुल रहमान सुलतान के वा-  
स्ते नीचे -

असाद सुदि ४ को नजर मोहम्मद  
दरवां का वकील मंनकर वरत ले  
कर आया जिसमें मदद मिलने के  
वास्ते लिखा था -

सावन सुदि ७ को मीर साहब  
शानवी समर गया बादशाह ने उस  
की जगह कितावरवां ने की दरोगाई  
सैयद जलाल के बेटे सयद अली  
को इनायत की -

चादों व दि ३ को बादशाह ने फरा  
सदरवां नाजिर को मक्के जाने की रुख  
सत देकर हुक्म दिया कि १५०००  
वहां के कंगालों के वास्ते अहमद  
बाद के खजाने से लेता जावे -

की रत सिंघने चार पांच हजार  
सवार और छः सात हजार बंदूक  
ची और तीरंदाज नोकर रखकर  
मेवातियों को मारा और खन के औ-  
रत बच्चों के दंकर के बाकियों को  
निकाला और अपने जाहलियों को

मेवातियों को भी लूट कर  
रुपये नजर मोहम्मद रवां के पास  
जेजा और १००० खान के छोटे बेटे  
अबदुल रहमान सुलतान के वा-  
स्ते नीचे -

अजब को नजर मोहम्मद रवां का  
सुपर मंकर बने खं से मंकर  
ले कर हाजिर आया जसमिन खान  
वास्ते मंकर के लिखा था  
शेखान को मंकर मंकर  
मंकर मंकर से मंकर खान  
की दारुखली सैयद जलाल के बेटे  
सैयद अली को मंकर  
होई -

१५ अश्वमान को बादशाह ने  
खान को मंकर और मंकर के  
दिकर मंकर मंकर मंकर  
खान को मंकर मंकर मंकर  
वास्ते लेता जावे -

की रत सिंघने चार पांच हजार  
सवार और छः सात हजार बंदूक  
ची और तीरंदाज नोकर रखकर  
मेवातियों को मारा और खन के औ-  
रत बच्चों के दंकर के बाकियों को  
निकाला और अपने जाहलियों को

وہاں واما دیا جس سے دیہی اور  
آمر کی تاجہ میں امن چہن ہو  
یا اور بادشاہ نے خوش ہو کر اس  
کے من سب میں ۱۰۰۰ سواروں کا راجا  
فرمایا۔

اب بادشاہ کی عمر ۶۰ برس  
کی ہو گئی تھی اس واسطے مولویوں  
نے فتوا دیا کہ اگر بادشاہ صیقل  
سے روزہ نہ رکھے سکین تو  
ساتھ ہزار روپیہ ہر رمضان میں  
فقیروں کو دیا کریں بادشاہ نے  
تیس ہزار روپیہ سالانہ تو  
پہلے سے مقرر کیا تھا اب میں  
نہار روپیہ اور بڑا دیا اور میں  
نہار روپیہ عوض فطرا و کفرا  
روزہ وغیرہ میں جو سہاؤ و گدا  
رکھو گئی تھو غریبوں و محتاجوں کو  
بطور خیرات عنایت کئے۔

اکبر آبادی محل نے جو قلعہ  
شاہ جہان آباد سے ہائی کو س  
فاصلہ پر سر آبادی کے پاس ہو  
اور کشمیر فیض بخش و فرخ بخش  
باغوں کے نمونہ پر ایک بلغم  
مسجد دو لاکھ روپیہ کی لاگت سے  
چار برس میں تیار کرایا تھا  
بادشاہ اس مسجد میں بیگم

اکبر آبادی محل نے جو قلعہ  
شاہ جہان آباد سے ۲۱ کو س کے فاصلہ  
سے لے کر سارا باغ والی کے پاس لایا  
اور کاشمیر کے فاضل و فرخ بخش  
باغوں کے نمونہ پر ایک بلغم  
مسجد دو لاکھ روپیہ کی لاگت سے  
چار برس میں تیار کرایا تھا  
بادشاہ اس مسجد میں بیگم

اکبر آبادی محل نے جو قلعہ  
شاہ جہان آباد سے ۲۱ کو س کے فاصلہ  
سے لے کر سارا باغ والی کے پاس لایا  
اور کاشمیر کے فاضل و فرخ بخش  
باغوں کے نمونہ پر ایک بلغم  
مسجد دو لاکھ روپیہ کی لاگت سے  
چار برس میں تیار کرایا تھا  
بادشاہ اس مسجد میں بیگم

आरज से उस समसजिद में नमाज  
पढ़ने को गये वेगमने १५ रवाना से  
ने और जवाहरात के जडाऊ जेव  
रों के नजर और निछावर की तोर  
पर पेश किये-

सुरतिजारवां बूटा हो गया था  
जिस से उस कामन सब दूर हो कर  
२० लाख दाम सालाना की पेन  
शन सुकर र हो गई-

मंगसर सुदि १२ को मुहम्मद शाफी  
आय यजदी ने सूरत से हाजिर  
आकर बादशाह से सलाम किया  
बादशाह ने हजारी जात और १००  
सवार का मन सब सुकर र करके  
जो कर र वलिया-

कम के सुलतान महमूद दरवां के  
एलची सैयद मोही उद्दीन के सूर  
रत में पहुंचने की खबर सुन कर  
बादशाह ने उसके लाने के वास्ते  
रवाजा रोशन युर्ज वरदार को भेजा

खिल अत के नेजा और १०००  
रवाने सूरत से और १५००  
मिनातिय पुरवांडो और मालवे को

عرض سے نماز پڑھنے کو  
یکم نے ۱۵ خان سونے  
جواہرات کے جڑاؤ زبور  
اور بچھاو رکی طور پر  
پس کئے

مرغی خان بوجہ ضعف پیری  
نے منصب سے ہر طرف ہو کر  
س لاکھ دایم سالیانہ پر  
ویان ہوا-

۹ ذی الحجہ کو شفیعیات  
بی نے سورت سے اگر ملاز  
اور ہزاری ذات و کھید  
ان کے منصب پر ملازم  
سرکاری شاہی  
کیا-

بادشاہ نے محمد خان  
مظان روم کے ایلمچی محی الدین  
سورت میں پہنچنے کی خبر  
سن کر خواجہ روشن گرز برباد  
اوس کے لانے کے واسطے  
خلعت کے بیجا اور دس ہزار  
پیر خزانہ سورت سے اور ہندو  
راز و دیہ بران پر مشدد اور مالوہ



۲۵ واہر س

پوسم سوری ۲۳ سنہ ۱۶۵۷ء

پوسم سوری ۳ سنہ ۱۶۵۷ء

کاغذ اوردی ۵ کو شاہجہاں بادشاہ  
رنگ جیہ اپنے بے توں سمیت سولت  
ن سے ہا جیہ آیا واہر شاہ  
نہ بولنا یا یا -

کاغذ اوردی ۳ کو واہر شاہ ک  
شامیہ کو روائے ہوے اور شاہ  
جہاں اور رنگ جیہ کو سولت  
جانے کی سیر ہدی -

جہاں کو پڑنے جانے کی  
اور رنگ جیہ کو شاہ  
جانا واہر کی سیر ہدی  
سیر ہدی جہاں کو پڑنے سے  
دلا گیا -

چیت سوری ۳ کو واہر شاہ ک  
ہوے پڑنے چکر واہر  
میں ہرے اور ہرے

چیتوان برس

سنہ ۱۶۵۷ء

۱۶ دسمبر سنہ ۱۶۵۷ء سے ۶ دسمبر سنہ ۱۶۵۷ء تک  
۱۶ دسمبر کو شاہزادہ اور شاہزادی  
سوائے بیٹوں کے حسب الطلب  
سے حاضر آیا -

عز و برج الاول کو بادشاہ  
شاہجہاں آباد سے کشمیر  
کو روانہ ہوئے اول منزل سے  
شاہزادہ اور رنگ جیہ کو  
لمٹان جانے کی رغبت ملی  
جہاں کو پڑنے کا صوبہ دار  
سید خان ظفر جنگ کے تغیر  
سے ہوا اور خلیل اللہ خان شاہ  
جہاں آباد کا -

عز و برج الثانی کو بادشاہ  
شاہجہاں کو پڑنے کا صوبہ دار  
سید خان ظفر جنگ کے تغیر  
سے ہوا اور خلیل اللہ خان شاہ  
جہاں آباد کا -

تاریف مومنکار کجی مہی نے پہلے  
۵۰۰۰ رنر کے لئے جکر اپنے پاس  
بولا لیا تھا اور دو نو  
جرا کرنے کے واسطے ہا جیر ہونے  
کا حکم دے دیا تھا۔

چیت سو دی ۵ کو بادشاہ جہاں  
کے قلعہ میں داخل ہوئے۔

بنگالہ کے سرکار سے ملازم  
ہوئے۔ کہ بندر بنگالی کو بندہ حاکم نشین  
کے شاہزادہ محمد شجاع کے  
لازم جان بیگ نے جو صوبہ  
اور سیہ میں مقرر تھا وہاں  
زمینداروں کے لئے مالک محروم  
شاہی ساجت نون میں شامل کیا۔

## ابدولرہمان کا بدر سے آنا۔

ابدولرہمان جو بدر سے  
کوہر وانیہ تھا اپنے باپ  
نجر مہا محمد دروا کے پاس پہنچا  
تو نجر مہا محمد دروا نے اپنے  
آدمی ساتھ کر کے اس کو  
رہبان کی حکومت پر چھوڑ  
دیا۔ اس کو اس قدر تیرا کیا

عریف سنگر خدماہ پیشتر  
انچزار روپیہ خرچ کے ہر  
اپنے پاس بلا رہا تھا اور دو نو  
وقت مجرا کیا واسطے دربار میں  
حاضر ہونے کا حکم دیا تھا۔

۴ ربیع الثانی کو بادشاہ  
قلعہ لاہور میں داخل ہوئے  
وقایع بنگالہ عرض ہوئی  
کہ بندر بنگالی کو بندہ حاکم نشین  
کے شاہزادہ محمد شجاع کے  
لازم جان بیگ نے جو صوبہ  
اور سیہ میں مقرر تھا وہاں  
زمینداروں کے لئے مالک محروم  
شاہی ساجت نون میں شامل کیا۔

## عبدالرحمن سلطان بنگالہ کے آنا

عبدالرحمن جو بنگالہ کو روانہ ہوا  
تھا جب اپنے باپ نجر محمد خان  
کے پاس پہنچا تو نجر محمد خان  
نے اس کو اپنے آدمی ہمراہ  
کر کے غور بند کی حکومت پر چھوڑ  
دیا۔ اس کو اس قدر تیرا کیا  
تھیجان نے اپنے باپ کے پاس  
فوج کم رہ جانے کی خبر  
سنگر بلخ پر حملہ کیا اور  
اپنے کو اس قدر تیرا کیا

उसने अबदुलरहमान को रस्ते  
 से पीछा बुलाया मगर सुबहा  
 न कुली खां के कलमांक वी  
 चमें से ही उसको पकड़ लेग  
 ये सुबहान कुली खां ने अब  
 दुलरहमान को कैद कर दिया  
 मगर वह पहर वालों की मिला  
 बट से निकल कर बादशाह  
 के पास नाग आया बादशाह  
 ने उसको ४ हज़ारी ज़ात ५०० स  
 वार काम न सब और २००० रु  
 पये हाथी घोड़ा और कुछ ज  
 ड़ाऊ ज़ेवर इनायत किया और  
 उसके साथियों को भी उसके  
 कहने के माफ़िक तजवीज़ त  
 नरबाह की वरके नोकर रख लिया  
 जेठ सुदि ९ को बादशाह ने ला  
 होर से कश्मीर की तरफ़ कूच क  
 रके रावी नदी के पास डेरा किया  
 और शाहज़ादे औरंगज़ेब को मा  
 लवे की सखेदारी पर जाने का  
 हुक्म लिखा -

کہ دوستی عبد الرحمن کو پہنچے سے  
 واپس بلایا مگر سجان قلیخان کو قلمنا  
 بیچ میں ہی دسکو پکڑ لیگے سجان  
 قلیخان نے عبد الرحمن کو قید کر دیا  
 لیکن وہ پہرہ والوں کو ملا کر بادشاہ  
 کے پاس پہنچ آیا بادشاہ نے اسکو  
 چار ہزاری ذات پانسو سولہ کا منصب  
 میں ہزار روپیہ معہ اسب و  
 فیل و مریض آلات کے مرحمت  
 کیا اور اس کے ہمراہیوں کو بھی  
 اس کے کہنے کے موافق تجویز  
 تنخواہ کی کر کے نوکر رکھ لیا۔

۲۹ جمادی الاول  
 کو بادشاہ نے سیر کشمیر  
 کے واسطے لاہور سے  
 کوچ کر کے راوی ندی  
 کے اوس طرف ڈیرہ کیا  
 اور شاہزادہ اورنگزیب  
 کو مالوہ کی صوبہ داری پر  
 جانے کا حکم دیا۔

اس سال میں  
 قحط غلہ اور اساک  
 بایان سے لوگوں کو  
 بہت تکلیف ہو رہی تھی مگر  
 جسن کہ بادشاہ نے

इस سال में नाज़की महंगाई  
 और मेह के नही बरसने से लो  
 गो को बहुत तकलीफ़ हो रही -

धीमगर जिस दिन कि बादशाह ने-  
 वृत्त किया मेहर सनायु हुश्र  
 और शतनाबर सा कि बादशाह को  
 रस्ते में १ हफ्ते तक ठहरना पड़ा  
 इस मेहसे रैयत का नीनुकसान  
 हुआ कि यहिले तो वोनै का मौका  
 नहीं मिला और कुछ बोया नीया  
 तो वह पानी में बह गया इस वास्ते  
 जमाबंदी के वक्त खाल से के पर  
 गनों की रैयत छुका रू आई बादशा  
 ह ने सादु खान वजीर को हुका  
 दिया कि कई दिनों तक ध्यान ल  
 गा कर रैयत की शिकायत सुन  
 आदिल खां की पेशकश  
 इलाकाम खां का बेटा मोहम्मद  
 सफी आदिल खां के पास से निक  
 ले सनों की बाकी पेशकश ला  
 ने के वास्ते जेजा गया था सो नीचे  
 लिखे माफिक ले कर हाजिर हुआ  
 १ बादशाह के वास्ते पेशकश न  
 कद और जिस जिस में ४० हाथी  
 और जडा क चीजे ४० लाख रुप  
 या की थी

लाहोर से کوچ किया निह बर सना  
 शत्रु वृत्त हुआ और अफ़्दर  
 बर सा कि बादशाह को रास्ते  
 में एक हफ्ते तक ठहरना पड़ा  
 मरान्स बारशन से  
 रया का का भी نقصान हुआ कि اول  
 नुकान शिकारी का موقع मिला  
 बहर जो बोया पानी में बह गया  
 सो वास्ते बर وقت शिखर जेज के  
 परगनात खालसे की रया या फ़ायदी  
 आली बादशाह ने سعد الله خان  
 को حکم दिया कि خود چند روز متوجه ہو کر  
 مالکداروں کی شکایت سماعت کرے  
 عادل خان  
 والی بیجا پور کی پیشکش  
 اسلام خان کا بیجا محضی عادل خان  
 کے پاس پہلے سنوں کی باقی ماندہ  
 پیشکش وصول کر نیے واسطے  
 کیا تمام حسب ذیل پیشکش لیکر حاضر آیا  
 ۱ बादशाہ کے واسطے پیشکش نقد  
 جنس و مرصع آلات ۴۰۰  
 ہاتھیوں کے قیمتی  
 چالیس  
 لاکھ روپیہ  
 ملک جہان بادشاہ بیگم  
 کے واسطے پیشکش نقد و

जिनस ५ लाख रूपये की -

३ शाहजहां देदारा शिकोह के वास्ते

पेशकशानकद और जिनस २५

लाख रूपये की -

इसके सिवाय आदिलखाने ने डेढ़

लाख रूपयारोकड और जवाहर

तमोद्दामदसफ़ी को और छ लाख

रूपये नकद और माल शाहजहां दा

दारा शिकोह के नोकर सैयदबाकि

रको दिया था वह नी बाद शाहजहां

नज़र से गुजरा -

दरबार का हाल -

जेठ सुदिर को २५ वेंबरस के नो

रोज में १ मशहूर कविने जो बाद

शाह का मुसाहिब जीया १ कवि

बाद शाह की तारीफ़ में कहकर सु

नाया जिसके इनाम में बादशा

हने उसको १ हथनी और २०० रूपये

इनायत किये -

शाहजहां देदारा शिकोह के वेदों

समेत लाहोर जाने का हुक्म हुआ -

असाठ बदि १० को बादशाहक

शमीर में पहुंचे रस्ते में बर्फ़ से ब

हुत तक लीफ़ हुई मगर कशमी

र में बड़ी बहार थी बादशाह रातो

जिस की कीमती बाग़ लाकड़

३० शाहजहां देदारा शिकोह

के वास्ते पेशकश की

पंद्रह लाख रूपये

१ के सो सौ एादल

ने डेढ़ लाख रूपये نقد बाग़

बांछी और किछे जवाहरात

सो और चिप लाख रूपये نقد

३० के शाहजहां देदारा शिकोह के ला

सिद्ध बाग़ को दिया तवाह भी बादशाह

की نظر से गुजरा -

दरबार का हाल

३० जमादी الثانی کو پچیسواں

جلوسى سنہ شروع ہوا جسکے

جشن میں ایک مشہور ہندی

شاعر نے جو بادشاہ کا مقرب

بھی تھا ایک کثرت بادشاہ کے

تعریف میں بنا کر پیش کیا بادشاہ نے ایک

یعنی اور دو ہزار روپیہ عینیت

شاہجहां ددارا شیکوہ کو عینیت

کے لاہور واپس جانے کا حکم ہوا

۳۳ جمادی الثانی کو بادشاہ کا

کہلے اور سیر دیکھتے ہوئے کشمیر

دولت خانہ میں داخل ہوئے

اگرچہ راستہ میں برف سے بہت تکلیف ہوئی

بے گم میں سمیت نایابوں میں بیٹھ کر راتوں  
 کو تالیاں بولنے کی سر کیا کرتے  
 تھے یہ نایاب رنگ کے جڑی کے پودوں  
 راجا جہانگیر کے کام کی چوبیس سے  
 جیڑے تھے اور ان پر سونے کے جڑے  
 ان کے لالہ لالہ جیڑے تھے اسی طرح  
 باغوں میں جا کر وہاں کی بھاری  
 راتوں تھے اور بھاری راتوں  
 یا مہاراجا اور باغیچوں کو  
 دیا کرتے تھے۔

ایک دن علی مراد خان کی  
 عرض سے اس کے باغ اور محل کے  
 باغ کو شریف لیکے علی مراد خان  
 خان جو پیشکش کی  
 اس میں سے ایک لاکھ اور  
 اس میں ہزار روپیہ کی نقد قبول ہوئی  
 ایک دن ملا شاہ بدخشی  
 بادشاہ سے ملنے کو آیا دوسرے  
 دن بادشاہ بھی مع ملکہ زبان بادشاہ  
 بیگم کے اس کے مکان پر گئے جو ملکہ  
 زبان نے چالیس ہزار روپیہ  
 ہزار دینار اور بیس ہزار روپیہ  
 ملاقات اس کے پاس سے  
 مقبروں کو واسطے بھی تیار کر دئے

ایک دن علی مراد خان کی  
 عرض سے اس کے باغ اور محل کے  
 باغ کو شریف لیکے علی مراد خان  
 خان جو پیشکش کی  
 اس میں سے ایک لاکھ اور  
 اس میں ہزار روپیہ کی نقد قبول ہوئی  
 ایک دن ملا شاہ بدخشی  
 بادشاہ سے ملنے کو آیا دوسرے  
 دن بادشاہ بھی مع ملکہ زبان بادشاہ  
 بیگم کے اس کے مکان پر گئے جو ملکہ  
 زبان نے چالیس ہزار روپیہ  
 ہزار دینار اور بیس ہزار روپیہ  
 ملاقات اس کے پاس سے  
 مقبروں کو واسطے بھی تیار کر دئے

ایک دن علی مراد خان کی  
 عرض سے اس کے باغ اور محل کے  
 باغ کو شریف لیکے علی مراد خان  
 خان جو پیشکش کی  
 اس میں سے ایک لاکھ اور  
 اس میں ہزار روپیہ کی نقد قبول ہوئی  
 ایک دن ملا شاہ بدخشی  
 بادشاہ سے ملنے کو آیا دوسرے  
 دن بادشاہ بھی مع ملکہ زبان بادشاہ  
 بیگم کے اس کے مکان پر گئے جو ملکہ  
 زبان نے چالیس ہزار روپیہ  
 ہزار دینار اور بیس ہزار روپیہ  
 ملاقات اس کے پاس سے  
 مقبروں کو واسطے بھی تیار کر دئے

۹ دن میں شاہجہاں بادشاہ  
 شاہ سے ملنے کے آیا دوسرے  
 دن بادشاہ بھی مع ملکہ زبان بادشاہ  
 بیگم کے اس کے مکان پر گئے جو ملکہ  
 زبان نے چالیس ہزار روپیہ  
 ہزار دینار اور بیس ہزار روپیہ  
 ملاقات اس کے پاس سے  
 مقبروں کو واسطے بھی تیار کر دئے

ایک دن علی مراد خان کی  
 عرض سے اس کے باغ اور محل کے  
 باغ کو شریف لیکے علی مراد خان  
 خان جو پیشکش کی  
 اس میں سے ایک لاکھ اور  
 اس میں ہزار روپیہ کی نقد قبول ہوئی  
 ایک دن ملا شاہ بدخشی  
 بادشاہ سے ملنے کو آیا دوسرے  
 دن بادشاہ بھی مع ملکہ زبان بادشاہ  
 بیگم کے اس کے مکان پر گئے جو ملکہ  
 زبان نے چالیس ہزار روپیہ  
 ہزار دینار اور بیس ہزار روپیہ  
 ملاقات اس کے پاس سے  
 مقبروں کو واسطے بھی تیار کر دئے

۹ دن میں شاہجہاں بادشاہ  
 شاہ سے ملنے کے آیا دوسرے  
 دن بادشاہ بھی مع ملکہ زبان بادشاہ  
 بیگم کے اس کے مکان پر گئے جو ملکہ  
 زبان نے چالیس ہزار روپیہ  
 ہزار دینار اور بیس ہزار روپیہ  
 ملاقات اس کے پاس سے  
 مقبروں کو واسطے بھی تیار کر دئے

ایک دن علی مراد خان کی  
 عرض سے اس کے باغ اور محل کے  
 باغ کو شریف لیکے علی مراد خان  
 خان جو پیشکش کی  
 اس میں سے ایک لاکھ اور  
 اس میں ہزار روپیہ کی نقد قبول ہوئی  
 ایک دن ملا شاہ بدخشی  
 بادشاہ سے ملنے کو آیا دوسرے  
 دن بادشاہ بھی مع ملکہ زبان بادشاہ  
 بیگم کے اس کے مکان پر گئے جو ملکہ  
 زبان نے چالیس ہزار روپیہ  
 ہزار دینار اور بیس ہزار روپیہ  
 ملاقات اس کے پاس سے  
 مقبروں کو واسطے بھی تیار کر دئے

तिबती की आज्ञा से मालूम हुआ  
कि मिरजाय तिबतीजी जो हज़रत  
से जागकर तिबत का मालिक बन  
बैठा था अब बादशाह के एक बाल  
से जाग गया है बादशाह ने आद  
सं खां का मन सब आज्ञा और  
इजाज़ से हज़ारी जात और ५००  
सवार का करके तिबत का मुख्य  
जीजी ८० लाख दाम (२ लाख रुप  
ये) का था वतन के तौर पर उसका  
और उसके जायों की जागीर में दे दिया

میتھی کی عرضی سے معلوم  
ہوا کہ مرزا اسے میتھی جو حضور  
میں سے بہاگ کر تبت کے او  
قابض ہو گیا تھا اقبال بادشاہی  
سے بہاگ گیا ہے بادشاہ نے  
آدم خان کا منصب اصل اور افتا  
سے ہزاری ذات اور پانچ سو  
کا کر کے تبت کا ملک جو اسی  
لاکھ دام کی قیمت کا تھا بطور  
اسکی اور اس کے بہائیوں کی  
جاگیر میں دیدیا۔

इस साल में पहिले तो पानी न  
ही बरसा और फिर बरसा तो ज़ि  
यादा बरसा जिससे कश्मीर के  
अकसर मकानों और बागों की  
शेजा जाती रही थी इस लिये व  
दशादयहां की सैर से पहिले के म  
फिकर खुशान ही हुवे और फरमा  
या कि लाहौर और आगरे के जैसे  
की मती मकानों और बागों को छो  
डकर अपने दिल की खुशी के वास्ते  
इतनी दूर जाना कि जिसमें खुदा  
की खलकत को बहुत तकलीफ  
पहुंचती है खुदा से नहीं डरने की बात  
है और हम ही न रहने के पीछे शाह बाद

اس سال میں پہلے تو  
پانی برسا اور پھر برسا تو  
زیادہ برسا کثیر کے اکثر  
مکانات اور باغات کی اصلی  
رونق اور بہار جاتی رہی تھی  
اسلئے بادشاہ یہاں کی سیر  
چندان خوش نہ رہے اور فرمایا کہ  
ہمارا خوفت اور ایستغاثت با خدا  
باغات اور مکانات کو اتنی دور  
کی مسافت حفظ نفس کے واسطے  
طے کرنا کہ میں میں خلق خدا کو  
بہت صدمہ پہنچتا ہے طریق  
خدا پرستی سے بہت دور  
ہے اور بد قیام دور میں سے

कैरस्ते से लशकर को सीधेरस्तेरवाने  
करके कहा कि अब मैं इस तरफ फिरे  
ही आजंगा और सादुखारवां बजीर को  
हुकम दिया कि सब कामों का बंदोब-  
स्त करके जल दी लाहोर में आजवे-  
आसिफाबाद में दरया से उतरते  
वक्त आदमियों की ज्यादा ची-  
ड़ हो जाने से पुल जो पुराना हो ग-  
या था टूट गया २५० आदमी और ब-  
हुत से जानवर माल असबाब समेत  
जो जन पर जराहु आया दरया में गिर पड़े  
आसोजब दि ५ को बादशाह  
की सवारी नवर में पहुंची दूसरे दि-  
न कूच के वक्त शाहजादे दाराशि-  
कोह ने अपने बेटों समेत लाहोर  
में आकर सुजरा किया और नजर  
मोहम्मदखां के बेटे अबदुलरह-  
मान और खुसरो की पेशवाई में  
हाजिर हुवे-

जब बादशाह लाहोर के पास-  
पहुंचे तो सादुखारवां बजीर की फ-  
शमीर से आकर हाजिर हो गया-  
बादशाह ने लाहोर पहुंचकर  
रुसतमखां और राजों व अभीरों  
को जो हाजिर और गैर हाजिर थे

खुदरम्यान को दोपहर १२ वां खलाफत  
की तरफ रवाना होئے और शकर  
को बराह रात जाने का حکم دیکر  
فرمایا کہ اب پہر میں طرف نہیں  
آؤں گا۔ اور سعد الدخان حکم  
دیا کہ چند روزہ میں مقتضات علی  
الدولتی کا انتظام کر کے لاہور آ جاؤ  
منزل آصف آباد میں دریا  
سے گذرتے وقت آدمیوں کا  
زیادہ ہجوم ہو جانے سے پہلے جو  
بہت پرانا ہو گیا تھا ٹوٹ گیا وہاں  
سوا دمی اور بہت سے جانور  
مات اسباب دریا میں گر پڑے  
۱۲ رمضان کو بادشاہ کی سوار  
بیمبر میں پہونچی دوسرے دن  
کوچ کیوقت شانہزادہ دارا شکوہ  
عہ اپنے بیٹوں کے لاہور  
سے اگر ملازمت کی فہمید خاں  
بیٹے عبدالرحمن و خسرو ہی پیشوا  
بن خاں و شہر  
جب بادشاہ لاہور پا پس پہونچے  
سعد الدخان نے یہی شہر کو خاں  
بادشاہ نے لاہور پہونچے  
اور نزدیک و دور کے دوسرے  
امیرین و راجان کو



ہو کہ نہ جاکے کھنڈار کی موہیم کے  
واستے سامان اور توپ رنہ سہمے  
تھا جیر ہو جاوے اور شاہ جہاں دے  
راہ دے دے دے دے دے دے دے دے  
نہا ہ سے فرماں لکھا۔

سولتان رستم کے ایلچی موہی  
وہی نہ لہو رستم پھنچ کر اپنے  
مالک کا رت پش کیا جس کے  
ساتھ ۲۵۰۰۰ جہاز جہاز کے اور  
پوشاک موتیوں کی لپی اور ۵  
غذا اپنی تراف سے نہ کر دے  
بادشاہ نے اس کو ۱۵۰۰۰۰۰  
لکھ اور تلوار اور ایک کی  
لنگی دنا یات کی۔

جلد سے نہ کر موہم دے دے  
مرنے کی رت پھنچ کر یہ  
نہ کر جاتا تھا اس کا دے دے  
شیرانہ کے کیری پھنچ کر مر  
یا بادشاہ نے رستم و ہر رام اور  
آبدولر ہمان اس کے بے دے  
ما ت م کے رستم دے دے

کے رستم کے رستم کا جوا ب  
دے دے دے دے دے دے دے دے  
اور بادشاہ نے اس کے ساتھ ۲  
رستم پے کی لنگی ت کی ۱ کی جہاز

حکم پہنچا کہ سہ سامان توپ خانہ  
مہم قند ہار کے حاضر ہوں  
شاہزادہ مراد کے بلانے کے  
واسطے فرمان خاص مستخط  
لکھ کر پہنچا۔

روم کے امپری محلی الدین نے  
لاہور میں پہنچ کر قیصر کا نام  
دو جہاز زمین کے گہوڑوں اور  
موتیوں کی عبا کے پیش کیا اور  
پانچ گہوڑے اپنی طرف سے نہ  
کئے بادشاہ نے اس کو پسند  
نہ کر دے دے دے دے دے دے  
خجہ اور جیفہ کے مرمت  
فرمایا۔

بلخ سے نذر محمد خان کے  
مرنے کی خبر پہنچے یہ ج  
کرنے کو جاتا تھا سلخ جادی لٹا  
کو شغنان کے قریب دنیا سے گذر  
گیا بادشاہ نے اس کے بیٹوں  
خیر و ہرام اور عبدالرحمن پر کمال  
مہربانی و ہمدردی ظاہر کی۔  
نے قیصر روم کے نام کا جواب  
خان عوی میں لکھا جس کو بادشاہ  
سے جیفہ شمشیر مرصع اور تہ  
قیمتی مبلغ دو لاکھ تھ کے

۱ جڈا جت لہوار پر تلتے سمیت کئے  
 سر کے واسطے چہ جی میں ہی اذین کو  
 ۱۵۰۰۰ روپے اور چوڑا سونہری سا  
 مان کا دیکر بیدا کیا اور ہا  
 جی احمد دس دس دس دس دس دس دس  
 اپنی طرف سے اس کے ساتھ کئے  
 کے پاس چہ جی ۱۲۰۰۰ اس کو جی  
 دیئے اور ۱۰۰۰۰۰ روپے نقد اور  
 ۱۰۰۰۰۰ کا مال اس کے ساتھ مکے  
 اور مدینہ کے گریو کے واسطے چہ جی  
 میر احمد کی جگہ شہر و آباد  
 دس دس دس دس دس دس دس دس دس  
 مت دینا یات دہی۔

کے سر کے واسطے چہ جی کے  
 ن سے بیدا ہونے تک ۵۰۰۰۰ کی رو  
 کڑ اور جین سامیلی تھی۔  
 پوسہ دہی ۱۶ کو امر جہ دہی کی  
 راجا بیہل داس گڈ اپنے  
 تن میں مہر گیا بادشاہ نے بہت  
 افسوس کیا اس کے بڑے بڑے  
 نیکو کو ڈے دہ جاری جات اور  
 ۲۰۰۰ سوار کے راجا کے ۳ ہجڑ  
 راجا ت اور ۳۰۰۰ سوار کا من  
 سب دے کر راجا پدوی اور راج  
 پتہ اور کی کیلے داری دینا یات فرما دی۔

میں الدین کے حوالہ کیا اور  
 میں الدین کے بندہ ہزار روپے  
 اور گورامہ سار ملکہ مرمت  
 کے رخصت دی اور مایہ  
 میر عدل کو اپنی طرف سے آگے  
 ساتھ بطور اپنی کے قیصر روم کے  
 میں الدین ہزار روپے اس کو بھی  
 دئے اور اس کے ساتھ ایک لاکھ روپے  
 نقد ایک لاکھ روپے کا مال خزانے  
 کا اور مدینہ کے واسطے چہ جی  
 قیصر کے وکیل کو روز و روز  
 سے رخصت کے وقت تک ساتھ  
 ہزار روپے نقد پیش کر کے ملا تھا۔  
 (۲۸) ذی الحجہ کو عرض  
 ہوئی کہ راجہ بیہل داس گور  
 اپنے وطن میں مر گیا بادشاہ  
 نے بہت افسوس کیا اور اس کے  
 بڑے بڑے نہایت عزیز و مد  
 دینہ ہزاری ذات اور  
 دو ہزار سوار کے اضافے  
 منسوب ہزاری ذات  
 ہزار سوار دوا سہ کام  
 خطاب را جکی اور قعداری  
 رہنمائی کے عنایت  
 فرمایا اور

आरजुन और जीम के रगाफे हुवे और  
रविहलदास के बड़े भाई का नाम के-  
बेटे शिवराम और छोटे भाई गिरधर  
बगेरा के मनसब में जीजा का हुआ-  
राजा विहलदास १० लाख रूपया  
रोकड़ ५ लाख रूपये के जवाहर हाथी  
और दूसरा भाज छोड़ मया वह सब  
बादशाह ने उस के बेटों को बरवशी दिया-

महम के भी लायने हुये राजपुत्र  
के बड़े भाई राजा के बड़े भाई  
और छोटे भाई गिरधर और दो  
ताम्र के भीयों के भी खसब  
राजा विहलदास १० लाख रूपये  
लाख रूपये का माल मल जोहरात  
और छोटे भाई गिरधर और दो  
ताम्र के भीयों के भी खसब

सादुल्लाखाने अपने लशकर कामे  
हज्जा बादशाह के नजर करायी यानी  
फौज की राजरी दी जिसमें ४००० स  
सवार १००० बरकुंदाज ५०० बेलदार  
और तबंदार गिने गये और उसके  
टेंतुत फुल्लाह और इनायतुल्लाह की  
चीनजर हुई जो पहिली दफे सजान  
कोहाजिर हुवे थे बादशाह ने सादुल्ला  
खान को बहुत शाबासी दी और उसके  
बेटे तुतफुल्लाह को मोतियों की माला  
बरवशी और इनायतुल्लाह को सरपेव दिया-

सदामुल्लाह ने अपने लशकर  
मले मले जानने बादशाह को मालूम  
किया जिसमें ४००० सवार और  
५०० बेलदार और तबंदार गिने  
गये और उसके बेटे तुतफुल्लाह  
को मोतियों की माला बरवशी  
और इनायतुल्लाह को सरपेव  
दिया

बरस २६वां

पोस सुदि ३ संवत १००८ से

पोस सुदि २ संवत १००९ तक

सईदरबाज फरजंग का बुल में म

रगया जो ७ हज्जारी जात और ५००

सवार और सैकामन सबदार था-

जमिलुन बरस

१००८

सदामुल्लाह १००८  
जमिलुन बरस १००८  
सदामुल्लाह १००८  
जमिलुन बरस १००८

महाबतरवांकेबेटे लोहरास्यको  
महाबतरवांकाखिताब ५ हजारीजा  
त ५ हजारसवारका मनसब औरक  
बुलकासूबाइनायतहुआ-

निजाबतरवांआगरकेखजाने  
सेबमूजिबहुकमबादशाहके १ क  
रोडरूपयालाहोरमेंलाया-

फागुणवदि ५ को जन्मपत्रीकेहि  
सावसे ६९ वां बरस शुरुअहुआउ  
सदिनकेतुजादानकी सन्नामें बा  
शाहनेबडे २ अमीरोंसेलेकरछोटे  
मनसबदारोंतक कि जिनकोबा  
दशाह पहिचानतेथेसबकेमनसब  
बढाये और १००० खिलअतगुर्ज  
वरदारोंवगेराकोमिले-

फागुणसुदि १ को बादशाहने  
सोनेकेमीनाकारजडअतखतप  
रजो धमहीनेमें ५ लाखरुपयेकेख  
र्चसेतैयारहुआथाजल्दसकिया  
रशाहजादेऔरंगजेबकोलिरवाकि  
चेतवदि २ कोकाबुलजानेकामहुर  
तहेतुमन्त्रीउसीदिनबुलतानसे  
कुंधारकोरवानेहोजानाऔरजब  
फागुणसुदि १६ कोउसकेरवानेहोजा  
नेसीखबरआईतो ५

बादशाहनेलहरसिंहाणकोअव  
सेपंचहजारीपंचहजारसवारका  
मनसब औरमहाबतरवांकाखिताब  
कामिल  
कीसुबोइरीपरपेजा-

नजाबतखानाएकक्रोडरुप  
आइअगरेसेमोजबहकमबादशाह  
लाहोरमेंलایا-

अगरेसेबादशाहको ५०  
ब्रह्मचर्य  
सदनकेजन्मदिन  
न १० अमीरोंसेलेकरछोटे  
मनसबदारोंतक कि जिनकोबा  
दशाह पहिचानतेथेसबकेमनसब  
बढाये और १००० खिलअतगुर्ज  
वरदारोंवगेराकोमिले-

अगरेसेबादशाहको ५०  
ब्रह्मचर्य  
सदनकेजन्मदिन  
न १० अमीरोंसेलेकरछोटे  
मनसबदारोंतक कि जिनकोबा  
दशाह पहिचानतेथेसबकेमनसब  
बढाये और १००० खिलअतगुर्ज  
वरदारोंवगेराकोमिले-

नकद और ५००० काजिवर १ नारी रिवल  
अतवदिया कीमत की किलंगी २ घोड़े  
२ हाथी सोने चांदी के साजों से उसके  
पास नेजे कुली चरवा और राजा पह  
उसिंध वगेरा २० अमीर २००० सवार  
से उसके पास तईनात किये इन २०  
अमीरों में से हरेक लड़ाई के मेद  
न का शेर कहलाता था बहुत सा  
खजाना और किले फतह करने  
का सामान ची शाहजादे के पास  
नेजकर लिरवा कि कंधार पहुंचकर  
दूसरे बैसाख की सुदि ५ को इतवार  
के दिन जो दरबार के ज्योतिषियों  
का मुकरिर किया हुआ मूर्त है कि  
ले को घेर लेवे -

चेतवदि २ को बादशाह र खुद नी-  
तरवतरवां पर बैठ कर काबुल को रवा  
ने हुवे उसी दिन सादु छारवां वजीर  
को नी ५००० सवार ६००० पयादे  
वरकंदाज और बहुत से बेजदारों स  
मेत कंधार की तरफ रुख सत कि  
या उसके साथ २० तोपें बड़ी २० म  
फौजी २० हथनाज १० मस्तजंगी  
हाथी १०० शूतरनाज २ किरौडरू  
पये नकद और बहुत सा सामान

और पचास हजार का रियोर और  
वांसे भी भेजा गया जिस में एक  
भैंस चिंत जिनहे सवे घल्लत  
फाखरे के नबाद को ठुठे  
दो हाथी भी कि जेके सारुसा  
सोने चांदी के खजोरे भी  
नवाزشान फलज खान और राजा  
बंदीदु गेरे भील मीर खनि  
हराक शिर भीरु रजम कहा जाना  
सवे २० हजार सवारों के  
खनिम निमत होवे बहुत  
खाने और मसाले कले गिरी  
और के पास भी भेजा गया  
लगा गया कि वरिष्ठ नबाद  
को जो सत मखार निजान का  
फंदार भी भेजा फल्ले का  
अरिषे الاول को बादशाह  
खान पर सवार होकर लाहोर  
किया और सिलोक्त सदा  
वरिष्ठ भी सवे पचास  
हजार सवारों के  
के मखार फंदार  
वांसे रचित फंदार  
तोपिन ठी भी  
दस हाथी

किलाफत हकरने कानीजे जाओ  
खसी महरत पर उसको नी किले  
धार पर घेरा देने की ताकीद करके सु  
रंगल गाने दमदमा बनाने और मोर  
चेबदाने घोड़ा की हिसायत की राजा  
जयति ध्वज समस्त रुस्तम रवांश  
सुसार नर राजा रजकूप और महावत  
रवांश को राबड़े बड़े अमीर नी उसके  
साथ कस्ब सतहुवे—

इस मोहिम में सब मिलना कर  
७००० सवार तो परवाने के सिवा  
यत ईनात हुबे जिनके साथ ६००  
अमीर और बाकी मन सब दार थे  
कि जिनको वादशाह पहिचानते  
थे रुस्तम रवांश रातमा अमी  
रों को हाथी घेड़े खिल मस्त और  
जवाहरात मिले और उनके मन  
सबों में नी इजाफा पुत्रा १९ करोड़  
रुपया पेशगी तन रवाहों में दिया  
गया सब अमीरों और तो परवाने  
वालों को कबुल में रहने का हुक्म  
हुआ और उनको यह नी हुक्म था  
कि पहिले वस्तुओं में जमीन दावर की  
किलों को फत हकरने की कोशिश  
करें जिससे कंधार के किले गले डर जावें—

साल्मह गैरी का बिजा और حکم دیا  
کہ وہی کابل کے راستے سے آئی  
ایں کو بادشاہ زاد کے پاس پہونچکر  
مرنگ لگائے وودعہ بنائے اور  
مورچہ بڑھائے وغیرہ تدابیر قلعہ  
کشان میں کوشش کرے راجہ بیگ  
فاسم خان رستم خان راوتر و سال  
راجہ بخت خان نصیر خان او  
بخت خان امیر نامی بیکر ساتھ نصیر  
اس ہم میں کل تیر ہزار سوار  
سوار تو بخانہ کے متعلق ہوئے جن میں  
امیر اور باقی روشناس منصب دار تھے  
رستم خان وغیرہ سب  
امیروں کو علاوہ اضافہ منصب  
کے خلعت پہونچے اور  
جواہرات عطا ہوئے ایک کروڑ  
روپیہ طلب میں اور سہ ماہ بیگ  
سب امیروں اور تو بخانہ والوں  
کو کابل میں دینے کا حکم ہوا  
اور یہ بھی ہدایت ہوئی کہ  
اول قلعہ بست و زمین داور  
کے قلعہ کر کے  
کوشش کریں کہ جس سے  
قندھار والے لرز  
جاوین

اورنگزیب کامن سب از سائن  
اور ۲۰۰۰ سواروں کا ہو گیا۔  
۱۶۰۰ سواروں کا ہو گیا۔

پہلے وہ سارے کی سو ۵ کو بادشاہ  
ہکا بول میں پڑھے۔

دوسرے وہ سارے کی سو ۸ کو شاہجہان  
دا شو جاہی بنگالہ سے آگیا بادشاہ نے اس کی

بادشاہ نے اس کا من سب کی اورنگ  
جے کے برابر کر دیا اور ۲۰۰۰ دھو

۵۰۰۰ دھو کی پے

۵۰۰۰ دھو کی پے

۵۰۰۰ دھو کی پے

۵۰۰۰ دھو کی پے

۵۰۰۰ دھو کی پے

۵۰۰۰ دھو کی پے

۵۰۰۰ دھو کی پے

۵۰۰۰ دھو کی پے

اورنگزیب کی منسوبی پیمبراری  
ذات اوتیس ہزار سواروں کا تھا  
سے نہیں ہزار ہی ذات اور ہندو

ہزار سواروں کا کر دیا گیا۔  
۱۶۰۰ سواروں کا ہو گیا۔

۱۶۰۰ سواروں کا ہو گیا۔  
۱۶۰۰ سواروں کا ہو گیا۔

۱۶۰۰ سواروں کا ہو گیا۔  
۱۶۰۰ سواروں کا ہو گیا۔

۱۶۰۰ سواروں کا ہو گیا۔  
۱۶۰۰ سواروں کا ہو گیا۔

۱۶۰۰ سواروں کا ہو گیا۔  
۱۶۰۰ سواروں کا ہو گیا۔

۱۶۰۰ سواروں کا ہو گیا۔  
۱۶۰۰ سواروں کا ہو گیا۔

۱۶۰۰ سواروں کا ہو گیا۔  
۱۶۰۰ سواروں کا ہو گیا۔

۱۶۰۰ سواروں کا ہو گیا۔  
۱۶۰۰ سواروں کا ہو گیا۔

۱۶۰۰ سواروں کا ہو گیا۔  
۱۶۰۰ سواروں کا ہو گیا۔

۱۶۰۰ سواروں کا ہو گیا۔  
۱۶۰۰ سواروں کا ہو گیا۔

۱۶۰۰ سواروں کا ہو گیا۔  
۱۶۰۰ سواروں کا ہو گیا۔

سودی ۵ کو قیلے کو پیرا اور لشکر  
 کے چوتھے سے سی جگہ اتار کر کی  
 جہاں گولانہ ہی پہنچتا تھا اور  
 اور مہار چوں کا بندہ و ست کرنے ل  
 گا سب سے جیسا دسا دھنار و  
 جی رہنے اور راج پوتوں نے اس کام  
 میں کوشش کی قیلے دار قیلے میں  
 کئی دینوں تک چپ بٹھا رہا کی  
 سی کو اندر سے کسی آدمی کی  
 آواز اور بولی نہ سنائی  
 دی دھنستان لہو قیلے کے نہ  
 چے جانا کر قیلے دار کو بھڑ  
 بھڑا جانا سنا تھے مگر وہ سو  
 نہ ان سو نہ کر جاتا تھا۔

جب کہ رستم خان اور سعد اللہ  
 خان کے مورے اپنے قلعہ  
 کے نیچے پہنچ گئے تو راجہ  
 بیاد تما شاہزادہ کے پاس جا کر  
 غلامی کہہ کر قیلے کے نزدیک  
 ایک بچے کے نیچے پہنچ گئے  
 کہ جہاں سے اوپر بڑے کو خوب  
 موقع ہے اور قلعہ والے بالکل  
 بے خبر معلوم ہوتے ہیں اگر کسی  
 کو کہہ دوں کہ وہ قلعہ کے دروازے  
 پر آج آئے اور قلعہ کے دروازے

سودی ۵ کو قیلے کو پیرا اور لشکر  
 کے چوتھے سے سی جگہ اتار کر کی  
 جہاں گولانہ ہی پہنچتا تھا اور  
 اور مہار چوں کا بندہ و ست کرنے ل  
 گا سب سے جیسا دسا دھنار و  
 جی رہنے اور راج پوتوں نے اس کام  
 میں کوشش کی قیلے دار قیلے میں  
 کئی دینوں تک چپ بٹھا رہا کی  
 سی کو اندر سے کسی آدمی کی  
 آواز اور بولی نہ سنائی  
 دی دھنستان لہو قیلے کے نہ  
 چے جانا کر قیلے دار کو بھڑ  
 بھڑا جانا سنا تھے مگر وہ سو  
 نہ ان سو نہ کر جاتا تھا۔





کھرا کر نہی چھوڑے اور یہی ہے سرکار  
 قادیان میں ہمارا جانا تھا اور انوں  
 کو تو لباسِ قلعہ سے نکل کر  
 مورچوں پر حمل کرتے تھے اور  
 ست آدمیوں کو ہاتھوں کو مار  
 دیا تھے ایک کو سیدھا دل سے  
 نکال کر مود پر پڑا کر گئی تو یوں  
 کوئل کے بادشاہی لوگوں نے  
 انکا قاقب بھی کیا لیکن کچھ  
 اڑنے کے کیونکہ قلعہ سے بیخارج آگ  
 پرستی تھی تو وہیں تو وہ ہر سے بھی  
 بہت چلتی تھیں لیکن ہندوستانی  
 کو لانا زردی اور قزلباش  
 کو لانا تو اس مقام میں کچھ نہیں کر سکتے  
 تھے بلکہ بے خطا نشانہ ہر کسی ہند  
 سواروں کی ساری محنت اور  
 کوشش یہ ہو جاتی تھی کہ یہ  
 قلعہ بہت زمین فاصلہ پر ہے  
 جیسے کہ جاسے تھی باوجود بہت  
 کوشش و کوشش کے اختلاف  
 مابین ہندوؤں کے قلعہ میں  
 نہ آئی۔

اب یہ نہرین بادشاہ کو یہ نہیں  
 کہی اسے طول پڑ گیا۔ اور

کھرا کر نہی چھوڑے اور یہی ہے سرکار  
 قادیان میں ہمارا جانا تھا اور انوں  
 کو تو لباسِ قلعہ سے نکل کر  
 مورچوں پر حمل کرتے تھے اور  
 ست آدمیوں کو ہاتھوں کو مار  
 دیا تھے ایک کو سیدھا دل سے  
 نکال کر مود پر پڑا کر گئی تو یوں  
 کوئل کے بادشاہی لوگوں نے  
 انکا قاقب بھی کیا لیکن کچھ  
 اڑنے کے کیونکہ قلعہ سے بیخارج آگ  
 پرستی تھی تو وہیں تو وہ ہر سے بھی  
 بہت چلتی تھیں لیکن ہندوستانی  
 کو لانا زردی اور قزلباش  
 کو لانا تو اس مقام میں کچھ نہیں کر سکتے  
 تھے بلکہ بے خطا نشانہ ہر کسی ہند  
 سواروں کی ساری محنت اور  
 کوشش یہ ہو جاتی تھی کہ یہ  
 قلعہ بہت زمین فاصلہ پر ہے  
 جیسے کہ جاسے تھی باوجود بہت  
 کوشش و کوشش کے اختلاف  
 مابین ہندوؤں کے قلعہ میں  
 نہ آئی۔

جہاں پر وہ گدگد کا پھونکا  
 کہ کھیلنے کا دھڑا بیگڑ گیا اور

جہاں پر وہ گدگد کا پھونکا  
 کہ کھیلنے کا دھڑا بیگڑ گیا اور

परवानेकासामानहोचुकातोब  
तरंजहुआऔरइसकेसाथहीयह  
अरजहुईकिउजबकलोगगज  
नकीतरफलूटमारकरनेलगेहैंते  
दशाहनेअपनेहाथसेऔरगजेव  
गेहुकभलिरवाकिअचीतोचले  
गाऔरफिरदेरवाजायगा +

## दरवारकाहाल

अब बड़े शगहजादे दरार शिकोह ने  
काबुल के सूबे का बंदोबस्त अपने  
तेममे लिया बाद शगहने उसको अस  
न और शजाफे से ३० हजार जात और  
२००० सवार का मनसब और ३ कि  
छिदाम इनाम के लाहौर और मु  
लतान की सायर से मुकर्र करके  
पुजरात के बंदले मुलतान का सूब  
हनायत किया और काबुल का सूब  
उसके बेटे मुलेमान शिकोह को  
देकर ८ हजार जात और ४००० सव  
र का मनसब और लाज डेरा जी

توب خانہ کا سامان ہو چکا تو بہت  
سج ہوا اور اسکے ساتھ بیٹھی  
سرخس ہوئی کہ او زبک طرف  
غزنین میں لوٹ مار کرنے لگے ہیں  
تو بادشاہ نے اپنی خاتون شمس  
شہزادہ کو فرمان واسطے جیلے آزاد ہوں  
کو دوسرے وقت پر چڑھو کسی کا گلیہ پہنچا  
دربار کا حال

اب شہزادہ کلاں مارا شکوہ نے  
کابل کے بندوبست کا ذمہ کیا اسلئے  
بادشاہ نے اس کے واسطے صل و  
امداد سے تیس ہزاری ذات اور  
ہزار سوار کا منصب یکم قن کر و  
وام انعام کے لاجو اور تیل کے سیر  
تہ مقدر کے اور گجرات کے عویش  
کے صوبہ عساکر کے کابل کا صوبہ  
خلت کابل سلطان سیال شکوہ کو  
دیو اور اس کا منصب آٹھ ہزاری  
ذات اور چار سوار کا مقدر کر کے  
نیمہ سبج بھی عنایت کیا

॥ सेरुजयुतासुवरीनां जिह्वा है कि जव  
 ईरान के शह ब्रह्मासकी औरंगनेव के  
 कंधार पर पहुंचने की सुबरत्तगी तो उसने  
 लश्कर की तैयारी का हुज्जद कर बस  
 हान में कुछ किय और ऊछ स्निन भागे र  
 बने कर दी जिसके डर से औरंगनेव और  
 हिन्दुस्तान काल शकर कंधार से हूच कर

سلسلہ سہ ماہیہ خیریت میں جو کتب کو  
شام و صبح کو اوستہ پڑھتے تھے یا  
نہ پڑھتے تھے ان کی یاد میں لکھ کر  
اصناف سے کوئی کتاب اور کتب خانوں  
پیشتر روانہ کی جس کے خوف سے  
اوستہ پڑھنے اور پڑھنے والوں کا  
نشتہ خوانہ سے کوئی کتاب

इनायत कर दिया जो अब तक कि-

सी शाहजहादे के बेटे को नही मिला था-

सूबे मुल्तान के बदले औरंग

जेब को दक्कन के चारों सूबों की सू

बेदारी दी गई-

गुजरात की सूबेदारी शायस्ता

खां को इनायत हुई-

सावन वदि ११ को शाहजादा शु

जाओ को बादशाह ने बंगाले जाने

की करव सत दी और उसके वास्ते

एक किरौड दाम इनाम के उड़ी सा

और मछली बंदर से सुकर रहुवे-

सावन सुदि २ को सादु ह्वारवा

अमीरुल उमरा अली मरदान खां

राजा जयसिंघ और कुली चरवां वगे

राहजर मे हाजिर होगये- जो असा

ट सुदि १३ को कंधार से रवाने हुवेये

और सावन सुदि १३ को बादशाह

जी काबुल से लाहोर को रवाने

हुवे- दारा शिकोह को अमीरुल

उमरा राजा जयसिंघ और कुली

चरवां समेत वही छोड़ आये-

وآنجا کسی شہزادہ کے بیٹے

کو نہیں ملا تھا۔

اورنگ زیب کو عوض

میں مہمان کے دکن کے چاروں

میںوں کی جنوبی داری دی گئی۔

گجرات کی جنوبی داری

نشین خان کو عنایت ہوئی۔

۱۲۵۰ شہان کو شاہزاد

جماع کے واسطے ایک کورٹروٹام

کا نام محال اور سپہ اور مجلی بند

سے مقرر ہوا اور اسکو بنگالہ

جائے کی نصیب ہوئی۔

غیرہ سفیان کو سردار

میرالام علی مردان خان راجہ

میںکھ اور قلیچ خان وغیرہ جو

۱۲ شہان کو قندھار سے روانہ

ہوئے تھے حضور میں حاضر ہوئے

اور ۱۱، رمضان کو بادشاہ

بھی کابل سے لاہور کو روانہ

ہوئے۔ دوارا شکوہ اور سلیمان

شکوہ کو مع امیرالامرا راجہ

میںکھ اور قلیچ خان کے درمیان

چوڑا آئے۔

۱۶۱۶ شہان کو شہزادہ اورنگ زیب

چوہدری جی بھوپنے بدو سے مت کھار  
سہا جیر آیا چوہدری نا دے بدی  
کو دکی بن کو رور سہا تھو اچھ  
کو ۱ کیرو دہام ہنام کے بنگالے  
سہ دلا یے گئے۔

آدو سہ ۲ کو بادشاہ پشور  
رہے پھنچے آسوج بدی ۸ کو اچھ  
سہ چوہدری آسوج سہ ۲ کو نٹ سہ  
آسوج سہ ۳ کو چنا بے  
چوہدری کر کا تیک بدی ۳ کو لاہ  
ر کے باغ فہر بے شہر دہا ریل  
دوہر سہ میں کھو آدو می ہہ چوہدری  
پانی کی ریل میں بھگئے۔

میرزا رستم سہا کا ویا  
ری چوہدری بھوپنے سے ۱۰۰۰ روپے سا  
نا بھو کرے دھو آہی تر ہنجر  
ہم دہر کا بھو بھو سہا ریل  
سب سے دہر ہکر لار بھو پیا سا  
لہا نا پانے لگا۔

کا تیک بدی ۸ کو بادشاہ لہا  
ہو ر سے بھو کر کے مہا سر بدی ۳  
کو سر ہند میں پھنچے بھو تہن چوہدری  
رہا لہا سے دہر کا کام راج  
ر بھو نا بھو کو ہنا ی دھو آہی۔

سہا چوہدری کے ہم قند ہار  
سہا ہا ر آیا اور ۲۱ کو رور  
وہن ہوا اسکو ایک کرور دام  
انعام کے بنگالہ سے دلائے  
چوہدری

اسلحہ ہنچان کو بادشاہ  
پشاور میں بھو بھو ۱۱ کو  
اکٹائے اور اسلحہ شوال کو  
سہا سے اترے

۵۰ ذیقعدہ کو چنا بے گزہر  
دہا کو لاہور کے باغ فیض بخش  
میں داخل ہوئے راستہ میں  
کچھ آدمی بارشش اور پانی کی  
طشانی لے نالوں میں پھنچے  
میرزا رستم صفوی کا ہزار روپہ  
سالانہ سبب ضعف پیری کے  
مقرر ہوا۔ اس طرح ہنچان  
کا بٹا سرور ہی مغرب سے مغول  
ہو کر ایک لاکھ روپہ سالانہ  
پانے لگا۔

۲۱ ذیقعدہ کو بادشاہ  
لاہور سے کوچ کر کے ۱۴ ذی الحجہ  
سیر ہند میں بھو بھو وکان تہن  
اور ہنچان کی دفتر داری ہا ر گستاخا  
ہوئے



पै सारवसुदिष्को निकरनादि सेजाने  
की इजाजत मिले बादशाह ने मुल  
तान के रस्ते से जाने की इजाजत दे  
कर उस के वास्ते बहुत से खिल  
तजवाहरात हाथी घोड़े १ लारव रु  
पया रोऊ और १ लारव की अशर  
फी काई दफे कर के नेजी और यह  
सब २० लारव रुपये का मालया और  
रजड़ाई के वास्ते २ तोपें एक एक  
मन का गो लारवाने वाली और ७  
तोपें हवाई मफोली और ३० तोपें  
छोटी १०० गोले ५०० मन बारूत ५००  
मन सीसा १४०० वान ३०० ऊंट ख  
जाने और सिलहरपाने के ३ और १  
किरोड रुपये नकद नेजे और रुस्त  
मरवा राजा जयसिंघ कुली चिरवा  
निजावत रवा महावत रवा राजाराय  
सिंघ राव शत्रुसाल राजा पहाड सिं  
घ रुप सिंघ राम सिंघ इक्ष्वाकर  
रवा ताहर रवा किवा दरवा बाकी रवा  
राजा अमर सिंघ नरवरी फीरोजर रवा

मजदूमानी मقرر हुनी हर बादशा  
हने عثمان के रास्ते से روان  
हुने की اجازत कहे कस के  
वास्ते बेत से غलत दामि गुरु  
अकल कहे रुपये نقد और एक  
अश्मि कक की मीत बीस लाख  
रुपये की हुनी रहे कछी दफे कर के  
अरسل कहे और दो तोपें एक एक  
मन का गोद कहे वाली सात तोपें  
बमबोली और ३ चमोली एकत्रागुले  
पांखरार मन बारूत पानुमन सीसे  
चुदो हंजर बारमिन न्बरान्ठ खزان  
और तुरखाने के और एक कठोर प  
नقد बीस हजार और बुरे बुरे स्रार  
मल बस्म खान राजे बीस हत्त  
खान खजार्त खान मीबत खान  
राजे राये सगु राउस्तर साल  
राजे पंजा सगु रुप सगु राम सगु  
अफ्तिर खान طاهر खान قباد खान  
ساجه امر سگه نرود  
فیروز خاں دلسیه خان

३५६  
८९  
१०

३५६  
८९  
१०

برس ۲۷ واں

مंगसर सुदि ३ संवत १७०६ से -

मंगसर सुदि २ संवत १७१० तक

मंगसर सुदि १३ को बादशाह शाह

जहांना बाद के किले में दाखिल हुवे -

सुलेमान शिकोह का मन सब हजा

रीजात और १००० सवार के इजाफे

से ८ हजारी जात और ५००० सवारों

का हो गया -

नुसरतरवां को अकबराबादी मह

लका इलाज करने के इनाम में ३०००

रोकड़ और मनसब साठे तीन ह

जारी जात और १००० सवार का इ

سید ایوب علی

۱۷۱۵ء سے ۱۷۱۷ء تک

۱۷۱۵ء سے ۱۷۱۷ء تک

۱۷۱۵ء سے ۱۷۱۷ء تک

۱۷۱۵ء سے ۱۷۱۷ء تک

۱۷۱۵ء سے ۱۷۱۷ء تک

۱۷۱۵ء سے ۱۷۱۷ء تک

۱۷۱۵ء سے ۱۷۱۷ء تک

۱۷۱۵ء سے ۱۷۱۷ء تک



वैसारवसुदि को निकल दिसो जाने  
की इजाजत मिले बादशाह ने मुल  
तान के रस्ते से जाने की इजाजत दे  
कर उस के वास्ते बहुत से खिल  
तजवाहरात हाथी घोड़े १ लाख रु  
पया रोऊ और १ लाख की अशर  
फी कई दफे कर के नेजी और यह  
सब २० लाख रुपये का माल था और  
रजड़ाई के वास्ते २ तोपें एक एक  
मन का गोला खाने वाली और ७  
तोपें हवाई मभोली और ३० तोपें  
छोटी १००० गोले ५००० मन बारूत ५००  
मन सीसा १४००० दान ३००० ऊंटर व  
जाने और सिलहर खाने के ३ और १  
किरोड रुपये नकद नेजे और रुस्त  
मखाने राजा जयसिंघ कुली चिरवां  
निजावत खान महावत खान राजाराय  
सिंघ राव शत्रुसाज राजा पहडसि  
घ रुपसिंघ रामसिंघ इक्ष्वाकर  
खान ताहर खान किवा दरवां बाकी खान  
राजा अमरसिंघ नरवरी फीरोज खान

۱۰۸۱ شاهیماں مقرر ہوئی ہوا دشاہ  
نے مٹان کے راستہ سے روانہ  
ہونے کی اجازت کہہ کر اس کے  
واسطے بہت سے غلٹ فاسی بگڑے  
ایک لاکھ روپیہ نقد اور ایک لاکھ  
اشرفی کک کی میت بیس لاکھ  
روپیہ کی ہوتی ہے کئی دفعہ کر کے  
ارسال کئے اور دو قومیں ایک ایک  
من کا گود کھانے والی سات توپیں  
مجمولی اور ۳ چوٹی ایک ہزار گولے  
پانچ ہزار من باروت پانچ سو سیسہ  
چودہ ہزار باتین ہزار اونٹ خزانہ  
اور تورخانہ کے اور ایک کڑور روپہ  
نقد بیچے اور بڑے بڑے سزدار  
مثل رستم خان راجہ بیگلہ قلی  
خان بجا بک خان ہما بک خان  
راجہ رائے سنگھ راوستر وصال  
راجہ پنڈا سنگھ روپ سنگھ رام سنگھ  
افتخار خان طاہر خان قباد خان  
راجہ امر سنگھ نرودے  
فیروز خان دلیہ خان

३५६ जहांगीरनाम १०६  
उलजुबां में लिखा है कि यहसनसामा  
नयादशाहनेपिछलेनरसमें ३५६हीने ३६  
नतकलाहरमें रहकर तयार करायाथा  
औरसदपहुंचानेकेवालेचमजारोंकोदि  
लासादेकरमुकररकियाथा-

۱۰۸۱ شاهیماں نے اپنی کتاب مقبول للہاب  
میں لکھا ہے کہ یہ سب سامان بادشاہ نے  
سال گزشتہ میں تین سو بیسے فودن تک  
لاہور میں بیکری کر لیا تھا اور بعد پچانے  
کے واسطے بخاروں کو دلا دیا کہ مقرر کیا تھا



के किनारे पहुंचा वहां रहफते में  
 ६० नावों का पुलुतैयार हुआ जिससे  
 तमाम लश्कर का गुजरना मुशकिल  
 तथा और घेर का महरत पास आ गया  
 था इसलिये शहजादे ने रुस्तम रवा  
 बहादुर रवां निजाबतरवां मीर का सम  
 मीर आतिश अबदुल्लाह वरवशी और  
 अपने मीर आतिश मीर जाफर को प  
 हिलेर बाने कर दिया ये लोग १२००  
 सवारों से धावा कर के बैसार खुसुद  
 को कंधार पहुंचे और किले के सामने  
 गोले की मार बचा कर ठहरे उजबक  
 किले की तरफ दौड़े उधर से कजल व  
 शजी निकले दोनों में लड़ाई हुई और  
 दोनों तरफ के आदमी मारे गये—

दूसरे दिन रुस्तम खां लश्कर सज  
कर किले के गिर्द मोर्चे लगाने की-  
नाल में पड़ा और इस तरह ३ दिन  
तक फिर तारहा-

फिर बादशह आदानी विकट पहा  
डों और सकड़ी घाटियों से उतर कर  
जेठबदि १ को किले के पास पहुंचा और  
महूरत के वास्ते किले से दूर दहर कर  
दिन तक मोरवां की जगह जाचने को  
जाता रहा फिर मिरजा कामरा के दाग

کے کنارہ پر وارد ہو وہاں ایک فوج  
میں صرف ۴۰ کشتیوں کا پل تیار  
ہوا تھا جس کے تمام لشکر کا گذرنا  
مشکل تھا اور ساعت خاصہ قرین  
اچھوٹی تھی ایسے شاہ زادہ نے  
رستم خان بہادر خان نجات خان  
میر قاسم میر بخش بادشاہی عبدالعزیز  
بخشی اور اپنے میر آتش جعفر کو  
ہمیشہ تر روانہ کر دیا یہ لوگ بارہ  
ہزار سواروں سے ہرسم ایٹھا رہا  
جمادی الثانی کو قندھار پہونچ کر گولے  
کی زد سے دورا قترے اور ایک  
قلعہ کی طرف دوڑے اور اسے  
قندھار سے بھی نکلے دونوں میں لڑائی  
ہوئی اور دو طرف جمادی مارے گئے۔  
دوسرے دن رستم خان شکر  
اور اس کے قلعہ کے گرد دوڑے  
تجویز کرنے کے واسطے پھرا اور اس طرح  
تین روز تک پھرتا رہا۔  
پھر شاہ زادہ بھی مشکل منزلوں  
اور تنگ گناہیوں سے عبور کر کے  
جمادی الثانی کو قلعہ کے پاس  
پہونچا اور ساعت انتظار میں قلعہ سے  
یکریغہ بھر تک موقع دیکھنے کو جاتا رہا  
بعد میں ۱۰ جون کے بارے میں

۱۱۲۳ شمس الجہان بادشاہ ۱۰۹۲ ۱۶۵۲

جا کر جتراجو کیلے سے آادھ کو س  
 یا اور رستہ مرزا و گورا ت مام  
 میری کو مورا سے تو پر خوانے سمیت و  
 دیرا جانا جیو سینگ کا مورا و  
 آو دوزخ کے اور بدن سینگ کا  
 دروازے کا کے سامنے یا  
 ہر ایک سرور مورا و  
 مہد سے جیو دا کو شیش کر تا یا  
 موہم دلا فر میرا تیش تو  
 ب سے جیو دا جان مار تا یا وہ  
 سیر کے اوپر ۱ بڑا پر لگا یے رہ  
 تا یا ۱ دین اُس کے ۱ مورا دینے  
 جو بڑا تھوڑا لگا دیا یا  
 شت نا بڑا پر لگانے سے کیا فرما  
 دے اُس نے کہا کہ جیو دینا یا  
 دے گا میں اسی پر سے اُڑ کر کیلے  
 میں ہر چ جاؤں گا  
 بادشاہ کا دھوکہ دیا یا  
 کے کہ کیلے بوسٹ و گورا کو پھیلے  
 فٹ کر نے کا یا اس لیے شاہ  
 دینے رستہ مرزا اور نیجا بتر  
 و گورا ۲۰ آ میری اور بھادور  
 جیو کو ۱۵۰۰ سواروں سے بوسٹ کا  
 کیلے فٹ کر نے کو مورا اُنہوں  
 نے کہا پھوٹ کر کیلے کو ۳ ترف سے

ہر ایک سرور مورا و  
 بڑا پر لگا یے رہ  
 جو بڑا تھوڑا لگا دیا یا  
 شت نا بڑا پر لگانے سے کیا فرما  
 دے اُس نے کہا کہ جیو دینا یا  
 دے گا میں اسی پر سے اُڑ کر کیلے  
 میں ہر چ جاؤں گا  
 بادشاہ کا دھوکہ دیا یا  
 کے کہ کیلے بوسٹ و گورا کو پھیلے  
 فٹ کر نے کا یا اس لیے شاہ  
 دینے رستہ مرزا اور نیجا بتر  
 و گورا ۲۰ آ میری اور بھادور  
 جیو کو ۱۵۰۰ سواروں سے بوسٹ کا  
 کیلے فٹ کر نے کو مورا اُنہوں  
 نے کہا پھوٹ کر کیلے کو ۳ ترف سے

پہرا اور ہر طرف سے سرنگیں دوڑا کر اس  
روز تک گولے مارے اور ایک  
طرف کی دیوار اڑا دی تب تو  
مہدی قلعہ دار سے رستم خان  
کے پاس حاضر ہو کر قلعہ کی کچلیاں  
سویں دیں لیکن اس کے بیٹے  
نے قلعہ گریٹھک کو باوجود کھینچے اپنے

پاپ کے سپرد نہیں کیا۔ اور چند روز  
تک جنگ کر کے غل گیا۔ پھر  
رستم خاں نے دوسرے  
قلعوں کا بھی محاصرہ کیا  
مگر کچھ فائدہ نہ ہوا۔ قلعہ مست میں  
جواب پڑے مہدی قلعہ کی کچلیاں  
اس کے ناہن شاہ خیزاؤہ کے پاس  
بادشاہ کی تاکید میں قلعہ فتح کر کے  
کے واسطے برابر جاتی رہتی تھیں  
اسلئے میر جعفر اور راجہ راجہ روپے  
خانا خزاؤہ دار الحکومت کے حکم سے ایک

ناہرے و شاہجہان کے پاس  
مگر اس کے بے تے نے گار  
کیلا اپنے باپ کے لیر  
خوڈا اور کڑی جت  
کوا دشاہی فوج سے لڑ کر نیک  
لگایا تب رستم خان نے دوسرے کی  
لوگوں کو پیرامگر کو کھکا من نیک ل  
بادشاہ کی تاکید میں قلعہ فتح کر کے  
کے واسطے برابر جاتی رہتی تھیں  
اسلئے میر جعفر اور راجہ راجہ روپے  
خانا خزاؤہ دار الحکومت کے حکم سے ایک

بڑا آدمہ بنا با شروع کیا۔ اور بعض  
سرداروں نے سرنگیں بھی کھدیں  
شاہجہان بادشاہ کو بلا کر کہتا  
کہ مجھے اورنگ زیب مت بانا جو  
دفعہ فتح کیے بغیر اس قلعہ کے بیچے  
چلا گیا۔ اگر تم قلعہ فتح نہ کرو گے  
تو میں ایک کو تم میں سے

شاہجہان کے  
بڑا آدمہ بنا با شروع کیا۔ اور بعض  
سرداروں نے سرنگیں بھی کھدیں  
شاہجہان بادشاہ کو بلا کر کہتا  
کہ مجھے اورنگ زیب مت بانا جو  
دفعہ فتح کیے بغیر اس قلعہ کے بیچے  
چلا گیا۔ اگر تم قلعہ فتح نہ کرو گے  
تو میں ایک کو تم میں سے

شاہجہان کے  
بڑا آدمہ بنا با شروع کیا۔ اور بعض  
سرداروں نے سرنگیں بھی کھدیں  
شاہجہان بادشاہ کو بلا کر کہتا  
کہ مجھے اورنگ زیب مت بانا جو  
دفعہ فتح کیے بغیر اس قلعہ کے بیچے  
چلا گیا۔ اگر تم قلعہ فتح نہ کرو گے  
تو میں ایک کو تم میں سے

एक कोजी जीतान छोड़ूंगा-

मोहम्मद जाफर सब से जियादा-

किले फतह करने में जी खपाता था

और शाहजादे से कहता था कि कि

लेफतह दुबे पीछे मैं १ कोजी किले

वालों में से जीतान छोड़ूंगा ऐसा

नहो कि आप उनके करुणा करने

और गिड़ गिड़ाने पर तरसर बाकर

उनकी जान बरवश देवें-

शाहजादा जवाब देता था कि हम

म बादशाहों को रहमत का दरिया क

हते हैं दुशमन के हाजिर हो जाने प

र रहम करना जरूर है-

सुरंगों और मोरचों के बढाने में

कोशिश तो बहुत ही की जाती थी-

मगर किले वाले मारे गोलों के व

र नहीं लेने देते थे आखिर मोहम्मद

जाफर ने शाहजादे के हुक्म से १ द

मदमा ७५ गज लंबा ५५ गज चौड़ा

और २७ गज ऊंचा १ लाख रुपये के

खरच से ४० दिन में बनाया और उ

सके ऊपर १० तोपें बड़ी बड़ी चदा

जिनके गोले सीधे किले में गिरने

लगे इसी तरह दूसरे दमदमों के

द्वारे गोले और गान बरबस

रतने चूड़ों लगा-

मोहम्मद ने १००००० रुपये

नशानों को शस्त्र कराना कहा

बादशाह आद से कसता था कि

जंगलों के एक को भी मिन

वालोन मिन से दूध न निकाले

ऐसा न हो कि आप औली

परम कर के जान بخشی

बादशाह आद को कसता था कि

बादशाहों को दरिया के

कामा माते दश्म के रोज

परम कर कसना ضرूर है-

निकल और मुरचे हर जगह

और दो आर फलक निक

भाते थे कि फलक वालोन के

गोलों से धर नहीं सकते

जंगल ने शाहजादे के हुक्म से

एक दर २००००० रुपये

और १००००० रुपये

के खर्च से ४० दिन में

बनाया और उसके

खर्च को १००००० रुपये

شुरू ہو جے جیب ان گویوں  
 سے قلعہ والوں کی جان اور مال  
 کا نقصان ہونے لگا تو انہوں نے  
 ایک ایسی توپ لگائی کہ جس کا گولے  
 شاہزادہ کے دو تاج پہ پہن گئے  
 لگے جسے گھوڑے اور آدمی بہت  
 مارتے تھے تب ایک بادشاہی  
 گولہ باز نے نشانہ باندھ کر اس توپ  
 کا منہ گولے سے اڑا دیا اور وہ  
 توپ کے دن تک بند رہی مگر پھر  
 قلعہ والوں نے اسے ایک جگہ ایک  
 نیا دھڑ بنا کر توپ کا منہ اس  
 میں چسپاں کر دیا اور پھر اس طرح  
 گولے مارنے لگے اب سو اٹھ آدمی  
 اور دو ہویں کے اور کچھ سستے اور  
 دیکھنے میں نہیں آتا تھا ہر روز  
 شام و سس بارہ فیروز اس توپ  
 کے تھکے تھے۔

دھڑوں کے سوا اسے دوسرا ہتھیار  
 کا نام بادشاہی لشکر پہ پہن کر  
 خندق کا کام پانی پڑا اور جوانی  
 گولوں سے قلعہ کا ایک بار دہشت  
 ہوا اور آدمی پھر بہتے ہوئے  
 گولوں کی بار بار جگہ بھی کیا مگر  
 قلعہ بازوں نے

دھڑوں کے سوا اسے دوسرا ہتھیار  
 کا نام بادشاہی لشکر پہ پہن کر  
 خندق کا کام پانی پڑا اور جوانی  
 گولوں سے قلعہ کا ایک بار دہشت  
 ہوا اور آدمی پھر بہتے ہوئے  
 گولوں کی بار بار جگہ بھی کیا مگر  
 قلعہ بازوں نے

دھڑوں کے سوا اسے دوسرا ہتھیار  
 کا نام بادشاہی لشکر پہ پہن کر  
 خندق کا کام پانی پڑا اور جوانی  
 گولوں سے قلعہ کا ایک بار دہشت  
 ہوا اور آدمی پھر بہتے ہوئے  
 گولوں کی بار بار جگہ بھی کیا مگر  
 قلعہ بازوں نے





وہر راجا راجرूप के आदमियों ने बु  
ज चहलजीने, को कि जिस के फतह  
करने का जिम्मा राजा रजरूप ने कि  
या था नीचे से खोद कर उसकी मि  
टी निकाल डाली और फिर उस  
में कच्चा चीकर लिया मगर किले  
वालों ने तोपों और बंदूकों के सि  
वाय नुक़ के तेल में निगोये हुवे  
कपड़े जला जला कर इतने फैके  
कि जिनके बारे में आगे वदस  
के और न बहरसके पीछे लोट आये-

१ दिन मोहम्मदजाफर ने २ फ  
की रों को शाहजादे के पास हाज़िर  
करके कहा कि ये दुनिया का हाल व  
ताते हैं

शाहजादे ने वडीर खातिर से उनको  
पने पास बٹھا कर ईरान का हाल पूछा  
तो उन्होंने समाधिलगा कर कुछ दे  
पीछे कहा कि अभी हम चलते २ जो  
असफहान में पहुंचे तो क्या देखते हैं  
कि शाह अघास का मातम हो रहा है  
और उसको दफन कर दिया है-

इसी तरह १ दिन १ गणित विद्या  
जानने वाले को लाकर अरज की कि

के فتح کرنے میں کہ جبکالیناؤں  
وہ تہا بہت کوشش کرتا رہا  
اوسکے آدمیوں اوس جاکو کھیل  
کر کے اوس میں قبضہ کر لیا لیکن  
والوں تو یوں اور بند قون کے  
سوار و غن نفٹ کی پیری ہو  
چادرین آگ میں جلا کر اس  
قد آون کے اوپر پینگیں کر  
وہ نہ آگے بڑھ سکے اور نہ  
ٹھر سکے ناچار واپس  
چلے آئے-

ایک ن محمد جعفر نے  
دو فقروں کو شاہزادہ  
کے پاس حاضر کر کے  
کہا کہ یہ دنیا کے حال سے  
خبر دیتے ہیں بادشاہ نے  
بڑی خاطر سے اپنے پاس بیٹھا  
کر ایران کا حال پوچھا تو انہوں  
نے مراقبہ میں جا کر کچھ دیر بعد  
کہا کہ ہم سیر کرنے ہوئے اصفہا  
میں پہنچے تو دیکھا کہ شاہ عباس  
کا ماتم ہو رہا ہے اور اوس کو  
دفن کر دیا گیا ہے-

اسی طرح ایک دن ایک  
ریاضی ان کو لا کر کہا کہ

यह देव जिन धातु तल प्रेतों के बुलाने  
 का इलम जाना है और वह बोला कि  
 जो १२ डी ऐसी ऐसी सूरत और शक  
 ल की मिल जावे तो मैं उस के रबून और  
 रशराब से कई हजार जंतर लिख कर  
 जिनों का लशकर तुम्हारी मदद पर  
 बुला दूँ यह सुन कर लशकर की त-  
 मामर डिया छुप गई आखिर बहुत  
 सा दूँट ने और खोज लगाने रो १२ डी  
 उस रंग रूप की मिली जो बहुत सी  
 शराब के साथ उसको सौ पी गई वह  
 कुँदिनो का कौल कर के उसके साथ  
 मौज उड़ाता रहा और जब देखा कि  
 अब कौल पूरा होने को आया तो जा-  
 ग कर किले में चला गया वहाँ नी-  
 नि चला नहीं बैठा कोट पर चढ़ कर  
 लशकर वालों से बातें किया करता  
 था जिस से कजल वारों ने मिलाव  
 ट समझ कर उसको मार डाला-  
 मोहम्मद जाफर ने फिर कहना  
 शुरू किया कि आज कल में किला  
 फतह हो जावेगा और किलेदार अथ-  
 ने साथियों समेत मकड़ा आवेगा अ-  
 पतरसन कर के सबको मेरे हवाले  
 कर देना सौ मैं उनके कारतों की

(4) شاه جهان بادشاہ  
 یہودیوں کی دعوت جانشاہ  
 اور اس نے کہا کہ اگر ایک رشتہ  
 ایسی ایسی شکل و شمائل کی بلجاء  
 تو میں اس کے خوں و شراب سے  
 کئی ہزار نقش لکھ کر جنوں  
 مدد پر بلوادوں کا مدد طلب کروں گا  
 یہ بیان لشکر کی روپوش ہو گئیں  
 آخر یہی تلاش کے بعد ایک  
 اوس شان و شکل کی ملی جو سب  
 بہت سی شراب کے اوس سے  
 حوالہ کی گئی وہ چھ دنوں کا وعظ  
 کر کے اوس کے ساتھ عیش  
 اور زمار با حب مہلت قریب  
 پہنچی تو بہاں کر قلعہ میں  
 جا گیا وہاں فصیل پر سے اکثر  
 لشکر والوں کے ساتھ بات  
 چیت کیا کرتا تھا اس سے  
 قزلباشوں نے پگمان ہو کر  
 اوس کو مار ڈالا-  
 محمد جعفر نے یہ کہنا شروع  
 کیا کہ آج کل میں قلعہ فتح ہو جائے  
 گا اور قلعہ دار سواروں کے  
 کچھ آئے ہیں اب ہم نہ کر گئے تو یہ  
 حوالہ کر دینا کہ میں اذیت تمام دن  
 اسے اعلان کی

سزا دیکر مارا بادشاہ جادہ نے کہا  
ہا کہ ہم لوگ بادشاہ ہیں ہمارے  
دھیوں کو مارنے سے بڑھانے میں  
مجا آتا ہے۔

جب قلعہ کے محاصرہ کو جا رہے  
ہو گئے تو قلیج خان راجہ جیسنگ  
لکھن خان ایرج خان قاسم خان  
عبد اللہ اور جعفر وغیرہ سرداروں  
اس محل محاصرہ کو اپنی خجالت جو  
سمجھ کر شوال کو جب پانچ گھنٹہ  
رات باقی تھی اپنے اپنے سوچوں  
مکمل کیا ان کے ساتھ بہت آدمی  
کو کندہ ہون پر اوٹھا کر لے گئے  
تھے جن کے ذریعہ سے سپاہی  
دیوار پر چڑھ گئے اور ہر دیوار  
پر سے کوئے بھی خوب برسا  
گئے دیوار میں جو گر پڑتی تھیں  
اونکو اور دن تو رات کے وقت  
تعلقہ دے اوٹھایا کرتے تھے  
مگر اس رات کو وہ بھی نہ کر سکے  
میر جعفر نے سپاہیوں کو  
تعلقہ پر چڑھ جانے کے لئے  
پتھر پٹارے پٹارے اپنا حق مجاہد  
کر دیا یہی صبح ہوئی قلعہ ان  
نے دیکھ کر اسے کوئے لڑا کر

جواب دیا کہ ۸ مہینے ہو گئے  
تو کولی چرخاں راجا جی سیٹھ  
شکر خاں ایرج خان قاسم خان  
عبد اللہ اور جعفر وغیرہ سرداروں  
اس محل محاصرہ کو اپنی خجالت جو  
سمجھ کر شوال کو جب پانچ گھنٹہ  
رات باقی تھی اپنے اپنے سوچوں  
مکمل کیا ان کے ساتھ بہت آدمی  
کو کندہ ہون پر اوٹھا کر لے گئے  
تھے جن کے ذریعہ سے سپاہی  
دیوار پر چڑھ گئے اور ہر دیوار  
پر سے کوئے بھی خوب برسا  
گئے دیوار میں جو گر پڑتی تھیں  
اونکو اور دن تو رات کے وقت  
تعلقہ دے اوٹھایا کرتے تھے  
مگر اس رات کو وہ بھی نہ کر سکے  
میر جعفر نے سپاہیوں کو  
تعلقہ پر چڑھ جانے کے لئے  
پتھر پٹارے پٹارے اپنا حق مجاہد  
کر دیا یہی صبح ہوئی قلعہ ان  
نے دیکھ کر اسے کوئے لڑا کر



بادشاہی آبادی ماری جاتے تھے :-

یہ حال دیکھ کر ایران اور ہندوستان کے کاریگروں نے لکڑیوں

پر تر بٹے جڑ کر رستوں میں باندھے اور

سیپاہیوں نے بیٹھ کر کھانے پینے کے

کے ساتھ ساتھ کھانے پینے کے

کے ساتھ ساتھ کھانے پینے کے

کے ساتھ ساتھ کھانے پینے کے

کے ساتھ ساتھ کھانے پینے کے

کے ساتھ ساتھ کھانے پینے کے

کے ساتھ ساتھ کھانے پینے کے

کے ساتھ ساتھ کھانے پینے کے

کے ساتھ ساتھ کھانے پینے کے

کے ساتھ ساتھ کھانے پینے کے

کے ساتھ ساتھ کھانے پینے کے

کے ساتھ ساتھ کھانے پینے کے

کے ساتھ ساتھ کھانے پینے کے

کے ساتھ ساتھ کھانے پینے کے

کے ساتھ ساتھ کھانے پینے کے

کے ساتھ ساتھ کھانے پینے کے

کے ساتھ ساتھ کھانے پینے کے

کے ساتھ ساتھ کھانے پینے کے

کے ساتھ ساتھ کھانے پینے کے

کے ساتھ ساتھ کھانے پینے کے

بہت سی جانیں تلف ہوئی تھیں

بہت سی جانیں تلف ہوئی تھیں

بہت سی جانیں تلف ہوئی تھیں

بہت سی جانیں تلف ہوئی تھیں

بہت سی جانیں تلف ہوئی تھیں

بہت سی جانیں تلف ہوئی تھیں

بہت سی جانیں تلف ہوئی تھیں

بہت سی جانیں تلف ہوئی تھیں

بہت سی جانیں تلف ہوئی تھیں

بہت سی جانیں تلف ہوئی تھیں

بہت سی جانیں تلف ہوئی تھیں

بہت سی جانیں تلف ہوئی تھیں

بہت سی جانیں تلف ہوئی تھیں

بہت سی جانیں تلف ہوئی تھیں

بہت سی جانیں تلف ہوئی تھیں

بہت سی جانیں تلف ہوئی تھیں

بہت سی جانیں تلف ہوئی تھیں

بہت سی جانیں تلف ہوئی تھیں

بہت سی جانیں تلف ہوئی تھیں

بہت سی جانیں تلف ہوئی تھیں

بہت سی جانیں تلف ہوئی تھیں

بہت سی جانیں تلف ہوئی تھیں

بہت سی جانیں تلف ہوئی تھیں

بہت سی جانیں تلف ہوئی تھیں

खरौ लोहे के टुकड़े उफ़ के तेल में जलते हुवे कपड़े और छोटे बड़े पत्थर वरसाये कि जिन से बहुत से सैयद जो गांव वारे के रहने वाले थे मुगल राजपूत और पठान मारे गये और जो बचे वे घबराकर पीछे लौटे २५ बड़े अमीर और राजपूत सरदार मारे गये जिन में अहदियों का बरवशी जि या उद्दीन और राजा मान सिंह नी था इस पर नी कुछ दिल चले आदमी इजाफा पाने के लालच से सुरंगों में हो कर खाई में उतरे लेकिन केनी डूब कर मर गये -

उस दिन सब मिलाकर २००० आदमी कैकरी बरवत रहे -

शहाजादे ने रुस्तम खां वगैरा अमीरों को बुलाकर नाराजी से कहा कि हम फिर फरमाते हैं कि हमको और गज़ेब नई मत समझना कि फ़तह किये बिना चले जावे अमीरों ने अरज़ की कि आप जैसा हुक्म देंगे हम तामील करेंगे यह कह कर उन्होंने नये सिरे से सुरंगें बनाने मोरचे बंदाने और दम दमे उठाने शुरू किये जिनके ऊपर किले व गोलों से हारो

चरस लोहे के टुकड़े और पत्थर  
जलते हुवे कपड़े और छोटे बड़े पत्थर  
वरसाये कि जिन से बहुत से सैयद  
जो गांव वारे के रहने वाले थे मुगल  
राजपूत और पठान मारे गये और  
जो बचे वे घबराकर पीछे लौटे २५  
बड़े अमीर और राजपूत सरदार मारे  
गये जिन में अहदियों का बरवशी जि  
या उद्दीन और राजा मान सिंह नी  
था इस पर नी कुछ दिल चले आदमी  
इजाफा पाने के लालच से सुरंगों में  
हो कर खाई में उतरे लेकिन केनी डूब  
कर मर गये -

उस दिन सब मिलाकर २००० आदमी कैकरी बरवत रहे -

शहाजादे ने रुस्तम खां वगैरा अमीरों को बुलाकर नाराजी से कहा कि हम फिर फरमाते हैं कि हमको और गज़ेब नई मत समझना कि फ़तह किये बिना चले जावे अमीरों ने अरज़ की कि आप जैसा हुक्म देंगे हम तामील करेंगे यह कह कर उन्होंने नये सिरे से सुरंगें बनाने मोरचे बंदाने और दम दमे उठाने शुरू किये जिनके ऊपर किले व गोलों से हारो

بادشاہی آبادی ماری جاتے تھے۔ بہت سی جانیں تلف ہوتی تھیں۔  
 یہ حال دیکھ کر عربی حکمرانوں اور شاہ  
 کے کارکنوں نے لکڑیوں پر تختہ  
 جڑ کر سیون میں باندھ دی اور  
 سپاہی نہیں بیٹھا۔ یہاں تک کہ جہاں  
 پہنچ سکتے تھے وہاں پہنچ کر لکڑیوں  
 سے تختہ شکنیں بہرہ رکھ کر اور  
 تختہ نواریں اور پیراؤں میں  
 چید کر کے وہ روغن لکڑیوں پر  
 دبا بعدہ جلتے ہوئے کپڑے اور  
 لکڑیوں سے ہینک بھینک کر ان  
 آگ لگادی اور اس طرح ان  
 کو معہ سبتوں اور سپاہیوں کے  
 جلایا اور خستہ کی سہنگین  
 دوڑا کر دھڑوں کے نیچے کی  
 تمام مٹی چوڑی اور اونگو خالی  
 کے موافق بنادیا۔  
 غرض جب محاصرہ کو پایخ میں  
 گذر گئے گولہ بارود اور سیدہ ختم ہو گیا  
 لکڑیوں میں غلہ اور جنگل میں گھاس  
 نہ برف برسنے لگا لکڑیوں  
 آدمی اور جانور بچا نہ رہا اور  
 بہو کو سے مرے لکے امپوں  
 میں پھوٹ پڑ گئی ایک مہلک  
 سی تو بادشاہ نے سخت خاص

بادشاہی آبادی ماری جاتے تھے۔  
 یہ حال دیکھ کر عربی حکمرانوں اور شاہ  
 کے کارکنوں نے لکڑیوں پر تختہ  
 جڑ کر سیون میں باندھ دی اور  
 سپاہی نہیں بیٹھا۔ یہاں تک کہ جہاں  
 پہنچ سکتے تھے وہاں پہنچ کر لکڑیوں  
 سے تختہ شکنیں بہرہ رکھ کر اور  
 تختہ نواریں اور پیراؤں میں  
 چید کر کے وہ روغن لکڑیوں پر  
 دبا بعدہ جلتے ہوئے کپڑے اور  
 لکڑیوں سے ہینک بھینک کر ان  
 آگ لگادی اور اس طرح ان  
 کو معہ سبتوں اور سپاہیوں کے  
 جلایا اور خستہ کی سہنگین  
 دوڑا کر دھڑوں کے نیچے کی  
 تمام مٹی چوڑی اور اونگو خالی  
 کے موافق بنادیا۔  
 غرض جب محاصرہ کو پایخ میں  
 گذر گئے گولہ بارود اور سیدہ ختم ہو گیا  
 لکڑیوں میں غلہ اور جنگل میں گھاس  
 نہ برف برسنے لگا لکڑیوں  
 آدمی اور جانور بچا نہ رہا اور  
 بہو کو سے مرے لکے امپوں  
 میں پھوٹ پڑ گئی ایک مہلک  
 سی تو بادشاہ نے سخت خاص

शाहजादे को लिखा कि अब चले आओ

شاهزاده کو لکھا کہ اب چلے آؤ

रुस्तमरवां को न बइस दुकम की

رستم خان کو جب یہ خبر پہنچی

खबर पहुंची तो उसने बस्त का कि

خبر پہنچنے پر اس نے بستی کا

जागिरा दिया और खुराक का जो

جزوہ کا سامان تیار اور دیو

सामान था वह लोगो को वांट दि

کو تقسیم کر کے تو سچانہ کا مصالحہ

या और जो मसाला तो परवाने

اسے ساتھ لیا اور وہاں کو چ

का था वह अपने साथ लेकर शाह

کر کے شاہزادہ سے آ ملا تب

जादे से आमिला तब शाहजादे

शाہزادہ دارا شکوہ نے آخر یہ

ने का तिक बदि में किले के नीचे

زقعدہ میں قلعہ قندھار کے نیچے

से कूच किया वहीर के जाद मियों

से کوچ کیا بہر کے آدمیوں

को कजल बाशें और पदार्थों की

کو قندھاروں کے تعاقب و انعام

लूट मार के खयाल से पहिले ही

کی لوٹ مار کے خوف سے پہلے ہی

तो परवाने के साथ गैरतरवा के च

के غیرت خان چارج میں پہلے

रज में रवाने कर दिया जिस से बाद

روانہ کر دیا نہا جس سے کوچ

कूच करने के पिछली फौज को उ

کرنے کے بعد پہلی فوج کو

नलोगों के हाथ से बहुत नुकसा

اُن لوگوں کے ہاتھ سے بہت

न पहुंचा -

نقصان پہنچا -

मंगसरबदि १ को दोकी में डरे

۱۱ ذی الحجہ کو مقام دوکی میں

हुवे वहां से शाहजादा डबल कूच

منزل ہوئی وہاں سے شاہزادہ

करके ४ दिन में मुल्तान पहुंचा

رستم خان کو سب سے شکوکے چھوڑ کر

रुस्तमरवांनी २१ दिन में वहां प

بطریق اختیار ملتان روانہ ہوا اور وہ

हुंच गया शाहजादे ने १९ दिम मु

وہاں پہنچا بعد رستم خان بھی اور

लतान में रहकर मंगसरबदि ८ को

ملتان پہنچ گیا شاہزادہ اداں ملتان

लाहौर की तरफ कूच किया -

اور رومی کی طرف کوچ کر گیا -



# دربار کا حال

۱۳ مینگل وار کو

شاہجہان کے شہنشاہ کی

لڑکا پیدا ہونے کی

پہنچی بادشاہ نے

تاجن مہمدمد آجمر کر

شاہنواز خاں سے

کی سے پیدا ہوا تھا۔

۱۴ کو بادشاہ

کی بھانجہ بھانجہ

کی عمر میں ہو کر

۱۵ کو بادشاہ

کو اس دربار کا

کا تیک ۱۶ کو

ناہوں میں بٹھ کر

رہا نہ دے۔

۲۲ کو

۱۷ کو

۱۸ کو

۱۹ کو

۲۰ کو

۲۱ کو

۲۲ کو

۲۳ کو

۱۷ کو

۱۸ کو

۱۹ کو

۲۰ کو

۲۱ کو

۲۲ کو

۲۳ کو

۲۴ کو

۲۵ کو

۲۶ کو

۲۷ کو

۲۸ کو

۲۹ کو

۳۰ کو

۳۱ کو

۳۲ کو

۳۳ کو

۳۴ کو

۳۵ کو

۳۶ کو

۳۷ کو

۳۸ کو

۳۹ کو

۴۰ کو



باد کے کिलے میں داریں لٹھو دوسرے دی  
نشاہزادہ دارا شکوہ بھی سدا پنے بیٹے  
سلیمان شکوہ کے ملتان آکر مقیم ہوئے  
رچا یا سا دھڑا رچا اور اس کے  
پیشوا کے حضور میں گئے۔

۱۶۲۷ء کو بادشاہ نے جہان  
نشاہزادہ دارا شکوہ کو چار لاکھ  
روپیہ کی لاگت سے تیار ہوا تھا  
جاس کر کے جشن دین سہمی  
کو رونق دی اس خوشی میں  
شاہزادہ دارا شکوہ کو چار لاکھ  
کے جواہرات معدوم صاع آلات و  
فیل واسپ کے عنایت ہوئے  
اور سلطان سلیمان شکوہ کا منصب  
دہ ہزار می ذات اور چھ ہزار سواروں  
کا ہو گیا۔

۱۶۲۷ء کو بادشاہ نے جہان  
نشاہزادہ دارا شکوہ کو چار لاکھ  
روپیہ کی لاگت سے تیار ہوا تھا  
جاس کر کے جشن دین سہمی  
کو رونق دی اس خوشی میں  
شاہزادہ دارا شکوہ کو چار لاکھ  
کے جواہرات معدوم صاع آلات و  
فیل واسپ کے عنایت ہوئے  
اور سلطان سلیمان شکوہ کا منصب  
دہ ہزار می ذات اور چھ ہزار سواروں  
کا ہو گیا۔

۱۶۲۷ء کو بادشاہ نے جہان  
نشاہزادہ دارا شکوہ کو چار لاکھ  
روپیہ کی لاگت سے تیار ہوا تھا  
جاس کر کے جشن دین سہمی  
کو رونق دی اس خوشی میں  
شاہزادہ دارا شکوہ کو چار لاکھ  
کے جواہرات معدوم صاع آلات و  
فیل واسپ کے عنایت ہوئے  
اور سلطان سلیمان شکوہ کا منصب  
دہ ہزار می ذات اور چھ ہزار سواروں  
کا ہو گیا۔

۱۶۲۷ء کو بادشاہ نے جہان  
نشاہزادہ دارا شکوہ کو چار لاکھ  
روپیہ کی لاگت سے تیار ہوا تھا  
جاس کر کے جشن دین سہمی  
کو رونق دی اس خوشی میں  
شاہزادہ دارا شکوہ کو چار لاکھ  
کے جواہرات معدوم صاع آلات و  
فیل واسپ کے عنایت ہوئے  
اور سلطان سلیمان شکوہ کا منصب  
دہ ہزار می ذات اور چھ ہزار سواروں  
کا ہو گیا۔

۱۶۲۷ء کو بادشاہ نے جہان  
نشاہزادہ دارا شکوہ کو چار لاکھ  
روپیہ کی لاگت سے تیار ہوا تھا  
جاس کر کے جشن دین سہمی  
کو رونق دی اس خوشی میں  
شاہزادہ دارا شکوہ کو چار لاکھ  
کے جواہرات معدوم صاع آلات و  
فیل واسپ کے عنایت ہوئے  
اور سلطان سلیمان شکوہ کا منصب  
دہ ہزار می ذات اور چھ ہزار سواروں  
کا ہو گیا۔

۱۶۲۷ء کو بادشاہ نے جہان  
نشاہزادہ دارا شکوہ کو چار لاکھ  
روپیہ کی لاگت سے تیار ہوا تھا  
جاس کر کے جشن دین سہمی  
کو رونق دی اس خوشی میں  
شاہزادہ دارا شکوہ کو چار لاکھ  
کے جواہرات معدوم صاع آلات و  
فیل واسپ کے عنایت ہوئے  
اور سلطان سلیمان شکوہ کا منصب  
دہ ہزار می ذات اور چھ ہزار سواروں  
کا ہو گیا۔

شاہجہاں بادشاہ نے اپنے بیٹے  
 شہزادہ مراد بخش کے حاضر آگے  
 سلطان ایزد بخش کے حاضر آگے  
 بیوت اور سکوا احمد آباد گجرات کی  
 معزوری شایستہ خان تغیر کو غنائ  
 ہوئی پانچ لاکھ و پینے فیٹ بطور انعام  
 نے اور منصب بھی اور اسکا اضافہ  
 ہو کر پندرہ ہزاری ذات اور دس  
 ہزار سواروں کا ہو گیا جنہیں پانچ  
 ہزار سوار اسپیہ و سہ اسپہ  
 سپہ سالار و سپہ سالار  
 اور سواروں کی بھی اسپیہ و سہ  
 منصب ٹپتے تھے۔

جس روپا بیٹھتے جو  
 لازم شاہی تھا ایک دن ملوا  
 کہیں چاندی کے کٹہرہ کے  
 باہر سے بادشاہ کی طرف دوڑا  
 الجان کے اول زینہ پر پہنچا تھا  
 کہ نوبت خان کو تھما وغیرہ شخصوں  
 کے ہاتھ سے مار گیا۔  
 ۱۲۲۰ء میں شاہجہاں کو بادشاہ بنے  
 شہزادہ مراد بخش کے مکان پر گئے  
 چار لاکھ و پینے کی پیشکش قبول کی۔  
 محمد جعفر کو جسے قندار کے  
 محاصرہ میں تھیں سخت جانفشانی  
 کی تھی شہزادہ کی سفارش سے  
 آتش بکھڑا ہوا۔

شاہجہاں بادشاہ نے اپنے بیٹے  
 شہزادہ مراد بخش کے حاضر آگے  
 سلطان ایزد بخش کے حاضر آگے  
 بیوت اور سکوا احمد آباد گجرات کی  
 معزوری شایستہ خان تغیر کو غنائ  
 ہوئی پانچ لاکھ و پینے فیٹ بطور انعام  
 نے اور منصب بھی اور اسکا اضافہ  
 ہو کر پندرہ ہزاری ذات اور دس  
 ہزار سواروں کا ہو گیا جنہیں پانچ  
 ہزار سوار اسپیہ و سہ اسپہ  
 سپہ سالار و سپہ سالار  
 اور سواروں کی بھی اسپیہ و سہ  
 منصب ٹپتے تھے۔

جس روپا بیٹھتے جو  
 لازم شاہی تھا ایک دن ملوا  
 کہیں چاندی کے کٹہرہ کے  
 باہر سے بادشاہ کی طرف دوڑا  
 الجان کے اول زینہ پر پہنچا تھا  
 کہ نوبت خان کو تھما وغیرہ شخصوں  
 کے ہاتھ سے مار گیا۔  
 ۱۲۲۰ء میں شاہجہاں کو بادشاہ بنے  
 شہزادہ مراد بخش کے مکان پر گئے  
 چار لاکھ و پینے کی پیشکش قبول کی۔  
 محمد جعفر کو جسے قندار کے  
 محاصرہ میں تھیں سخت جانفشانی  
 کی تھی شہزادہ کی سفارش سے  
 آتش بکھڑا ہوا۔

شاہجہاں بادشاہ نے اپنے بیٹے  
 شہزادہ مراد بخش کے حاضر آگے  
 سلطان ایزد بخش کے حاضر آگے  
 بیوت اور سکوا احمد آباد گجرات کی  
 معزوری شایستہ خان تغیر کو غنائ  
 ہوئی پانچ لاکھ و پینے فیٹ بطور انعام  
 نے اور منصب بھی اور اسکا اضافہ  
 ہو کر پندرہ ہزاری ذات اور دس  
 ہزار سواروں کا ہو گیا جنہیں پانچ  
 ہزار سوار اسپیہ و سہ اسپہ  
 سپہ سالار و سپہ سالار  
 اور سواروں کی بھی اسپیہ و سہ  
 منصب ٹپتے تھے۔

جس روپا بیٹھتے جو  
 لازم شاہی تھا ایک دن ملوا  
 کہیں چاندی کے کٹہرہ کے  
 باہر سے بادشاہ کی طرف دوڑا  
 الجان کے اول زینہ پر پہنچا تھا  
 کہ نوبت خان کو تھما وغیرہ شخصوں  
 کے ہاتھ سے مار گیا۔  
 ۱۲۲۰ء میں شاہجہاں کو بادشاہ بنے  
 شہزادہ مراد بخش کے مکان پر گئے  
 چار لاکھ و پینے کی پیشکش قبول کی۔  
 محمد جعفر کو جسے قندار کے  
 محاصرہ میں تھیں سخت جانفشانی  
 کی تھی شہزادہ کی سفارش سے  
 آتش بکھڑا ہوا۔

दूसरे दिन शाहजादे दारा शिको  
हके तुलादान काम हरत घा बांद  
शाहने उसके इनाम के दाम अ  
सल और इजाफे से १२ किरोड़ स  
लिया ना पंजाब और सुलतान के  
परगनों में चुकर कर दिये १२ किरो  
ड दाम के ३० लाख रुपये होते थे-

बंदर सरत के मुत्सद्दी की अर्ज  
पहुंची कि रूम के सुलतान नो ह  
मदद का एलची जुलफिकार  
आकार दत्त और सेनागति ले कर आ  
जा है बादशाहने युजुंवरदार के हाथ  
हुक्म भेजा कि उसको १२००० रु  
के वास्ते सरत का मुत्सद्दी ५००० रु  
अरकार और सुलतान अहमद का  
जदार और १२०० रु दरमनपुर दत्त  
दीवान देवे ५००० रु जेन के और  
१२००० आगरे के खजाके से मिले  
इसके सिवाय सुवेदार लोपचा  
अपने २ इलाक़ों में अफगानी तरफ से  
तवाजे करे-

जैसा खुदि ३३० २५ दंजत  
सन १०५५ अहु आज दिज मुल  
कार आका के सररुमते दली ल  
कोल शकर रवां बरवशी और ताहि

दूसरे दिन शाहजादे दारा शिको  
के डरान की सख्त नही सले  
बादशाहने उसने फिर प्रादुर्ग  
अनाम के दाम اصل दरमनाफे से  
१२ किरोड सालाने पंजाब और डरान के  
परगनों में मقرر कर दिये १२ किरोड  
दाम के ३० लाख रुपये होते थे-  
मुत्सद्दी बंदर सरत की अर्ज  
से معلوم हुआ कि सुलतान मुहम्मद  
फिर रूम का अलमिनी और अफगान  
अंदर खालिफ के आत बादशाहने  
गुजरार के अंतर्गत हुक्म भेजा कि  
उसके १२००० रु के वास्ते सरत का  
मुत्सद्दी ५००० रु अरकार और  
सुलतान अहमद का जदार और १२००  
रु दरमनपुर दत्त दीवान देवे ५०००  
रु जेन के और १२००० आगरे के  
खजाके से मिले इससे सिवाय  
सुवेदार लोपचा अपने २ इलाक़ों  
में अफगानी तरफ से तवाजे करे-

खुदोदो अन्तर्गत हुक्म  
मिलोस साल अहमद  
रूम का अलमिनी और अफगान  
अंदर खालिफ के आत बादशाहने  
गुजरार के अंतर्गत हुक्म भेजा कि  
उसके १२००० रु के वास्ते सरत का  
मुत्सद्दी ५००० रु अरकार और  
सुलतान अहमद का जदार और १२००  
रु दरमनपुर दत्त दीवान देवे ५०००  
रु जेन के और १२००० आगरे के  
खजाके से मिले इससे सिवाय  
सुवेदार लोपचा अपने २ इलाक़ों  
में अफगानी तरफ से तवाजे करे-



او سکھٹے اور اسکی علاوہ پانچ سو روپے  
 سلطان سلیمان شکوہ نے اور بندہ  
 بہار سعد الدخان نے یہی علاوہ  
 خلعت اور اسب وغیرہ کے لئے  
 اس طرح کل نقد و خیس  
 روز ملازمت سے وقت  
 رخصت تک سفیر مذکور کو  
 دولاکھ سو پچتر ہزار روپے  
 کا ملا تھا۔  
 قایم بیگ کو جو عربی و ترکی زبان  
 بخوبی جانتا تھا اس کے ساتھ قیصر  
 کے دربار میں جا کا حکم ہوا اس کا جواب  
 سعد الدخان وزیر نے عربی میں لکھا  
 اور قیصر کے واسطے بادشاہ نے ایک خط  
 مرصع قیمتی ایک لاکھ و پچتر سو روپے  
 و زر و کی لڑائی لگی تھیں و درگھر  
 قیمتی چالیس ہزار روپے لکھ ہزار روپے  
 بنکالہ احمد آباد و بہار پر سادہ پڑھو  
 قیمتی ایک لاکھ و پچتر سو روپے  
 عطر جہانگیری کا ایک شیشہ قیمتی  
 چار ہزار روپے قایم بیگ کے حوالہ  
 کیا اور وقت رخصت سفر کے اسکی باقی  
 استقبال میں بیٹھنے پہنچنے کا ذکر سن کر  
 سب صفا نہ جا رہے تھے امام بہر مہر کی  
 جو پیشہ بادشاہ کے بازو میں

سیوا دیا اور ۱۶۰۰۰ سادو دیا  
 و جزیر نے دھڑے اور تین تار بگور  
 کے ساتھ دیا آوا دیا اس دن سے  
 لے کر ویدا ہونے کے وقت تک کول  
 ۲۰۰۰۰ اس کے ملا دیا کا دیا مہر  
 کو جو عربی اور ترکی بولی  
 چھیتر ہونے بول جاننا دیا اس کے  
 ساتھ کے سر کون کے دربار میں جانے کا  
 حکم دیا اس کا جواب سادو دیا  
 و جزیر نے عربی میں لکھا کے سر  
 کے واسطے ۱۰۰۰۰ کی قیمت  
 کی جس میں موتی اور پتھر کی لڑائی  
 یاں لگی دھڑے ۱۰۰۰۰ کی قیمت  
 تکی ونگالے احمد دیا و اور بوس  
 ہان پور کے سادو اور جزیر کے کپڑے  
 کے ۱۰۰۰ دیاں جو ۱۰۰۰۰ کے پتھر اور  
 ۵۰۰۰۰ تولاں اور جہانگیری ۵۰۰۰۰ کی  
 قیمت کا جو ۱۰۰۰۰ شیشے میں دیا کا دیا  
 مہر کے ہوا لے کیا دیا اور و  
 کیل کے ویدا کرتے وقت وکیل  
 کی جہانگیری اس کے بول میں ہے جہانگیری  
 نے کانٹا کر کھنڈ کر واد شاہ نے ج  
 وادرات کے ۱۰۰۰ دانوں کی مالنا جی  
 جس سے کی سو مرنے جہانگیری مہر کے پتھر  
 اور جو ہمیشہ واد شاہ کے کھنڈ میں





इसलिये बादशाहने खलीफा  
हवाको ८००० सवारों से उसके  
ऊपर खाने किया-

२६वां वरस.

कातिकसुदि२संवत् १७१९से-

कातिकसुदि३संवत् १७१२तक

कातिकसुदि १० को बादशहने रघु  
नासाहिबकी दरगाहमें जाकर दु  
वारा जियारत की-

कातिक सुदि ११ को बादशह ने  
अजमेर से कूच किया मंगसर वदि  
कोमालपुर में मुकाम हुआ वहां  
बदुल करीम राणा के बेटे को लेकर  
हाज़िर आया उस जङ्गल के का अ  
तक नाम नहीं रखा गया था इसलि  
ये बादशह ने उसका नाम जोनाग

सिंघरखा और उसको मोतियोंका  
सरपेच जड़ाक उर्बसी वंगेरा इना  
यत फरमाया उसके साथियों में  
सिरामचंदर वंगेरा आदमियोंके  
घोड़े और रिवल अत इनायत किये

मंगसरवदिर्कोसादुध्नाखोलं

शकरसमेतचीतोडसेहजिरश्राया

मंगसरबदि १३ को राणा के बेटे को  
हाथी और घोड़ा इनायत हुआ और

اسیے بادشاہ نے علیل سردخان کو  
آٹھ ہزار سوار سے اوکی سزا دی  
کیواسطے تعینات کیا۔

۲۹ وان برس ۱۰۶۵  
۳۰ نومبر ۱۶۵۴ء سے ۱۱۹ کنویر

## ہجری نمک

۹ محرم کو بادشاہ نے خواجہ  
صاحب کی درگاہ میں جا کر وہاں  
نارت کی۔

۱۱۔ محرم کو بادشاہ نے اجمبر سے  
 صلح کیا۔ ۱۲۔ محرم کو مالپور و مین  
 مقام ہوا و مین عبدالکریم رانا کے  
 بیٹے کو لیکر حاضر آیا اوس  
 رشتے کا نام اب تک سہن رکھا

یہاں تھا اسلئے بادشاہ نے  
وہ نام سو بہاگ سنگہ رکھا  
اور اسکو توتیوں کا سرچ اور  
رصع اور بسی وغیرہ پر غایت  
رایا اور اس کے سابقہ یوں میں  
میں چند وغیرہ سخت و کمزور  
میں غایت کے

۲۲ محرم کو سعد المدغنی نے  
مکہ کے بیچوں سے حاضر کیا  
۲۳ محرم کو رما کے بیچے کو  
نبی و کبریٰ ا عنایت ہو کر



شاہ ایران کے وزیر خلیفہ سلطان  
کا بہانہ میرجعفر باسید نوکری ہے  
وطن سے حاضر آیا بادشاہ نے  
اُس کو دس ہزار روپیہ  
انعام دیکر ڈیڑھ ہزاری ذات  
اور ہزار سوار کے منصب پر نوکری  
رکھ لیا۔

۹۔ بیچ الاول کو بادشاہ  
 منزل خواجہ خضر سے کشتی میں سوار  
 ہو کر قلعہ شاہ جہان آباد میں  
 داخل ہوئے۔

۱۸ ربیع الثانی سے بادشاہ کو  
 ۶۶ دان قمری برس شروع ہوا جس  
 کے جشن منان میں شانہ زار ارٹیکو  
 کوڑا ملی لاکھ روپیہ کا خلعت خا  
 مینے کی کنیاں اور دو زمین  
 موتی ملے ہوئے اور ایک لاکھ  
 روپیہ کا سرینج مرصع معہ مبلغ  
 ۱۰ لاکھ روپیہ نقد کے عطا فرمایا  
 اور تخت کے پاس ایک سو  
 کی نقدی پر بیٹھنے کا حکم اور  
 شاہ بلند اقبال کا خطاب بجناب  
 اور سلطان سلیمان شکوہ کا منصب  
 دو ہزاری ذات اور



और फरजी बगेरा समेत शाहजहाँ लंदन  
वाल की सरकार से इनायत हुये-

इसी मजलिस में सिराही के राव

अरब राजने हाजिर होकर मुजर

किया बादशाह ने उसको सरपेच

जडाऊ कडे और घोड़े इनायत किये

दहली बाहरे के ४ अरबी घोड़े बा

दशाह की तजर से गुजरे और उस

ने बादशाह की तरफ से हाथी इ

नायत हुआ सूरत में इसके बराब

(कोई धनवान नहीं था)-

नादों बदि ७ को ५२ घोड़े शाह शु

ता अके जेजे दुवे बादशाह की नजर

से गुजरे-

आरंगजेब के बेट सुलतान मोह

मद को १ किराड दाम बंगाले और

इडी से के सबे से इनायत हुये-

सुछा सुफी आय को दानि शमंद

रवां का रिताब और दूसरे बरवशी

का ओहदा जशकर रवां से उत्तर

कर मिला-

नादों सुदि ५ को तमाम जेरजेब

हकीम सालह को इनायत हुआ

जेरजेब १ रवां नचे कामा मथा जो

हमेशा और हर जगह हजर में मौजूद

खलعت सबे चारुब फरजी और

के शाने लोहे की सरकार से عنایت ہو

اسی مجلس میں سروہی کے

رادا کہی آج نے حاضر ہو کر ملازمت

کی بادشاہ نے اسکو سرج دست

بند مرصع اور گہوڑا وغیرہ عنایت

ہر جی سروہ کے چار غری

گہوڑے بادشاہ کی نظر سے گذرے

بادشاہ کی طرف سے دیکو ہا نہی

عنایت ہوا اور سوقت سوہن میں

پوسہ مذکور کے بار کوئی نہ مند نہ تھا-

ادھر سوال گو ۲۰ گہوڑے

شانہ لڑ محمد شجاع کے پیچے ہو

بادشاہ کی نظر سے گذرے-

اورنگ زیب کے بیٹے سلطان

محمد کو ایک کروڑ دाम صوبہ بنگالہ

اور اوڑیسہ سے عنایت ہو

ملا شغلا کے کو دانشمند خان

کا خطاب اور بخشی گیری دویم کا

عہدہ بجا سے لشکر خان کے

مرحمت ہوا-

مزدی قعدہ کو تمام زرجیب

حکیم صلح کو مرحمت ہوا زرجیب

بجارت ایک خواجہ سے ہئی جو

ہیشہ اور ہر جگہ حضور میں موجود

رہتا تھا جس میں تیریا کھدوا جلا

سورک، نواشا دارو، کھمبونی، جھر مہا

را، مہم یا، اور جدار رستا،

جیسی دوا، ۱۰۰ روپے اور ۱۰۰

موتی رستا، ۱۰۰ روپے اور ۱۰۰

موتی رستا، ۱۰۰ روپے اور ۱۰۰

موتی رستا، ۱۰۰ روپے اور ۱۰۰

موتی رستا، ۱۰۰ روپے اور ۱۰۰

موتی رستا، ۱۰۰ روپے اور ۱۰۰

موتی رستا، ۱۰۰ روپے اور ۱۰۰

موتی رستا، ۱۰۰ روپے اور ۱۰۰

موتی رستا، ۱۰۰ روپے اور ۱۰۰

موتی رستا، ۱۰۰ روپے اور ۱۰۰

موتی رستا، ۱۰۰ روپے اور ۱۰۰

موتی رستا، ۱۰۰ روپے اور ۱۰۰

موتی رستا، ۱۰۰ روپے اور ۱۰۰

موتی رستا، ۱۰۰ روپے اور ۱۰۰

موتی رستا، ۱۰۰ روپے اور ۱۰۰

موتی رستا، ۱۰۰ روپے اور ۱۰۰

موتی رستا، ۱۰۰ روپے اور ۱۰۰

موتی رستا، ۱۰۰ روپے اور ۱۰۰

موتی رستا، ۱۰۰ روپے اور ۱۰۰

موتی رستا، ۱۰۰ روپے اور ۱۰۰

موتی رستا، ۱۰۰ روپے اور ۱۰۰

موتی رستا، ۱۰۰ روپے اور ۱۰۰

موتی رستا، ۱۰۰ روپے اور ۱۰۰

موتی رستا، ۱۰۰ روپے اور ۱۰۰

شاہجہان آباد شاہجہان آباد ۱۰۱۱

شاہجہان آباد شاہجہان آباد ۱۰۱۱

شاہجہان آباد شاہجہان آباد ۱۰۱۱

شاہجہان آباد شاہجہان آباد ۱۰۱۱

जहाज़ में रहने दिया और आय ३०००  
इब्राहीमी (रुपया) और जवाहरात का  
संदूक चाले कर खुशकी के रस्ते से  
६ दिन में जह् पहुंच गया वह जहाज़  
नहीं पहुंचा क्योंकि रस्ते में ही डूब  
गया था जुलफिकार आका बीम  
र तो पहिले से ही था अब जो जहाज़  
का डूबना सुना तो असबाव खोज  
ने के दुरव से मर गया -

बरस ३० वां

कातिक सुदि २ संवत १०१२ से -

कातिक सुदि २ संवत १०१३ तक -

मंगसरवदि १० को ६ लाख रु

पये दरबन के रजाने से शाहजहाँ  
औरंगजेब को इनायत हुवे -

मीरजुमला जो कुतुबुलमुल्क

का नोकर था करनाटक का मुल्क

जो १५० कोस लंबा और ३० कोस

चौड़ा था और जिसमें बहुत सी

खाने हीरे वगैरे की थी और हासि

लजी ४० लाख रुपया से कम न था

फतह कर के बहुत जोर पकड़ गया

था और इस सब से उसके दुश

मनों ने कुतुबुलमुल्क का दिल

बस की तरफ से फेर दिया था -

जहाज़ में रहे और आप मंत्रार  
अब इसी दरबार का सन्दूक चाले कर  
के अस्ते सो ६ दिन में जह् पहुंच गया  
मोसूफत पार तथा प्रजा के खूब  
होने की खबर आई तो इस  
से مرض الموت بن گرفتार  
हो कर बहुत मसाम  
अस دنیا بے دُن سے  
گذر گیا -

मिस्मान برس

१०५०

१२ अक्टोबर १०५० से १८ अक्टोबर १०५० तक  
१३ محرم کو چاند لاکھ روپیہ خرانہ  
سے شانبز لاء اورنگ زیب کو  
خایات ہوئے -

قطب الملک کو میر محمد سعید

آرستانان عرف میر جید کے کو بیگم کی

ملکیت جو ترقیہ سو کوस لمبی اور ३

कोस चौड़ी ہو اور زمین بہت سی

کسانین سے مرد غیر مولیٰ بہن اور جب

بہن ہو ایسے ایک چوبیس لاکھ روپیہ خرانہ

سے فخر کر کہ بہت سی خوشی ہو

سید کو بی بی داس سے بہت

بہنیں قطب الملک کو میر جید

کو بہت خوشی ہوئی

इनायत हो चुके थे और १० घंटे उ  
सके बाप शाहशुजाअ के वास्ते नी  
उसको दिये गये -

छान्त हो चुके थे और इसी को ठीक  
उसके बाप शाहशुजाअ के वास्ते नी  
उसके दिये गये -

जवार का जमींदार श्रीपत जि  
सकी उत्तर सीमा बगलारो से और  
दक्षिण सीमा कोकन से मिली थी  
और चीन का बंदर नी उसके कब  
जे में था हुकूम नहीं माना करता था  
इस लिये वहां की जमींदारी शाह  
जोदे और गजेब की अरज से राव  
करण को इनायत हुई -

जवार का जमींदार श्रीपत जि  
सकी उत्तर सीमा बगलारो से और  
दक्षिण सीमा कोकन से मिली थी  
और चीन का बंदर नी उसके कब  
जे में था हुकूम नहीं माना करता था  
इस लिये वहां की जमींदारी शाह  
जोदे और गजेब की अरज से राव  
करण को इनायत हुई -

चेतसुदिर सनी चरवार को ३०  
वां जून सी सन शुरू हुआ जि  
सके दरबार मामूल के माफिक हुवे  
सादुल्लारवां वजीर का  
मरना -

रोज शुभ नूर जमादी الثانی کو  
۳۰ جون جلوسی سند شروع ہوا جس  
دربار معمول کے موافق ہو۔  
وفات سعد الدخان

चेतसुदि १५ को सादुल्लारवां  
वजीर जो अकल और तदबीर  
में अपने वक्त का इकाया कौल  
ज की बीमारी से मर गया इससे  
बादशाह को इतना रंज हुआ कि  
आखों से आंसू निकल पड़े उस  
का बड़ा बेठा जुत कुल्लाह १५ वर  
सका था उसको तो ७ सदी जात  
और १०० सवार का मन सब मिला

وزیر  
۱۵ جمادی الثانی کو سعد الدخان  
سعد الدخان جن قنون علم رسمی فصا  
زبان و عقل تدبیر میں اپنے زمانہ کا  
یکتا تھا عارضہ قویج سے مرگیا اس  
واقفہ سے بادشاہ کو اس قدر رنج و غم  
ہوا کہ آنکھوں سے آنسو نکل پڑے  
اوسکا بڑا بیٹا تھ ۱۵ برس  
کا تھا اوسکو تو سات صدی جا  
اور ۱۰۰ سوار کا



वाकी ३ बेवों २ बेटियों और ४ औरतों  
कामुनासबरोजीना मुकररे होगया  
उसके नोकर अबदुलनबी को ह  
जारी जात और ४०० सवार कामन  
सब मय फौजदारी शमशगबादके  
इनायत हुआ इसी तरह से उसके  
दूसरे नोकरों की भी परवरिश हुई  
४ किरोड दाम उसकी जागीर में से  
शहबलंद इकबाल दारा शिकोह  
को इनायत हुवे जो मथरावगेरा प  
रगनों के थे और उन परगनों की  
फौजदारी और राहदारी की शहबु  
लंद इकबाल के नोकर शेरबदा  
उदके जिम्मे की गई -

कधनाथजो तन दफतरका द  
फतरदारथा औरसाहुआखांकाव  
नायाहुआथाउसकोबादशाहने  
हजारीजात४०० सवारकामनसब  
औररायरायाकारिवताबदेकर  
यहहुकम फरमाया कि दीवानआ  
जाके मुकररहोने तक दीवानगी  
का काम संचाले और कामोंका  
खुलासा अरज करता रहे और खुद  
बादशाहकी कामोंकी जांचकरने लगे  
चंद्रनानको जो अफजलखाना

اور باقی تین بیٹوں و بیٹیوں اور  
چار عورتوں کا مناسب وزینہ مقرر  
ہو گیا اور سکی نوکر عبدالغنی کو ہزاری  
خاں اور چار سو سوار کا منصب مع  
فوجداری شمس آباد کے عطا ہوا  
اسی طرح سے اُس کے اور نوکر و نکلی  
بھی پرورش ہوئی۔ چار کر وڑ دام  
اور سکی جاگیر میں سے شاہ بلند قبا  
دارا شکوہ کو مرحمت ہوئی اور اوس  
محال کی فوجداری اور ہداری  
شاہ موصوف کے ملازم شیخ داؤد  
کے متعلق کی گئی یہ محال چاکر وڑ دام  
کے منہرا وغیرہ پر گون  
میں تھے۔

رگہنا تہ جو دفتر تن کا دفتر  
 ارہنا او کو بادشاہ نے ہزاری  
 فات چار سو سوار کے منصب و تر  
 راجی ریان کے خطاب سے مشہور  
 کر کے بیہ حکم فرما کہ دیوان اعلیٰ  
 کے حفر ہوئے تک دیوانی  
 کام سنبھالے اور خلاصہ بظاہر  
 عرض کرتا رہے اور بادشاہ بذات  
 خاص بھی معاملات ملک ال  
 کی تنقید کرتے گئے۔

چند بیان جو مطلب :

काबदायाहुआ १ लायक मुनशी  
या और दाराशिको हने बाद शह  
से मांग लिया था अब फिर बाद शह  
ने दाराशिको हसे लेकर मुनशी  
पर मुकररी किया और रायचं  
गान कारिवताब देकर दूसरे हिं  
नशियों का अफसर बनाया-  
दुल्लार बाबट ने

لڑی میں بے لیا اور تربیت کیا  
 ہوا افضل خان کا تھا اور شاہزادہ  
 نے بادشاہ سے ایک لیا تھا یہ  
 بادشاہ شاہزادہ دارالارشاد کی خدمت  
 پر مقرر کیا اور اسے چند بہان  
 کا خطاب دیکر دوسرے ہندو  
 مشہور سپر امتیاز بخشا۔

شیون پر امتیاز بخشا۔  
سعد الدخان بہت نیکو  
نہا اناں دیات اور خلد ترسی  
سے کام کرنا تھا اوسے اپنی  
وزارت میں رعایا پر کوئی نئی لاگ  
لگانیکی بدنامی نہیں کی مقتدیات  
اور محاسبات شناسی کو غور و جوی  
کے نقصان کا لحاظ رکھ کر فیصلہ  
تا تھا پہلے ضابطہ تھا کہ عالمہ  
زیر تحصیل میں سے فیصلہ  
پانچ روپیہ مجب دیا جائے  
نئی ایک سو روپیہ میں  
تو جمع ہو کر پانچ رو  
چوٹ ہو جائے  
خان نے ایک دن  
ملا کر انصاف کرنے  
سید حکم جاری کر کے  
پانچ روپیہ تحصیل  
سہار میں جمع

करें और ५) अपने हक के लेले वें म  
गर फिर बहुत पछताया और मुह  
तक अफसोस कर कर के कहता था  
कि जिस दिन मैं ने इस जुल्म का हु  
कम लिखा मेरा हाथ कौन ही सख्खा  
शाहजादा दाराशिकोह सादुख्  
रवां से नाराज़ रहा करता था १ दिन  
उसने बादशाह से अरज़ की कि सा  
दुख्खारवां ने बैरान और कम हासि  
ल परगने तो हमारी जागीर में दि  
ये हैं और जियादा पैदावार के खु  
दले लिये हैं सादुख्खारवां ने यह  
सुनकर शाहजादे के वकील को  
बुलाया और जो परगने कि शाह  
जादे के आमिलों के जुल्म से उन  
डगये थे वे तो अपनी जागीर में ले  
लिये और उनके बदले अपनी  
जागीर में से जो परगने कि वकील  
ने मांगे शाहजादे की तनखाह में  
लिख दिये मगर दो एक साल पी  
छे ही वे नी पहिले परगनों से जि  
यादा बैरान होगये -

सादुख्खारवां के दस्तरबतों में  
से जो उसने मस्तोफी की बदरन  
वीसी (परताल) की फरदों पर किये

करिन اور پانچ روپيا نے خي کے  
لے لیکن مگر نہ بہت بچایا اور  
دست تک فستوں کر گرفتار کہ جس دن  
میں نے اس عت کا حکم دیا میرا ہاتھ  
نہیں خشک ہو گیا۔

شاہزادہ داراشکوہ سعدالمدخان  
سے ناراض ہاکر تائبانہ ایک دن و س  
بادشاہ سے عرض کی کہ سعدالمدخان  
نے ویران ورم حاصل پر گنہ تو بہا  
جاگیر میں نے یہ ہیں و زیادہ پیدا  
کے خود نے یہ من سعدالمدخان  
نے یہ شکر شاہزادہ کے وکیل کو بلایا  
اور جو پر گنہ کہ شاہزادہ کے عاملوں  
کی بدعت سے ویران ہو گئے  
تھے وہ تو اپنی جاگیر میں  
لے لے اور بالمعوض اون  
کے جو پر گنہ کہ وکیل نے  
مانگو وہ اپنی جاگیر میں سے  
شاہزادہ کی جاگیر میں لکھ دیے  
مگر دو ایک سال کے بعد ہی وہ  
سب اگلے پر گنوں سے زیادہ  
ویران ہو گئے۔ سعدالمدخان  
سے جو اس نے مستوفی کی بدعتوں  
کی فرد و نہر کیے تھے۔

धे २ दफैयहां लिखे जात हैं-

१ राजा दोडरमलने अकबर

नादशाह के राजमें यह जाबता

मुकररे किया था कि आमिलों

और किरौडियों की फाजिल

जो १०० से कम होतो मुस्तोफी

हिसाब में मुजरान देवें और जि

यादा होवे तो दे देवे मगर शाह

जहां के जमाने में मस्तोफी ले

गवदनीयती से आमिलों की

फाजिल मुजरान देने में दिक्कतें

उलतें थे जब ऐसे १ हिसाब की

फरद सादुल्लाहों के सामने चे

राहुई तो उसने यह दस्तरत

किये कि अयमस्तोफी हिंदी म

सलमशाहूर है कि लेना लेना

और देना देना जब कि सरकार

जाबता मुकररे हो चुका है कि

१०० से ऊपर फाजिल मुजरान

गावे तो तुरंत नई लाग जाग

रअमने और मेरे वास्ते दाकबत

एराव होने की बद्दुआ

२. एक दिन राजा से कहि कि

यों से न दरनबी की

शेख जहाँ बादशाह

नंदौल नوبेद

कि राजा नुदर मल

कि राजा नुदर मल

कि राजा नुदर मल

कि राजा नुदर मल

कि राजा नुदर मल

कि राजा नुदर मल

कि राजा नुदर मल

कि राजा नुदर मल

कि राजा नुदर मल

कि राजा नुदर मल

कि राजा नुदर मल

कि राजा नुदर मल

कि राजा नुदर मल

कि राजा नुदर मल

कि राजा नुदर मल

कि राजा नुदर मल

कि राजा नुदर मल

कि राजा नुदर मल

कि राजा नुदर मल

कि राजा नुदर मल

कि राजा नुदर मल

कि राजा नुदर मल

واستے فہرہ پشادہ تو یہ دہستہ رخت  
 کیے کی شہر کے مینارے کو  
 پمہر رخت دے پینگل جانے کے بعد  
 جو باقی رہے وہ نرا لے وے - +  
**دربار کا حال**

آدیل رخت کی پشادہ کشتن نجر  
 سے یونہی جس میں ۱ ہڈا ہادی سونے  
 کی سجاوٹ سے تھا جس کی قیمت  
 ۶۰۰۰۰ روپے بادشاہ نے نہی آدیل  
 لڑا کے واسطے ۱ ہڈا کپڑے ۳۰۰۰  
 روپے کی نہی -

اسی طرح قلعہ قلعہ کو پہ  
 شاکش ۸ ہادی ۲ ہادی ۱۱ اور کھ  
 جواہر ۱۱ ہادی ۱۱ ہادی ۱۱ ہادی ۱۱  
 فہرہ پشادہ تو یہ دہستہ رخت  
 تہو وہ ۱۱ اور کھ ۱۱ ہادی ۱۱ ہادی ۱۱  
 مہر بانی کا فرمان لیا گیا  
 کماؤ کے جہاد بھادور  
 دہرہ رخت لیا لیا کے ساتھ د  
 رگاہ میں ہادی ۱۱ ہادی ۱۱ ہادی ۱۱

۱۱ ہادی ۱۱ ہادی ۱۱ ہادی ۱۱ ہادی ۱۱  
 سا دہرہ رخت لیا لیا کے ساتھ د  
 تہو وہ ۱۱ اور کھ ۱۱ ہادی ۱۱ ہادی ۱۱  
 جہاد بانی کا فرمان لیا گیا  
 کماؤ کے جہاد بھادور  
 دہرہ رخت لیا لیا کے ساتھ د  
 رگاہ میں ہادی ۱۱ ہادی ۱۱ ہادی ۱۱

واسطے ایک دن فرو پیش ہوئی تھی  
 دستخط کیے کہ این مبارک برف  
 را پیش آفتاب بارندہ ہر جہ بعد نمود  
 آن باقی ماندہ باز یافت نمایند

**دربار کا حال**  
 عادل خان کی پیشکش بادشاہ  
 کی نظر سے گذری اور سید ایک  
 بڑا ہنسی سونے کی جہول کا تھا  
 جس کی قیمت ۱۱ ہادی ۱۱ ہادی ۱۱ ہادی ۱۱  
 بادشاہ نے بھی عادل خان کے  
 واسطے ایک جہول ۱۱ ہادی ۱۱ ہادی ۱۱ ہادی ۱۱  
 اس طرح قلعہ قلعہ کی پیشکش

مہر چار ہادی ۱۱ ہادی ۱۱ ہادی ۱۱ ہادی ۱۱  
 کے عبد اللہ خان کی معرفت پیش  
 ہوئی اور کو بندہ ہادی ۱۱ ہادی ۱۱ ہادی ۱۱  
 ہوئے اور قلعہ قلعہ کے نام فرمان  
 عنایت آئین لکھا گیا -  
 کماؤ کے جہاد بھادور  
 خلیل اللہ خان کے واسطے دہرہ رخت  
 حاضر ہو کر دہرہ رخت اور

۱۱ ہادی ۱۱ ہادی ۱۱ ہادی ۱۱ ہادی ۱۱  
 اس کی ایک ہادی ۱۱ ہادی ۱۱ ہادی ۱۱ ہادی ۱۱  
 کو دہرہ رخت کو ۱۱ ہادی ۱۱ ہادی ۱۱ ہادی ۱۱  
 ۱۱ ہادی ۱۱ ہادی ۱۱ ہادی ۱۱ ہادی ۱۱  
 دہرہ رخت کو ۱۱ ہادی ۱۱ ہادی ۱۱ ہادی ۱۱  
 دہرہ رخت کو ۱۱ ہادی ۱۱ ہادی ۱۱ ہادی ۱۱  
 دہرہ رخت کو ۱۱ ہادی ۱۱ ہادی ۱۱ ہادی ۱۱

बाजीचीजेअपनेमुल्ककीनजर  
कीबादशाहने१००घोडेतुर्कीक  
जमघरतलवारदानमीनाकार  
जडाऊसरपेचमोतियोंकीमाला  
औरकडेवगेराइनायतकरकेक  
माऊकीबलनायतचीउसकोबर  
शदीबल्किरपरगनेऔरचीकि  
जिनकीजमा१२जारवदामकीथी  
इनायतकियेऔरघरजानेकी  
रखसतदी-

हयातरवाकोजिसकीउमर३०  
बरससेगुजरगईथीलकवेकी  
बीमारीहोजानेसेगुसलरवाने  
कीदारोगाईनामदारवाकोइन  
यतहुईऔरहयातरवाकेवास्ते  
२०जारवदामहवेलीआगरेसे  
जागीरकेतौरपरमुकररेहुवे-  
दरवनकाइन्तजाम-  
बालाघाटकादीवानमुरशद  
कुलीरवादकवनकेचारोंसूचों  
कामुस्तकिल(पक)दीवानउकर  
रेहुआऔरउसकोउसमुल्कके  
आबादनरनेकीबहुतताकीदहीगई-  
दरनमेंजमीनकीपेमायराजो  
रबीधेकेऊपरजमायाधकर

बन्सीचनरननेलककीनकी  
बादशाहनेअیکو کوثر سے ترکی  
جمہر تلواری سپر مینا کار معہ براق و  
سرج مرصع و مالکے مزوارید  
بند و غیرہ کے عطا کر کے کساؤ کی  
ولایت بھی بدستور سابق اوسکو بخش  
دی بلکہ دو پر گئے اور بھی کہ جن  
جسم بارہ لاکھ دام  
کی تہی عنایت کیے اور وطن  
جانب کی رخصت دی-

حیات خان کو جس کی  
مشر بریس کی ہو گئی تھی  
سبب لقوہ ہو جانے کے  
۱۰ لاکھ دام حویلی اکبر آباد  
بطور جاگیر کے مقرر ہوئے  
اور داروغگی غسائی کی نامہ دار خان  
عنایت ہوئی  
انتظام و کہن  
بالا گاہ کا دیوان مرشد قلی خان  
دیکے چاروں سوہون کے مستقل  
دیوان مقرر ہوا و اس کو  
واسطے آبادی ملک مقرر  
ہوئے کہ ایک کی کمی  
اد گئے

حاصل لینے کا دستور نہ تھا کہ تنکا  
 ایک بل اور دو بلوں سے جو  
 جنس پیدا کرنا تھا اوسکے اوپر  
 تہوڑا سا حاصل لے لیا جاتا تھا  
 کم زیادہ غلہ پیدا ہونے کی کچھ  
 باز پرس نہیں کی جاتی تھی۔ جب  
 اوس ملک میں مغلوں کا عمل ہوا تو  
 طرح طرح کی آفتوں سے رعایا  
 اوپر گئی اور گانود پر گئے سب  
 ویران ہو گئے سرحد قلیخاں اگرچہ  
 ترک تھا تو بھی مستعدی پیش  
 سیاقی دان اور سمجھدار  
 تھا جس طرح کہ اکبر بادشاہ  
 کے وقت میں راجہ توڈور  
 مل نے ہندوستان کے  
 انتظام کا دستور اعمل بنایا  
 تھا اسی طرح اسنے بھی  
 رعایا کو مجاہد سے ہلا کر ملک  
 میں ایماندار امین مقرر کئے  
 پہلے زمین باپ کر اوس کا  
 رقبہ نکالا اور قابل زراعت  
 اراضی کو ناقابل زراعت  
 سے جدا کر کے رعایا کو  
 کھیتی باڑی پر لگایا  
 جہاں مستعد

ہا سلیل نے نہ کا دستور نہ تھا  
 کا شاکار ۱۷۰۰ ہلوں سے  
 جو جنس پیدا کرتا تھا اوس کے  
 اوپر تہوڑا سا حاصل لے لیا جاتا تھا  
 کم زیادہ غلہ پیدا ہونے کی کچھ  
 باز پرس نہیں کی جاتی تھی۔ جب  
 اوس ملک میں مغلوں کا عمل ہوا تو  
 طرح طرح کی آفتوں سے رعایا  
 اوپر گئی اور گانود پر گئے سب  
 ویران ہو گئے سرحد قلیخاں اگرچہ  
 ترک تھا تو بھی مستعدی پیش  
 سیاقی دان اور سمجھدار  
 تھا جس طرح کہ اکبر بادشاہ  
 کے وقت میں راجہ توڈور  
 مل نے ہندوستان کے  
 انتظام کا دستور اعمل بنایا  
 تھا اسی طرح اسنے بھی  
 رعایا کو مجاہد سے ہلا کر ملک  
 میں ایماندار امین مقرر کئے  
 پہلے زمین باپ کر اوس کا  
 رقبہ نکالا اور قابل زراعت  
 اراضی کو ناقابل زراعت  
 سے جدا کر کے رعایا کو  
 کھیتی باڑی پر لگایا  
 جہاں مستعد

نئے وہاں لائق آدمیوں کو  
 مقدم کیا۔ اور ان کو بیلوں  
 وغیرہ کے واسطے تنہا وی دیکر  
 زمین مقرر کر لیں اور شخصیں  
 جمع کے تین طریقہ جاری کئے  
 اول سربستہ جو قدیم زمانہ  
 میں مروج تھا  
 دویم بٹائی یا حاصل  
 سویم جھبندی  
 بٹائی میں بارانی زمین کا  
 اوصاف اور چاہی کا تیسرا حصہ  
 مقرر کیا مگر انکو ریش کرکیلہ  
 خفاش۔ بلدی اور زیرہ وغیرہ  
 کا چوتھے حصہ سے نوں حصہ  
 ملک حاصل رکھا کیونکہ یہ خیریں  
 بہت خرچ سے زیادہ مدت میں  
 پیدا ہوتی ہیں۔ اور نہر سے چوبیسواں  
 دارمواں کا حصہ جیسا موقع چوایا جاتا تھا۔  
 جھبندی کے واسطے مشرقیناں  
 خود اپنے ہاتھ سے جریب پکڑ کر  
 زراعت کی بیابان کرنا تھا جن  
 میں کوئی عین نہیں کر سکتا تھا  
 پھر خود ہی جس کی بیگ مقرر کرتا تھا  
 اوسکی اس جزوی سے دکن کی بارانی  
 اور آبیہ نے روز بروز  
 نئے وہاں لائق آدمیوں کو  
 مقدم کیا۔ اور ان کو بیلوں  
 وغیرہ کے واسطے تنہا وی دیکر  
 زمین مقرر کر لیں اور شخصیں  
 جمع کے تین طریقہ جاری کئے  
 اول سربستہ جو قدیم زمانہ  
 میں مروج تھا  
 دویم بٹائی یا حاصل  
 سویم جھبندی  
 بٹائی میں بارانی زمین کا  
 اوصاف اور چاہی کا تیسرا حصہ  
 مقرر کیا مگر انکو ریش کرکیلہ  
 خفاش۔ بلدی اور زیرہ وغیرہ  
 کا چوتھے حصہ سے نوں حصہ  
 ملک حاصل رکھا کیونکہ یہ خیریں  
 بہت خرچ سے زیادہ مدت میں  
 پیدا ہوتی ہیں۔ اور نہر سے چوبیسواں  
 دارمواں کا حصہ جیسا موقع چوایا جاتا تھا۔  
 جھبندی کے واسطے مشرقیناں  
 خود اپنے ہاتھ سے جریب پکڑ کر  
 زراعت کی بیابان کرنا تھا جن  
 میں کوئی عین نہیں کر سکتا تھا  
 پھر خود ہی جس کی بیگ مقرر کرتا تھا  
 اوسکی اس جزوی سے دکن کی بارانی  
 اور آبیہ نے روز بروز

نئے وہاں لائق آدمیوں کو  
 مقدم کیا۔ اور ان کو بیلوں  
 وغیرہ کے واسطے تنہا وی دیکر  
 زمین مقرر کر لیں اور شخصیں  
 جمع کے تین طریقہ جاری کئے  
 اول سربستہ جو قدیم زمانہ  
 میں مروج تھا  
 دویم بٹائی یا حاصل  
 سویم جھبندی  
 بٹائی میں بارانی زمین کا  
 اوصاف اور چاہی کا تیسرا حصہ  
 مقرر کیا مگر انکو ریش کرکیلہ  
 خفاش۔ بلدی اور زیرہ وغیرہ  
 کا چوتھے حصہ سے نوں حصہ  
 ملک حاصل رکھا کیونکہ یہ خیریں  
 بہت خرچ سے زیادہ مدت میں  
 پیدا ہوتی ہیں۔ اور نہر سے چوبیسواں  
 دارمواں کا حصہ جیسا موقع چوایا جاتا تھا۔  
 جھبندی کے واسطے مشرقیناں  
 خود اپنے ہاتھ سے جریب پکڑ کر  
 زراعت کی بیابان کرنا تھا جن  
 میں کوئی عین نہیں کر سکتا تھا  
 پھر خود ہی جس کی بیگ مقرر کرتا تھا  
 اوسکی اس جزوی سے دکن کی بارانی  
 اور آبیہ نے روز بروز



بڑی جاتی تھی۔

پٹانوں کا گھر۔

عزیز خان بخشی جاگیردار

آجی جی رکا بدستری جاگیردار  
رکشا کے میشاہر کو وہاں کے  
ساہی آباد میو نے ۱۸ من سب داروں  
۲۳۵۰ اس کے نو کسے سمیت مار ڈا  
تا تھا اس لیے بادشاہ نے میشا  
ہر کے حکیم بھادور سکا کو وہاں کے  
فسا دیوں کو سزا دینے کا حکم  
لیرا اس نے ۲۰۰۰ سوار لے کر  
فسا دیوں کو چار پانچ مہی  
نہ تک مٹا دیا کیا بہت سے  
آباد شاہی آدمی مارے گئے ۵۰۰  
فسا دی کو کتل دے وا جے م  
کے گئے ان کے گھر جلا دیے گ  
یے بھر دیے اور کٹتے کٹتے  
لڑتے آئے۔

گولہ باری کی موہم۔

گولہ باری نے وہاں سے  
میر جوملا کے بڑے موہم دے کر  
ن کو اس کے آدمیوں سمیت ک  
ر دیا اور ہر بار اس  
کا جوت کار دیا تھا اس لیے  
بادشاہ نے شاہ جہاں محمد  
راجہ بھادور کو لیرا کر دیا

کو وہاں کے فسادات  
منصب داروں اور ۲۴  
نو کروں کو مار ڈالا اس لیے بادشاہ  
نے بہادر خاں ناظم پشاور کو  
فسادوں کی سزا دینی کا حکم لکھا  
اس نے دو ہزار سوار بھیجے  
نے بھی چار پانچ مہی  
کیا۔ بہت سے بادشاہی  
بندے مارے گئے پانچ سو  
قتل ہوئے۔ بعضے پکڑے گئے  
اور ان کے گھر جلا دیے  
گئے بہت سی بکریاں اور  
اونٹ لوٹ میں آئے۔

گولہ باری پر مہم

قلب الملک نے کوہ اندیشی سے  
میر جہاں کے بیٹے محمد امین  
کو مدد متعلقہ کے قید کر دیا  
اور اس کا گھر بار بھی  
منہ کر دیا تھا اس لیے  
شاہ جہاں نے اس کو  
بہادر کو سزا دے کر خود



پاس پہنچا۔ اوسنے اور زیادہ شکایت قطب الملک کی کی اور قطب الملک نے اوسکا مال اسباب بھی جو بے لیا تہا بنیں بھیجا تھا اس واسطے سلطان محمد چہر آباد کو جو گو لکھنڈہ سے ۱۶ کوس اس طرف محمد قلی قطب شاہ کا آباد کیا ہوا ہے روانہ ہوا۔ اور بادشاہی فوج نے قطب الملک کا ملک بھی لوٹنا شروع کیا۔ قطب الملک یہ خبر سنکر ۵۔ ربیع الثانی کو چہر آباد سے گو لکھنڈہ کے قلعہ میں بھاگ گیا اور جب قدر نقد و جو اہر ساتھ لے جاسکا لے گیا۔ باقی مال اور بیوپاریوں کی حفاظت کیواسطے موسیٰ جلم دار۔ اور توپچی بیگ کو مع پانچ چہر ہزار سوار اور دو چہر پیادوں کے مقرر کر کے دوسرے دن سلطان محمد چہر آباد پہنچ کر حسین ساگر تالاب کے اوپر اتر اوسوقت قطب الملک کے محمد محمد نامی بیوپار کے ایک صندوق جو اہل ہوا نہ

پاس پہنچا۔ اوسنے اور زیادہ شکایت قطب الملک کی کی اور قطب الملک نے اوسکا مال اسباب بھی جو بے لیا تہا بنیں بھیجا تھا اس واسطے سلطان محمد چہر آباد کو جو گو لکھنڈہ سے ۱۶ کوس اس طرف محمد قلی قطب شاہ کا آباد کیا ہوا ہے روانہ ہوا۔ اور بادشاہی فوج نے قطب الملک کا ملک بھی لوٹنا شروع کیا۔ قطب الملک یہ خبر سنکر ۵۔ ربیع الثانی کو چہر آباد سے گو لکھنڈہ کے قلعہ میں بھاگ گیا اور جب قدر نقد و جو اہر ساتھ لے جاسکا لے گیا۔ باقی مال اور بیوپاریوں کی حفاظت کیواسطے موسیٰ جلم دار۔ اور توپچی بیگ کو مع پانچ چہر ہزار سوار اور دو چہر پیادوں کے مقرر کر کے دوسرے دن سلطان محمد چہر آباد پہنچ کر حسین ساگر تالاب کے اوپر اتر اوسوقت قطب الملک کے محمد محمد نامی بیوپار کے ایک صندوق جو اہل ہوا نہ

کوت بولم بولم یہ سن کر ناہسودیکو ہیدرا باد سے گولکھنڈہ میں ناگ گیا اور جیتنا راجا نا و جواہرات ساہی لے جاسکا لے گیا اور باقی مال اور بیوپاریوں کے اسباب کی ہیکر جات کے لیے موسیٰ جلم دار اور توپچی بیگ اور تالاب کی بیگ کے پانچ ہزار سوار اور دو چہر پیادوں کے مقرر کر کے دوسرے دن سلطان محمد چہر آباد پہنچ کر حسین ساگر تالاب کے اوپر اتر اوسوقت قطب الملک کے محمد محمد نامی بیوپار کے ایک صندوق جو اہل ہوا نہ

کوت بولم بولم یہ سن کر ناہسودیکو ہیدرا باد سے گولکھنڈہ میں ناگ گیا اور جیتنا راجا نا و جواہرات ساہی لے جاسکا لے گیا اور باقی مال اور بیوپاریوں کے اسباب کی ہیکر جات کے لیے موسیٰ جلم دار اور توپچی بیگ اور تالاب کی بیگ کے پانچ ہزار سوار اور دو چہر پیادوں کے مقرر کر کے دوسرے دن سلطان محمد چہر آباد پہنچ کر حسین ساگر تالاب کے اوپر اتر اوسوقت قطب الملک کے محمد محمد نامی بیوپار کے ایک صندوق جو اہل ہوا نہ

دوسرے دن سلطان محمد چہر آباد پہنچ کر حسین ساگر تالاب کے اوپر اتر اوسوقت قطب الملک کے محمد محمد نامی بیوپار کے ایک صندوق جو اہل ہوا نہ

دوسرے دن سلطان محمد چہر آباد پہنچ کر حسین ساگر تالاب کے اوپر اتر اوسوقت قطب الملک کے محمد محمد نامی بیوپار کے ایک صندوق جو اہل ہوا نہ

किया मगर उस के पुछने से  
 पहिले बादशाही آدمी शहर  
 में घुसने लगे तो कुतबुलमुल्क के  
 आदमियों ने रोका इस पर लड़ाई  
 हुई शहजादे ने हुसेन नागर से  
 जहां वह ठहरा हुआ था मोहम्मद  
 बेग को कुछ आदमियों से लूट  
 बंद करने के वास्ते नेजा और मो  
 हम्मद नासिर को जो इसके पीछे  
 पहुंचा था कैद कर लिया मगर  
 शहर मोहम्मद बेग के पहुंचने से  
 पहिले लूट गया था और औरग  
 जेब का डोटीदार जो गोल कुंडे में  
 रहता था मूसा के हाथी और दूस  
 रा असबाब लेकर आया और  
 सेंदूक चाजवाहर का २ हाथी औ  
 र २ घोड़े सोने के साजो समेत  
 अपनी तरफ से नजर किये -  
 दूसरे दिन शहजादे मोहम्मद  
 सुलतान ने शहर में आम लकर  
 के हादी दाद रवां वगेरा को हुक्म  
 दिया कि शहर की इमारतों को  
 जो तमाम लकड़ी की है लश्क  
 रियों की लूट मार और आग से  
 बचावे और कुतबुलमुल्क जो माल

किया मगर उस के पुछने से  
 पहिले बादशाही آدمी शहर  
 में घुसने लगे तो कुतबुलमुल्क के  
 आदमियों ने रोका इस पर लड़ाई  
 हुई शहजादे ने हुसेन नागर से  
 जहां वह ठहरा हुआ था मोहम्मद  
 बेग को कुछ आदमियों से लूट  
 बंद करने के वास्ते नेजा और मो  
 हम्मद नासिर को जो इसके पीछे  
 पहुंचा था कैद कर लिया मगर  
 शहर मोहम्मद बेग के पहुंचने से  
 पहिले लूट गया था और औरग  
 जेब का डोटीदार जो गोल कुंडे में  
 रहता था मूसा के हाथी और दूस  
 रा असबाब लेकर आया और  
 सेंदूक चाजवाहर का २ हाथी औ  
 र २ घोड़े सोने के साजो समेत  
 अपनी तरफ से नजर किये -  
 दूसरे दिन शहजादे मोहम्मद  
 सुलतान ने शहर में आम लकर  
 के हादी दाद रवां वगेरा को हुक्म  
 दिया कि शहर की इमारतों को  
 जो तमाम लकड़ी की है लश्क  
 रियों की लूट मार और आग से  
 बचावे और कुतबुलमुल्क जो माल

असबाब अपनी हवेली में छोड़ गया है  
उसकी हिफाजत रखे-

इसी दिन कुतबुलमुल्क के वकील  
हकीम निजामुद्दीन अहमद ने हा  
जिर हो कर जवाहरात और जडाऊ  
चीजों की २ सौ दूकें २ हाथी और ४  
घोड़े जो सोने चांदी के गहनों से  
सजे हुए थे सुलतान मोहम्मद के  
नज़र किये ११ हाथी और ६० घोड़े  
मीर जुमले के नी कुछ दूसरे अस  
बाब समेत लाकर दिये-

कुतबुलमुल्क जाहिर में तो इस  
तरह शिष्टाचारी करता था और अ  
दर २ लड़ाई की तैयारी करके आ  
दिलखा और दरबान के जमीदा  
रों के पास मदद मगाने के वास्ते  
खत भेजता था शंगहजादा और  
गजेब यह सुन कर १६ दिन में हैद  
राबाद पहुँचा जगराहरा नही सी  
धा गोल कुंडे को गया उस को दे  
खते ही कुतबुलमुल्क की फौज  
ने जी लड़ाई की तयारी की-

और गजेब ने सुलतान मोह  
म्मद को नी अपनी फौज समेत  
सवार होने के वास्ते कह लाया  
उस दिन शाम तक लड़ाई हुई-

असबाब अपनी हवेली में छोड़ गया है  
उसकी हिफाजत रखे  
और बिन قطब الملك के वकील  
हकीम نظام الدین احمد نے حاضر ہو کر  
روضہ و قیمہ جواہرات اور مرغ  
آلات کے فہرست ذیل اور چار گھوڑوں کے  
جو سو نہری روپیہ ملی ساز و سامان  
سے آراستہ تھے سلطان محمد کی  
نظر سے گذرائے۔ اور گیارہ ہاتھی  
اور ساٹھ گھوڑے میر جلال کے بھی  
موجود تھے اور دوسرے اسباب کے  
لا کر پیش کئے۔

قطب الملك اسطیخ تو بجا ہر اطاعت  
اور نڈا کر تا تھا مگر وہ پروردہ سالار جنگ  
تاری میں مصروف ہو کر عادل خاں  
بوسر و سامان و کچے تمام متواتر خط  
واسطے طلب ملک کو بھیجتا تھا شاہزادہ  
اور ملک زبیر بن جبریں شکرہ اودن میں  
جید را باد پونجا اور زبان بوقت ہو  
قلعہ گو بخت کو روانہ ہوا۔ اسکو در بیک  
قطب الملك کی فوج بھی لڑائی کی  
تیار کی۔

اور ملک زبیر نے سلطان محمد کو بھی مدد  
فوج کے سوار ہونے کے واسطے کہلایا اور  
اودن میں شام تک لڑائی ہوئی۔

दूसरे दिन शाहजादे ने किले को घेर लिया और मिरजारवां च के सरसिंघ बगेरा ने सुरंगें लगाकर कुतबुल्मुल्क को इस कदर तंग किया कि उसने फागणबुदि १० को ४ संदूक चैज बाहर और जडा ऊची जों से भरे हुवे मीरफसीह के हाथ ने जकर और जकराई कि मैं अपनी मां को कसूर माफ करने के वास्ते नजराने समेत चैजता हूं मगर शाहजादे ने खफगी से मीरफसीह को रुबरून ही बुलाया और जवाहरात नी नहीं लिये किन अपनी फौज को गोलंदाजी से मने कर दिया—

कुतबुलमुल्कने जोशाहजादे  
कायहसूखापन मालूमफिदा  
तोअपने बहुतसेआदमियोंके  
विरगीगरीकेतरीकेसेजगकरने  
कोजेजाजोदखनियोंकापेश  
थाउनकालडनेकोआनाकुछ  
देरलडकरभागजानाऔरफि  
रआकरलडनाविरगीगरीकह  
लाताथाबेलोग मिरजा  
खंके मोरचेपरआये इधरसे-

دوسرے دن شاہزادہ نے  
 فدا کو گھیر لیا مزا خاں اور کیننگر  
 و غیر نے سرنگیں لگا کر قلب الملک  
 کو اس قدر تنگ کیا کہ اوس نے  
 ۳۰ ہج الثانی کو چار صند و چھ  
 جواہرات اور مرصع آلات وغیرہ  
 کے میر فصیح کے ہاتھ بھیج کر  
 عرض کرائی کہ میں اپنی ماں کو  
 تصور معاف کرانے کے واسطے  
 عیشکس کے بھیجتا ہوں  
 شاہزادہ نے خطی سے میر فصیح کو  
 رخصت دیا۔ اور صند و چھ کے  
 لیے میں بھی تامل کیا۔ مگر اپنی  
 رنج کو بولا اندازی سے منع کر دیا۔  
 سب الملک نے جو شاہزادہ  
 طرف سے یہ کم تو جی معاوم کی تو  
 بہت سے آدمیوں کو سرتی گری  
 طریقہ سے جنگ کرنے کو  
 بجا جو و کھینوں کا پیشہ تھا  
 کا لڑنے کو آنا اور کچھ دیر لڑ کر  
 باگ جانا اور پھر آکر لڑنا  
 کی گرتی کھلاتا تھا۔ وہ لوگ  
 مزا خاں کے مورچہ  
 آئے۔ دہرے بھی

[illegible]



پیش کے اور اپنے بیٹے کے گناہ بخشے اور اس کی لڑکی کو محمد سلطان کے ازدواج میں قبول کرنے کے واسطے عرض کی جسکو شاہزادہ اورنگ زیب نے بہت سی رد و بدل کے بعد شرط داخل کرنے ایک کروڑ روپے کے منظور کر کے ایک لاکھ روپے میر جملہ کی شیکش سے بھی قبول فرمائے جو اس وقت لڑکا تھا۔

لائے جو کبھل دھوئے اور کھنڈی کے لک کے کسور ۹ کیروڈ کی پش کاشمیر پٹیلی باکی کے رے ویدی کے یوں مہارینہ کرنے کے شکرار پر ورور گئے اور شاہی کی تار و رخی بہت سی رد و بدل کے بعد شرط داخل کرنے ایک کروڑ روپے کے منظور کر کے ایک لاکھ روپے میر جملہ کی شیکش سے بھی قبول فرمائے جو اس وقت لڑکا تھا۔

۹ لاکھ روپے میر جملہ کی شیکش سے بھی قبول فرمائے جو اس وقت لڑکا تھا۔

نہ کرنا ٹک سے نہ جی پھی۔

کھنڈی کے لک کے کسور ۹ کیروڈ کی پش کاشمیر پٹیلی باکی کے رے ویدی کے یوں مہارینہ کرنے کے شکرار پر ورور گئے اور شاہی کی تار و رخی بہت سی رد و بدل کے بعد شرط داخل کرنے ایک کروڑ روپے کے منظور کر کے ایک لاکھ روپے میر جملہ کی شیکش سے بھی قبول فرمائے جو اس وقت لڑکا تھا۔

۹ لاکھ روپے میر جملہ کی شیکش سے بھی قبول فرمائے جو اس وقت لڑکا تھا۔

نہ کرنا ٹک سے نہ جی پھی۔

کھنڈی کے لک کے کسور ۹ کیروڈ کی پش کاشمیر پٹیلی باکی کے رے ویدی کے یوں مہارینہ کرنے کے شکرار پر ورور گئے اور شاہی کی تار و رخی بہت سی رد و بدل کے بعد شرط داخل کرنے ایک کروڑ روپے کے منظور کر کے ایک لاکھ روپے میر جملہ کی شیکش سے بھی قبول فرمائے جو اس وقت لڑکا تھا۔

۹ لاکھ روپے میر جملہ کی شیکش سے بھی قبول فرمائے جو اس وقت لڑکا تھا۔

نہ کرنا ٹک سے نہ جی پھی۔

کھنڈی کے لک کے کسور ۹ کیروڈ کی پش کاشمیر پٹیلی باکی کے رے ویدی کے یوں مہارینہ کرنے کے شکرار پر ورور گئے اور شاہی کی تار و رخی بہت سی رد و بدل کے بعد شرط داخل کرنے ایک کروڑ روپے کے منظور کر کے ایک لاکھ روپے میر جملہ کی شیکش سے بھی قبول فرمائے جو اس وقت لڑکا تھا۔

۹ لاکھ روپے میر جملہ کی شیکش سے بھی قبول فرمائے جو اس وقت لڑکا تھا۔

نہ کرنا ٹک سے نہ جی پھی۔

کھنڈی کے لک کے کسور ۹ کیروڈ کی پش کاشمیر پٹیلی باکی کے رے ویدی کے یوں مہارینہ کرنے کے شکرار پر ورور گئے اور شاہی کی تار و رخی بہت سی رد و بدل کے بعد شرط داخل کرنے ایک کروڑ روپے کے منظور کر کے ایک لاکھ روپے میر جملہ کی شیکش سے بھی قبول فرمائے جو اس وقت لڑکا تھا۔

۹ لاکھ روپے میر جملہ کی شیکش سے بھی قبول فرمائے جو اس وقت لڑکا تھا۔

نہ کرنا ٹک سے نہ جی پھی۔



دوسرے دن شہنشاہ نے شاہزادہ سے سلام کیا اور تین ہزار  
 سونے کی ڈھائی (موہر) اور دوسری تحائف  
 ساری چیزیں نجر کی شاہزادہ نے اسکو خلعت  
 اسکو (سر پہنچو) جڈا ک جیگا  
 ۲۲ ہادی جن کے ساج چاندی سونے  
 کے تھے شہنشاہ نے ان کے بٹھانے کا  
 حکم فرمایا اور ان کے ہاتھ میں  
 سناہ کر کے ویدا کیا۔

دوسرے دن شہنشاہ نے شاہزادہ سے سلام کیا اور تین ہزار  
 سونے کی ڈھائی (موہر) اور دوسری تحائف  
 ساری چیزیں نجر کی شاہزادہ نے اسکو خلعت  
 اسکو (سر پہنچو) جڈا ک جیگا  
 ۲۲ ہادی جن کے ساج چاندی سونے  
 کے تھے شہنشاہ نے ان کے بٹھانے کا  
 حکم فرمایا اور ان کے ہاتھ میں  
 سناہ کر کے ویدا کیا۔

دوسرے دن شہنشاہ نے شاہزادہ سے سلام کیا اور تین ہزار  
 سونے کی ڈھائی (موہر) اور دوسری تحائف  
 ساری چیزیں نجر کی شاہزادہ نے اسکو خلعت  
 اسکو (سر پہنچو) جڈا ک جیگا  
 ۲۲ ہادی جن کے ساج چاندی سونے  
 کے تھے شہنشاہ نے ان کے بٹھانے کا  
 حکم فرمایا اور ان کے ہاتھ میں  
 سناہ کر کے ویدا کیا۔

پیش کئے اور اپنے بیٹے کے گناہ  
بخشنے اور اسکی لڑکی کو محمد سلطان  
کے ازدواج میں قبول کرنے کے  
واسطے عرض کی جسکو شاہزادہ اورنگ  
زے بہت سی روو بدل کے بعد  
بشرط داخل کرنے ایک لڑوڑ روپہ کے  
منظور کر کے ایک لاکھ روپہ میر جملہ کی  
پیشکش سے بھی قبول فرمائے جو اسکی  
کرناٹک سے بھیجے تھے۔

قطب الملک کی ماں جب یہ  
سب باتیں طے کر کے واپس  
گئی تو دو کھنیوں سے اور بادشاہی  
آدمیوں سے جو گھاس چاکر کے  
واسطے جنگل میں گئے تھے لڑائی  
ہو پڑی بادشاہی لشکر بھی  
کو جا پونہچا دو دن تک لڑائی  
ہوتی رہی جس میں بہت آدمی  
دونوں طرف کے مارے گئے۔

۱۲۔ جمادی الثانی کو شاہزادہ  
کا حاجب میر عبد اللطیف کے  
ساتھ میر جملہ نے کرناٹک سے

لایے جو کبھل ہتھ اور کھت بھل  
لک کے کسٹھ ۱ کیروڈ کی پش  
کشمی پھلتی باکی کے رستہ  
یوں میں داری بن کرنے کے  
کار پر ہوئے۔  
کار پر ہوئے۔  
کار پر ہوئے۔  
کار پر ہوئے۔

۱۶۔ جمادی الثانی کو شاہزادہ  
کا حاجب میر عبد اللطیف کے  
ساتھ میر جملہ نے کرناٹک سے

۱۶۔ جمادی الثانی کو شاہزادہ  
کا حاجب میر عبد اللطیف کے  
ساتھ میر جملہ نے کرناٹک سے



और इन लोगों को वही १ हवेली में ठहरा गया -

बैसारवबदि ६ को सुबह के वक्त महर्त पर निकाह पढ़ा गया कुतबुलमुल्क ने १४ लाख रुपये के जवाहरात वगैरा और रामगढ़ का इलाका जो चराड और बिदुर की सरहद पर है अपनी लड़की को देहज में दिया -

बैसारवबदि १२ को मीरशमशु दीन और मीरताहर वगैरा कुतबुलमुल्क की बेटी का डोला बड़े मान सनमान से लाये १० लाख रुपये जो देहज में रोक डिये थे वह शाहजहां ने मोहम्मद सुलतान को इनाम कर दिये

बैसारवसुदिर को शाहजहां दा और राजे मीर जुमला के मकान पर १ हीरा बिनातरा राहुआ ६० मोती १ नीलम जिनके साज सोने

ان لوگوں کو وہیں ایک حویلی میں ٹھہرا گیا۔

۱۸ جمادی الثانی کو وقت صبح اجمیت مختار پر عقد نکاح ہو گیا۔  
 طب الملک نے ۱۴ لاکھ روپیہ کے جواہرات وغیرہ مع علاقہ رام گڑھ لے جو صوبہ بدر کی سرحد پر تھا جہیز میں بیٹی لڑکی کو دیے۔

۱۲ جمادی الثانی کو میر ظاہر اور شمس الدین وغیرہ طب الملک کی بیٹی کو بہت اعزاز اور اکرام کے ساتھ لائے و شس لاکھ روپیہ جو بطور جہیز کے آیا تھا شاہزادہ محمد سلطان کو عطا کر دیا۔  
 ۱۰ جمادی الثانی کو شاہزادہ اور نگ زیب نے میر خیلہ کے مکان پر شریف فرما کر اسکی نذر قبول فرمائی جس میں ایک الماس تاجر اشیدہ ساہتہ موتی نو زمرہ ایک نیلم پانچ اسکی اور پانچ گھوڑے جو ساز و سامان طب

چاندی کے پتے شاہجہان کے نذر کیے  
 یے اور اس کے سوا شاہجہان کے  
 کے پتے شاہجہان کے نذر کیے  
 شاہجہان کے نذر کیے  
 شاہجہان کے نذر کیے

و نقرہ کے پتے اسکے علاوہ شاہجہان  
 کے پتے شاہجہان کے نذر کیے  
 شاہجہان کے نذر کیے  
 شاہجہان کے نذر کیے  
 شاہجہان کے نذر کیے

بیسار و سوار ۱۰ کو شاہجہان کے  
 نے گولڈ کوڈ سے اورنگ آباد کی  
 ترقی کر کے شاہجہان کے  
 گولڈ کوڈ سے اورنگ آباد کی  
 ترقی کر کے شاہجہان کے

کوچ کر کے شاہجہان کے  
 امر کو بعد عطائی خلع خاخرہ و جلی  
 واسپ و قیل کے اپنے اپنے  
 علاقہ میں جانے کی اجازت دی  
 میر جملہ کے واسطے

میر جملہ کے واسطے  
 ہر جملہ کے واسطے  
 ہر جملہ کے واسطے  
 ہر جملہ کے واسطے  
 ہر جملہ کے واسطے

بادشاہ کا فرمان  
 خلعت خاصہ جہد ہر صبح  
 پہن کر کٹارہ نقارہ نشان  
 و خطاب معکم خان کے ہمدست  
 گریم دار آگیا تھا اور اسکی  
 حضور میں طلبی ہوئی تھی ایسے  
 شاہجہان نے وہ سب چیزیں اسکی  
 دیکھ کر ۱۹ ماہ بعد جب کو  
 متا صنی عارف -

کے ساتھ ہجڑے میں رہنے کیا۔

شاہجہان بادشاہ کے کھنڈر  
اور اودھ کے قلعوں کو دیکھتا  
ہوا شہنشاہ کو اورنگ آباد  
میں پہنچا۔

جب یہ خبر بادشاہ کو ملی  
تو اس کے اور اکثر امراء کے واسطے  
خلعت اور انعام پہنچائے اور  
منصبوں میں اضافہ ہوا شہنشاہ  
کا منصب اصل اور اضافہ سے  
ہزاروں پانچ ہزار سوار کا ہو گیا  
اور اس کو خان جہان بہادر کا  
خطاب بھی ملا۔

قلب الملک کی عرضی ہاتھ  
حال فرویت و پریشانی بادشاہ کے  
ملاحظہ میں پہنچی جس پر  
بیتیں لاکھ روپیہ کا مطالبہ  
بابت تفاوت نرخ و غیرہ  
کے اس کو معاف فرمایا گیا۔

واہو گد کا جی می دار و نر نو م  
 سینہ شہا باد کے سب دے دار کے  
 ساتھ بادشاہ کے ہجر میں ہاجی  
 رہا اور بادشاہ نے اس کو ۳  
 ہجاری جات اور ۲۰۰۰ سوار کا  
 من سبب دے کر فرمایا۔

### بادشاہ کا اس کا ف

محمدا میں مقصدی بندر  
 کا مکتبہ دیواریت پر جو کرم  
 رتا تھا جس پر بادشاہ نے اس  
 کو من سبب اور جاگیر سے برتر  
 فرما کر کے ہجر میں بلایا جانے  
 لگا اور اس کو پکڑ کر لایا  
 تو حکم ہوا کہ اس کی دے وار کے  
 وکتہ اس کی آستینوں میں  
 ساپ بٹوڈ دے وے اس کے  
 وکیل کے واسطے بہت  
 دھڑکے مگر کچھ فائدہ  
 نہ ہوا تب وہ بیگم صاحبہ  
 کے مقصدیوں سے رجوع ہو کر  
 بیگم صاحبہ کا قدم اس کی  
 جان بخشی اس کے واسطے  
 لائے کیونکہ بندر  
 سورت بیگم صاحبہ

باند ہوں گڑھ کا زمیندار  
 انوب سنگھ ملا بت خان  
 ناظم صوبہ آہ آباد کے ہمسرا  
 درگاہ میں حاضر ہوا بادشاہ  
 نے اس کو منصب ہزاری  
 فات اور دو ہزار سوار سے  
 سرفراز فرمایا  
 بادشاہ کا انصاف

سورت رنایکے اوپر ظلم  
 کرتا تھا بادشاہ نے اس کو منصب  
 اور بیگم سے برطرف کر کے  
 مقصور میں بلایا چنانچہ گریز بردار  
 اس کو پکڑ لایا حکم ہوا کہ  
 سر دیوان اس کی آستین میں  
 ساپ چھوڑ دیں اس کے وکیل  
 نجات کے واسطے بہت  
 دھڑکے مگر کچھ فائدہ  
 نہ ہوا تب وہ بیگم صاحبہ  
 کے مقصدیوں سے رجوع ہو کر  
 بیگم صاحبہ کا قدم اس کی  
 جان بخشی اس کے واسطے  
 لائے کیونکہ بندر  
 سورت بیگم صاحبہ

ساہیब کی جاگیر میں آیا بادشاہ  
 نے راکھا کو پٹ کر کد کا حکم  
 دیا اور ناراچی کے ساتھ مہ  
 ل میں جا کر بے گم کو بلایا اور  
 فرمایا کہ بندر سورت  
 تمہاری جاگیر میں ہے  
 اور رعیت کی مالگداری سے  
 ملک آباد ہوتا ہے اور خزانہ  
 و لشکر بھی ترقی پاتا ہے پھر تم  
 کس طرح اس ظالم کے ظلموں  
 کی بدنامی سے راضی ہوئی  
 ہو جس نے جمع بڑھانے کے  
 نام سے اس قدر سخت  
 تشفی میں کی ہے کہ رعایا  
 نے یہ مجبوری اپنے سپے  
 میاؤں کو بیچ کر محصول  
 ادا کیا بندر سورت ساتوں  
 ولایتوں کے آدمیوں کے پر نیکی  
 جگہ ہے اگر یہ خبر بادشاہ کو پہنچی  
 تو بادشاہ نے بدنامی کے علاوہ خدا کی  
 نام شہزادی بھی پر نیکی کی تھی یہ سب  
 سب

ساہیब کی جاگیر میں آیا بادشاہ  
 نے راکھا کو پٹ کر کد کا حکم  
 دیا اور ناراچی کے ساتھ مہ  
 ل میں جا کر بے گم کو بلایا اور  
 فرمایا کہ بندر سورت  
 تمہاری جاگیر میں ہے  
 اور رعیت کی مالگداری سے  
 ملک آباد ہوتا ہے اور خزانہ  
 و لشکر بھی ترقی پاتا ہے پھر تم  
 کس طرح اس ظالم کے ظلموں  
 کی بدنامی سے راضی ہوئی  
 ہو جس نے جمع بڑھانے کے  
 نام سے اس قدر سخت  
 تشفی میں کی ہے کہ رعایا  
 نے یہ مجبوری اپنے سپے  
 میاؤں کو بیچ کر محصول  
 ادا کیا بندر سورت ساتوں  
 ولایتوں کے آدمیوں کے پر نیکی  
 جگہ ہے اگر یہ خبر بادشاہ کو پہنچی  
 تو بادشاہ نے بدنامی کے علاوہ خدا کی  
 نام شہزادی بھی پر نیکی کی تھی یہ سب  
 سب



بے گم کو جہاں ہاں لہو ہما  
 دھرمی کے جو لہو کا مال  
 مہو آ تو اس کی سی فراہ  
 ڈدی دوسرے دن بادشاہ نے  
 مہو دھرمی کے اور ساں والے  
 کو ہاجر کرنے کا حکم دیا  
 اب مہو دھرمی کے وکیل  
 شہادت سے نامید ہو کر  
 راجہ رگناتہ کے پاس  
 جو وزارت کا کام کرتا تھا  
 رجوع ہو گئے اور بہت سی  
 عجز و زاری اُس بلا کے  
 دفع کرنے کے واسطے کی راجہ  
 رگناتہ نے موقع دیکھ کر  
 عرض کیا کہ ایسے بد بخت کے  
 بار دہین جو کوئی عرصہ  
 کرے وہ پہلے سزاوار عقوبت  
 لیکن اُس کے اوپر مبالغہ  
 حقوق رعایا کے باقی ہیں جسکی مالش  
 ہو رہی ہے اور اسی طرح بہت  
 سا بادشاہی مطالبہ بھی ہے سو  
 تا وصول ہونے ضرور عایا اور  
 مطالبہ سرکار کی کے

بے گم کو جہاں ہاں لہو ہما  
 دھرمی کے جو لہو کا مال  
 مہو آ تو اس کی سی فراہ  
 ڈدی دوسرے دن بادشاہ نے  
 مہو دھرمی کے اور ساں والے  
 کو ہاجر کرنے کا حکم دیا  
 اب مہو دھرمی کے وکیل  
 شہادت سے نامید ہو کر  
 راجہ رگناتہ کے پاس  
 جو وزارت کا کام کرتا تھا  
 رجوع ہو گئے اور بہت سی  
 عجز و زاری اُس بلا کے  
 دفع کرنے کے واسطے کی راجہ  
 رگناتہ نے موقع دیکھ کر  
 عرض کیا کہ ایسے بد بخت کے  
 بار دہین جو کوئی عرصہ  
 کرے وہ پہلے سزاوار عقوبت  
 لیکن اُس کے اوپر مبالغہ  
 حقوق رعایا کے باقی ہیں جسکی مالش  
 ہو رہی ہے اور اسی طرح بہت  
 سا بادشاہی مطالبہ بھی ہے سو  
 تا وصول ہونے ضرور عایا اور  
 مطالبہ سرکار کی کے

سوجن بھت کرے یات کا چور سرکا  
ر کا روپ یا بھول ہو جاوے اس کے  
مارنے میں دے کرنا باجی بھ  
اگر ہوا تو باد بھول ہو  
جانے دونوں کے اس کو سزا  
دی جاوے۔

بادشاہ نے یہ امر منجور  
کر کے حکم دیا کہ اس کو بھول  
دے اور اس کے راجہ رگنات  
کے حوالہ کرے تاکہ حقوق  
رہا یا بعد تحقیقات دلاوے۔

اس طرح اس بد کردار  
مردم آزار کی جان بچی اور  
دوسروں کو عبرت ہوئی۔  
میر جملہ کا وزیر مہربان  
جب میر جملہ معظم خان دہلی کے  
قریب پہنچا تو بادشاہ کے حکم  
سے قاسم خان اور دلاشاد خان  
پشواہی کر کے اس کو شہر کے  
باہر سے حضور میں لے گئے  
بادشاہ نے اس کو

اس طرح اس بد کردار  
مردم آزار کی جان بچی اور  
دوسروں کو عبرت ہوئی۔  
میر جملہ کا وزیر مہربان  
جب میر جملہ معظم خان دہلی کے  
قریب پہنچا تو بادشاہ کے حکم  
سے قاسم خان اور دلاشاد خان  
پشواہی کر کے اس کو شہر کے  
باہر سے حضور میں لے گئے  
بادشاہ نے اس کو

دھجاریجات ۶۰۰۰ سوار کامن  
سب چور لڈاऊकलमदानवजी  
रायतकादेकर २०० येडेखासाओ  
रपलारवरुपयेनकदइनायतफ  
रमाये-

शाहजादेमुरादवरुशको  
शाहनवाजरवांकीवेटीसेओला  
दनहुईइसलियेबादशाहनेमी  
रवांकीवेटीसेशादीरहराकर ९  
लारवरुपयेदहेजकेसरकारसे  
दिलायेऔरउसकोअहमदावा  
दमेंनेजाजहांशाहजादेसेनि  
काहुआऔरलारवरुपयेइना  
नकेशाहजादेकीनीसूरतबंदर  
केरकजानेसेदिलायेऔरउस  
कामनसवनीअसलऔरइजा  
फेसे १५ हजारीजातऔर १२०००

सवारदुअस्पेऔरतिअसेकाकरदिया

वरस ३१वां

कातिकसुदि ३ संवत १७१३से

आसोजसुदि १ संवत १७१४तक

چہ ہزاری ذات اور چہ  
ہزار سوار کا منصب و مریع  
قلند ان وزارت کا دیگر  
دو سو گھوڑے خاصہ ماتمی  
اور پانچ لاکھ روپیہ نقد محنت فرما  
شاہزادہ مراد بخش

کے شاہ نواز خان کی بیٹی سے  
اولاد ہوئی تھی اسلئے بادشاہ  
نے میر خاں کی لڑکی سے  
شادی مقرر کر کے ایک لاکھ  
روپیہ جہیز کے سرکار شاہی سے  
دلائے اور اسکو احمد آباد بھیجا  
جہاں شاہزادہ سے شادی  
ہوئی اور شاہزادہ کو بیوی دو  
لاکھ روپیہ انعام کے سورت  
بندر کے خزانہ سے دلائے  
اور اس کا منصب ہی اصل اور اضافہ

سے پندرہ ہزاری ذات اور  
بارہ ہزار سوار و اسلئے کا کردیا

اکیسواں برس

شعبہ جری

۱ اکتوبر سن ۱۰۹۴ سے ۱۰ ستمبر سن ۱۰۹۵



अलीनाम १ आदमी को उसका  
बेटा ठहरा कर गद्दी पर बैठा दिया  
है इस वास्ते माह बदि ४ को उ  
सके नाम हुक्म लिखा गया कि  
जो लश्कर दरबन में तैयार है  
उसको लेकर जावे और उस मु  
ल्क और किले को फतह करे खा  
न जहाँ को हुक्म हुआ कि दोनता  
बाद पहुँच कर शाहजादे के बीजा  
पुर से वापस आने तक औरंगा  
बाद में रहे -

मल नाम से एक شخص को आस का  
फ़ौज में मقرر कर के उसी जगह में  
दिया है इस واسطे १० रبيع الاول को  
असके नाम हुक्म लिखा गया कि  
जो दुکن में तैयार है आस प्र  
जाकर आस मलक और किले को फतह करे  
और खान जहाँ को भी हुक्म हुआ कि  
दोलत आबाद जाकर अस मलक में शाल  
हो और तावापी और गंगे नदी  
के बिजापुर से औरंग  
आबाद में रहे -

मोअज़म खां निजावत खां मि  
रजा सुलतान और एरच खां वगे  
रा को नी घोड़े खिल अत तलवा  
रे और तुरे देकर बहुत सी फौज से  
इस मोहिम पर रवाने किया -

मसूम खान निजावत  
खान मर्रासलطان واسط  
और गंगे को भी बादशाह बने अख  
लायक और नफ़्ते عطا कर के  
جمعیت कितने के अस मलक पर रवाने किया

मोअज़म खां को इस तारीख  
तक ५ लाख रुपये और २ लाख  
काजवाहर मिल चुका था और  
बिदा होते वक्त बादशाह ने उस  
से फ़रमाया कि कज़ी रायत की

मसूम खान को अस तारीख  
तक पाँच लाख रुपये नफ़्ते और  
लाक़्खे रुपये का जवाहर और  
मल जकात और वक्त रخصत बादशा  
हने आस से फ़रमाया कि

مोहर अपने बेटे मोहम्मद अमीन  
 रवां को दे जावे और उससे कहदे  
 कि रायरायां की शगमिलात में  
 मुल्क और माल का काम करे  
 और मन सब नी मोहम्मद अ  
 मीन रवां का असल और इजा  
 फे से तीन हजारी जात और ३०००  
 सवार का कर दिया -

ने بیٹے کو دیجاوے تاکہ  
 باتفاق رایے رایان کے  
 ات ملک و مال کا سرانجام  
 لے اور منصب ہی اس کے  
 بیٹے محمد امین کا اصل اور  
 فائدہ سے تین ہزار سی ذات  
 اور تین ہزار سوار کا  
 کر دیا -

مहाबतरवा, राजारयसिंघ,  
 इकरवारवा, इरवलासरवा, नुस  
 रतवा, दलैरवा, और राजा सुजा  
 नसिंघ बुंदेला, वगैरा कई नाम  
 वर अमीरो को नी हुकम लिखा ग  
 या कि अपनी रजागीरो से जाक  
 र शाहजादे के पास हाजिर हो जावे  
 कुल २०००० सवार और बहुत से वर  
 कंदाज शाहजादे के साथ तईनात हुवे  
 २ क्रूर ग्रहों के १ रासि पर आजा  
 ने से दिछी में मरी कारोग फैला जि  
 ससे हर रोज बहुत से आदमी मरते  
 थे बादशाह ने मोल वियों से बाहर

مہابت خان راجہ راجہ  
 سنگھ اختیار خان اخلاص خان  
 نصرت خان دامیر خان و راجہ  
 جان سنگھ تیدیلہ وغیرہ چند  
 امداد خانوں و امیروں کو بھی  
 حکم ہوا کہ اپنی اپنی جاگیر و ملک جاکر ہزار  
 و لاکھ سوار کے پاس حاضر ہو جائیں  
 کل میں ہزار سوار اور بہت  
 ہزار ہزاروں کے ہوا تعینات ہوئے  
 چونکہ وہ خوش ستاروں کی دلی  
 سے ملت پایا اور طاعون کی دلی  
 پیدگی تھی اور ہر روز بہت آدمی اس  
 مرض میں مبتلا ہو کر مرتے تھے

جانے کے واسطے پڑھا تو ان کی را  
 ی मिली नहीं इस पर थोड़े दिनों  
 के वास्ते शिकार के नाम से गंगा  
 के किनारे पर जाने की सज्जा हठ  
 हरी इसलिये पोस सुदि ५ को बा  
 दशाह शाहजहाना बाद की किले  
 दारी सियादतरवां को देकर गंगा  
 की तरफ रवाने हुवे और ४ लगा  
 तार कुचों में गड मुकते श्वर पर  
 पहुंचे पोस सुदि १० को नूरपुर में  
 लौट आये वहां यहर वबर पहुंची  
 कि आगहरवां जो ताजवीवी के  
 रोजें का मुतवल्ली और आगरे  
 की तलहटी का फोजदार था -  
 मर गया है इसलिये बादशाह ने  
 गिरधर कंचर को २ हजार ज्ञात  
 २००० सवार कामन सब आगरे  
 की किलेदारी, और फोजदारी दे  
 कर बिदा किया और महमरवां  
 को मुतवल्ली कर के नेजा -

माह ६ दि ३ को बादशाह नूरपुर

۱۔ اسلئے بادشاہ نے فاضلون سے  
 باہر جانے کی بابت استفسار فرمایا  
 تو انہوں نے بروایت مختلف جواب  
 عرض کیا آخر چند روز کیوڑا ہر جانیکی  
 صلاح ٹہری اور بادشاہ ۴ ربیع الاول کو  
 قلعہ داری قلعہ شاہجہان آباد کی سیاحت  
 کے سپرد کر کے مسید و شکار کیواسلئے کناٹ  
 گنگا کی طرف روانہ ہوئے اور چار کوچ  
 متواتر میں گڈا لکھتے پہنچے ۹ کو نور پور  
 میں لوٹ آئے وہاں یہ خبر پہنچی  
 کہ آگاہ خان جو روضہ تاج گنج کا  
 متولی اور فوجدار نواحی اکبر آباد  
 تھا قضا سے الہی سے فوت ہو گیا  
 اسے بادشاہ نے گردہر کنور کو  
 منصب دوہنراری ذات اور  
 دوہنرار سوار و خدمت  
 قلعہ داری و فوجداری اکبر آباد سے  
 مشرف کر کے رخصت کیا اور  
 محرم خان کو روضہ مذکور کی  
 تولیت پر بھیجا۔

۷ اکو بادشاہ نور پور

شاہجہاں بادشاہ کا ۱۰۱۳ھ

۱۵۵۵ء

میں کوئی کر کے جتنا کہ کنارہ پر سے کھچ کر کے ۵ دین میں جمننا کے  
کینارے پہنچے اور وہاں سے کشتی پر  
میں ویرا ج کر پوسا دے ۱۲ کو  
میں ویرا ج کر پوسا دے ۱۲ کو  
میں ویرا ج کر پوسا دے ۱۲ کو

ماہ سیدی کو کی ۳ تاریر

دے نہی نے کی دیا بادشاہ کے ۵۵  
بہار س شہر ہونے کے تاریر کا  
بہار س شہر ہونے کے تاریر کا

ہو لیا کو ل سے شاہجہاں دے دار  
شیکوہ کی ۳ تاریر  
شیکوہ کی ۳ تاریر

سولتان سیپہر شیکوہ کی  
سولتان سیپہر شیکوہ کی

سوار کا ۳۰۰۰ سوار کا ۳۰۰۰  
سوار کا ۳۰۰۰ سوار کا ۳۰۰۰

کا ۳۰۰۰ سوار کا ۳۰۰۰  
کا ۳۰۰۰ سوار کا ۳۰۰۰

کا ۳۰۰۰ سوار کا ۳۰۰۰  
کا ۳۰۰۰ سوار کا ۳۰۰۰



داراشیکوہ کی آرزو سے دنا یات  
ہوئی اور شاہ کو  
کاہل کے اقلع کے عوض لاہور  
کے پرگنے عنایت ہوئے بہادر  
خان معین خان کے تیسرے لاہور  
کا صوبہ دار ہوا۔

۱۹ ربیع الثانی کو ۱۶۵۹ء  
سال گرہ قمری کے شروع ہوئے گا  
تلاواں ہوا۔ ان دونوں جشنوں  
میں جو ۱۶ دن تک برابر ہوتے تھے  
تھے آٹھ لاکھ روپیہ کی پیشکش  
نوں تولا دانوں کے درباروں میں جو ۵

دین تک بار بار ہوتے رہے۔ لاکھ  
روپیہ کی پشاکش جواہرات اور  
کپڑوں کی کیماس سے کچھ لہوئی  
کسار آفریں کے منسب و بڑے اور  
واجوں کو دنا م اور سیتا بامیلے

اس عرصہ میں وبارطاعون  
بالکل پھیل گیا تھا اسلئے بادشاہ  
پھر ۲ جمادی الاول کو نقل مکان  
کیے کے مخلص پور کو روانہ ہوئے  
اور ۱۶ ماہ مذکور کو وہاں پہنچے  
یہ گانشاہ جہان آباد سے ۱۶  
کوس جہان کے کسار رہے پر

۱۹ ربیع الثانی کو ۱۶۵۹ء  
سال گرہ قمری کے شروع ہوئے گا  
تلاواں ہوا۔ ان دونوں جشنوں  
میں جو ۱۶ دن تک برابر ہوتے تھے  
تھے آٹھ لاکھ روپیہ کی پیشکش  
نوں تولا دانوں کے درباروں میں جو ۵

دین تک بار بار ہوتے رہے۔ لاکھ  
روپیہ کی پشاکش جواہرات اور  
کپڑوں کی کیماس سے کچھ لہوئی  
کسار آفریں کے منسب و بڑے اور  
واجوں کو دنا م اور سیتا بامیلے

اس عرصہ میں وبارطاعون  
بالکل پھیل گیا تھا اسلئے بادشاہ  
پھر ۲ جمادی الاول کو نقل مکان  
کیے کے مخلص پور کو روانہ ہوئے  
اور ۱۶ ماہ مذکور کو وہاں پہنچے  
یہ گانشاہ جہان آباد سے ۱۶  
کوس جہان کے کسار رہے پر

اس عرصہ میں وبارطاعون  
بالکل پھیل گیا تھا اسلئے بادشاہ  
پھر ۲ جمادی الاول کو نقل مکان  
کیے کے مخلص پور کو روانہ ہوئے  
اور ۱۶ ماہ مذکور کو وہاں پہنچے  
یہ گانشاہ جہان آباد سے ۱۶  
کوس جہان کے کسار رہے پر

کہ شمالی کے دامن میں سرسبز  
 کے نزدیک مضافات سہارنپور  
 سے تھا آب و ہوا پہاڑ کی اچھی سی  
 اور دوسرا لطف یہ تھا کہ دارالخلافہ  
 سے دہان تک کشتی سوار ایک ہفتہ  
 میں آمد و رفت ہو جاتی تھی بادشاہ  
 سال پوسٹہ سے اس جگہ ایک  
 عمارت عالی بنوانا شروع کی تھی۔  
 اور وہ اب تیار ہو چکی تھی۔  
 بادشاہ نے اس سرزمین  
 کی آب و ہوا اپنی طبیعت کے موافق  
 دیکھ کر مخلص پور کا فیض آباد نام  
 رکھا اور اس پاس کے پرگنوں  
 لاکھ دام کی جمع کے مواضع جدا  
 کر کے اس کے متعلق کئے گئے  
 دارالخلافہ اور دوسرے بڑے  
 بڑے شہروں میں بادشاہی دو تھانے  
 تھے ویسی ہی یہاں بھی جنہا کے اوپر  
 بنوایا جیمنی بجگاہ محل عثمانیہ خاص  
 عام وغیرہ سب کچھ تھا اسکے پچھلے  
 پہاڑ تھا جس میں سایہ دار

میں ۱ سوہاونا پھاڑ کُروں سے چا یا  
ہو چا یا اور ۱ نہر دگن چوڑی  
جمناسے کاٹ کر اساتمام اسم  
رنت اور اس کے بگیچوں میں جاری کی  
گئی تھی جو ہر طرف بنائے گئے تھے  
اس میں پانچ لاکھ روپے  
دو برس اور دو مہینوں کے  
اندر صرف ہو چکا تھا اور ایک  
روپے کا اور کام باقی تھا۔

بادشاہ نے یہاں ہو چکا  
دو لاکھ روپیہ شاہ بلند اقبال  
کو اور پچاس ہزار سلیمان شکوہ  
کو دئے کہ وہ بھی اس جگہ اپنے  
اپنے مکان بنوادین  
شہر شاہ جہان آباد کے  
گرو ایک حصار پتھر اور مٹی کا  
جلوس میں ڈیڑھ لاکھ روپے کے  
صرف سے بنایا گیا تھا مگر وہ  
برسات میں جگہ جگہ سے گر پڑتا  
تھا اس لئے مٹلے جلوس میں پتھر  
کا حصار شروع کرایا گیا تھا

بادشاہ نے یہاں ہو چکا  
دو لاکھ روپیہ شاہ بلند اقبال  
کو اور پچاس ہزار سلیمان شکوہ  
کو دئے کہ وہ بھی اس جگہ اپنے  
اپنے مکان بنوادین  
شہر شاہ جہان آباد کے  
گرو ایک حصار پتھر اور مٹی کا  
جلوس میں ڈیڑھ لاکھ روپے کے  
صرف سے بنایا گیا تھا مگر وہ  
برسات میں جگہ جگہ سے گر پڑتا  
تھا اس لئے مٹلے جلوس میں پتھر  
کا حصار شروع کرایا گیا تھا

بادشاہ نے یہاں ہو چکا  
دو لاکھ روپیہ شاہ بلند اقبال  
کو اور پچاس ہزار سلیمان شکوہ  
کو دئے کہ وہ بھی اس جگہ اپنے  
اپنے مکان بنوادین  
شہر شاہ جہان آباد کے  
گرو ایک حصار پتھر اور مٹی کا  
جلوس میں ڈیڑھ لاکھ روپے کے  
صرف سے بنایا گیا تھا مگر وہ  
برسات میں جگہ جگہ سے گر پڑتا  
تھا اس لئے مٹلے جلوس میں پتھر  
کا حصار شروع کرایا گیا تھا

بادشاہ نے یہاں ہو چکا  
دو لاکھ روپیہ شاہ بلند اقبال  
کو اور پچاس ہزار سلیمان شکوہ  
کو دئے کہ وہ بھی اس جگہ اپنے  
اپنے مکان بنوادین  
شہر شاہ جہان آباد کے  
گرو ایک حصار پتھر اور مٹی کا  
جلوس میں ڈیڑھ لاکھ روپے کے  
صرف سے بنایا گیا تھا مگر وہ  
برسات میں جگہ جگہ سے گر پڑتا  
تھا اس لئے مٹلے جلوس میں پتھر  
کا حصار شروع کرایا گیا تھا

بادشاہ نے یہاں ہو چکا  
دو لاکھ روپیہ شاہ بلند اقبال  
کو اور پچاس ہزار سلیمان شکوہ  
کو دئے کہ وہ بھی اس جگہ اپنے  
اپنے مکان بنوادین  
شہر شاہ جہان آباد کے  
گرو ایک حصار پتھر اور مٹی کا  
جلوس میں ڈیڑھ لاکھ روپے کے  
صرف سے بنایا گیا تھا مگر وہ  
برسات میں جگہ جگہ سے گر پڑتا  
تھا اس لئے مٹلے جلوس میں پتھر  
کا حصار شروع کرایا گیا تھا

دیوانی محمد متیم خان و قربان

بگ و خواجہ اسمیل و رسول

کے اور فاضل خان میر

ساہان کو حکم دیا کہ سب کو

دلاس دیکر لاہور سے شاہجہاں

آبادین کے آوے چنانچہ

۱۶۵۰ رمضان کو مکیہ حاضر

ہوا تب بادشاہ نے پیر ابراہیم

خان کے سواروں میں

ایک ہزار سوار کا اضافہ کر کے

اسکو علم و تقارہ بھی بخشا اور

علیمردان خان کے ترکہ سے جو

ایک گروہ نقد و جنس کے قریب

سکرارین ضبط ہوا تھا ۳۰ لاکھ

روپیہ ابراہیم خان کو ۲۰ لاکھ تین

چوٹے اور کون لوکیوں کو عنایت

فرمایا اور باقی روپیہ مطالبہ کے

عوض داخل خزانہ ہوا۔

بیجا پور کی ہمس

منظم خان حضور سے رخصت

دیوانی محمد متیم خان و قربان

بگ و خواجہ اسمیل و رسول

کے اور فاضل خان میر

ساہان کو حکم دیا کہ سب کو

دلاس دیکر لاہور سے شاہجہاں

آبادین کے آوے چنانچہ

۱۶۵۰ رمضان کو مکیہ حاضر

ہوا تب بادشاہ نے پیر ابراہیم

خان کے سواروں میں

ایک ہزار سوار کا اضافہ کر کے

اسکو علم و تقارہ بھی بخشا اور

علیمردان خان کے ترکہ سے جو

ایک گروہ نقد و جنس کے قریب

سکرارین ضبط ہوا تھا ۳۰ لاکھ

روپیہ ابراہیم خان کو ۲۰ لاکھ تین

چوٹے اور کون لوکیوں کو عنایت

فرمایا اور باقی روپیہ مطالبہ کے

عوض داخل خزانہ ہوا۔

بیجا پور کی ہمس

منظم خان حضور سے رخصت

دیوانی محمد متیم خان و قربان

بگ و خواجہ اسمیل و رسول

کے اور فاضل خان میر

ساہان کو حکم دیا کہ سب کو

دلاس دیکر لاہور سے شاہجہاں

آبادین کے آوے چنانچہ

۱۶۵۰ رمضان کو مکیہ حاضر

ہوا تب بادشاہ نے پیر ابراہیم

خان کے سواروں میں

ایک ہزار سوار کا اضافہ کر کے

اسکو علم و تقارہ بھی بخشا اور

علیمردان خان کے ترکہ سے جو

ایک گروہ نقد و جنس کے قریب

سکرارین ضبط ہوا تھا ۳۰ لاکھ

روپیہ ابراہیم خان کو ۲۰ لاکھ تین

چوٹے اور کون لوکیوں کو عنایت

فرمایا اور باقی روپیہ مطالبہ کے

عوض داخل خزانہ ہوا۔

بیجا پور کی ہمس

منظم خان حضور سے رخصت

دیوانی محمد متیم خان و قربان

بگ و خواجہ اسمیل و رسول

کے اور فاضل خان میر

ساہان کو حکم دیا کہ سب کو

دلاس دیکر لاہور سے شاہجہاں

آبادین کے آوے چنانچہ

۱۶۵۰ رمضان کو مکیہ حاضر

ہوا تب بادشاہ نے پیر ابراہیم

خان کے سواروں میں

ایک ہزار سوار کا اضافہ کر کے

اسکو علم و تقارہ بھی بخشا اور

علیمردان خان کے ترکہ سے جو

ایک گروہ نقد و جنس کے قریب

سکرارین ضبط ہوا تھا ۳۰ لاکھ

روپیہ ابراہیم خان کو ۲۰ لاکھ تین

چوٹے اور کون لوکیوں کو عنایت

فرمایا اور باقی روپیہ مطالبہ کے

عوض داخل خزانہ ہوا۔

بیجا پور کی ہمس

منظم خان حضور سے رخصت



अग्निबद्धा गनीमहररोज  
जाईदेतायामगर नैसारवसुदि १०  
खानमोहमातना

روایت میور غنیمت بر روبرو نمودار  
موتاتها مگر در جیب کوه خان محمد

रघुनमोहमदप्रफजज  
कावेठारुसतमवगेरः  
सवारोंसे

و افضل و برتریم پس زند و لہ و  
میں ہزار سواروں سے چڑھ کر  
آئے مہات خان سجان سنگھ

२. सवारों से चढ़कर आये महा

آئے مہابت خان سجان سنگھ

जानसिंघबुंदलेकोडेरों

بندیلیہ کو دیروں پر چور کر کے راہ

हिफाजत पर छोड़कर राव शत्रु  
ल और दल पर बां नये

تروسیال و ولی خان و غیرہ

सात और दत्तनेर पंचांगों के  
जदनेको

میں نے اپنے کو گویا دیکھنیوں  
طرف سے بان اور بند و قہر

लड़ने को गया दरबनियों ने

ہر طرف سے بان اور میند و مو  
اگر کسی اور اخلاص خط

لڑائی کی اور اخلاص خان و لڑائی

शिवनामसंवाञ्छोरदले

دلیر خان کا قافیہ تنگ کر دیا

रखवांकोदवालियातबतोमहावत.

مہابت خان نے حملہ کر کے

लाकरके उनको भगादि. "ब्रह्म

تباہی اور دو کوس  
کمرہ سے آدمی

और रकोसतकपीछाकरके

کے بہت سے آدمیوں اور لوٹ کھرجی کے دن

मियोंको मारा और लौ

اور لوٹ کر ایب ڈن  
اور دوسرے دن

कर १ दिन तो वहारहा और दूसरे दिन पीछा ली

ابو ریحان بیهقی

दिन पीछा जौदा -

یہ دوا نیکو جواب  
بجای پور وال

ब्रिजापुरवालों ने सेवा और म

من خدیوہوسلکہ کو اح

نئی نواسلے کو احمد مد نگر کے

میں جی ہنس سکا کہ وہ اس  
لوٹ مار کرنے کی عوا سے

ہندو مار کرنے کو نہ جاتا

لوٹ مار کرنے کی ہوا ہے  
راہی حسین و جہانگیر

ہیں نہ اس سے  
چماڑ گوندے میں

رای سپین و چمک

مارشیر ورج کی شہزادہ بنے نصیر خان  
 کا طلب خان اور راکو کر غیر  
 کو تین ہزار سواروں سے اپنی  
 شہزادہ ہی کے واسطے بھیجا اور شہزادہ  
 اورنگ زیب محمد معتمد کو مع افتخار خان  
 قلعہ ہیدرمن چوڑ کر ۲۲ رجب کو  
 سکائی کا قلعہ فتح کرنے کے لئے کوٹ  
 کیا اور ۲۹ رجب کو وہاں پہونچ کر  
 قلعہ کو گھیرا قلعہ والوں نے توپ  
 بندوق اور بان برساکر دیت  
 سے بادشاہی بندوں کو مار دیا  
 تاہم معتمد خان نے ۸ شعبان کو  
 قلعہ تک مورچہ ڈیرا کر اہل قلعہ کو  
 تنگ کیا۔ مگر وہاں غنیم کی جمعیت  
 سمیت زیادہ تھی اسلئے مہابت خان  
 و نجابت خان دس دس ہزار سوار  
 سے خوبت خوبت جا کر لشکر میں  
 کہاں اور چارہ لایئے تھے ہر روز  
 جنگ عظیم ہوتی تھی جس میں رانا  
 اور دس پور کی فوج کا سردار  
 شیورام ماریا گیا۔

शिवराम मारा गया राजा राय सिं  
घ और सुजान सिंह वगैरा चीज  
खमी हुवे और उनके आकर सर  
दमी काम आये शाहजादे को कि  
लाफत हर करने की धुन लगी हु  
ई थी इसलिये गनीम बेफिकरी  
से हर रोज कदम बढ़ाये चले आ  
ता था यह तक कि ३०००० सवार  
जमा हो कर बादशाही लशकर  
से २ कोस पर आठरे तब तो शाह  
जादे ने असल वदि १९ को कुछ फौ  
ज और चौं में छोड़ कर गनीम के ज  
पर चढ़ाई की वह ली ३०००० सवा  
रों से सामने आया बहलोल के  
बेटों ने जो हिरोज घेर बल डार  
की इसी तरह दूसरे दरवनी सरदा  
रों ने नी हर तरफ से उमड़ कर घेरे  
हले मगर बादशाही लशकर ने ब  
डी मजबूती से उनके हमले को रोक  
और फिर इक नारगी हमला कर के  
बहुत सेंदुर मनों को मारा और न

राज राय सिं वगैरा चीज  
खमी हुवे और उनके आकर सर  
दमी काम आये शाहजादे को कि  
लाफत हर करने की धुन लगी हु  
ई थी इसलिये गनीम बेफिकरी  
से हर रोज कदम बढ़ाये चले आ  
ता था यह तक कि ३०००० सवार  
जमा हो कर बादशाही लशकर  
से २ कोस पर आठरे तब तो शाह  
जादे ने असल वदि १९ को कुछ फौ  
ज और चौं में छोड़ कर गनीम के ज  
पर चढ़ाई की वह ली ३०००० सवा  
रों से सामने आया बहलोल के  
बेटों ने जो हिरोज घेर बल डार  
की इसी तरह दूसरे दरवनी सरदा  
रों ने नी हर तरफ से उमड़ कर घेरे  
हले मगर बादशाही लशकर ने ब  
डी मजबूती से उनके हमले को रोक  
और फिर इक नारगी हमला कर के  
बहुत सेंदुर मनों को मारा और न



کوئی نہ دیا۔ اس لڑائی میں اکثر بادشاہ  
ملازم کام آئے اور دلیر خان بھی  
زخمی ہوا شاہ زادہ بعد تباہ  
خیمہ و خمر گاہ اعدا کو جلا کر شام  
کے وقت دیروں میں واپس  
آئے۔

نصرت خان و غیرہ جو احمد  
کی طرف گئے تھے وہاں پہنچ کر  
سیوا جی کے اوپر حملہ آور ہوئے  
اور بعد مجروح و مقتول کر کے اکثر  
دشمنوں کے آسکوبہگا کر قلعہ  
کے قریب جا ٹھہرے کیونکہ انکو  
رعایا کی حفاظت کے لئے جنیور  
چار کونڈہ میں رہنے کا حکم تھا۔

ملک حسین و فتح رو پہلے  
و غیرہ دہزار سوار لیکر شہزادہ کے  
حکم سے تلنگانہ فتح کرنے کو گئے اور  
بعد فتح اس قلعہ کے انہوں نے قلعہ  
کو پکڑ کر شہزادہ کے پاس بھیج دیا۔  
ایسے ہی شیخ میر نے بھی  
قلعہ جھنولی میں قبضہ کیا جس کو

کوئی نہ دیا۔ اس لڑائی میں اکثر بادشاہ  
ملازم کام آئے اور دلیر خان بھی  
زخمی ہوا شاہ زادہ بعد تباہ  
خیمہ و خمر گاہ اعدا کو جلا کر شام  
کے وقت دیروں میں واپس  
آئے۔

نصرت خان و غیرہ جو احمد  
کی طرف گئے تھے وہاں پہنچ کر  
سیوا جی کے اوپر حملہ آور ہوئے  
اور بعد مجروح و مقتول کر کے اکثر  
دشمنوں کے آسکوبہگا کر قلعہ  
کے قریب جا ٹھہرے کیونکہ انکو  
رعایا کی حفاظت کے لئے جنیور  
چار کونڈہ میں رہنے کا حکم تھا۔

ملک حسین و فتح رو پہلے  
و غیرہ دہزار سوار لیکر شہزادہ کے  
حکم سے تلنگانہ فتح کرنے کو گئے اور  
بعد فتح اس قلعہ کے انہوں نے قلعہ  
کو پکڑ کر شہزادہ کے پاس بھیج دیا۔  
ایسے ہی شیخ میر نے بھی  
قلعہ جھنولی میں قبضہ کیا جس کو

फिलेदार उरकर छोड़ गया था -

فیلدار ڈر کر چھوڑ دیا گیا تھا

फिलेकल्पाणी की रवाई थोहर की

فیلہ کالپانی کی روائی تھوہر کی

लकड़ियों से पाटी गई थी उस पर कि

لکڑیوں سے پاٹی گئی تھی اس پر کہ

लेवालों ने घास और वास्तु डाल

لے والوں نے घास اور वास्तु डाल

कर आग लगा दी जिस से वादशा

कर आग लगा दी जिस से वादशा

ही आदमियों ने पत्थर और मिट्टी डाल

ही आदमियों ने पत्थर और मिट्टी डाल

लकर फिर उसको जल और न से -

लकर फिर उसको जल और न से -

निर्यालगा कर फिले की दीवार गिरा

निर्यालगा कर फिले की दीवार गिरा

ने लगे फिलेवालों ने ऊपर से आ

ने लगे फिलेवालों ने ऊपर से आ

गज लार कर बहुत से वास्तु के टुक

गज लार कर बहुत से वास्तु के टुक

के और नुफत के तेल (घास लेट) में

के और नुफत के तेल (घास लेट) में

नीगे हुवे गूद देवे गेरा फेंके मगर ये

नीगे हुवे गूद देवे गेरा फेंके मगर ये

तो कुछ परवान कर के दूसरे साव

तो कुछ परवान कर के दूसरे साव

रा की बदि १४ को अंदर फूट पड़े तब

रा की बदि १४ को अंदर फूट पड़े तब

दिलावर हवंशी जो आदिलख

दिलावर हवंशी जो आदिलख

की तरफ से दई हजार फौज के सा

की तरफ से दई हजार फौज के सा

य फिले में था दूसरे सामन की सुदि

य फिले में था दूसरे सामन की सुदि

को साइज दे से जान और माल की

को साइज दे से जान और माल की

चमान लेकर दूसरे दिन सुदि र को

चमान लेकर दूसरे दिन सुदि र को

हमिरा रंगा था और फिले की कुंज

हमिरा रंगा था और फिले की कुंज

या दूसरे रंग पर को चलाता न

या दूसरे रंग पर को चलाता न



मोहिम में अच्छी सिनेदमत बजाला  
येथे अपने दरजे के माफिक इनाम  
म और इजाफों से सरफराज किया गये-

همین صدد ترددات مبرک  
تکلیف قدر مراتب انعام و انسا  
مناسب سرفراز و ممتاز کے لئے

आदिलखाने शाहजादे को

مادل خان نے شاہزادہ کو

रजीलिराकर १ किलो ५० लारवर

رضی لکھنؤ دیکر وٹرو پیس کی

पये की पेशकश करके और जवाह

باش از قسم نقد و جواهر مستفید

रकी किसम से मये किले परेंडे और

پندہ دار و ولایت کو کن کے درنا

उत्क को कन के देना कबूल की-

ہول کی شاہزادہ کو عرضی بھی اور

शाहजादे ने वह अरजी बादशाह

مادل خان کی عرضی بھی پہنچی بادشاہ

के पास नेजी बादशाह ने ५० लारव

نے پچاس لاکھ روپیہ بخرمیشتر

रुपये माफ करके बाकी पेशकश

के मान करके बाقی پیشکش وصول

लाने के वास्ते काजी निजाम को ने

करنے کے واسطے قاضی نظام کو

जा और शाहजादे को वापस आने

پہنچا اور شاہزادہ کو واپسی کا حکم

का दुकन जारी करके मोअज़म खा

لکھنؤ منظم خان کے واسطے تحریر

के वास्ते लिखा कि परेंडे और कोक

فرمایا کہ قلعہ پندہ دار کو کن میں

न के किलों में किजे दार बैठा कर

قلعہ دار و تمانہ دار پٹھا کر حضور

हजर में चला आवे-

میں چلا آوے

नादवादिध को शुजा अतरवा

۵۰ از بخندہ کو شجاعت خان

का बुल की किजे दारी पर नेजा गया-

کابل کی قلعہ داری پر پہنچا گیا-

बादशाह का बीमार होना-

بادشاہ کا بیمار ہونا

नादों सुदिध को अचानक बादशाह

مذہبی اچھے کو دفعہ بادشاہ کا

कापेशावबंदहोकर बुखार आना शुरू  
रुग्ण हुआ ७ दिन तक बीमारी दिन  
दिन बढ़ती रही खाना कुछ नहीं  
खाया गया जिससे कमजोरी जि  
यादा हो गई भग्न फिरत कर्कश वरं  
की तजबीज़ से पौदीने और शीर  
रिश्त का सोर बाँ दिया गया उससे  
कुछ तबीअत ठहरी और आसोज  
वदि २ को बादशाहने लोगों की त  
सच्ची केलिये खाव गाइ के भरो  
के में बैठकर तमा मनो करो का स  
खाम लिया और शाह बुलंद श्रु  
बाल दारा शिकोह का मन सब १००  
दुअस्मा सवारों के इजाफे से ५००  
जारी ४०००० सवारों का कर दिया जि  
समें ३०००० सवार दुअस्मा थे और  
१०००० फिरोज़ दाम और बढ़ाकर इनाम  
के कुल २००००० फिरोज़ दाम कर दिये और  
२७५०००० रुपये जफ़ात के शाहज  
हाना बाद की सायर से माफ़ कर  
के यह हुक्म दिया कि जहां हम होवें

पिशाब बंद होकर بخार आना शुरू  
होगिया सात दिन तक बीमारी रोज  
बरोज़ बढ़ती गयी कमाना कच्चे न केलिये  
से ضعف पड़ गया मगर फिर तफ़्फ़े  
की تجویز से पौदीने और शीर  
के शुरुब का استعمال हुआ उस  
के प्लेबिट थैरी और हड्डी को  
बादशाहने بغرض رفع پریشانی  
खलायिन के बेहरे के खाया ग  
बेइक़र تمام نوکرون کا سلام بیا الله  
شاه بلند اقبال کا منصب و س  
نزاری دس هزار سوار و واسط  
اقتصاد سے پچاس هزار سوار  
نہار کا کردیا جس میں ۵۰۰۰  
واسطے اور ایک کروڑ دھام  
اور پڑا کر انعام کے کل میں  
کروڑ دھام کروڑے اور ساڑھے  
سات لاکھ روپے زکات کا شاہ  
جہان آباد کے سائر  
معاذ کر کے یہ حکم دیا کہ  
جہان ہم ہوں و نان

جکا تमा کر رہے۔

اس امر سے میں نااہل ہوں۔

شاہجہاں نے اورنگ زیب کی بیٹی

بیتا پیدا ہونے کی خوشی میں پھنسی

بادشاہ نے اس کا نام سلطان محمد اکبر

نموہ محمد اکبر رکھا اور منظم خان کو

میرزا مرزا کو بکریاں سے

دور کر کے اس کو اور مہاراج

رہا وگرا اور میرزا کو جوبیجا پور

کی موہم میں تہنا تھوڑے ج

لدا ہا جیر ہونے کا حکم لکھا

اور دوسرا بکریاں سے کر کے

کراہا یاں کو دیوانی کے کام

کرنے کا حکم دیا۔

سرت کے اورنگ زیب سے بادشاہ

ہ کے ہجر میں اورنگ زیب کی کا

بے گناہی ہو کر اس سے

لکھا گیا تھا وہاں سے لے کر

ہلکے میں آیا اور ہلکے

کی مورتی جیسا شاہ سے دوستی

دار کے اس کی گان سے لگایا۔

زکات جمع کر رہے۔

اس اثنا میں ۱۱ ذی الحجہ

کو شاہزادہ اورنگ زیب کی بیٹی

بیتا کو لے کر فرزند کے بیٹے

سے اس کا نام سلطان محمد اکبر

رکھا اور منظم خان کو

میرزا مرزا کو بکریاں سے

دور کر کے اس کو اور مہاراج

رہا کہ مہاراجت خان وغیرہ

اور تعینہ میں بیجا پور کے

حضور میں حاضر ہو اور اس

رایاں کو تقرر وزیر دیگر

کے دیوانی کے کام کرنے کا

حکم دیا۔

وقایع سورت سے

بادشاہ کی حضور میں عرض ہوئی

کہ قائم بیگ جو سفیر ہو

گو گیا تھا بعد مراجعت طلب میں

آیا اور وہاں کے حاکم مرشد

پاشا سے دوستی پیدا کر کے

ایک کثیر منشیہ سے پشور گیا۔

اور تاجا پاخانے اپنی لہڈیوں  
کی مارفٹ کا یمن بے گ کے ریدمات  
گاہوں کو مینا کر اوس کے رانے میں  
جہر میلنا دیا جس سے وہ  
پنے جماई मोहम्मद हुसेन समेत म  
र गया-

वरस ३९वां

आसोज सुदि २ सं. १७१४ से

आसोज सुदि २ सं. १७१५ तक

कातिक बदि ३ और ५ को बादशा

हने दरशन के भरो के में बैठ कर ले

गों को दरशन दिये और कातिक बदि

६ को रुवावदलने के वास्ते आगे र

तरफ कूच किया शाहजहाना बादकी

सबेदारी और किले की हिफाजत र

ली लुलारवां को सोंपी गई-

बीजापुर की मोहिम-

दरवन के अरवार से मालूम हु

आकि शाहजाद औरंगजेब बहादुर

हुकम पहुंचने पर कातिक बदि १३ को

वापसरवाने होकर पांचवे दिन बि

रमें पहुंचा और ६ दिन वहां रह कर

مقتل پادشاه اپنی دوسری کینوں  
کے ذریعہ سے قائم بیگ کے

خدیوکاروں کو بلا کر اس کے کہانے

میں زہر ملا دیا جس سے وہ معہ

اپنے داماد محمد حسن کے مر گیا

برس اکٹیسواں

۱۶۲۸ سے ۱۶۲۹ تک

۱۶ ستمبر ۱۶۲۸

۱۶ ستمبر ۱۶۲۸

۱۶ و ۱۹ محرم کو بادشاہ

نے جہر و کہ درشن میں بیٹھ کر

لوگوں کو درشن دئے اور ۲

محرم کو تبدیل آب و ہوا کے

لئے اگر دکی طرف کوچ کیا شاہ

جہان آباد کی سوبہ داری اور قلہ کی

خانت غلیل امدان کے سپرد ہوئی

مہم عیسا پور

دکن کے وقائع سے معلوم

ہوا کہ شاہزاد اورنگزیب بہاؤ

موجب حکم کے ۲۶ محرم کو اورنگ آباد

کی طرف حرکت کر کے پانچویں دن غلڑ آباد

بیدر میں پہونچا اور ۶ روز وہاں بک

کاتیکسودی ۱۲ کو پورباجا باد کو  
 رکانیہ کاتیکسودی ۱۶ کو ہا  
 پھنچا اسی دن اسی کی بے گم جو  
 شاہنشاہ کی بیوی مہاراج  
 ۱۷ اس لیے ۵ دن باہر رکھ کر  
 گسار بادی ۶ کو پورباجا باد میں  
 رکانیہ کاتیکسودی ۱۶ کو

۱۰ صفر کو روانہ اورنگ آباد ہوا  
 ۱۲ کو پہنچا مگر اسی دن  
 اس کی بیگم چوہدری خان  
 کی دختر بی بی مرگئی اس کے بعد  
 روز باہر رہ کر ۱۹ صفر کو اورنگ  
 آباد میں داخل ہوا۔

## دربار کا حال

دربار کا حال  
 بادشاہ کا کاتیکسودی ۱۰ کو  
 ڈاکٹر سوامی پر پھنچ کر ۱۰ دن تک  
 رہے رہے جو آگرہ سے ۳ کو سہ  
 ہاں ماحول لہم اور تاکت کی  
 دوا دیاں کے ساتھ ساتھ  
 حال ہو گئی اور ۱۰ دن تک  
 سستی بڑھنے لگی مگر ۱۶ کو  
 شاہنشاہ کی بیوی مہاراج  
 ۱۷ اس لیے ۵ دن باہر رکھ کر  
 گسار بادی ۶ کو پورباجا باد میں  
 رکانیہ کاتیکسودی ۱۶ کو

بادشاہ ۸ صفر کو  
 گھاٹ سوامی پر پھنچ کر ۱۰ دن تک  
 تین کو سہ رہے پورباجا اور  
 دس روز پھر سے بیان ہوا  
 اور مقوی دواؤں کے کھانے  
 سے طبیعت طویل ہو گئی اور  
 صحت بڑھنے لگی ۱۹ کو شاہ  
 بند اقبال کی طبیعت میں داخل  
 ہوئے خود دن و رات ۲۸ صفر  
 کو قلعہ میں گئے۔

۱۲۔ رجب الاول کو  
 انیسواں قمری بھیس لگا سکی  
 خوشی کے علاوہ موت یا بی کی

۱۲۔ رجب الاول کو  
 انیسواں قمری بھیس لگا سکی  
 خوشی کے علاوہ موت یا بی کی



|   |  |
|---|--|
| <p>             खुशी थी इसलिये उस दिन बड़ी ही<br/>             धूम धाम का दरबार हुआ जिसमें<br/>             शाहबुलंद इकबालदारा शिकोह<br/>             को बीमारी के दिनों में बराबर हा<br/>             जिर खिदमत रहने और अच्छी बंद<br/>             गी करने के पलट्टे में १ किरौड़ रुप<br/>             या २० लाख की १ कंठी मोतियों की<br/>             और १५ लाख रुपये का दूसरा ज<br/>             वाहर सरपेच कलंगी खासा बाजू<br/>             बंद और जड़ाऊत जवार इनायत<br/>             हुई और मनसब में १० हजारी जात<br/>             का इजाफा होकर बाकी के १००००<br/>             वार ची दुअस्पास हो गये जिससे उ<br/>             सका मनसब ६० हजारी जात और<br/>             ४०००० दुअस्पास वारों का हो गया<br/>             इस मनसब की तननाह इनाम स<br/>             में ८३ किरौड़ दाम की सुकरर हुई<br/>             जिसके २ किरौड़ साठे सात लाख<br/>             रुपये सालाना नीहोते थे इसके सिवाय<br/>             बिहार का सूबा और १०० चौडे ची<br/>             उसको दिये गये-         </p> | <p>             भी خوشی تھی اس لئے اُس دن بڑی<br/>             دھوم و ڈھم کا جشن ہوا اور<br/>             اس میں شاہ بلند اقبال کونداات<br/>             ایام بیماری کے صلہ میں جب کہ<br/>             ایک دم بھی علحدگی خدمت سے<br/>             گوارا نہ کی تھی ایک کروڑ روپے<br/>             نقد بیسڑی لاکھ کی ایک کنٹھی<br/>             موتیوں کی اور چودہ لاکھ کا<br/>             دوسرا جو اہر معہ سر پیچ و جیف<br/>             و خنجر و ہار و بند مرصع خاصہ<br/>             کے عنایت ہوا اور منصب<br/>             میں دس ہزاری ذات کا اضافہ<br/>             ہو کر باقی کے دس ہزار سوا بھی<br/>             دوا سپہ ہو گئے جس سے اس کا<br/>             منصب ساٹھ ہزاری ذات اور<br/>             چالیس ہزار سوار دوا سپہ کا ہو گیا<br/>             اور طلب اس منصب کی معائنہ نام<br/>             کے ۸ کروڑ دام کی ہوئی جس کے<br/>             دو کروڑ ساٹھ سہ لاکھ روپے<br/>             سالانہ ہوتے تھے ہمارے صوبوں<br/>             ایک سو گھوڑے بھی اسکو دئے گئے         </p> |
|---|--|





|   |   |
|---|---|
| <p>کے مرنے کی خبر تمام ہندوستان<br/>         میں اتر گئی اور شاہ بلند اقبال کے<br/>         پانی جنگا جس کے عروج کے<br/>         ساتھ ساتھ بڑھتا جاتا تھا تاج<br/>         تخت کے واسطے لپٹے کو تیار<br/>         ہوئے جسکی اول نسیم الدین شاہ<br/>         مراد بخش نے کی تینے بادشاہی<br/>         دیوان میر علی نقی کو جو اسے<br/>         سجا یا کرتا تھا اپنے ہاتھ سے<br/>         مار کر کہہ اور خطبہ اپنے نام کا<br/>         جاری کیا اور شاہ شجاع بنگالہ<br/>         سے فوج لیکر بنارس تک<br/>         پلا آیا۔ اور خالصہ کے اکثر<br/>         محلات پر قابض ہو گیا</p> | <p>کے مرنے کی خبر تمام ہندوستان<br/>         میں اتر گئی اور شاہ بلند اقبال کے<br/>         پانی جنگا جس کے عروج کے<br/>         ساتھ ساتھ بڑھتا جاتا تھا تاج<br/>         تخت کے واسطے لپٹے کو تیار<br/>         ہوئے جسکی اول نسیم الدین شاہ<br/>         مراد بخش نے کی تینے بادشاہی<br/>         دیوان میر علی نقی کو جو اسے<br/>         سجا یا کرتا تھا اپنے ہاتھ سے<br/>         مار کر کہہ اور خطبہ اپنے نام کا<br/>         جاری کیا اور شاہ شجاع بنگالہ<br/>         سے فوج لیکر بنارس تک<br/>         پلا آیا۔ اور خالصہ کے اکثر<br/>         محلات پر قابض ہو گیا</p> |
|---|---|

کے مرنے کی خبر تمام ہندوستان  
 میں اتر گئی اور شاہ بلند اقبال کے  
 پانی جنگا جس کے عروج کے  
 ساتھ ساتھ بڑھتا جاتا تھا تاج  
 تخت کے واسطے لپٹے کو تیار  
 ہوئے جسکی اول نسیم الدین شاہ  
 مراد بخش نے کی تینے بادشاہی  
 دیوان میر علی نقی کو جو اسے  
 سجا یا کرتا تھا اپنے ہاتھ سے  
 مار کر کہہ اور خطبہ اپنے نام کا  
 جاری کیا اور شاہ شجاع بنگالہ  
 سے فوج لیکر بنارس تک  
 پلا آیا۔ اور خالصہ کے اکثر  
 محلات پر قابض ہو گیا

بادشاہ نے مراد بخش  
 کے مفدہ کی پر واز کر کے بڑے  
 شاہزادہ کے کہنے سے سلطان  
 سلیمان شکوہ کو راجہ  
 بیگم کی اتالیقی میں مدد  
 راجہ آنرودہ و شیخ

फरीद और दिलेर खां वगैराके २००० सवारों से बिदा किया इस मौके पर शाह बुलंद इक बालनेनी अपने नायब बहादुर खां को ४४ ज़ारीजा त और ३००० सवारों का मनसब दिलकर बिहार की सूबेदारी पर नेजा इसी तरह गलती से अपने तमास काम के आदमियों को बेटे के साथ नेज दिया -

जब यह लश्कर बनारस में प

हुंचा और लड़ाई शुरू हुई तो शाह शुजा अपने अपना डेरा डांडा और तोशखाना छोड़कर भाग गया और दरया के रस्ते पटने में पहुँच कर बादशाह को खरजी कसूर माफ कराने के वास्ते नेजी बादशाह ने नेजी कसूर माफ करके बहुत सी नसीहतें लिखीं और बंगाल की हुकुमत बदस्तूर उसके पास बहाल रखी और सलतान सुलेमान शिकोह को वापसी का हुकुम लिखा -

फरीद और दिलेर खां वगैराके २००० सवारों से बिदा किया इस मौके पर शाह बुलंद इक बालनेनी अपने नायब बहादुर खां को ४४ ज़ारीजा त और ३००० सवारों का मनसब दिलकर बिहार की सूबेदारी पर नेजा इसी तरह गलती से अपने तमास काम के आदमियों को बेटे के साथ नेज दिया -

जब यह लश्कर बनारस में पहुँचा और लड़ाई शुरू हुई तो शाह शुजा अपने अपना डेरा डांडा और तोशखाना छोड़कर भाग गया और दरया के रस्ते पटने में पहुँच कर बादशाह को खरजी कसूर माफ कराने के वास्ते नेजी बादशाह ने नेजी कसूर माफ करके बहुत सी नसीहतें लिखीं और बंगाल की हुकुमत बदस्तूर उसके पास बहाल रखी और सलतान सुलेमान शिकोह को वापसी का हुकुम लिखा -

शाहजहां बादशाह सं १०१४

۱۰۴۸ ۱۰۴۹ ۱۰۵۰ ۱۰۵۱ ۱۰۵۲

फागणवदिशको बादशाहने शाहजहां ۱۰۴۸ ۱۰۴۹ ۱۰۵۰ ۱۰۵۱ ۱۰۵۲  
हनुलंद इकबालकी अरजसे शाहजहां ۱۰۴۸ ۱۰۴۹ ۱۰۵۰ ۱۰۵۱ ۱۰۵۲  
हनुजात्रके ऊपर फतह पाने के ۱۰۴۸ ۱۰۴۹ ۱۰۵۰ ۱۰۵۱ ۱۰۵۲  
इनाममें सुलेमानशिको हक ۱۰۴۸ ۱۰۴۹ ۱۰۵۰ ۱۰۵۱ ۱۰۵۲  
मनसब असल और इजाफेसे ۱۰۴۸ ۱۰۴۹ ۱۰۵۰ ۱۰۵۱ ۱۰۵۲  
२० हजारी जात और १५००० सवार ۱۰۴۸ ۱۰۴۹ ۱۰۵۰ ۱۰۵۱ ۱۰۵۲  
का और राजा जयसिंघका ६ हजारी ۱۰۴۸ ۱۰۴۹ ۱۰۵۰ ۱۰۵۱ ۱۰۵۲  
जात और ६००० सवारका और ۱۰۴۸ ۱۰۴۹ ۱۰۵۰ ۱۰۵۱ ۱۰۵۲  
दिलेरखाका ३ हजारी ३००० सवा ۱۰۴۸ ۱۰۴۹ ۱۰۵۰ ۱۰۵۱ ۱۰۵۲  
रका कर दिया - ۱۰۴۸ ۱۰۴۹ ۱۰۵۰ ۱۰۵۱ ۱۰۵۲

अब बाद

हने बिनकुलना

रामहोजाने सदिखीको वापस

जाना चाहता दाराशिको हने

अपने मतलबके लिये उसमें

लडालकर कहा कि मुराद बरव

शने बंसी कर ना छोड़ दिया है

इसलिये उसको बराड में जागीर

दे और अहमदाबादका सूबा उस

से लेले और नमाने तो उसको प

कड़ा मंगविंउधर और गजिवकु

तबुलमुल्ककी पेशकश करा

اب بادشاہ نے باہل

آرام ہو جانے سے شاہجہاں

کو مراجعت کرنا چاہا تو دارا

نے اپنی بیاد دہلیت سے

اس میں دلیل ڈال کر کہا کہ مرا

نے اطمینان کرنا چاہیو رہا

اسلئے سکورائین پیل دین

اور احمداباد کا صوبہ اس

لین جو نہ مانے تو اسکو

مکتو ادین اور گجرات

قلب الملک کی پیشکاری



|   |   |
|---|---|
| <p>             असबाब जब तकर लिया और बी<br/>             जापुर वालों से सुलह करके और<br/>             रंगाबाद को कूच किया<br/>             बादशाह ने नाराज होकर अप<br/>             ने खास दस्तरवतों से लिखा कि<br/>             उन बेगुनाह सैयदों को छोड़ दो<br/>             और अपनी हद से कदम बाहर<br/>             मत रखो और शाहजादे मुग़ल<br/>             खश को लिखा कि हम मोहबत<br/>             पदरी से तुम्हारे कसूरों से आरव<br/>             छुपाकर तुमको बराइ का परगना<br/>             देते हैं वहां चले जाओ नहीं जाओ<br/>             गतो सजा पाओगे इन फरमानों<br/>             के जवाब में दोनो जगह से खजर<br/>             माज़रत लिखी आई तो जी बडे<br/>             शाहजादे ने कह सुन कर राजाज<br/>             सवत सिध को हजार ज्ञात और<br/>             रह जोर सवार को हजार फ़ौ से ७ ह<br/>             ज़ारी ७००० सवार का मन सब<br/>             घोड़े और लाख वरक पयरो कबू और<br/>             रमाल बेकी सूबेदारी दिला कर बहुत         </p> | <p>             सब सब ضبط کر لیا اور<br/>             پاپور والوں سے صلح کر کے<br/>             اورنگ آباد کو کھنچ گیا<br/>             بادشاہ نے اس<br/>             بات سے ناراض ہو کر دستخط<br/>             میں لکھا کہ ان بے گناہ سیدوں<br/>             و چوڑوا اور اپنی حد سے<br/>             آگے قدم مت رکھو اور شہزادہ<br/>             مراد بخش کو لکھا کہ ہم مقتضای<br/>             امر بڑی تمہاری نصیحتات<br/>             سے چشم پوشی کر کے بڑا رکے<br/>             پر گئے ویسے میں وہاں پہلے<br/>             جاؤ اگر نہ جاؤ گے تو سزا<br/>             پاؤ گے۔ جواب میں دوڑ<br/>             نے معذرت بھی دیکھی شاہ<br/>             بلند اقبال نے بتا ہم کہ<br/>             لشکر راجہ سیوٹ سے جنگ<br/>             کو مفت ہزاری منصب<br/>             ایک سو گھوڑے ایک لاکھ<br/>             روپے نقد اور مالود کی<br/>             صوبہ داری دلا کر         </p> |
|---|---|



سی فوج سے فاگ اے بدی کو جس  
 تر فرمائی اور سلج جاوی  
 کو احمد آباد کی صوبہ داری اور  
 ایک لاکھ روپیہ نقد دلا کر  
 گجرات کی طرف رخصت کیا  
 اور فرمایا کہ دونوں سردار  
 امین میں جا کر جمع ہوں اگر  
 مراد بخش احمد آباد خالی نہ  
 کرے تو جا کر اس سے خالی  
 کرادیں جب یہ دونوں  
 نا تجربہ کار سردار امین میں  
 پہنچے تو مراد بخش بہت سا  
 لشکر لیکر ان سے لڑنے کو آیا  
 اور پہرہ راستہ سے ٹوٹ کر  
 اورنگ زیب سے جا ملا جو  
 مع تمام ملکی فوج و لشکر  
 و کھن کے بادشاہ کی عیادت  
 کے نام سے چلا آتا تھا اسے  
 امین کے پاس موضع بلوچہ میں  
 پہنچ کر آیا کہ راجہ جسونت سنگھ  
 چاہا کہ راجہ رستم دے اور سولہ

۲۲ جمادی الاول کو  
 اور سلج جاوی  
 احمد آباد کی صوبہ داری اور  
 ایک لاکھ روپیہ نقد دلا کر  
 گجرات کی طرف رخصت کیا  
 اور فرمایا کہ دونوں سردار  
 امین میں جا کر جمع ہوں اگر  
 مراد بخش احمد آباد خالی نہ  
 کرے تو جا کر اس سے خالی  
 کرادیں جب یہ دونوں  
 نا تجربہ کار سردار امین میں  
 پہنچے تو مراد بخش بہت سا  
 لشکر لیکر ان سے لڑنے کو آیا  
 اور پہرہ راستہ سے ٹوٹ کر  
 اورنگ زیب سے جا ملا جو  
 مع تمام ملکی فوج و لشکر  
 و کھن کے بادشاہ کی عیادت  
 کے نام سے چلا آتا تھا اسے  
 امین کے پاس موضع بلوچہ میں  
 پہنچ کر آیا کہ راجہ جسونت سنگھ



शाहबुलंद एक बालकी अफसर में  
 रवाने किया और बिदा होते वक्त हरे  
 क बादशाह वंदो और बड़े शाहजादे  
 क नौकरो को इनाम खिल अत और  
 राखी घोड़े वगैरे दिये और शाहबु  
 लंद एक बालको देर तक छाती से  
 लगा कर जाने की कुरबसत और  
 फतह की दुआदी और आंखों में आं  
 सू नरकर कहा कि चांदी के कदहरे  
 की पोल से रथ पर सवार हो कर न  
 झारा बजाता हुआ जावे और जब  
 तक कि शाहजादा दरवाजे से बाह  
 र निकला बादशाह हैरत के दरे  
 या गेड़े बहे बहे जकड़ी के सहारे रव  
 डे खड़े उसकी तरफ देखते रहे उ  
 सी वक्त बेगम साहिब ने रवत  
 लिख कर औरंगजेब के पास अप  
 ने चरखी मोहम्मद फरूख के हा  
 थ जेजा जिसमें लिखा था कि बड़े  
 जाई से जो बली अहदनी है जउ  
 ना जादिर और बातिन में बाप से

|                                     |                                  |
|-------------------------------------|----------------------------------|
| कुत्ती कर नौ है और यह बात सचेष्ट    | کشتی کرنا ہے اور یہ بات حق       |
| र्म को मानने और खुदा को पहिचान      | پرستی اور خدا شناسی سے ہی        |
| ने की नहीं है चाहिये कि अपने मा     | بہت لمید ہے جیسے کہ ولی نعمت     |
| लिक का हुका विला करने और इ          | के مقابلہ اور اس ماہ رمضان       |
| सरमज्ञान के महीने में दोनो तरफ      | من طرفین کے مسلمانوں کے ماتے     |
| के मुसलमानों के मरवाने से डर        | جانے سے احتراز واجب سمجھ کر      |
| कर जहाय हरवत पहुंचे वही ठहर         | جهان خط ہوئے وہیں ٹہراؤ          |
| जाओ और अपनी अरजें लिख               | اور اپنی خواہشیں لکھ دیجیے کہ    |
| ने जो सोम जरूरा दी जावेगी           | عرض کر کے منظور کروایا دیگی      |
| जब यह रवत और गजेव के पास            | جب یہ خط اور گیک پہنچے گا        |
| पहुंचा तो इस के साथ ही यह ज्ञी      | के پاس پہنچا تو اسکے ساتھ یہ ہی  |
| खबर पहुंची कि शाहजादे द्वारा शि     | خبر پہنچی کہ دراز شکوہ نے دیوبند |
| को हने धोलपुर में पहुंच कर चंब      | میں دیوبند کے قریب کے تمام گھاٹی |
| ल के तमाम घाट रोक लिये हैं और       | روک لئے ہیں اور گیک زیب آبادی    |
| रंगजेव उसी वक्त सवार होकर वा        | وقت سوار ہو کر راتوں رات بیاض    |
| जे जमीन दारों के रस्ता बताने से नदी | از میدان رون کی نشان دہی سے      |
| को उतर गया और बरबशी को रुख          | ی کو اتر گیا اور بخشی نہر کو     |
| संत देकर बादशाह की खिदमत में        | صحت کر کے بادشاہ کو عرضی         |
| अरजी नेजी जिसमें लिखा था कि         | لکھی کہ میں سے شاہزادہ نے        |
| बड़े शाहजादे ने आप को बेखबर         | आپ کو بے اختیار کر کے میری       |
| तयार कर के मेरी खराबी पर कम         | خدا ابلی پر                      |

باंधली है ऐन मो के परजव कि बी  
 जापुर की मोहिम मन। चाही खत  
 महोने वाली थी सखत ताकी दल  
 शकर को वापस बुलाने की लिखी  
 और बगैर किसी तक सीर के बराड  
 का सूवा मुझ जैसे हुक्म उठान वा  
 ले बैठे से उतार कर उस फूत को  
 दिलाया कि जो बहुत सी वैअर दी  
 और अदुल हुक्मी कर चुका था इ  
 स पर नी सवरन कर के जसवंत सि  
 ह को मेरे सुका बिले पर नेजा और  
 यह चाह कि रहये नी नर नी ज  
 मीन मेरे पास न रहे आप तो वैअ  
 र वतियार हैं जो वह कहता है वही  
 करते हैं और उसकी खातिर से दू  
 सरे बेटों को दुशमन समझ कर  
 जैसा वह चाहिता है हुक्म लिख  
 देते हैं यह हाल देख कर मैंने यह  
 बात बानी है कि खुद हाजिर हो क  
 र जो असल हुक्मी कत है वह आ  
 पको समझाऊं मेरा इरादा आपकी

बांधे رکھی ہے میں موقع پر  
 جب کہ بیجا پور کی مہم حسب  
 وخواہ ختم ہونے والی تھی  
 تاکید شدیہ واپسی لشکر کی کی  
 اور پھر بلا تقصیر کے بڑا رکا  
 صوبہ مجھ جیسے فرزند درست  
 اعتقاد سے تغیر کر کے اس  
 ناخلف کو دلایا کہ جو بہت سی  
 بے ادبی اور عدول حکمی کر چکا تھا اور  
 اس پر ہی سیر نہ کر کے جو نت سنگہ  
 کو میرے مقابلہ پر بھیجا اور یہ قصد  
 کیا کہ پہیلی پر بھی زمین میرے  
 پاس نہ رہے آپ بے اختیاری  
 سے جو وہ کتابت وہی کرتے  
 ہیں اور اسکی خاطر سے دوسرے  
 بیٹوں کو دشمن سمجھ کر جیسا وہ چاہتا  
 ہے فرمان کچھ دیتے ہیں یہ  
 مال دیکھ کر میں نہتے یہ بات  
 قرار دی ہے کہ خود حاضر  
 ہو کر اصل حقیقت آپ کے  
 ذہن نشین کروں سو اسے



|   |   |
|---|---|
| <p>             दिल उससे फिर गये थे और होस्त<br/>             दुशमन हो गये थे तो नीरुस्त मुख<br/>             रावराजुसालहडा राजा रूपसिं<br/>             घराठोड रामसिंहराजासे वाराम<br/>             गौड और अरजुन वगेरा राजपूत-<br/>             सरदारनी बड़ी बहादुरीसे लड़क<br/>             र काम आयि औरंगजेबके हाथी<br/>             के पास धोड़ेसे ही आदमी रहग<br/>             ये थे तो नीरुस्त अपनी जगह जमा<br/>             रहा और दाराशिको हजल दी कर<br/>             के अपने तोपरवानेसे आगे बढ़ा<br/>             तो बहुत लोग उसको छोड़कर<br/>             जाग गये तीस चालीस आदमी<br/>             योंसे जियादा उसके हाथी के आ<br/>             गे पछिन रहे तब वह लाचारीसे<br/>             जाग कर शामके करीब आगे रमे<br/>             पहुँचा और ११ परसे जियादा न<br/>             बहर कर लाहोर की तरफ चल दिया<br/>             औरंगजेबफतह पाकर उस<br/>             दिन तो दाराशिको हके लश्कर<br/>             की जगह बहरा और दूसरे दिन         </p> | <p>             دل پر گئے اور دوست دشمن<br/>             ہو گئے تاہم رستم خان راو<br/>             سترو سال کا ڈارا کچھ زو پ سنگ<br/>             را پھور رام سنگہ را بھ سپہ ارام<br/>             گوڑ اور ارجن وغیرہ بڑی بہادری<br/>             کے ساتھ لڑکر کام آئے اور لڑک<br/>             زیب کے ہاتھی کے پاس تھوڑے<br/>             سے ہی آدمی باقی رہ گئے تھے<br/>             تاہم وہ اپنی جگہ پر جم رہا اور<br/>             دارا شکوہ جو جلدی کر کے اپنے<br/>             نوپ خانہ سے آگے بڑھا تو بہت<br/>             لوگ اُسکو چھوڑ کر پہاگ<br/>             گئے تیس چالیس آدمی سے<br/>             زیادہ اُس کے ہاتھی کے آگے<br/>             نہ تھے تب وہ ناچار گردش<br/>             طالع سے فرار ہو کر شام کے قریب<br/>             آگہ پہنچا اور ایک پہر سے<br/>             زیادہ نہ چل کر لاہور کی طرف<br/>             اورنگ زیب فتح پا کر<br/>             اس دن تو دارا شکوہ کے لشکر کی<br/>             جگہ بڑا اور دوسرے دن         </p> |
|---|---|





بادشاہ نے خوش ہو کر دو ہفتے  
دن پھر افضل خان کو بہت سے  
جوہرات و دیگر شہزادہ کے لائے  
کو بھیجا مگر امیر شہزادہ کہہ اور  
اور ہی ہو گیا تھا کیونکہ لوگوں  
نے اس کو بادشاہ کی طرف سے  
بھگا دیا تھا اس لیے فاضل خان  
نے واپس جا کر جو دیکھا تھا وہ  
عرض کیا بادشاہ نے تیار خلیل  
خان کو فاضل خان کے ساتھ  
بیچ کر پھر کیا کہ جو فرزند تو  
ہمیشہ سے اپنے باپ کا رشتہ  
جو اور فرمان بردار رہا ہے  
پہر اپنا اعتبار ہے مہری کا کیا  
سب سے فاضل خان تو باہر  
کھڑا رہا اور خلیل اسے خان نے  
خلوت میں جا کر بادشاہ کو قید کرنے  
اور ان سے قلعہ اور خزانہ چھین  
لینے کی راہ دی اور نگہب  
نے مصیبت دیکھا خلیل اسے خان  
کو نہ بھگا دیا اور فاضل خان سے کہا

بادشاہ نے خوش ہو کر دو ہفتے  
دن پھر افضل خان کو بہت سے  
جوہرات و دیگر شہزادہ کے لائے  
کو بھیجا مگر امیر شہزادہ کہہ اور  
اور ہی ہو گیا تھا کیونکہ لوگوں  
نے اس کو بادشاہ کی طرف سے  
بھگا دیا تھا اس لیے فاضل خان  
نے واپس جا کر جو دیکھا تھا وہ  
عرض کیا بادشاہ نے تیار خلیل  
خان کو فاضل خان کے ساتھ  
بیچ کر پھر کیا کہ جو فرزند تو  
ہمیشہ سے اپنے باپ کا رشتہ  
جو اور فرمان بردار رہا ہے  
پہر اپنا اعتبار ہے مہری کا کیا  
سب سے فاضل خان تو باہر  
کھڑا رہا اور خلیل اسے خان نے  
خلوت میں جا کر بادشاہ کو قید کرنے  
اور ان سے قلعہ اور خزانہ چھین  
لینے کی راہ دی اور نگہب  
نے مصیبت دیکھا خلیل اسے خان  
کو نہ بھگا دیا اور فاضل خان سے کہا

किले के दरवाजे की कंजियां मेरे

ملکہ کے نور و آفتاب کے منظر پر

အကျဉ်းချုပ်အားဖြင့် အောက်ပါအတိုင်း ဖြစ်ပေါ်ခဲ့ပါသည်။

۱۰۰ گزینہ بہترین موضوعات

[illegible]

مجلس

476 717 444 444 444 444 444

باز آید و وقت بماند.

को राजा रवकर कंचो किंसात

اندر بنی رجا سردی و مقدم بر پند و مکی

रहकी तकलीफ नद-

کسی صورت میں ایک ہی جہان کا دورِ حیات کا

बादशाह ने इस अरजी के पद

وَأَمَّا الْفُلُ فَأَنزَلْنَاهُ ذِكْرًا لِّعِبَادِنَا

चतेहीलाचारीसेलमाम किला

۱۰۶ : بادشاہ نے اس عربی کے

खाली कर दिया उसी दम और रंग

یوں کہ کسی مجبورِ آسمان قلعہ جالی

जेवके आदमी जगह रे ब्रैंगये

لے دیا اسی دن، ورنہ تیرے

खजानों और कारखानों पर मोह

ادھی جا بجا بیٹھ گئے تھراؤ توں آؤں

रैलगाई बादशाहके पासलोगों

کارخانوں بہترین لکے گئیں۔

का आना जाना जारी नरहा और

باوضاہ کے پابن توگون کی آمدو

वह किला उन के वास्ते कैदरवाता

رفت بہتر ہو گئی تیس وہ فلانہ کے

होगया और वे बड़ी तंगी से ज़रप

وایستے قید خانہ ہو گیا اور وہ

नीचा की ज़िम्मेदार करने लगे—

برائی نمی خواہی بے غمتر کر دے:

कैसे खेद की जगह है कि शाह

۱۰۶۵ اب کیسی ہجرت کا مقام

जहाबादशाहजिनकोजमानेने

ہے کہ شاہجہان بابر شاہ بن گیا۔

हर तरह से मदद देकर हारा नराकर

نہانے کے طریقہ طرح سے کامیاب

रखा था और जो बेटों के मोह जा

اور کلہاڑی کے کھڑکے سے اور جوتاہے

लमें फंसकर उसके नतीजे को

بیرونی نسبت میں ناسخ کا حکم

चलेहुवेथे एकदम तकदीर के पल  
दजाने से किसी लायक नही रहे  
जिनका दुख भइ जारों को सो में च  
लता था और जिनकी जोज ४०००  
से जियादा थी वह ऐसे लावार और  
रबेवस हुवे कि अपने घर की नी

मर जायेंगे

पुनाह साँझों का शान्ति थी व  
ही यों वे वफाई कर के उनको बुर  
हालों छोड़ गई इनके परदादा हु  
मायू बादशाह को जो फज नाईयो  
के साथ हृद से जियादा महरबानी  
करने का मिला था उस से ग्राफि  
ल रह कर इन्होंने जो अधा धुंध  
मोहबत अपने बेटों के साथ की  
थी उस का नतीजा उस से जीव  
दतर पाया जब उन्होंने अपने बेटे  
(औरंगजेब) को लिरवाया कि  
महदुनियादारुल मुकाफात है  
तो उस वक्त उनका दिल ज़रूर

होला होता था कि दम में तद्विर के  
लिख जायेंगे कि बच्चे लायक नही  
जिस का हक़ हजारों कोस में  
जाता था और बस की वजह चार  
लाक़्ख से ज्यादा ही वह आया  
मजबूर और बेस भ्रम होकर ऐसे  
ग़म की भी हफ़ात

सुलत के वंश  
अपने बेटे ग़नाह  
ली थी वह यों भोली ग़म के  
असुखाल तबाह हो गयी उस के  
परदादा और यों बादशाह को  
बेबायों के साथ ही दूर  
महबानी करने का निम्ते मिला था उस से  
ग़ाफ़ल रहे कर जो उस ने अपने  
बिथिल के साथ ही आन्दोष  
मिहत् की अस का पहल अस से  
भी बहुत प्यास जब अस ने अपने  
बेटे को लूटा था कि बीस दाना  
दारुल मुकाफात है तो  
असुत अस का दिल

उनसे पुकार कर कहता होगा कि य  
ह बदला उस बरताव का है कि जो  
तू ने अपने बाप से बरताया बाप  
से बागी होना इन बादशाहों के  
खानदान में कई पीढ़ियों का विर  
सा यानी दाय ना गया पहिले ज  
हांगीर ने अपने बाप अकबर से ब  
गावत की मगर परदे के साथ-फि  
र शाहजहान ने इस धड़ल्ले से की कि  
बाप के ऊपर चढ़ कर गये हज़रत  
औरंगजेब सब में सपूत निकले  
कि तब बत और ताज छीन कर बा  
प को कैद ही कर दिया

बाकीहाल इसबादशहका औ  
रगजेवकीतवारीख मेंलिरवाजावे  
गा-

باز کا کرنا اس لئے کہتا ہوگا  
 کہ یہ پادشاہ اس ملک کو  
 کا رہے ہو تو بے اپنے باب  
 جائیگر سے کیا تھا یا پے سے  
 غارت کرنا خاندان معالیہ  
 میں چند پشت کا ورثہ تھا  
 پہلے جہانگیر نے کی مگر ایک  
 جہاں کے ساتھ پیر شاہ جہاں  
 نے اس دہڑے سے کی  
 کہ باب کے اوپر چڑھ کر گیا حضرت  
 اورنگ زیب سب میں سپوت  
 تھے کہ سلطنت چھین کر باب  
 کو قید ہی کر دیا۔

بارشاہ کا اور نگہ زیب کی  
تو اینخ میں کہنا جاو گیا

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 श्रीकृष्णार्चनम् ॥  
 श्रीकृष्णाय नमः ॥  
 श्रीकृष्णाय नमः ॥  
 श्रीकृष्णाय नमः ॥  
 श्रीकृष्णाय नमः ॥

शेषसंग्रह.

अब कुछ फुटकर हाल शहजहाँ  
के राज्य के लिखे जाते हैं जो बहुत  
जरूरी है-

## अमलदारी

शाहजहा की अमलदारी अक  
बर और जहांगीर से बहुत बढ़ गई  
थी उन की सजतनत की लंबाई  
लाहुरी तदर से जो बटु के पास है  
सिलहट तक २०० कोस के करीब  
थी और चौड़ाई किले बस्त की स  
रहद से जो ईरान की अमलदारी से  
मिली हुई थी अड़ से के किले तक  
जो कुनुबुलमुल्क की अमलदारी  
के पास था १५०० कोस के करीब थी  
शाहजहानी एकांत ५००० गज का था  
और गज ४२ उंगल का पच्चम में ई  
रान और तूरान से उत्तर में काशग  
र और तिब्बत से दक्खन में गोज कुं  
ड और बीजपुर से पूरब में मग और  
रखग बानी अरु और अ राकान से

اب کچھ متفرق حالات  
شاہجہان بادشاہ کے عہد کے  
کے جاسم ترین جوہر ضروری

عبدالرحمن

شاہ جهان کی عہد داری اکبر اور  
جہانگیر سے بہت بڑھ گئی تھی  
چنانچہ انکی سلطنت کا طول  
لاہری چند رستے بنو ٹھٹھہ کے  
پاس پہنچے ملتان تک دو ہزار  
کوس کے قریب تھا اور عرض  
قلعہ نسبت توابع مولویہ کابل سے  
جسکی مسافت محض بمقدور ایران تھی  
قلعہ اڑتہ تک جو عہد داری قطب  
الملک سے ملا ہوا تھا قریب  
دو ہزار کوس کے تھا ایک  
کوس یا پنج ہزار گز شاہجہانی کا تھا  
اور ایک گز ۲۴۰۰ گز کا ہے پھر  
ایران تو ان کے اتر میں کشمیر اور  
ترت حدود کپش میں ملک گوگندہ اور  
ہمایوں قریب میں ملک اور زنگین

बलरूप और चंदरवशं इसलंया इमें स्थानित नहीं है-

सरहद मिलती थी पहनी नही सूबे  
बंगाल और मुल्क मगको अन्नग  
करती थी कुतबुल्मुल्क की अमल  
दारी से आगे बीजापुर के शह आ  
दिलवांकी सजत नत थी और दो  
नोहर साल खिरनी जेजा करते थे-  
यह इतना लंबा चौड़ा राज २२ स  
बों में बंटा हुआ था और एक सूबे  
में कई कई सरकारें थी और सरका  
रों के नीचे परगने थे कुल परगने  
२२ सूबों में ४३५० थे इनमें बाजेर  
परगने दिल्ली और लाहोर के सूबे  
में दस दस जारव की पैदा के थे-  
सूबेदार और अमला  
हर सूबे में एक सूबेदार रहता था  
जिसके पास दीवान बरवसी और  
वाकानवीस बादशाह के हज़ूर से  
उक़र रहे होकर जाते थे जो अपना  
काम बादशाह की बात से उसके  
हुक्म से करते थे-  
सरकारों में फौजदार अमीन

ہا اور ارکان سے سرحد ملی  
ی ندی سوہی بنگالہ و ملک مگ کی  
مقابل میں اور شاہ کام جنگ ال  
لے قبضہ میں تھا قطب الملک کے  
بابائے آگے بجا پور کے عاویان  
ل سلطنت تھی اور دو نوہر سال  
زبان دیا کرتے تھے  
یہ سلطنت ۱۲ صوبوں میں تقسیم تھی  
اور ایک ایک صوبہ میں بھی کسی سکائی ہو  
فلیم کہ تین اور کار کے ماتحت تھا  
یہ بڑے بڑے محل پر گئے ۱۲ صوبہ میں  
آزادین میں پیش پر گئے ملی اور لاہور  
صوبہ میں ۱۱ ملکہ رومیہ کی حکومت تھی  
صوبہ دار و علمہ  
۱۲ صوبہ میں ایک صوبہ دار تھا  
جس کے پاس دیوان و قاضی و تین را  
کرتے تھے جو اپنا بنا کام آگے  
حاکم سے بموجب بادشاہی حکم  
کے کرتے تھے  
سرکاروں میں فوجدار اہل

کو توال اور پنگون میں کر دی  
رہتے تھے کر دی بجائے تحصیل  
کے تھے فوجدار پولیس کا امین  
مال کا اور کر دی تحصیل کا کام کرتا تھا  
کا کام کرتا تھا۔

### جما بंधी

تھسیل جما کا بندہ است  
کسر پور تھا جमा पैमा यश  
से जमीन की हैसियत पर मुकर  
होती थी कालबरस और वरसात  
कम होने के मौसमों में जमा ची  
कम कर दी जाती थी -

### आमदनी

कुल सुवों की जमीन की जमा  
१ सुबा दिहरी १०० किरुडदाम  
२ सुबा आगरा ६० किरुडदाम  
३ सुबा लाहौर ६० किरुडदाम  
४ सुबा जमेर ६० किरुडदाम  
५ सुबा दोलताबाद ५० किरुडदाम  
६ सुबा बराउ ५३ किरुडदाम

को तوال اور پنگون میں کر دی  
رہتے تھے کر دی بجائے تحصیل  
کے تھے فوجدار پولیس کا امین  
مال کا اور کر دی تحصیل کا کام کرتا تھا  
کا کام کرتا تھا۔

تھسیل جما کا بندہ است  
کسر پور تھا جमा पैमा यश  
से जमीन की हैसियत पर मुकर  
होती थी कालबरस और वरसात  
कम होने के मौसमों में जमा ची  
कम कर दी जाती थी -

कुल सुवों की जमीन की जमा  
१ सुबा दिहरी १०० किरुडदाम  
२ सुबा आगरा ६० किरुडदाम  
३ सुबा लाहौर ६० किरुडदाम  
४ सुबा जमेर ६० किरुडदाम  
५ सुबा दोलताबाद ५० किरुडदाम  
६ सुबा बराउ ५३ किरुडदाम

शाहजहाँवादशाह

१९२२ १७०

- १ सुवायुजरात १३ किरौडदाम  
२ सुवाबंगराला ५० किरौडदाम  
३ सुवाइलहाबाद ४० किरौडदाम  
४ सुवामालवा ४० किरौडदाम  
५ सुवावानदेस ३० किरौडदाम  
६ सुवात्रवध ३०  
७ सुवातिलगना ३०  
८ सुवामुलतान ३० किरौडदाम  
९ सुवाउडीगा ३० किरौडदाम  
१० सुवाकाबुल १६ किरौडदाम  
११ सुवाकशमीर १५ किरौडदाम  
१२ सुवाठठा ८ किरौडदाम  
१३ सुवाबलसवे ६ किरौडदाम  
१४ सुवाकंधार ६ किरौडदाम  
१५ सुवाबदखरा ४ किरौडदाम  
१६ बिलायतबगलाना २ किरौडदाम  
१७ यहजमांसा २० जलूसीमेथी  
१८ दामका ११ गिनजाताया  
१९ से पलरव ८० किरौडदामके  
२० रोडरुपये होतेथे  
२१ पहिलेयानीजबवादशाहसरवत





|                                     |                                     |
|-------------------------------------|-------------------------------------|
| کسی بادشاہ کو میر نہیں ہوا تھا      | کسی بادشاہ کو میر نہیں ہوا تھا      |
| جہانگیر بادشاہ نے اپنی ۲۲ سالہ      | جہانگیر بادشاہ نے اپنی ۲۲ سالہ      |
| سلطنت میں بہت خرچ کیا               | سلطنت میں بہت خرچ کیا               |
| شاہ جہان کے عہد میں آبادی ملک       | شاہ جہان کے عہد میں آبادی ملک       |
| اور شاہ رعایا کی وجہ سے باوجود      | اور شاہ رعایا کی وجہ سے باوجود      |
| شرت مصارف سپاہ و انعام و            | شرت مصارف سپاہ و انعام و            |
| تعمیر عمارات عالیہ اس قدر خزانہ جمع | تعمیر عمارات عالیہ اس قدر خزانہ جمع |
| ہوئی کہ جس کا کچھ حساب نہیں اور     | ہوئی کہ جس کا کچھ حساب نہیں اور     |
| جو اہرات تو اس قدر تھے کہ قبول      | جو اہرات تو اس قدر تھے کہ قبول      |
| مولت بادشاہ نامہ کل فرمانروایان     | مولت بادشاہ نامہ کل فرمانروایان     |
| عالم کے پاس موجود ہوں گے            | عالم کے پاس موجود ہوں گے            |
| سلطنت کروڑ کا جو اہر خاصہ تھا       | سلطنت کروڑ کا جو اہر خاصہ تھا       |
| جس میں سے دو کروڑ تو بادشاہ اور     | جس میں سے دو کروڑ تو بادشاہ اور     |
| کو عطا ہو گیا تھا اور پانچ کروڑ کا  | کو عطا ہو گیا تھا اور پانچ کروڑ کا  |
| موجود تھا اس میں سے دو کروڑ         | موجود تھا اس میں سے دو کروڑ         |
| کا بادشاہ کے پہننے کے واسطے         | کا بادشاہ کے پہننے کے واسطے         |
| خندنگاروں کے پاس رہتا تھا اور       | خندنگاروں کے پاس رہتا تھا اور       |
| تین کروڑ کا چیلون کی تحویل میں      | تین کروڑ کا چیلون کی تحویل میں      |
| تھا یہ اس قدر جو اہر ایک سو برس     | تھا یہ اس قدر جو اہر ایک سو برس     |
| میں جمع ہوا تھا۔                    | میں جمع ہوا تھا۔                    |
| بادشاہ کے پاس ایک سو چوبیس لاکھ     | بادشاہ کے پاس ایک سو چوبیس لاکھ     |

کسی بادشاہ نے نہیں کیا تھا جہاں

گہر نے اپنے ۲۲ برس کے راجہ میں

جس میں سے

بڑا سا روضہ کیا شاہجہاں کے

جہان میں بہت سے دھڑا کر پیا فوج

بندی دنا مائے اور بڑی ۲۵ مار تو

کے بنانے میں روضہ آتے تھے

کی آوازیں اور ریت کی آواز

دہلی سے بڑا سا روضہ جانے

میں جہانگیر اور جہانگیر تو

تھا کہ کچھ دنوں کے بادشاہ

ہاں کے پاس نہیں ہوگا۔

۷ کیرے کا جہانگیر روضہ

جہانگیر میں سے ۲ کیرے کا

جہانگیر کو دنا دیا گیا تھا اور

۵ کیرے کا جہانگیر میں ۲

کیرے کا جہانگیر کے پہلے

کے واسطے دنا دیا گیا تھا اور

تھا اور ۳ کیرے کا چیلون کے

تھا اور ۳ کیرے کا چیلون کے

تھا اور ۳ کیرے کا چیلون کے

का १२ लाख रुपयों का और १ हजार मो  
तियों का १६ लाख रुपयों का और  
२ हजार २० लाख रुपयों के थे ये चीजे  
अकबर बादशाह की बनवाई हुई  
थीं जहांगीर और शहजहां ने जी  
इनमें कुछ इजाफा किया था -

### सिक्के

बादशाही टकसालें राजधानी  
के सिवाय अकसर सूबों में थीं जि  
नमें सोने और चांदी के सिक्के पड़ा  
करते थे और उनके नाम नीचे  
लग अलग थे -

मोहर - असरफी

आधी मोहर - धान

पाव मोहर - चरण

आधारूपया - दरब

पावरूपया - निसार

इनके सिवाय हजार २ और  
पंच पंच सो तोल के नी मोहर  
और रुपये होते थे और वे इना  
मों में दिये जाते थे -

मिस्ती नार लाकहे रुपये और एक  
मोतियों की माला मिस्ती १५ लाकहे रुपये  
और माला मिस्ती २० लाकहे रुपये की  
हैं और ये चीजे अकबर बादशाह की  
बनवाई हुई थीं जहांगीर और शहजहां  
ने भी अिनमें कुछ इजाफा किया था

### सके

बादशाही कमालिन डार السلطنة  
के सوا से अतर सुबों में भी  
मिस्ती चीजे सोने चांदी और रानी  
के सके तैयार होकर होते थे और उनके  
नाम भी खास طور के होते थे - مثلاً

अशरफी

दुमरी

चरण

दरब

निसार

मोहर

आधी मोहर

पाव मोहर

आधारूपया

पावरूपया

अनके علاوه में हजार और पांच  
पांच सो तोल के भी मोहर रुपये  
होते थे और वे इनामों में  
दिये जाते थे -

# खरच

# मصارिफ

खरच नीशाहजहाँके वक्तमें

खर्च भी शाहजहाँ के वक्त में

हुत हुआ फौज खरच के सिवाय

बहुत हुआ फौज खर्च के सवा

नाम और खरच शिश २० बरस में

अंश और खर्च २० बरस में

६ किरोड़ ५० लाख की हुई थी और

बास लाकड़ रोपिये نقد और

२ किरोड़ ५० लाख रुपया उन इमा

रतों में खर्च हुआ जो अपनी

जवाब आप ही थी उनमें सारा

खर्चा लाशानी में खास खास

सर्न चि लिखी जाती है -

खर्चों की तफ़्सील यह है

१ आगरे की इमारतें १ किरोड़ १० लाख

(१) इमारतें अगरवाला लाकड़

२ आगरे के किले में संगमरमर की स

(२) संगमरमर की सजावट

सजिद और दोलतखाना ६० लाख

(३) सजिद और दोलतखाना ६० लाख

३ ताजमहल का रोजा ५० लाख

(४) ताजमहल का रोजा ५० लाख

४ दिल्ली की इमारतें मसजिद के

(५) दिल्ली की इमारतें मसजिद के

सिवाय ५० लाख

(६) सिवाय ५० लाख

५ लाहोर के बाग और इमारतें ५० लाख

(७) लाहोर के बाग और इमारतें ५० लाख

६ काबुल की इमारतें १२ लाख

(८) काबुल की इमारतें १२ लाख

७ अजमेर और अहमदाबाद की १२ लाख

(९) अजमेर और अहमदाबाद की १२ लाख

८ कश्मीर की इमारतें ८ लाख

(१०) कश्मीर की इमारतें ८ लाख

९ कंधार वस्त और जर्मन दरवाजे

(११) कंधार वस्त और जर्मन दरवाजे

कोट कोरा ८ लाख रुपये

(१२) कोट कोरा ८ लाख रुपये



४ जमान्तरां किरावली मीरशिकार ८००

۲۲ جہاں خان قزاقوں و سرکار ہمسایوں

५ मुहनाग्र बुलहमीदवादशाहना  
मेका बनानेवाला ३००

۵ ملا عبد الحمید مولف با و شاہ نامہ

६. मुहनात्रबदुलहकीमस्यालकोटी६.

۶ ملا عبدالحلیم سیالکوٹی

७ काज़ीमोहम्मद अफ़जल ६००

۱۰۰ قاضی محمد ارفان

८॥ श्रीरिद्धिदत्तगार ॥ ७००॥

۸ عارف خدمتگار

इन्सब्रमेजियादान्ताहीजभा

النسب میں زیادہ

सरवां नीर सब से हलका मूत्रा

بہاری جمال خان اور بہت پاک

**अवदानसीध्या -**

ملا عبد الحمید نقی۔

अनुसंधानार्थी -

رویدہ ٹاسنے کا بھی

सपयल्लुटानकासिखिज्जया

روادقہ انجمن دینیہ

जयवादिशाहसफ़रकरकअतिथ

سنا پڑی ہوئی ہے۔

यालाहोर काबुल और अजमेर

سے کار اعلیٰ امت میں اسے سہے یا

चंगेरा के दोस्त तरवाने में दाखिल।

۱۰۰۰ روپے کا بل وغیرہ معویوں سے

हेतिथे तवनीरुपया जुदायाजा ।

دو سالہ بن مین واصل ہوئے تھے

ताथा और ईद की सवारियों ने

اور پیہ سنا یا جاتا تھا اور عید و نور

नीऐसाहोताथा - रेंपरातनीबां

سوار یونین میں بھی خیرات بہت ہوئی

तहोती थी उसमें और नो रोज बगेर

جی آسمین اور تقریبات سائنس

जैसे ही मैंने जोर दिया, वह खरब हो गई।

مین جو روپیہ صرف ہوتا تھا اس

या समसे सबको फायदा पड़ता

سے سب کو فائدہ پہونچتا ہے

या भाषावलीच्या मंडळीचे सदस्य

خاص خاص غیر اتون کہ صرف

स्वर्गो राजन्ममं दीताया नृपि

ہر سال بہر وقت ہوتی تھیں جس

विश्वमहाविद्यालय-

بادشاہ کے شمس کی بجن یانی سا  
لگرہ کے تولا دان میں جیسا کہ  
کے ہسٹری سے ہوتی تھی ۸۰۰۰۰

بادشاہ کے کماری بجن یانی چاند  
ماس کے ہسٹری کی سالگرہ ۸۰۰۰۰

چاروں شاہ جادوں کی سالگرہ ہوں کے  
تولا دانوں میں ۱۰۰۰۰۰

۲۹ رجب کی رات کو ۱۰۰۰۰

شہر رات کو ۱۰۰۰۰

رمضان کے روزوں کی بات ۱۰۰۰۰

تاج بی بی کے ۲۵ یانی مہینہ ساری ۱۰۰۰۰

مہینہ میں ۱۰۰۰۰

تاریخ ۱۲ رجب اول شعبان کی رات  
تہم پہ گامبر ساری کا جنم ہوا

آپا اس کے واسے ۱۰۰۰۰

بادشاہ کی جہان

یانی اچھو

سب سے بڑا اچھو بنو گئے جہاں ہوا  
جس دن سے وہ بنو گئے تھا

اس دن سے وہ بنو گئے تھا ۱۶۵۷ء

۱۔ وزن شمس بادشاہ کی تاریخ ۱۶۵۷ء  
بہمن کو

۲۔ ملن قمری جو ۱۶۵۷ء  
افغانی کو تھا

۳۔ ورنہاوی سالگرہ غلام زادہ دار اسکود  
و شجاع واحد گنہگار و مرادش جو

سال پر مین ایک مرتبہ ہوتے تھے ایک ایک

۴۔ ۲۶ رجب کی شب کو تقریب ہوا

پہنچر صاحب

۵۔ شب برات کو

۶۔ بابت روزہ ۱۶ رمضان یکم شوال کو

بابت عرس متاثر زمانی یکم تاریخ ۱۶ ماہ

۷۔ غزو محرم کو

۸۔ تقریب میلاد پیر ۱۶ رجب افغانی کی شب

۹۔ شب ۱۶ جمادی الاول کو بیادگار

۱۰۔ وفات اکبر بادشاہ

تقریبات سلطنت  
سب سے بڑی تقریب نوروز کی  
ہوتی تھی جس دن کہ آفتاب برج حمل  
میں آتا تھا اس دن سے یکشنبہ  
آفتاب تک ۱۶ دن -

|   |   |
|---|---|
| <p>بشاہر روضی کے جلسہ ہوتے تھے دو تین طرح طرح کے تحفے سے سجایا جاتا تھا شہزادے اور بڑے بڑے امیر لاکھوں روپیہ کی بڑا اور دوسری عجیب و غریب چیزیں ہیکش کے نام سے بادشاہ کے نذر کرتے تھے اور بادشاہ ہی انکو بہاری بہاری خلعت مع زیور مرصع و قیمتی ہتھیاروں کے اور ہاتھی غوڑے دینا دیتے تھے اور یہی لکھتا تھا</p> | <p>بشاہر روضی کے جلسہ ہوتے تھے دو تین طرح طرح کے تحفے سے سجایا جاتا تھا شہزادے اور بڑے بڑے امیر لاکھوں روپیہ کی بڑا اور دوسری عجیب و غریب چیزیں ہیکش کے نام سے بادشاہ کے نذر کرتے تھے اور بادشاہ ہی انکو بہاری بہاری خلعت مع زیور مرصع و قیمتی ہتھیاروں کے اور ہاتھی غوڑے دینا دیتے تھے اور یہی لکھتا تھا</p> |
| <p>نوروز کے دن پانچ اور عشر سوئے کے بڑا نو جوانوں میں امیروں و وزیروں اور دوسرے ماضرین دربار کو عطا ہوتے تھے</p>  | <p>نوروز کے دن پانچ اور عشر سوئے کے بڑا نو جوانوں میں امیروں و وزیروں اور دوسرے ماضرین دربار کو عطا ہوتے تھے</p>  |
| <p>اس سے آکر تقریب شمس قمری سالگرہ کی تہی حسین بادشاہ تو سال بہرین دو دفعہ سوئے پاندی اور دوسری چیزوں میں تلا کرنے تھے اور شاہزادہ ایک دفعہ یہ کام</p>  | <p>اس سے آکر تقریب شمس قمری سالگرہ کی تہی حسین بادشاہ تو سال بہرین دو دفعہ سوئے پاندی اور دوسری چیزوں میں تلا کرنے تھے اور شاہزادہ ایک دفعہ یہ کام</p>  |



گریبوں اور موہتاؤں کو رات  
کر دی جاتی تھی۔

لشکر

کُل فوج ۲ لاکھ ۳۰ ہزار تھی  
جس میں تین لاکھ ۵۰ ہزار سوار  
۸۰۰۰ منصب دار  
۴۰۰۰ احمدی و برتن دار اور  
۲۰۰۰ پیادہ فوجی گولہ انداز و بانواز  
تھے جن میں سے دس ہزار تو  
ہمیشہ بادشاہ کی پرکاش میں  
حاضر رہتے تھے اور ۳۰ ہزار فوج  
اور صوبوں میں تعینات تھے۔

مبارہ میں ۲۰۰۰۰۰ تو بادشاہ  
جو کر تھے اور ۱۵۰۰۰ شاہجہاں  
اور میں اور منسب داروں کے لئے  
کر تھے جن کی تنخواہ اپنے  
منسب داروں کے لئے تھی۔

منسب دار

۵۰۰۰ منسب داروں میں بڑے بڑے  
میراں اور ہاراجاؤں کی شاہ  
جہاں کی شاہجہاں کے منسب  
داروں کے بغیر شاہجہاں کی تنخواہ  
رہا مقرر نہ ہو سکتی تھی۔  
یہاں پر منسب داروں کی  
تنخواہ کا حکم تھا کہ کسی

تلاوان کی غریبوں اور محتاجوں کو  
تقسیم ہو جائے تھیں

لشکر

کُل فوج ۲ لاکھ ۳۰ ہزار تھی  
جس میں تین لاکھ ۵۰ ہزار سوار  
۸۰۰۰ منصب دار  
۴۰۰۰ احمدی و برتن دار اور  
۲۰۰۰ پیادہ فوجی گولہ انداز و بانواز  
تھے جن میں سے دس ہزار تو  
ہمیشہ بادشاہ کی پرکاش میں  
حاضر رہتے تھے اور ۳۰ ہزار فوج  
اور صوبوں میں تعینات تھے۔

۱۰۰۰۰ سواروں میں دو لاکھ علف  
خواہی بادشاہی تنخواہ دار تھے اور  
ایک لاکھ ۵۰ ہزار امیروں اور  
منسب داروں کے لئے ملازم تھے جن کی  
تنخواہ وہ دیتے تھے۔

۵۰۰۰ منصب داروں میں بڑے  
میراں اور ہاراجاؤں کی شاہ  
جہاں کی شاہجہاں کے منسب  
داروں کے بغیر شاہجہاں کی تنخواہ  
رہا مقرر نہ ہو سکتی تھی۔  
یہاں پر منسب داروں کی  
تنخواہ کا حکم تھا کہ کسی

पर मुकर र नही होते थे मगर शाह-  
 जादेदारा शिकोह को वगेर खिद  
 मत के ही मन सब मिल गया था  
 जिसका सब बयह दुआ था कि व  
 दशाह को उससे बहुत मोहबत थी  
 और इसलिये अपने पास से जुदा  
 नही करते थे जब शाह जादेशुजा  
 अकी तईनाती पहिली दफे दर  
 नकी मोहिम पर हुई और वह मन  
 सब पाकर सत्ताम करने को हा  
 जिर आया तो शाह जादेदारा शि  
 कोह जो सब में बड़ा था मारे गैरत  
 के रोता हुआ दीवान खाने से उठ  
 गया तब बादशाह ने उसको जी  
 वगेर किसी खिदमत के मन सब दे दिया

نہیں ہوتے تھے مگر شاہزادہ دارا  
 کو بغیر خدمت کے ہی منسوب ہو گیا  
 تھا جس کا سبب یہ ہوا تھا کہ بادشاہ  
 کو اس سے بہت محبت تھی اور اسی  
 لئے اپنے پاس سے علیحدہ نہیں  
 کرتے تھے مگر جب شاہزادہ شجاع  
 کی عینائی اول دفعہ دکن کی مہم  
 پر ہوئی اور اس نے منسوب پاکر  
 سلام کیا تو دارا شکوہ جو سب  
 بہائیوں میں بڑا عداوت کرتا ہوا  
 دیوان خانہ سے اٹھ گیا تب  
 بادشاہ نے اسکو بھی بلا کسی  
 خدمت منسوب دیدیا۔

سن ۲۰ جنوری کے آخر ویر تک  
 جو منن सबदार थे उनका गोश  
 वारा यह है-  
 १ बीस हजारी ..... ९  
 २ पंद्रह हजारी ..... २  
 ३ वारा हजारी ..... १  
 ४ नौ हजारी ..... १  
 ५ सत्त हजारी ..... ६  
 ६ छः हजारी ..... ५  
 ७ पांच हजारी ..... २

شلمہ بلوئی  
 کے اخیر تک جو منصب  
 سے ان کا گوشوارہ یہ  
 ہے  
 (۱) بیس ہزاری  
 (۲) پندرہ ہزاری  
 (۳) بارہ ہزاری  
 (۴) نو ہزاری  
 (۵) سات ہزاری  
 (۶) چھ ہزاری  
 (۷) پانچ ہزاری

१ हजार

२०

—

(८) आठ हजार

२ हजार

४४

—

(९) नौ हजार

३ हजार

११

—

(१०) दस हजार

४ हजार

५१

—

(११) बारा हजार

५ हजार

५२

—

(१२) तेरह हजार

६ हजार

५७

—

(१३) चौदह हजार

७ हजार

२३

—

(१४) पंद्रह हजार

८ हजार

४०

—

(१५) सोलह हजार

९ हजार

६१

—

(१६) सत्रह हजार

१० हजार

२०

—

(१७) अठारह हजार

११ हजार

१४

—

(१८) बीस हजार

१२ हजार

पांचसदी से नीचे की तफसी

तबादशाहनामेंमें नहीं है-

बड़े २ मन सबदारों के नाम

ऊपर लिखे मन सबदारों में से

५ हजार तक के नाम यह हैं-

नाम मनसब सवार दोघरस

१ शाहजादादा २० हजार २००० १०००

२ शाहजादा १५ हजार १५०० ८००

३ शाहजादा १५ हजार १५०० ८००

४ शाहजादामु १२ हजार ६०० ४००

५ शाहजादामु ८ हजार ६०० ४००

६ शाहजादामु ७ हजार ७०० ५००

७ शाहजादामु ७ हजार ७०० ५००

तफ़्सील बादशाहनामें में नहीं है  
 बड़े २ मन सबदारों के नाम  
 मंदरजे बाला मन्सबदारों में  
 से पांच हजार से कम के नाम हैं

| नाम          | मन्सब   | सवार    | दोघरस |
|--------------|---------|---------|-------|
| १. शाहजादादा | २० हजार | २० हजार | २०००  |
| २. शाहजादा   | १५ हजार | १५ हजार | १५००  |
| ३. शाहजादा   | १५ हजार | १५ हजार | १५००  |
| ४. शाहजादामु | १२ हजार | १२ हजार | १२००  |
| ५. शाहजादामु | ८ हजार  | ८ हजार  | ८००   |
| ६. शाहजादामु | ७ हजार  | ७ हजार  | ७००   |
| ७. शाहजादामु | ७ हजार  | ७ हजार  | ७००   |

अबुल फ़ज्जल  
 अबुल फ़ज्जल  
 अबुल फ़ज्जल  
 अबुल फ़ज्जल  
 अबुल फ़ज्जल  
 अबुल फ़ज्जल  
 अबुल फ़ज्जल



|                 |         |      |      |      |      |
|-----------------|---------|------|------|------|------|
| ۲۹ سفدرخان      | ۵ ہزاری | ۵۰۰۰ | ۵۰۰۰ | ۵۰۰۰ | ۵۰۰۰ |
| ۳۰ راجہ جیہندرا | "       | "    | "    | "    | "    |
| ۳۱ سپہ دارخان   | "       | "    | "    | "    | "    |
| ۳۲ احمد دوری    | "       | "    | "    | "    | "    |
| ۳۳ خواہن خان    | "       | "    | "    | "    | "    |
| ۳۴ مالو جی بستی | "       | "    | "    | "    | "    |
| ۳۵ جعفر خان     | "       | "    | "    | "    | "    |
| ۳۶ اصالت        | "       | "    | "    | "    | "    |
| ۳۷              | "       | "    | "    | "    | "    |
| ۳۸              | "       | "    | "    | "    | "    |
| ۳۹              | "       | "    | "    | "    | "    |
| ۴۰              | "       | "    | "    | "    | "    |
| ۴۱              | "       | "    | "    | "    | "    |
| ۴۲              | "       | "    | "    | "    | "    |
| ۴۳              | "       | "    | "    | "    | "    |
| ۴۴              | "       | "    | "    | "    | "    |
| ۴۵              | "       | "    | "    | "    | "    |
| ۴۶              | "       | "    | "    | "    | "    |
| ۴۷              | "       | "    | "    | "    | "    |
| ۴۸              | "       | "    | "    | "    | "    |
| ۴۹              | "       | "    | "    | "    | "    |
| ۵۰              | "       | "    | "    | "    | "    |

شاہجہان بادشاہ ۲۰۶ مہینہ کی  
جو من سب کی تہن خواہ میل تہی  
پی اسی میں ۷ آسامیوں کی تہن  
ہوا شاہنامہ میں لکھی تہی بہار  
ہاں درج کی جاتی ہے یہ تہن خواہ  
داموں کے ہسٹا سے میل تہی پی ۱۷  
کے ۵۰ دام کاٹے جاتے تھے۔

شاہزادوں اور بیٹے امیروں  
کو جو تہن خواہ غصب کی تہی تہی  
سات آسامیوں کی تہن خواہ بادشاہ نامہ  
میں لکھی تہی وہ بیان درج کی جاتی تہی  
تہن خواہ داموں کے حساب سے  
تہی تہی ایک روپے کے پانچ  
دام کے ملنے تہی تہی

| نام              | دام      | روپے     | نام            | دام      | روپے     |
|------------------|----------|----------|----------------|----------|----------|
| ۱ شاہجہان بادشاہ | ۵۰ کتروڈ | ۱ کتروڈ  | ۱ شاہزادہ شجاع | ۵۰ کتروڈ | ۱ کتروڈ  |
| ۲ شاہزادہ        | ۲۵ کتروڈ | ۵۰ کتروڈ | ۲ شاہزادہ      | ۲۵ کتروڈ | ۵۰ کتروڈ |
| ۳ شاہزادہ        | ۲۵ کتروڈ | ۵۰ کتروڈ | ۳ شاہزادہ      | ۲۵ کتروڈ | ۵۰ کتروڈ |
| ۴ شاہزادہ        | ۲۵ کتروڈ | ۵۰ کتروڈ | ۴ شاہزادہ      | ۲۵ کتروڈ | ۵۰ کتروڈ |
| ۵ شاہزادہ        | ۲۵ کتروڈ | ۵۰ کتروڈ | ۵ شاہزادہ      | ۲۵ کتروڈ | ۵۰ کتروڈ |
| ۶ شاہزادہ        | ۲۵ کتروڈ | ۵۰ کتروڈ | ۶ شاہزادہ      | ۲۵ کتروڈ | ۵۰ کتروڈ |
| ۷ شاہزادہ        | ۲۵ کتروڈ | ۵۰ کتروڈ | ۷ شاہزادہ      | ۲۵ کتروڈ | ۵۰ کتروڈ |
| ۸ شاہزادہ        | ۲۵ کتروڈ | ۵۰ کتروڈ | ۸ شاہزادہ      | ۲۵ کتروڈ | ۵۰ کتروڈ |
| ۹ شاہزادہ        | ۲۵ کتروڈ | ۵۰ کتروڈ | ۹ شاہزادہ      | ۲۵ کتروڈ | ۵۰ کتروڈ |
| ۱۰ شاہزادہ       | ۲۵ کتروڈ | ۵۰ کتروڈ | ۱۰ شاہزادہ     | ۲۵ کتروڈ | ۵۰ کتروڈ |

۱۲ کھروڑ ۳۰ لاکھ  
۱۲ کھروڑ ۳۰ لاکھ

مनसबदारोंकी खरीद  
लिस्ट

साल २० के पीछे साल ३० तक

शाहजादों और अमीरों का बहुत  
कुछ इजाफा हो गया था -

मुल्ताजाहिदने अपनी किलाव  
में किजिसका खुलासा हमने इस  
तीसरे हिस्से में लिखा है बादशाह  
के अखीर वक्त सलतनत तक की  
फहरिस्त मनसबदारोंकी लिखी  
है उसका गोशवारानीचे लिखेमा  
फिक है -

शाहजाद

१ ६० हजार १ ३ १५ हजार २

२ ३० हजार २ ४ ७ हजार ३

उमराव

१ नौ हजार १ ५ दो हजार ६

२ सात हजार १ ० १० ओढ़ हजार ३ ५

३ शिरो हजार ६ ११ हजार १ ३

४ पांच हजार ३ १ १२ नौ सदी ० २५

५ चार हजार ३ ५ १३ आठ सदी ० ५

६ साठ तीन हजार १ २ १४ सात सदी ० ३

७ तीन हजार ५ ० १५ छः सदी ५ १

८ दो हजार २ ५

१० कखुश  
१० कखुश

१० कखुश

१० कखुश

१० कखुश

१० कखुश

१० कखुश

१० कखुश

१० कखुश

१० कखुश

१० कखुश

१० कखुश

१० कखुश

१० कखुश

१० कखुश

१० कखुश

१० कखुश

१० कखुश

१० कखुश

१० कखुश

१० कखुश

१० कखुश

१० कखुश

१० कखुश

१० कखुश

१० कखुश

पंचसदी श्रीवीरनही लिखे है-  
शाहजादों के आठ आसामियों  
की तफसील:

१ शहजादा दाराशिकोह ६० हजारी  
जात ४००० सवार दो आसामी आसामी

२ शहजादा शुजा २० हजारी जात  
११०० सवार दु आसामी

३ शहजादा औरंगजेब २० हजारी  
जात १५०० सवार दु आसामी

४ शहजादा मुराद बखश १५ हजारी  
जात १२०० सवार इस्मै ८०० दु आसामी

५ शहजादा दाराशिकोह का बड़ा बेटा  
सुलेमान शिकोह १५ हजारी जात  
८०० सवार

६ शहजादा दाराशिकोह का दूसरा  
बेटा सिपहशिकोह ७ हजारी जात  
२०० सवार

७ शहजादा शुजा के बेटे सुलतान  
नज्जुल आबदीन ७ हजारी जात  
२०० सवार

८ शहजादा औरंगजेब का बड़ा बेटा  
सुलतान मोहम्मद ७ हजारी जा  
त २०० सवार

९ शुजा के बेटे बलंद और खवर और

१० औरंगजेब के बेटे मोअज़्ज़म और क

११ औरंगजेब के बेटे मनसब  
नही हुवे थे-

पंच सदी अमिर नमिन के बिन  
शाहजादों की ८ आसामियों  
की तफसील

१ शहजादे दाराशिकोह ६० हजारी जात  
१२०० सवार दो आसामी

२ शहजादे शुजा २० हजारी जात  
११०० सवार दो आसामी

३ शहजादे औरंगजेब २० हजारी जात  
१५०० सवार दो आसामी

४ शहजादे मुराद बखश १५ हजारी जात  
१२०० सवार दो आसामी

५ शहजादे सुलेमान शिकोह १५ हजारी जात  
८०० सवार

६ शहजादे सिपहशिकोह ७ हजारी जात  
२०० सवार

७ शहजादे नज्जुल आबदीन ७ हजारी जात  
२०० सवार

८ शहजादे सुलतान मोहम्मद ७ हजारी जात  
२०० सवार

९ शहजादे बलंद और खवर और

१० शहजादे औरंगजेब के बेटे मोअज़्ज़म और क

११ शहजादे औरंगजेब के बेटे मनसब  
नही हुवे थे-





पांचसदीअनीरनहीलिरवैहै-

शाहजादोंकेआठआसामियों  
कीतफसील:

१ शाहजादादाराशिकोह ६० हजारी  
जात ४००० सवारदेअस्पातीअस्पा

२ शाहजादा शुजाअ २० हजारीजात  
१५०० सवारदुअस्पा

३ शाहजादा औरंगजेब २० हजारी  
जात १५०० सवारदुअस्पा

शाहजादामुरादवरखश १५ हजारी  
जात १२०० सवारइसमें ८०० दुअस्पा

शाह  
सुलेमानशिकोह १५ हजारीजात  
८०० सवार

६ शाहजादादाराशिकोहकादूसरा  
बेटासिपहरशिकोह ७ हजारीजात  
२००० सवार

शाहजादाशुजाअकबेटासुलतान  
नजेबुलआबदीन ७ हजारीजात  
२००० सवार

शाहजादा  
सुलतानमोहम्मद ७ हजारीजात  
२००० सवार

शुजाअकेबेटेवलन्दअखवर  
औरंगजेबकेबेटेमोअज़म

औरकामबरवंशकेमनसब  
हुवैथे-

पांचसदीअनीरन  
शाहजादोंकी ८ आसामियों  
कीतफसील

१ शाहजादेदाराशिकोह ६० हजारीजात  
१५०० सवारदुअस्पा

२ शाहजादे शुजाअ २० हजारीजात  
१५०० सवारदुअस्पा

३ शाहजादे औरंगजेब २० हजारीजात  
१५०० सवारदुअस्पा

शाहजादामुरादवरखश १५ हजारीजात  
१२०० सवारइसमें ८०० दुअस्पा

शाह  
सुलेमानशिकोह १५ हजारीजात  
८०० सवार

६ शाहजादादाराशिकोहकादूसरा  
बेटासिपहरशिकोह ७ हजारीजात  
२००० सवार

शाहजादाशुजाअकबेटासुलतान  
नजेबुलआबदीन ७ हजारीजात  
२००० सवार

शाहजादा  
सुलतानमोहम्मद ७ हजारीजात  
२००० सवार

शुजाअकेबेटेवलन्दअखवर  
औरंगजेबकेबेटेमोअज़म

औरकामबरवंशकेमनसब  
हुवैथे-

## मुसलमान अमीर

मुसलमान अमीरों में जो ५ हजारी

१ और २ हजारी ६ अमीर पहिले लिख जाये हैं सो ये सातों अमीर बादशाह की सलतनत बिगड़ने से पहिले २ मर चुके थे-

६ हजारियों में १ मो अजमरवां मीर जुमला और बदाया-

५ हजारियों में ५ और बढे थे

१ मकमतखा २ खलीलुलखा

३ महाबतखा ४ निजाबतखा

५ बहरामखा बलख के अमीर नजर मोहम्मरखा काबेटा-

## हिन्दू अमीर

हिन्दू अमीरों के नी ५ हजारी के हुवे

ये और कुछ नये बढे थे कुल हिन्दू अमीरों और उनके मनसबों की तफसील जो बादशाह के अखीर वक्त में ये यह है-

## सात हजारी

१ महाराजा जसवंत सिंघ राठोड़

७०० हजारी ६०० सवार

२ राजा जयसिंघ कछवाहा ७५५

जारी ६०० सवार

## मुसलमान अमीर

मुसलमान अमीरों में जो ५ हजारी १ और २ हजारी ६ अमीर पहिले लिख जाये हैं सो ये सातों अमीर बादशाह की सलतनत बिगड़ने से पहिले २ मर चुके थे-

६ हजारियों में १ मो अजमरवां मीर जुमला और बदाया- ५ हजारियों में ५ और बढे थे १ मकमतखा २ खलीलुलखा ३ महाबतखा ४ निजाबतखा ५ बहरामखा बलख के अमीर नजर मोहम्मरखा काबेटा-

हिन्दू अमीरों के नी ५ हजारी के हुवे ये और कुछ नये बढे थे कुल हिन्दू अमीरों और उनके मनसबों की तफसील जो बादशाह के अखीर वक्त में ये यह है-

सात हजारी १ महाराजा जसवंत सिंघ राठोड़ ७०० हजारी ६०० सवार २ राजा जयसिंघ कछवाहा ७५५ जारी ६०० सवार

پانچ ہزاری

۱۳ راجا ویٹھل داس گود ۵ ہزاری

جانت ۵۰۰۰ سوار

۱۴ راجا گجسینھ راتھ ۵ ہزاری

جانت ۵۰۰۰ سوار

۱۵ راجا رتن داس ۵ ہزاری جانت

۵۰۰۰ سوار

۱۶ جھار سینھ بوندلا راجا ورسی

کھدک کابیتا ۵ ہزاری ۵۰۰۰ سوار

۱۷ جڈا جی رام دھونی ۵ ہزاری

جانت ۵۰۰۰ سوار

۱۸ بھادور جی دھونی جادو راج

کابیتا ۵ ہزاری ۵۰۰۰ سوار

۱۹ راجا جگت سینھ ۵ ہزاری جانت

۵۰۰۰ سوار

۲۰ راجا راج سینھ ۵ ہزاری جانت

۵۰۰۰ سوار

۲۱ مالو جی جی ساجا ۵ ہزاری جانت

۵۰۰۰ سوار

۲۲ راجا راج سینھ سیسودیا ۵

ہزاری جانت ۲۵۰۰ سوار

چار ہزاری

۲۳ راجا شتو سال ہڈا ۵ ہزاری

جانت ۵۰۰۰ سوار

۲۴ راجا راجت بوندلا ۵ ہزاری جانت

۲۵۰۰ سوار

پانچ ہزاری

۳ راجا بیٹھل داس گود پانچ ہزاری

پانچ ہزار سوار

۴ راجا گجسینھ راتھ پانچ ہزاری

پانچ ہزار سوار

۵ راجا رتن داس پانچ ہزاری ذات

پانچ ہزار سوار

۶ جھار سینھ بوندلا راجا

کھدک کابیتا پانچ ہزاری سوار

۷ اودھوی رام دھونی پانچ ہزاری

پانچ ہزار سوار

۸ بھادور جی دھونی جادو راج

پانچ ہزاری پانچ ہزار سوار

۹ راجا جگت سینھ پانچ ہزاری

پانچ ہزار سوار

۱۰ راجا راج سینھ پانچ ہزاری

پانچ ہزار سوار

۱۱ مالو جی جی ساجا پانچ ہزاری

پانچ ہزار سوار

۱۲ راجا راج سینھ سیسودیا

پانچ ہزاری پانچ ہزار سوار

۱۳ راجا شتو سال ہڈا پانچ ہزاری

پانچ ہزار سوار

۱۴ راجا راجت بوندلا پانچ ہزاری

۲۵۰۰ سوار

|  |  |
|--|--|
| १५ राजा पहाड़ सिंह बुंदेला ४ हजारीजात ३५०० सवार            | १० राजा पहाड़ सिंह बुंदेला ४ हजारीजात ३५०० सवार            |
| १६ राजा अमर सिंह राठोड़ ४ हजारीजात ३००० सवार               | ११ राजा अमर सिंह राठोड़ ४ हजारीजात ३००० सवार               |
| १७ राजा सरनुर टिया ४ हजारीजात २५०० सवार                    | १२ राजा सरनुर टिया ४ हजारीजात २५०० सवार                    |
| १८ राजा रूप सिंह राठोड़ ४ हजारीजात २५०० सवार               | १३ राजा रूप सिंह राठोड़ ४ हजारीजात २५०० सवार               |
| १९ हमीर राय दरवनी ४ हजारीजात ३५०० सवार                     | १४ हमीर राय दरवनी ४ हजारीजात ३५०० सवार                     |
| २० राजा अनूप सिंह अमर सिंह बुंदेला ३ हजारीजात ३००० सवार    | १५ राजा अनूप सिंह अमर सिंह बुंदेला ३ हजारीजात ३००० सवार    |
| २१ राजा अनिरुद्ध गोड ३ हजारीजात ३००० सवार                  | १६ राजा अनिरुद्ध गोड ३ हजारीजात ३००० सवार                  |
| २२ राजा माधो सिंह हाड़ा ३ हजारीजात २५०० सवार               | १७ राजा माधो सिंह हाड़ा ३ हजारीजात २५०० सवार               |
| २३ राजा राजरूप ३ हजारीजात २५०० सवार                        | १८ राजा राजरूप ३ हजारीजात २५०० सवार                        |
| २४ कंवर राम सिंह राजा जय सिंह कावेड़ा ३ हजारीजात २००० सवार | १९ कंवर राम सिंह राजा जय सिंह कावेड़ा ३ हजारीजात २००० सवार |
| २५ मुकंद सिंह हाड़ा ३ हजारीजात २००० सवार                   | २० मुकंद सिंह हाड़ा ३ हजारीजात २००० सवार                   |
| २६ राजा सरनुर टिया ३ हजारीजात २००० सवार                    | २१ राजा सरनुर टिया ३ हजारीजात २००० सवार                    |
| २७ ऊदाजी राम दरवनी ३ हजारीजात २००० सवार                    | २२ ऊदाजी राम दरवनी ३ हजारीजात २००० सवार                    |
| २८ परसूजी दरवनी ३ हजारीजात २००० सवार                       | २३ परसूजी दरवनी ३ हजारीजात २००० सवार                       |



۱. جرنل نگوڈ راجا ویٹل داس

کابیتا ۲۰۰ سوار

۲. راجا سوارام نگوڈ ۲۰۰ سوار

ت ۵۰۰ سوار

۳. راجا جیرام نگوڈ ۲۰۰ سوار

۴. کابیتا ۲۰۰ سوار

۵. راجا جیرام نگوڈ ۲۰۰ سوار

۶. راجا جیرام نگوڈ ۲۰۰ سوار

۷. راجا جیرام نگوڈ ۲۰۰ سوار

۸. راجا جیرام نگوڈ ۲۰۰ سوار

۹. راجا جیرام نگوڈ ۲۰۰ سوار

۱۰. راجا جیرام نگوڈ ۲۰۰ سوار

۱۱. راجا جیرام نگوڈ ۲۰۰ سوار

۱۲. راجا جیرام نگوڈ ۲۰۰ سوار

۱۳. راجا جیرام نگوڈ ۲۰۰ سوار

۱۴. راجا جیرام نگوڈ ۲۰۰ سوار

۱۵. راجا جیرام نگوڈ ۲۰۰ سوار

۱۶. راجا جیرام نگوڈ ۲۰۰ سوار

۱۷. راجا جیرام نگوڈ ۲۰۰ سوار

۱۸. راجا جیرام نگوڈ ۲۰۰ سوار

۱۹. راجا جیرام نگوڈ ۲۰۰ سوار

۲۰. راجا جیرام نگوڈ ۲۰۰ سوار

۲۱. راجا جیرام نگوڈ ۲۰۰ سوار

۲۲. راجا جیرام نگوڈ ۲۰۰ سوار

۲۳. راجا جیرام نگوڈ ۲۰۰ سوار

۱. راجا جیرام نگوڈ ۲۰۰ سوار

۲. راجا جیرام نگوڈ ۲۰۰ سوار

۳. راجا جیرام نگوڈ ۲۰۰ سوار

۴. راجا جیرام نگوڈ ۲۰۰ سوار

۵. راجا جیرام نگوڈ ۲۰۰ سوار

۶. راجا جیرام نگوڈ ۲۰۰ سوار

۷. راجا جیرام نگوڈ ۲۰۰ سوار

۸. راجا جیرام نگوڈ ۲۰۰ سوار

۹. راجا جیرام نگوڈ ۲۰۰ سوار

۱۰. راجا جیرام نگوڈ ۲۰۰ سوار

۱۱. راجا جیرام نگوڈ ۲۰۰ سوار

۱۲. راجا جیرام نگوڈ ۲۰۰ سوار

۱۳. راجا جیرام نگوڈ ۲۰۰ سوار

۱۴. راجا جیرام نگوڈ ۲۰۰ سوار

۱۵. راجا جیرام نگوڈ ۲۰۰ سوار

۱۶. راجا جیرام نگوڈ ۲۰۰ سوار

۱۷. راجا جیرام نگوڈ ۲۰۰ سوار

۱۸. راجا جیرام نگوڈ ۲۰۰ سوار

۱۹. راجا جیرام نگوڈ ۲۰۰ سوار

۲۰. راجا جیرام نگوڈ ۲۰۰ سوار

۲۱. راجا جیرام نگوڈ ۲۰۰ سوار

۲۲. راجا جیرام نگوڈ ۲۰۰ سوار

۲۳. راجا جیرام نگوڈ ۲۰۰ سوار

|   |   |
|---|---|
| १० शनुमालकचवाहडेट हजारीजात १५०० सवार              | ५० सरोसाल कचवाहडेट हजारीजात १५०० सवार             |
| ११ राजाधतापजनेमियाडेट हजारीजात १५०० सवार          | ५१ राजाधतापजनेमियाडेट हजारीजात १५०० सवार          |
| १२ राजाधतापजनेमियाडेट हजारीजात १५०० सवार          | ५२ राजाधतापजनेमियाडेट हजारीजात १५०० सवार          |
| १३ करमसी राठोड डेट हजारीजात ७०० सवार              | ५३ करमसी राठोड डेट हजारीजात ७०० सवार              |
| १४ चन्द्रमणिबुंदला डेट हजारीजात ७०० सवार          | ५४ चन्द्रमणिबुंदला डेट हजारीजात ७०० सवार          |
| १५ गरीबदासरणकरणसी सोदि याकबेडा डेट हजारी ६०० सवार | ५५ गरीबदासरणकरणसी सोदि याकबेडा डेट हजारी ६०० सवार |
| १६ जगमालराठोड किसनसिंध काबेडा डेट हजारी ६०० सवार  | ५६ जगमालराठोड किसनसिंध काबेडा डेट हजारी ६०० सवार  |
| १७ सामसिंधकरमसी राठोड काबेडा डेट हजारी ६०० सवार   | ५७ सामसिंधकरमसी राठोड काबेडा डेट हजारी ६०० सवार   |
| १८ गिरधर डेट हजारी १०० सवार                       | ५८ गिरधर डेट हजारी १०० सवार                       |
| १९ गोपालसिंधराजाननरूपकछवाह काबेडा हजारी १००० सवार | ५९ गोपालसिंधराजाननरूपकछवाह काबेडा हजारी १००० सवार |
| २० रावलसमरसी हजारी १००० सवार                      | ६० रावलसमरसी हजारी १००० सवार                      |
| २१ परतापजमीदारपजामंड हजारी १००० सवार              | ६१ परतापजमीदारपजामंड हजारी १००० सवार              |
| २२ कीरतसिंधराजाजैमसिंधकाबेडा हजारीजात ६०० सवार    | ६२ कीरतसिंधराजाजैमसिंधकाबेडा हजारीजात ६०० सवार    |
| २३ जगमालकचवाह हजारी ६०० सवार                      | ६३ जगमालकचवाह हजारी ६०० सवार                      |

|  |   |
|--|---|
| १०८ राजा उदयचान ८ सदी ५०० सवार                         | १०८ राजा औदीयान ८ सदी ५०० सवार                      |
| १०९ रायजगनाथरावोड ८ सदी ४०० सवार                       | १०९ राय गंगाधर रावोड ८ सदी ४०० सवार                 |
| ११० राजा उदयसिंघ राजा स्यामसिंघ का बेटा ८ सदी ४०० सवार | ११० राजा ओड ८ सदी ४०० सवार                          |
| १११ मनोहरदास राजा विठ्ठलदास का जतीजा ८ सदी ४०० सवार    | १११ मनोहरदास राजा विठ्ठलदास का जतीजा ८ सदी ४०० सवार |
| ११२ राधतिलोकचंद ८ सदी ४०० सवार                         | ११२ राधतिलोकचंद ८ सदी ४०० सवार                      |
| ११३ मोहनसिंघ माधोसिंघराव का बेटा ८ सदी ४०० सवार        | ११३ मोहनसिंघ माधोसिंघराव का बेटा ८ सदी ४०० सवार     |
| ११४ इंद्रसालहाडा ८ सदी ४०० सवार                        | ११४ इंद्रसालहाडा ८ सदी ४०० सवार                     |
| ११५ राजा मानराजा कवरसेन का बेटा ८ सदी ४०० सवार         | ११५ राजा मानराजा कवरसेन का बेटा ८ सदी ४०० सवार      |
| ११६ अजबसिंघ ८ सदी ४०० सवार                             | ११६ अजबसिंघ ८ सदी ४०० सवार                          |
| ११७ शेरसिंघ रामसिंघरावोड का बेटा ८ सदी ३०० सवार        | ११७ शेरसिंघ रामसिंघरावोड का बेटा ८ सदी ३०० सवार     |
| ११८ फतहसिंघ सीसोदिया ८ सदी २०० सवार                    | ११८ फतहसिंघ सीसोदिया ८ सदी २०० सवार                 |
| ११९ रायमुकनदास ८ सदी २०० सवार                          | ११९ राय मुकनदास ८ सदी २०० सवार                      |
| १२० स्यामसिंघ राजा मानसिंघ का पोता ८ सदी ५०० सवार      | १२० स्यामसिंघ राजा मानसिंघ का पोता ८ सदी ५०० सवार   |
| १२१ चंद्रचाननरुका ८ सदी ५०० सवार                       | १२१ चंद्रचाननरुका ८ सदी ५०० सवार                    |
| १२२ सावंगधर ८ सदी ५०० सवार                             | १२२ सावंगधर ८ सदी ५०० सवार                          |
| १२३ राजा संगराम ८ सदी ५०० सवार                         | १२३ राजा संगराम ८ सदी ५०० सवार                      |
| १२४ छट्ठी राजा चोहान ८ सदी ४०० सवार                    | १२४ छट्ठी राजा चोहान ८ सदी ४०० सवार                 |
|  | ११९ राय कनरास ८ सदी २०० सवार                        |
|  | १२० स्यामसिंघ राजा मानसिंघ का पोता ८ सदी ५०० सवार   |
|  | १२१ चंद्रचाननरुका ८ सदी ५०० सवार                    |
|  | १२२ सावंगधर ८ सदी ५०० सवार                          |
|  | १२३ राजा संगराम ८ सदी ५०० सवार                      |
|  | १२४ छट्ठी राजा चोहान ८ सदी ४०० सवार                 |



|  |  |
|--|--|
| १०० नारायणसकछवाहा ८ सदी ४००                | १२० मतिरास कछवाहा ८ सदी ४००                |
| १०१ पृथ्वीराजनाटी ७ सदी ३०० सवार           | १२१ अजयराज भिखारी ८ सदी ४००                |
| १०२ बलरामचौहान ७ सदी ३०० सवार              | १२२ बलरामचौहान ८ सदी ४०० सवार              |
| १०३ सुंदरदाससीसोदिया ७ सदी ३०० सवार        | १२३ सुंदरदास सीसोदिया ८ सदी ४००            |
| १०४ मगतसिंघ पृथ्वीराजराठोडका               | १२४ मगतसिंघ पृथ्वीराजराठोडका               |
| वेठा ७ सदी ३०० सवार                        | १२५ वेठा ८ सदी ४०० सवार                    |
| १०५ रावतनरायणदाससीसोदिया                   | १२६ रावतनरायणदाससीसोदिया                   |
| ७ सदी ३०० सवार                             | १२७ ७ सदी ३०० सवार                         |
| १०६ प्रतापसिंघ कछवाहा ७ सदी २५० सवार       | १२८ प्रतापसिंघ कछवाहा ८ सदी ३५० सवार       |
| १०७ बालकछवाहाजगन्नाथकविटा                  | १२९ बालकछवाहाजगन्नाथकविटा                  |
| ७ सदी २०० सवार                             | १३० ७ सदी २०० सवार                         |
| ६ सदी                                      | ७ सदी                                      |
| १०८ बलरामचौहानसीनगरा ६ सदी ६०० सवार        | १३१ बलरामचौहानसीनगरा ७ सदी ७०० सवार        |
| १०९ गिरधरदासरावलपूनाकावेठा                 | १३२ गिरधरदासरावलपूनाकावेठा                 |
| ६ सदी ६०० सवार                             | १३३ ६ सदी ६०० सवार                         |
| ११० विमलचंद्ररायमनोहर कविटा ६ सदी ४०० सवार | १३४ विमलचंद्ररायमनोहर कविटा ७ सदी ५०० सवार |
| १११ जीवजी मालुजी दरवनी कान्हा              | १३५ जीवजी मालुजी दरवनी कान्हा              |
| तीजा ६ सदी ४०० सवार                        | १३६ तीजा ७ सदी ५०० सवार                    |
| ११२ मधुसूदनराजाविहजदासकान्हा               | १३७ मधुसूदनराजाविहजदासकान्हा               |
| तीजा ६ सदी ३०० सवार                        | १३८ तीजा ७ सदी ४०० सवार                    |
| ११३ अकबर(रघुनर)सिंघअमरसिंघ                 | १३९ अकबर(रघुनर)सिंघअमरसिंघ                 |
| कावेठा ६ सदी २०० सवार                      | १४० कावेठा ७ सदी ३०० सवार                  |
| ११४ किसोरसिंघ भाधोसिंघकावेठा               | १४१ किसोरसिंघ भाधोसिंघकावेठा               |
| ६ सदी २०० सवार                             | १४२ ६ सदी २०० सवार                         |
| ११५ केसरीसिंघ पृथ्वीराजराठोडका             | १४३ केसरीसिंघ पृथ्वीराजराठोडका             |
| कावेठा ६ सदी २०० सवार                      | १४४ कावेठा ७ सदी ३०० सवार                  |
| ११६ सुकलदासराठोड ६ सदी १५० सवार            | १४५ सुकलदासराठोड ७ सदी २५० सवार            |

सुनहरी वादराह

|   |   |
|---|---|
| <p>दकनकीसलतनते<br/>अहमदनगर<br/>दकनकीसलतनतोंअहम<br/>दनगर,गोलकुंडा,औरबीजापुरमें<br/>सेअहमदनगरतोअकबरबादशा<br/>हकेअहदमेंफतहकरलियागया<br/>थालेकिनमलिकअंबरनेजोअह<br/>मदनगरकेनिजामशाहकावजीर<br/>औरभुरवतारथाअहमदनगरका<br/>फिलाजहंगीरबादशाहकेकिलेव<br/>रखाजावेगसफवीसेबि.सं.१६६७<br/>मेंकईमहीनेतकघेराकरव<br/>पसलेलियाथाफिरतोपमलिक<br/>नेदानकोवहासेलेजाकरशेला<br/>पुरकाफिलाआदिलखानसेअस<br/>तबदि५६सं१६७८कोफतहकिया<br/>औरउसबडीतोपकोपेडेकेकिलेमें<br/>रक्वा।अंबरबहुतलायकऔर<br/>बहादुरसरदारथाउसनेकईबार<br/>दिल्लीकीफौजोंपरफतहपाई<br/>औरनिजामशाहकीसलतनत<br/>दुबाराक्यायमकीऔरजिंदार<br/>हाजबतकनिजामकीइज्जतऔ<br/>रहुरमतमेंकुछफरकनपडने<br/>दियामगरउसकेभरेपीछेशाहजहाँ</p> | <p>دکن کی سلطنتیں<br/>احمد نگر<br/>دکن کی تین سلطنتوں احمد نگر<br/>راکھتے اور بیجا پور میں<br/>نہ گزرتے تھے بادشاہ کے<br/>پانچ کر لیا لیکن ایک<br/>لے جو احمد نگر کے نظام شاہ کا<br/>نیر اور مختار تھا احمد نگر کا قلعہ<br/>جنگل آباد شاہ کے قلعہ مارواڑ<br/>ایک صوبہ سے مشرق میں بیت<br/>محاصرہ چند ماہ کے واسطے ایلیا<br/>تھا اور نوپ ملک میدان کو وہاں<br/>سے لے جا کر شولا پور کا قلعہ<br/>عادل خان سے وارمضان<br/>میں کو فتح کیا اور نوپ<br/>کو سرحد میں رکھا<br/>غیر بہت لائق اور بہت<br/>سردار تھا اور جسے کئی بار ملی<br/>کی فوجوں پر فتح پائی اور نظام<br/>شاہ کی سلطنت کو دوبارہ<br/>قائم کیا اور خیمہ بہار<br/>میں اس کی شان اور اعزاز<br/>میں کئی فتنے نہ آئے مگر<br/>اس کے مرتبے پر شاہ جہاں<br/>بادشاہ نے</p> |
|---|---|

करके निजाम शाहियों की सज्जत

तत्त्वमसि

काउसकाअपनीअमलदारीम

शामिल कर लिया अब बाद श

हीरदेसीधीगोलकुड और रानी  
मसेनमिनीथी और रदनदेन

सप्ततन्त्रों से नी फौज ने जने

करबादशाहने किराडोंरुपया

सूज किया जिससे उनका नी

कउजडग्यान्त्रैरस्वज्ञाना

निहोगयाँ जग बलखआर  
आये वियों भाऊ नहो जात

कीमोहिम्न्युक्तुनहाजित  
प्रेदोनीं सज्जनते नीचाकी

तीं गोजकुंडे से तो खुद बाद

कोकंबर पदमें पनाह मिली

जब कि वे अपने वापस हों

नडकर जलावतन होगर  
नयंदोतीन बरस तक

जहादतनिबरसतपा  
विरवाकाटाथा

केकुतुबशाहकाहीरुज

दस्तकारी ग्रैपका

शास्त्रसंकेतमेव

دوبارہ احمد نگر فتح پور کے قتل عام

شاہیوں کی سلطنت ختم کر دی اور

نام علاقہ اوس کا اپنے مکان

سرویس میں شامل کر دیا جس

ہے اب اوس کی حدیں پر  
ست گول گنڈہ اور سچا

جہاں ہیں اور ان دونوں سلطنتوں

تے ہی فوج میں بھجوا دی گئی۔

روں روپیہ وصول کیا جس سے

کاکا کوک بھی اوجھڑ گیا اور بھڑانہ

۳  
رنا

کتابت سر فہرست ہو جاتی تو یہ  
طہین باقی نہ رہتیں

انتی

نہ پروردگی میں پنہاٹی تھی

بادشاہ سے بجا و ہو کر پونی

پیر کی مٹی فسیبہ خیر کے چہاں

پیش رو کی بادشاہ نے اپنی  
کے من خیر کے لئے

رہ کر  
میں

गोत्रकु  
आकाया-

श्रीगरी. श्रीगरी.

دستان

نات کے نمونہ کو

دیکھو کیا

باہمی اگرہ میں وضہ تاج گنج

جیدمہل، ناہر کا

قلعہ و عمارت شاہ جہاں آباد والا

ل، اور کاشمیر، وگرا میں دہلی

بل و کشمیر وغیرہ اب بھی موجود

رانی جہانگیر کے جہانگیر

یہ جو طرز و وضع اور صنعت کاری

گرمی میں اپنا جہانگیر

یہ لائے ہیں مخصوص رو

رہتے ہیں رہا کر کے تاج

ابھی گئے جو اپنی خوبی میں اپنا

نظر آپ ہی ہے۔

دس سال تک رہے جہانگیر کے جہانگیر

ابھی طرح زیور و مرصع کاری

مہینہ کاری کے کاموں میں

صنعت بھی روز بروز ترقی کرتی جاتی

کاریگری بڑھتی جاتی تھی

تہی خود شاہ جہاں بادشاہ کو مرصع

شاہ کو جہانگیر کے جہانگیر

یہوں کا بہت شوق تھا کیا زیور

کھا کھا جہانگیر

بہتیار اور کیا گہوڑوں کے زین

اور ساز اکثر مٹلا اور مکمل ہوتے

مہینہ کاری کے کاموں میں

جہانگیر کے جہانگیر

اوس عہد کی مرصع کاری

سب سے عمدہ تھا

میں سب سے عمدہ تخت طاؤس

جس میں نہایت کی مہنت

تھا جو نہایت بیش قیمت جو اہرات

ہر ایک کا جہانگیر جہانگیر

تیار ہوا تھا۔

پھر کپڑے بننے کی کاری

پھر پارچہ باقی کی صنعت تھی

بنگالہ، گجرات اور برہمن پور میں

نپور میں، ساہیوالہ، باریک

اور انھیں کپڑا سادہ و زری کا

اور کپڑا سادہ اور

جہانگیر کے تہا کے تہا

کی جس

کے تہا کے تہا

ایران، توران اور مروج

کے تہا کے تہا

بہتے مایا کرتے تھے۔

ہدایہ کے بیان مال و منہ پر  
سیرت بناتے مگر شاہ جہاں  
شاہ کی کدھر دانی سے بدلتا  
یا بننے لگے ۱۰ سا دا جا مے  
ر کی کی مٹ ۵۰ اور رے گی ن بڑے  
ر کی ۷۰ تک پھونگے تھے  
باری کی اور ویکنا ہٹ کو  
سماں کا کوئی کپڑا نہ پھونکتا  
یا گرمیوں میں بادشاہ کی  
شاہ کی بناتی تھی۔

اس کے پیچھے کالیوں کی  
بڑی بادشاہ نامہ میں  
ہر جیلر کی کا حال لیا گیا  
وہاں ہوا تھی کہ اس  
مبارک (تہذیب) میں  
رکھ لیا کے کالیوں کا کام  
جو کاشمیر اور لاہور میں  
دو سالوں کی کٹن سے بنے  
یہاں تک بڑا گیا ہے  
لیکن ۱۰۰ میں تیار ہوتا ہے  
اس کی امداد اس حد تک  
ہے کہ کیرمان کے کالیوں  
ہے ان کے کارخانہ میں  
ہے ان کے آگے کہتے  
ہے ان کے آگے کہتے

سے ہمیشہ جاپا کرتے تھے۔  
دوامی کے تھان صوبہ  
ماہ میں اگرچہ پہلے ہی اچھی  
ہتے تھے مگر شاہ جہاں کے  
عہد میں بوجہ روز افزوں  
قدر دانی کے بہت اعلیٰ و فضل  
ہتے لگے تھے ایک جاہدار  
سادہ کی قیمت چالیس روپے  
رگین کی نشیرو پتہ تک پہنچ  
اوسکی لٹا اور زاکت کو ہٹا  
پہنچا تھا بادشاہ کا لباس  
اس کے بعد قالین باقی کا  
چنانچہ شہر جیوسی مطابق  
کے حالات میں مصنف بادشاہ  
کہا ہے کہ اس مبارک عہد میں  
خالص شریفیہ کے قالینوں کا کام  
اور لاہور میں پشم شال سے بنے  
جاتے ہیں یہاں تک بڑا گیا  
ہے کہ ایک گز قالین ایک سو  
روپیہ میں تیار ہوتا ہے اور اس  
مقاس میں اس حد تک ہوتی ہے  
کہ کرمان کے قالین جو شاہ  
ایران کے کارخانہ میں بنے جاتے  
ہیں اس کے آگے کہتے مسلم  
ہوتے ہیں



میں جتنی آتروں اور خوشبودار  
پانیوں سے مہکی ہوئی رہتی ہے  
وہ بالکل عطر میں ہے جیسا  
مہکی ہوئی رہتی ہے۔

جس کا جہاں جہاں آتروں  
کا کام میں آتا ہے جو جہاں  
شاہ جہاں کے جہاں میں  
آتروں کے جہاں میں آتروں  
کا کام میں آتا ہے۔

جس کا جہاں جہاں آتروں  
کا کام میں آتا ہے جو جہاں  
شاہ جہاں کے جہاں میں  
آتروں کے جہاں میں آتروں  
کا کام میں آتا ہے۔

جس کا جہاں جہاں آتروں  
کا کام میں آتا ہے جو جہاں  
شاہ جہاں کے جہاں میں  
آتروں کے جہاں میں آتروں  
کا کام میں آتا ہے۔

جس کا جہاں جہاں آتروں  
کا کام میں آتا ہے جو جہاں  
شاہ جہاں کے جہاں میں  
آتروں کے جہاں میں آتروں  
کا کام میں آتا ہے۔

اور خوشبودار  
مہکی ہوئی رہتی ہے  
وہ بالکل عطر میں ہے جیسا  
مہکی ہوئی رہتی ہے۔

جس کا جہاں جہاں آتروں  
کا کام میں آتا ہے جو جہاں  
شاہ جہاں کے جہاں میں  
آتروں کے جہاں میں آتروں  
کا کام میں آتا ہے۔

جس کا جہاں جہاں آتروں  
کا کام میں آتا ہے جو جہاں  
شاہ جہاں کے جہاں میں  
آتروں کے جہاں میں آتروں  
کا کام میں آتا ہے۔

جس کا جہاں جہاں آتروں  
کا کام میں آتا ہے جو جہاں  
شاہ جہاں کے جہاں میں  
آتروں کے جہاں میں آتروں  
کا کام میں آتا ہے۔

جس کا جہاں جہاں آتروں  
کا کام میں آتا ہے جو جہاں  
شاہ جہاں کے جہاں میں  
آتروں کے جہاں میں آتروں  
کا کام میں آتا ہے۔

جس کا جہاں جہاں آتروں  
کا کام میں آتا ہے جو جہاں  
شاہ جہاں کے جہاں میں  
آتروں کے جہاں میں آتروں  
کا کام میں آتا ہے۔

اور خوشبودار  
مہکی ہوئی رہتی ہے  
وہ بالکل عطر میں ہے جیسا  
مہکی ہوئی رہتی ہے۔

|  |   |
|--|---|
| <p>सजावाद्शाहकेरोवरुशरीर<br/>         तकेहुम्मेदीजातीहि।औरजोकि<br/>         सीसूवेमेंकोईआदमीसजापा<br/>         नेकेलायकहोताहैतोवहांका<br/>         नाजिमहजूरमेंअज्ञकियेवगे<br/>         रसकोकुद्वसजानई</p> | <p>منزاد و شہ کے روپر عدالت میں<br/>         بموجب حکم شریعت کے دیجاتی<br/>         ہے اگر کسی صوبہ میں کوئی آدمی<br/>         مستحق عقوبت ہو نو وہاں کا ناظم<br/>         حضور کے بغیر سزا</p> |
|--|---|

वरसेजातेहं  
 सीपसंगसेरुम  
 रानकेतुके  
 जबकवादशाहोंकी  
 वेतरदुकी

कोहा  
 हिये  
 फकाध्यानरखें  
 हीदें किजिसमेंसता

सकेऔर  
 रमी

आद





بولنے اور لکھنے کی تو کو  
 چتاریف نہ ہو سکتی جب  
 کسی مکرر مہیا کی سے کا  
 جیکر کرتے ہیں تو وہ ایسا  
 اور سندر ہوتا ہے کی بڑے  
 تہذیب کو سونکر کائنات  
 ہے اور جو باتیں دربار  
 میں کرتے ہیں وہ تو ایسی  
 کی ہوتی ہیں جو سب لکھتی  
 جاتے تو بادشاہ کے واسطے  
 چھ کائناتیں دہلی میں  
 لکھنے کا اور بڑیوں کے  
 لکھنے کے واسطے بن  
 بن جاتے۔

ہر ایک کو تہذیب لکھتے ہیں  
 ہر ایک کو شاہجہاں اور بڑے  
 بڑیوں کو اپنے ہاتھ سے  
 لکھتے ہیں اور کبھی  
 کبھی لکھتے ہیں اور کبھی  
 لکھتے ہیں اور کبھی  
 لکھتے ہیں اور کبھی

فضاحت بیان اور حسن  
 تحریر کی تو کچھ تعریف ہی نہیں  
 ہو سکتی جیٹ کسی قدمہ یا قصہ کا  
 بیان کرتے ہیں تو وہ ایسا  
 صاف اور سلیس ہوتا ہے  
 کہ بڑے بڑے سخن طراز  
 اس کو آویزہ گوش بناتے  
 ہیں کلمات قدسی جو حضار محفل سے  
 ارشاد ہونے میں اگر وہ جیسے  
 جاویں تو بادشاہوں کو ادب سلطنت  
 اور وزیروں کو تدابیر  
 ممالک سیکھنے کے لئے لکھی  
 محترمہ دستور العمل بن  
 جاتیں۔

خط بہت پاکیزہ ہے اور اکثر  
 اوقات ہاؤ شاہزادوں اور بڑے  
 بڑے امیروں کو خط خاص سے  
 فرمان لکھا کرتے ہیں اور کبھی  
 کبھی منشیوں کے لکھے ہوئے  
 مشورہ روز پر چند سطر میں تحریر  
 فرمادیتے ہیں۔

اس طرح کچھ وقت عبادت  
الہی میں کچھ مہات بادشاہی میں  
کچھ آرام میں اور کچھ سیر و شکار  
میں گذرتا ہے

### اشغالِ شبانہ روزی

اوقاتِ شبانہ روزی کی یہ  
تقسیم ہے کہ صبح سے دو  
گھنٹہ پہلے بیدار ہو کر نماز اور  
روزہ میں مشغول رہتے ہیں راج  
نکلنے کے دو تین گھنٹے بعد چرو  
درشن سے سر نکال کر لوگوں کو درشن  
دیتے ہیں اس میں اکثر دو گھنٹے اور  
بہمی کم و بیش لگ جاتی ہے یہ حضرت  
عوش آشتیانی یعنی اکبر بادشاہ کی  
اجاد ہے کہ اکثر بندے و یل  
میدان میں بغیر کسی ممانعت اور  
مزاہت کے بادشاہ کا درشن  
کریں اور منظم لوگ بلا واسطہ  
اپنا حال عرض کر دیں تاکہ تصد  
عیادت اصل حقیقت دریافت  
کر کے

اس طرح کچھ وقت عبادت  
الہی میں کچھ مہات بادشاہی میں  
کچھ آرام میں اور کچھ سیر و شکار  
میں گذرتا ہے

### اشغالِ شبانہ روزی

اوقاتِ شبانہ روزی کی یہ  
تقسیم ہے کہ صبح سے دو  
گھنٹہ پہلے بیدار ہو کر نماز اور  
روزہ میں مشغول رہتے ہیں راج  
نکلنے کے دو تین گھنٹے بعد چرو  
درشن سے سر نکال کر لوگوں کو درشن  
دیتے ہیں اس میں اکثر دو گھنٹے اور  
بہمی کم و بیش لگ جاتی ہے یہ حضرت  
عوش آشتیانی یعنی اکبر بادشاہ کی  
اجاد ہے کہ اکثر بندے و یل  
میدان میں بغیر کسی ممانعت اور  
مزاہت کے بادشاہ کا درشن  
کریں اور منظم لوگ بلا واسطہ  
اپنا حال عرض کر دیں تاکہ تصد  
عیادت اصل حقیقت دریافت  
کر کے

ग्रामवासदोलतरवनिमेंया-  
यसलखनिमेंअरजकरेंऔर  
वादशाहखुदतहकीकातकर  
केउनकात्यावचुकावे-

हाथीनीइसीभेदानमेंलड़ा  
येजातेहैंकिसलियेकिरवास  
वग्रामदोलतरवनिमेंउनका  
लानामुशकिलहोतेहैंकनीहा  
थियोंकोघोड़ांपरदेड़ातेहैंकि  
जिससेवेल्ड़ाईमेंसवारोंको  
दवासकें-

वादशाहीफौजऔरअमीरों  
केघोड़ेनीइसीलंबेचोड़ेभेदा  
नमेंदेरेजातेहैं-

फिरयहांसेदोलतरखनिरवास  
वग्राममेंपधारजातेहैंजिसके  
ऊपरधूपऔरमेहकेबचावकी  
गरजसेकपड़ेकासायवानर  
ड़ाहोजाताहैऔरनीचेकाली  
नबिछजातेहैंइसके३तरफज  
कीकाकठहरा५० गजलंबा

دولتخانه خاص و عام یا تختخانه  
میں عرض کرین اور بادشاہ و بیگم  
خاصہ کی تحقیقات اور مقتضات  
کو فیصلہ فرماویں

ہاتھی بھی اسی میدان میں  
لڑا ہے جاتے ہیں کیونکہ دولتخانہ  
خاص عام میں اور کالانا شکل ہوتا  
ہے کبھی ہاتھوں کو گھوڑوں پر دھرتا  
ہیں کہ لڑائی میں سوار و پیادہ غالب  
آویں

بادشاہی فوج کے اور امیروں  
کے گھوڑے بھی اسی وسیع میدان  
میں دیکھے جاتے ہیں

پھر بادشاہ و بیگم کے تختخانہ  
خاص عام میں شریف سے جاتے ہیں  
جس پر زوہد اور میہ کے بچاؤ کے  
لئے کپڑے کا سامان کثیرا جو جاتا  
اور اوکے نیچے قالین بچھ جاتی ہیں  
اوسکے تین طرف کمرہ کی کاشی  
پچاس گز اچھا

اور ۱۶ گج چوڑا لنگا ہوا ہے اور ہر  
طرف ایک دروازہ ہے۔ یہاں  
لوگوں کا سلام ہوتا ہے۔ بادشاہ زادہ  
دائیں بائیں کھڑے ہوتے ہیں اور  
جب حکم ہوتا ہے تو بیٹھ جاتے ہیں  
مگر بادشاہی ملازم کھڑے کی طرف  
پشت کر کے سائبان کے نیچے  
کھڑے ہو جاتے ہیں اور جن کو اندر  
آنے کی عزت ملی ہوئی ہے وہ  
چہرہ کوٹہ کے چپ و راست اپنے  
اپنے درجہ پر قیام کر لیتے  
ہیں۔

اور ہندو گز چوڑا لنگا ہے اور ہر  
طرف ایک دروازہ ہے۔ یہاں  
لوگوں کا سلام ہوتا ہے۔ بادشاہ زادہ  
دائیں بائیں کھڑے ہوتے ہیں اور  
جب حکم ہوتا ہے تو بیٹھ جاتے ہیں  
مگر بادشاہی ملازم کھڑے کی طرف  
پشت کر کے سائبان کے نیچے  
کھڑے ہو جاتے ہیں اور جن کو اندر  
آنے کی عزت ملی ہوئی ہے وہ  
چہرہ کوٹہ کے چپ و راست اپنے  
اپنے درجہ پر قیام کر لیتے  
ہیں۔

اور ہندو گز چوڑا لنگا ہے اور ہر  
طرف ایک دروازہ ہے۔ یہاں  
لوگوں کا سلام ہوتا ہے۔ بادشاہ زادہ  
دائیں بائیں کھڑے ہوتے ہیں اور  
جب حکم ہوتا ہے تو بیٹھ جاتے ہیں  
مگر بادشاہی ملازم کھڑے کی طرف  
پشت کر کے سائبان کے نیچے  
کھڑے ہو جاتے ہیں اور جن کو اندر  
آنے کی عزت ملی ہوئی ہے وہ  
چہرہ کوٹہ کے چپ و راست اپنے  
اپنے درجہ پر قیام کر لیتے  
ہیں۔

اور ہندو گز چوڑا لنگا ہے اور ہر  
طرف ایک دروازہ ہے۔ یہاں  
لوگوں کا سلام ہوتا ہے۔ بادشاہ زادہ  
دائیں بائیں کھڑے ہوتے ہیں اور  
جب حکم ہوتا ہے تو بیٹھ جاتے ہیں  
مگر بادشاہی ملازم کھڑے کی طرف  
پشت کر کے سائبان کے نیچے  
کھڑے ہو جاتے ہیں اور جن کو اندر  
آنے کی عزت ملی ہوئی ہے وہ  
چہرہ کوٹہ کے چپ و راست اپنے  
اپنے درجہ پر قیام کر لیتے  
ہیں۔

پہرے والوں اور خدایتوں پر  
 قرار ہوئے ہیں وہ وہاں جاتے  
 رخصت پاتے ہیں  
 برقراروں اور اعدیوں  
 پر تیش تو بچانے کے مشرف اور  
 اعدیوں کے بخشی حضور میں لائے  
 ہیں اور جس کو مستحق پرورش سمجھتے  
 ہیں اس کی واسطے عرض کر رہے ہیں۔  
 متصدیان سرکار خالصہ مثل  
 سرمان و دیوان بیوتات وغیرہ  
 طرح کے کاموں کی عرضیاں پیش  
 کرتے ہیں۔ بادشاہ فوراً ان کے اوپر اس  
 لیے مقول اور مناسب احکام صادر  
 فرماتے ہیں جیسے کہ پورے وزیر میں جگہ  
 شاہزادوں صوبہ داروں  
 قیوداروں اور صوبوں کے دیوان  
 بخشیدوں کی عرضیاں مقرران درگاہ  
 کے ذریعہ سے گزرتی ہیں جن میں شاہزادوں  
 اور عمدہ لائے دولت کی عرضیاں  
 تو خود بادشاہ پڑھتے ہیں اور  
 دوسری عرضیوں کا۔

پہرے والوں اور خدایتوں پر  
 قرار ہوئے ہیں وہ وہاں جاتے  
 رخصت پاتے ہیں  
 برقراروں اور اعدیوں  
 پر تیش تو بچانے کے مشرف اور  
 اعدیوں کے بخشی حضور میں لائے  
 ہیں اور جس کو مستحق پرورش سمجھتے  
 ہیں اس کی واسطے عرض کر رہے ہیں۔  
 متصدیان سرکار خالصہ مثل  
 سرمان و دیوان بیوتات وغیرہ  
 طرح کے کاموں کی عرضیاں پیش  
 کرتے ہیں۔ بادشاہ فوراً ان کے اوپر اس  
 لیے مقول اور مناسب احکام صادر  
 فرماتے ہیں جیسے کہ پورے وزیر میں جگہ  
 شاہزادوں صوبہ داروں  
 قیوداروں اور صوبوں کے دیوان  
 بخشیدوں کی عرضیاں مقرران درگاہ  
 کے ذریعہ سے گزرتی ہیں جن میں شاہزادوں  
 اور عمدہ لائے دولت کی عرضیاں  
 تو خود بادشاہ پڑھتے ہیں اور  
 دوسری عرضیوں کا۔

کا حال بادشاہی نوکر و راجک  
رہنے والوں کی مارت و راجک  
راتے ہیں۔

سدر لوگوں کی راجکیوں میں  
جیتنا کھڑا ہوتا ہے راجک  
کے لایک ہوتا ہے وہ سدر کو  
ل راجک کرتا ہے اور اس کی  
راجک کرنے پر سیدوں شہزادوں  
لی میں پیریں اور فکریوں کی  
راہوں پر رہتی ہیں ہر ایک کو  
ہرگز میں نہ کہ روپ یا اس کی  
لایا کرتے ہیں کہ اس کی  
تہہ نہ ہے۔

راجک سکر کے اس میں  
جاگیر میں سب کو دی اور  
ہر ترہ کے ماملوں کی یاد  
داشوں کو اور تمام لوگوں کو  
دوبارہ راجک کرتا ہے۔

تو لے اور فکریوں کے  
راجک کرتا ہے اور ان کی  
راجک کی رسم مانتا ہے۔

حال ملازبان شاہی پیر  
اور باب فقور عرض کرتے  
ہیں۔

سدر کی عرض میں  
سے جو حصہ کہ قابل عرض کرتے  
کے ہوتا ہے وہ سدر کل عرض  
کرتا ہے اور اہل استحقاق یعنی سادات  
و شایخ و علما و فضلا و صلحا کا حال  
ہی وہی معروض عرض میں لاتا ہے  
اور ان سب کی مراد میں پوری ہوتی  
ہیں۔ حضور میں سے ہر ایک کو اس  
کی استعداد کے موافق زر نقد  
عطا ہوتا ہے۔

راجک مکر کا مستعدی  
جاگیر میں نقدی اور اقسام مسائل  
کی یادداشتوں اور تمام  
مکمل کو دوبارہ عرض کرتا ہے۔

طویل اور فیل خانہ کے  
ایک ایک گروہوں اور ان کو  
بسم شاہ کے نظر اقدس سے گزارتے ہیں





कम और जियादा होने से होता है  
उठकर दोलत खाने रवा समेज  
ते हैं और तख्त पर बैठते हैं—  
अकबर बादशाह के वक्त में  
वान खाने और महल के दरमि  
यान १ जगह थी जहां बेनहाया  
करते थे वहां बाजे मुसाहिब और  
रदीवान वरवशी जीहाज़िर हो  
कर जस्तूरी कानों की अरज क  
र लिया करते थे यह जगह ह  
माम के करीब होने से कुछ दि  
नों पीछे गुसल खाना कहला  
ने लगी थी अब इसका नाम  
दोलत खाना रवा स है—

यहां बादशाह वाजी जस्तूरी  
अरजियों का जवाब अपनी क  
लम से लिखते हैं और सूबेदा  
रों की अरजियों का मतलब जो  
वकीलों या वजीरों या अरज क  
रने की खिदमत के मुत्सद्दियों  
की मारफत अरज होता है सुन  
कर उसके जवाब में जो कुछ फ  
रमाते हैं उसके माफिक मुनशी  
जोगा फरमान लिखते हैं लिख  
ने के बाद बादशाह को दिखवाते हैं

जाते हैं और तख्त पर बैठते  
हैं. अकबर बादशाह के हमद  
दियान खाने और शकुं से دولت  
के दरबान एक जगह हैं—  
वह गल किया करते हैं— और  
मुरब और दियान बंशी भी बारा  
होकर मुरवी कामों की عرض  
करिया करते हैं ये खलत कदब  
दन करने पर काम के करीब  
होने से गल खाने के नाम  
से مشهور और معروف हो गया  
अब उस का नाम دولت खाने  
नाम है—

बादशाह दरबान. بعض  
ضروری عرضیوں کا جواب  
اپنے قلم سے لکھتے ہیں. اور  
صوبہ داروں کی عرضیوں کا  
مطلب جو وکیل یا وزیر یا متسی  
خدمت عرض کے ذریعہ سے  
عرض ہوتا ہے سنکر اس کے  
جواب میں جیسا کچھ فرماتے ہیں  
اس کے موافق منشی لوگ فرمان  
لکھتے ہیں. اور لکھنے کے  
بعد بادشاہ کو

खुराक वगैरा को बादशाह की नजर से गुजरते हैं यह जाबता मोताद गुजराने और वापस लेने उस रूपये का जो सरकार से इन जानवरों की खुराक के वास्ते मुकर्र है जबकि वे दुबले और खराब हों अकबर बादशाह का बांधा हुआ है -

फिर उन अमीरों को कि जिनके घोड़ों के ताजा दाग लगें हों दाग और फौज की हाजिरी के सुत्सद्दी मये घोड़ों के पेश करते हैं ताकि जो कोई अमीर और घोड़ा ठीक न हो तो ताबी न वाशी (यानी उस ओर हृद्दार) पर कि जो अमीरों के सवारों पर तईनात होता था) एतराज होवे और फिर वह अपने काम में गफलत न करे -

यहां से कनी ४ और कनी ५ घड़ी के बाद जैसा मौका कामें के

खायले गोर में मत्ता और बाज خواست اس روپے کا جو سرکار سے دو اب کے واسطے مقرر ہوتا ہے بصورت زبونی اور لائحہ ان جانوروں کے اکبر بادشاہ کا مقرر کیا ہوا ہے -

پہر داغ اور تصحیح نابینان کے مقصدی ان امرا کو کہ جن کے گھوڑوں کا تازہ داغ اور تصحیح ہوا ہو من گھوڑوں کے پیش کرتے ہیں تاکہ اگر کوئی آدمی یا گھوڑا زبون ہو تو تائین باشی (مگر ان کنندہ تا بینان) معاتب ہو۔ اور پہر سہل انکاری ٹکرے بیان سے کہی چار اور کہی پنج گھڑی بعد جیسا موقع منظر قسرت کا مون کے ہو۔ اٹھ کر دولت خانہ خاص میں جاتے ہیں -

कम और जियादा होने से होता है  
उठकर दोलतखाने वास में जा  
ते हैं और तख्त पर बैठते हैं -  
अकबर बादशाह के वक्त में दी  
वानखाने और महल के दरमि  
यान १ जगह थी जहां बेनहाया  
करते थे वहां बाजे मुसाहिब और  
रदीवान वरवशी जी हाजिर हो  
कर जस्सरी कामों की अरज क  
र लिया करते थे यह जगह ह  
माम के करीब होने से कुछ दि  
नों पीछे गुसलखाना कहला  
ने लगी थी अब इसका नाम  
दोलतखाना वास है -

यहां बादशाह वाजी जस्सरी  
अरजियों का जवाब अपनी क  
तम से लिखते हैं और सूबेदा  
रों की अरजियों का मतलब जो  
रकीलों या बज्जीरों या अरज क  
ने की खिदमत के मुत्सद्दियों  
की मारफत अरज होता है सुन  
कर उस के जवाब में जो कुछ फ  
रमाते हैं उसके माफिक मुनशी  
लोग फरमान लिखते हैं लिख  
ने के बाद बादशाह को दिखते हैं

जाते हैं और तख्त पर बैठते  
हैं - अकबर बादशाह के मद्द  
दियान خان और शकुन دولت  
के दरमیان ایک جگہ ہیں - جنہاں  
وہ غسل کیا کرتے تھے - اور بیض  
مقرب اور دیوان بخشی ہی باریاب  
ہو کر ضروری کاموں کی عرض  
کر کیا کرتے تھے یہ خلوت کدہ کچھ  
دن گزرنے پر حمام کے قریب  
ہونے سے غسل خانہ کے نام  
سے مشہور و معروف ہو گیا  
اب اس کا نام دولت خانہ غاس  
ہے -

بادشاہ دیوان بعض

ضروری عرضیوں کا جواب  
اپنے قلم سے لکھتے ہیں - اور  
صوبہ داروں کی عرضیوں کا  
مطلب جو وکیل یا وزیر یا مستند  
خدمت عرض کے ذریعہ سے  
عرض ہوتا ہے شکر اس کے  
جواب میں جیسا کچھ فرماتے ہیں  
اس کے موافق منشی لوگ فرمان  
لکھتے ہیں - اور لکھنے کے  
بعد بادشاہ کو

ان میں اگر کھی گلتی رہ گئی  
 ہو یا मतलब دھڑتا हो तो वाद  
 शाह उसको दुरुस्त कर देते हैं  
 बादशाह जादों में से जो कोई  
 हिवरि सल्ला होता है वानी जिस  
 के हुक्म पहुंचाने से वे फरमान  
 लिखे जाते हैं वह अपना नाम  
 न करमानों की पीठ पर लिख क  
 र मोहर करता है उसके नीचे  
 तान अपनी मारफत (पोखान)  
 लिखता है फिर ये फरमान मह  
 ल में चले जाते हैं वहां मोहर  
 के (बड़ी मोहर) जो सुमता जजमा  
 नी वेगम के पास रहती है उनके  
 ऊपर लगाई जाती है—

इसी जगह दीवान लोग रवा  
 ल से के कामों और मनसबदा  
 रों की तनखाह की अरज कर  
 के मंजूरी लेते हैं और सदरकु  
 लहकदारों (पुन्याय पानेवालों)  
 की हाजतें अरज करता है बादशा  
 ह किसी को जमीन किसी को  
 नफददी और किसी को रोजी  
 ना जैसी जिसकी लयाकत हो  
 ती है इन सब फरमाते हैं वुस्त

کر اسے میں۔ اس وقت  
 میں کچھ غلطی رہ گئی ہو  
 مطلب فوت ہو گیا ہو تو بادشا  
 کی اصلاح فرما دیتے ہیں۔  
 شاہ زادوں میں سے جو  
 صاحب رسالہ ہوتا ہے  
 اپنا رسالہ زبانوں کی پشت  
 پر لکھ کر رکھتا ہے اور رسالہ  
 کے نیچے دیوان اپنی معرفت  
 لکھتا ہے۔ پھر فرمان محل میں  
 لکھ جاتے ہیں اور پھر اونک  
 سے جو مہد علیا متا ز زمانی حکیم  
 کے پاس رہتی ہے۔ منون  
 کے ہیں۔

اسی خلوت کدو میں  
 ان خالصہ کے کاموں اور  
 سب داروں کی تنخواہ عرض  
 کے اٹھ اضرام کرتا ہے اور  
 یہ اسباب استعانت کی  
 جہتیں عرض کرتا ہے بادشاہ  
 ان کو زمین کن کو نقدی اور  
 کسی کو روزیہ بعد استعانت  
 عنایت کرتے ہیں۔  
 اس کے بعد وہ

سوں کو تولیادان اور سیرات کے  
سب جانوں سے روپیا دیا کرتے ہیں۔

بहुत से वक्तों में जड़ाऊ और  
मीना के काम की चीजें देखवाक  
रते हैं रत्नासा इमारतों के दरोगे  
और सिंलावट इमारतों के न  
कशे मुलाहजे कराते हैं बादशा

हको अपना नाम कायम रख  
निके वास्ते बड़ी इमारतों के  
बनाने का शौक बहुत ही है इ  
स वास्ते अकसर मकानों के  
नकशे आप ही बनाते हैं और  
तो गजधर लोग रक्वे कर लाते  
हैं उनको चीसु धारते हैं-

जब कोई नकश मंजूर हो जा  
ता है तो उस पर आसिफरवां  
बजीर बादशाह के हुक्मों को  
खोलकर लिख देता है कि जि  
समें बनाने और बनवाने वाले  
मूलचूकन कर सकें-

इस जमाने में इमारत की का  
शी गरी इतनी कुछ बढ़ गई है कि  
जिसे देखकर मुसाफिरों को हैर  
त होती है- फिर यहां कनी तो  
भेंटि चंतिके शिकारी जानवर हजूर

خزانہ ورن اور تصدق سے روپیہ  
دلا سکتے ہیں۔

اکثر اوقات مرصع کاری  
اور مینا کاری کی چیزوں کا ملاحظہ  
فرمایا کرتے ہیں۔ خاصہ عمارتوں  
کے داروغہ اور معمار عمارتوں  
کے نقشے ملاحظہ کراتے ہیں  
اور چونکہ بادشاہ بقا سے نام  
کے لئے عمارت عالیہ کے بنوانے  
کا بہت شوق ہے اس واسطے اکثر  
عمارقوں کے نقشے خود بتاتے ہیں  
اور معمار لوگ جو نقشے کہیں کراتے  
ہیں انہیں خوب خوب ترمیم اور  
تسرت کرتے ہیں۔

جب نقشہ مقرر ہو جاتا  
ہے اس پر مین الملہ و لہ اصفت خان  
بلو شاہی احکام کی بخوبی تشریح  
کرتے ہیں تاکہ معماروں اور  
مقصدیوں کے لئے بخوبی سمجھ  
سکے۔

اس عہد میں کار عمارت  
نے اسی ترقی کی ہے کہ جس سے  
سیاحوں کو حیرت ہوئی ہے پر یہاں  
کبھی تو طرح طرح کے شکاری جانور  
اور پرند و چرند معذور ہیں

میں لایے جاتے ہیں۔ اور کبھی چابک  
سوار دو تھانہ کے صحن میں گہروں  
کو پہرا تے ہیں۔

۸۷۲۵۶۷۸۹۱۰۱۱۲۱۳۱۴۱۵۱۶۱۷۱۸۱۹۲۰۲۱۲۲۲۳۲۴۲۵۲۶۲۷۲۸۲۹۳۰۳۱۳۲۳۳۳۴۳۵۳۶۳۷۳۸۳۹۴۰۴۱۴۲۴۳۴۴۴۵۴۶۴۷۴۸۴۹۵۰۵۱۵۲۵۳۵۴۵۵۵۶۵۷۵۸۵۹۶۰۶۱۶۲۶۳۶۴۶۵۶۶۶۷۶۸۶۹۷۰۷۱۷۲۷۳۷۴۷۵۷۶۷۷۷۸۷۹۸۰۸۱۸۲۸۳۸۴۸۵۸۶۸۷۸۸۸۹۹۰۹۱۹۲۹۳۹۴۹۵۹۶۹۷۹۸۹۹۱۰۰

بادشاہ نے اگرچہ دانا

اور خدا ترس آدمیوں کو قضا اور

عدالت کے عہدوں پر مقرر کر رکھا

ہے تو یہی مظلوموں کی باز پرس

کے واسطے بدو کے دن چرو کہ

دورشن سے اٹھ کر دو تھانہ خاص

میں انصاف کرنے کو بیٹھے ہیں۔

اُس دن مفتیوں عدالت کے مقصد

بعض دیندار فاضلوں اور پیشہ

حاضر رہتے والے امیروں کے سوا

اور لوگ نہیں آتے پاتے ہیں

عدالت کے عہدہ دار ایک ایک

داوخواہ کو حضور میں لا کر اُس

کا مقدمہ عرض کرتے ہیں بادشاہ

نرمی اور شفقت روائی سے ہر ایک

واقفہ کا حال دریافت کر کے عالموں

کے فتوے کے موافق حکم دیتے

ہیں۔ اور جو سب کو سزا

دینی ہوتی ہے

تو وہ بھی بموجب حکم شریعت کے دیجاتی ہے باہر کے داؤخانوں کے واسطے کہ جن کے مقدمات کا تصفیہ سوائے اسی سرزمین کے ممکن نہیں ہوتا ہے وہاں کے ناظروں کو حکم بکھہ دیتے ہیں کہ حق گزینی سے دادرسی کر دیں ورنہ متخاصمیں کو دار الخلافہ اکبر الہی میں روانہ کریں۔

جب وہ و قحانہ خاص کے کاموں سے فارغ ہوتے ہیں تو شاہ برج میں تشریف لیجاتے ہیں وہاں سوائے شاہزادوں یا چند خاص مقربوں کے اور کوئی بلا حکم نہیں جاسکتا ہے یہاں تک کہ خدیو نگا رہی بغیر بلا سے نہیں آسکتے ہیں۔ یہاں بعض ہوا سلطنت کے کہ جن کا ظاہر کرنا صلاح دولت نہیں ہوتا ہے اور ان خفیہ فرمانوں کے مضمونوں کی کہ امر اسے دور دست کو پہنچے ہوئے ہیں۔ وزیر سے صلاح ہوتی ہے۔ اور وزیر ان ضروری معاملات خالصہ طلب متخواہ

تو وہ بھی بموجب حکم شریعت کے دیجاتی ہے باہر کے داؤخانوں کے واسطے کہ جن کے مقدمات کا تصفیہ سوائے اسی سرزمین کے ممکن نہیں ہوتا ہے وہاں کے ناظروں کو حکم بکھہ دیتے ہیں کہ حق گزینی سے دادرسی کر دیں ورنہ متخاصمیں کو دار الخلافہ اکبر الہی میں روانہ کریں۔

تو وہ بھی بموجب حکم شریعت کے دیجاتی ہے باہر کے داؤخانوں کے واسطے کہ جن کے مقدمات کا تصفیہ سوائے اسی سرزمین کے ممکن نہیں ہوتا ہے وہاں کے ناظروں کو حکم بکھہ دیتے ہیں کہ حق گزینی سے دادرسی کر دیں ورنہ متخاصمیں کو دار الخلافہ اکبر الہی میں روانہ کریں۔

جب وہ و قحانہ خاص کے کاموں سے فارغ ہوتے ہیں تو شاہ برج میں تشریف لیجاتے ہیں وہاں سوائے شاہزادوں یا چند خاص مقربوں کے اور کوئی بلا حکم نہیں جاسکتا ہے یہاں تک کہ خدیو نگا رہی بغیر بلا سے نہیں آسکتے ہیں۔ یہاں بعض ہوا سلطنت کے کہ جن کا ظاہر کرنا صلاح دولت نہیں ہوتا ہے اور ان خفیہ فرمانوں کے مضمونوں کی کہ امر اسے دور دست کو پہنچے ہوئے ہیں۔ وزیر سے صلاح ہوتی ہے۔ اور وزیر ان ضروری معاملات خالصہ طلب متخواہ

میں لایا جاتا ہے اور کچی چابوک  
سوار دولت خانہ کے صحن میں گہرو  
ڈھونڈا کر لیا جاتا ہے۔

۸ یا ۱۵ غڈی دن ان کاموں میں  
جاتا ہے۔

بادشاہ نے دانا اور دھن سے  
ڈرنے والے لوگوں کو کاجی اور

میر احمد بنار سے لیا جاتا ہے  
اور دیو کی پکار سننے کے لئے

۱۵ یا ۲۰ دن کے دربار میں  
سے اٹھ کر دولت خانہ کے صحن

میں اس کا فکریں کر کے دیتے ہیں  
اور اس دن مفتیوں کے عدالت کے

تقریریں اور عدالت کے  
حاضر رہنے والے امیروں کے

اور لوگ نہیں آتے۔ اس دن  
عدالت کے عہدہ دار ایک ایک

دوا خواہ کو حضور میں لاکر اس  
کا مقدمہ عرض کرتے ہیں بادشاہ

نرمی اور شفقت سے ہر ایک  
واقعہ کا حال دریافت کر کے عالموں

کے موافق حکم دیتے  
ہے۔

تو اس کے بعد کسی کو ڈھونڈنا  
ہوتا ہے۔

کے جاتے ہیں۔ اور کچی چابوک  
سوار دولت خانہ کے صحن میں گہرو  
ڈھونڈا کر لیا جاتا ہے۔

۸ یا ۱۵ غڈی دن ان کاموں میں  
جاتا ہے۔

بادشاہ نے دانا اور دھن سے  
ڈرنے والے لوگوں کو کاجی اور

میر احمد بنار سے لیا جاتا ہے  
اور دیو کی پکار سننے کے لئے

۱۵ یا ۲۰ دن کے دربار میں  
سے اٹھ کر دولت خانہ کے صحن

میں اس کا فکریں کر کے دیتے ہیں  
اور اس دن مفتیوں کے عدالت کے

تقریریں اور عدالت کے  
حاضر رہنے والے امیروں کے

اور لوگ نہیں آتے۔ اس دن  
عدالت کے عہدہ دار ایک ایک

دوا خواہ کو حضور میں لاکر اس  
کا مقدمہ عرض کرتے ہیں بادشاہ

نرمی اور شفقت سے ہر ایک  
واقعہ کا حال دریافت کر کے عالموں

کے موافق حکم دیتے  
ہے۔

تو اس کے بعد کسی کو ڈھونڈنا  
ہوتا ہے۔



چوکی دارن اپنے ہتھیاروں سے  
سلا می دیتے ہیں۔

شام کی نماز جما کرتا (ب  
ہوت آد میوں) کے ساتھ پڑھتے  
ہیں نماز کے پیچھے ۸۱۵ غزلیت  
کدے لے کر رات کے واس میں جو ب  
ہوت سے جڈا کر شامہ دانوں کی رو  
شانی سے جگمگانے لگتا ہے  
بیراج کر سلا تہنہ کے کام  
کرتے ہیں اور کچی گانا سونہ  
ہیں گانے کے شلم اور رواس کر  
کے ہندوستانی راگوں میں بادشا  
ہ کو بڑا اچھا ہے ہندوستان  
نی گانے میں جو مچا اور رگی  
نی ہے وہ دوسری زبان کے گانے  
میں نہیں ہے بہت سے صوفی  
ہو شاہی مجالس میں بحالت وجد  
وسماع مریجے ہیں۔ جن کا قصہ  
غایت شہرت سے محتاج نگارش  
نہیں ہے۔

ان کاموں سے فاسخ  
ہوئے کے بعد عشا کی نماز پڑھ کر  
دو ٹھانہ خاص سے شاہ بی میں  
قدیمہ فرماستہ ہیں۔ اگر کوئی کام  
دو ٹھانہ میں نہ ہو تو وزیر کل  
اور مہتمم کو بلا کر اسکو پرا کر نہ ہیں

اور جو کھلا تسلیم فورینی ہتھیار  
کی سلامی دیتے ہیں۔

شام کی نماز ہمیشہ بجات  
سے پڑھتے ہیں نماز کے بعد  
چار پنج گہری تک دو ٹھانہ خاص  
میں جو بہت سے شمعہ افون کی  
روشنی سے جگمگانے لگتا ہے  
امور سلطنت کو انجام دیتے  
ہیں۔ اور کبھی گانا سونہ ہیں  
بادشاہ کو اس فن اور خصوص  
ہندوستانی راگوں میں بہت  
زیادہ مہارت ہے ہندوستانی  
راگ میں جو نزاکت لطافت اور  
رنگینی ہے وہ دوسرے راگوں  
میں نہیں ہے بہت سے صوفی  
ہو شاہی مجالس میں بحالت وجد  
وسماع مریجے ہیں۔ جن کا قصہ  
غایت شہرت سے محتاج نگارش  
نہیں ہے۔

ان کاموں سے فاسخ  
ہوئے کے بعد عشا کی نماز پڑھ کر  
دو ٹھانہ خاص سے شاہ بی میں  
قدیمہ فرماستہ ہیں۔ اگر کوئی کام  
دو ٹھانہ میں نہ ہو تو وزیر کل  
اور مہتمم کو بلا کر اسکو پرا کر نہ ہیں

آج کا کام کل پر نہیں ڈالتے بلکہ  
کل کا کام آج کر کے مشکوے  
مٹے میں تشریف لیجاتے ہیں اور  
وہاں دو تین گھڑی تک گناہگر  
بستر راحت پر استراحت فرماتے  
ہیں۔ اور جب تک کہ نیند نہ آئے  
اول مجلس پر وہ کے پیچھے سے  
نبیوں ولیوں اور بادشاہوں  
کی قیاس بستاتے ہیں۔ ظفر نامہ  
جس میں امیر تیمور کی فتوحات کا  
حال ہے۔ اور واقعات باری  
یہ دو سخن بین زیادہ بڑھی  
جانی تھیں۔

آج کا کام کل پر نہیں ڈالتے بلکہ  
کل کا کام آج کر کے مشکوے  
مٹے میں تشریف لیجاتے ہیں اور  
وہاں دو تین گھڑی تک گناہگر  
بستر راحت پر استراحت فرماتے  
ہیں۔ اور جب تک کہ نیند نہ آئے  
اول مجلس پر وہ کے پیچھے سے  
نبیوں ولیوں اور بادشاہوں  
کی قیاس بستاتے ہیں۔ ظفر نامہ  
جس میں امیر تیمور کی فتوحات کا  
حال ہے۔ اور واقعات باری  
یہ دو سخن بین زیادہ بڑھی  
جانی تھیں۔

سوئے کا وقت کل  
دوپہر کے قریب ہے اکثر فرماتے  
ہیں کہ جو وقت انتظام ملک عایا  
کے انصاف محتاجوں کی حاجت  
روائی اور عبادت الہی میں صرف  
ہونا چاہئے حیف ہے کہ تن  
پروری اور خواب غفلت میں  
صرف کیا جاوے۔

سوئے کا وقت کل  
دوپہر کے قریب ہے اکثر فرماتے  
ہیں کہ جو وقت انتظام ملک عایا  
کے انصاف محتاجوں کی حاجت  
روائی اور عبادت الہی میں صرف  
ہونا چاہئے حیف ہے کہ تن  
پروری اور خواب غفلت میں  
صرف کیا جاوے۔

بادشاہ کے خال و خط  
بادشاہ نامہ میں لکھا ہے کہ  
بادشاہ کو قد نہ بہت لمبا ہے

بادشاہ کے خال و خط  
بادشاہ نامہ میں لکھا ہے کہ  
بادشاہ کو قد نہ بہت لمبا ہے

और न छोटा-रंग गेहूं आहै दहनी  
कनपटी पर बालों के पास १ तिल  
है और १ तिल दांयें मलक पर है  
बाईं आंख के नीचे नाक के ऊपर  
मस्ता है दोनों हथेलियों में दीर्घा  
यु की रखायें हैं-

बादशाह होने से कई वरस पहि  
ले १ दिन अजमेर की तलहटी में  
शिकार को गये थे जब दोपहर हु  
वे तो १ भठमे जा कर ठहरे चहा १  
तपस्वी या उसने हाथों और पा  
ओं की रखाएं देख कर कहा था-  
कि आप बादशाह होंगे और वही  
उमरपा आगे आप की दाईं पग  
थली में तिल है इससे कुल  
हिन्दुस्तान की बादशाही बेखट  
के आप के नीचे रहेगी-

बादशाह की नाया.

मुहना अबदुल हमीद लिख  
ता है कि बादशाह जियादा तो फा  
रसी बोलते हैं और बहुत अच्छी  
तह से बोलते हैं और जो लोग  
फारसी नहीं जानते उनसे हिन्दु  
स्तानी बोली में बातें करते हैं कुछ  
फारसी बोली नी समझते हैं नगर  
जलते कम हैं बोलने का जियादा

और न बहुत जम्मा. रंग कंदी  
है दाहिनी पेशानि पर बालों के  
पास अंगुली है और एक तल दांयें  
पक पर है बांयें आंख के सिंचे नाक  
के ओपर से जो दो नों मां हों की  
हथेलियों में خطوط طول عمر के  
बादशाह होने से

साल बीस एक दिन अजमेर की नौमी  
में शिकार को गئے थे जब दोप  
होगी तो एक मूठ में जा कर ठहरे  
द्वान एक گوشे نشिन भै आस  
बादशाह के हाथे और पानों के  
खटोद बिक्र कहा कि आप बादशाह  
हो नगे आप की छत्रि में मोगी आप  
या से चप में जो फाल है इस  
म हन्दुस्तान का मलश आप  
तब से में रहेगा.

बादशाह की زبان دانی

ابو عبد الحمید کہتا ہے  
کہ بادشاہ زیادہ تو فارسی بولتے  
ہیں اور جو لوگ فارسی نہیں جانتے  
ان سے ہندوستانی زبان  
میں باتیں کرتے ہیں کچھ ترکی  
میں سب سے ہیں۔ مگر بولتے کم  
ہیں۔ بولنے کا زیادہ





کا بول دکان میں مال با آئیں  
دکان ہے۔

جمنہ آگرے کے بیچ میں ہے  
کار بھرتی ہے دونوں طرف سے آ  
دیمیں آئیں مال با آئیں  
کا آنا جانا ناواں میں ہوتا ہے

شہر بگداد کا گریڈا جی  
سے لے کر ڈیڑھ سورت کر والی فو  
کی بادشاہی رہی تھی جگرنا  
میں دکان کا لیرا ہے آئیں  
گریڈا گریڈا ۱۵ کوس کا ہے شا  
ہ جادوں آئیں آئیں کی بڑی ۲۵  
مارتے کیلئے سمیت جمنہ سے پچھ  
میں ہے اس بستی کا گریڈا ۵ کوس  
کے لے کر ۲۱ کوس آئیں چوڑا ۱  
کوس ہے بہت سی شہر تے ۱ ل  
سے لے کر ۵ لارہ روپے تک  
کی لگاتار کی ہے آئیں اس سے ک  
م کی مت کی شہر تے کا کچھ  
سا بن رہی۔

پس کی طرف باغات  
زیادہ ہیں بن میں بڑی بڑی عمارتیں  
ہیں اس حصہ کا دور دور کوس  
طول ایک کوس اور عرض آدھ  
کوس ہے

کابل اور جنوب میں مالوہ و دکن  
ہے

جمنہ جو ایک صاف و  
ناٹ وریا آگرہ کے بیچ میں ہو کر  
ناہر دونوں طرف سے آدمیوں اور  
باب کی آمد رفت کشتیوں کی ذریعہ ہوئی  
شہر بغداد کا دور جس میں  
مدائیس خلافت رہی تھی حسب  
میان مولف ظفر نامہ کے دو کروہ  
یعنی ۶ کوس رہی تہہ اور اکبر آباد  
کا دور پانچ فرسخ یا پندرہ کوس رہی  
ہے شاہزادوں اور امیروں کی  
بلند عمارتیں مع قلعہ کے جمنہ سے  
بچھ میں ہیں اس آبادی کا دور  
آٹھ کوس طول ڈھائی کوس  
اور عرض ایک کوس ہے بہت سی  
عمارتیں تو ایک سے پانچ لاکھ روپے  
تک کی قیمت کی ہیں اس سے کم  
قیمت کی عمارتوں کا تو کچھ حساب  
نہیں ہے۔

پورب کی طرف باغات  
زیادہ ہیں بن میں بڑی بڑی عمارتیں  
ہیں اس حصہ کا دور دور کوس  
طول ایک کوس اور عرض آدھ  
کوس ہے

ندی کیتا بہن میں جمننا کے بہت  
 ام ہیں ان میں ۱ کالندیری نیلی ہے  
 لند ۱ پھاڑ ہے جہاں سے یہ  
 لنتی ہے۔

شاہ جہاں بادشاہ کے  
 راج کا مایہ۔

ہما پ شاہ جہاں کی کو سوں  
 آٹھا شاہ جہاں کی ۱ کو س  
 شاہ جہاں کی گجوں کا ہوتا  
 ۱ کو س کے مامولی  
 کو س ہوتے تھے۔

سراج کی لہنہ ڈی پور میں بند  
 مل سے جو بنگالہ کی آٹھ  
 رحد پر تھا پچھم میں کیرا  
 تک جو کابل کے سب سے  
 نی امل داری سے ملتا تھا  
 ۱۱۵۵ کو سوں کی تھی۔

بہا ڈی اتر میں چوٹی تھی  
 سرحد سے جو سب سے شامی  
 رحد پر تھا دکن میں شولا  
 کیتا جس کے آگے بجا پور

ہندی کتابوں میں جہاں کے  
 بت سے نام لکھے ہیں ان کے  
 بنگالہ ہی ہے کالند ایک پہاڑ  
 نام ہے جہاں سے یہ نکلتی ہے  
 عرض و طول سلطنت شاہ جہاں

بین پائش شاہ جہاں کی کو سوں  
 سے ہوئی تھی شاہ جہاں کی ایک  
 بس پانچ ہزار گز شاہ جہاں کا تھا  
 درانی سے ایک کو س کے معمولی  
 پنج کو س ہوتے تھے

اس سلطنت کا طول پورب  
 میں بند راجل سے جو نکال کی تھا  
 سرحد پر تھا پچھم میں قرا باغ تک  
 کابل کے صوبہ میں ایران  
 کی سرحد سے ملتی تھا ۱۱۹۹  
 کو س تھا

عرض اتر میں چوٹی تھی  
 لکھنؤ کو سب سے شامی  
 پر تھی دکن میں قلعہ شولا پور تک  
 جس کے آگے بجا پور

کا بول دکر دن میں مال با آئیں  
دکر دن ہے۔

جمنہ آگر کے بیچ میں ہو  
کار بھرتی ہے دونوں طرف سے آ  
د میوں آئیں مال با سب با  
کا آنا نا جاننا وہاں میں ہوتا ہے

شہر و گدا د کا گریہ و زاری  
سے سے کڑی دیکھ کر سب کو  
کی یاد شاہی رہی تھی جگر نا  
میں سے کھو سکا لیتا ہے آئیں آ  
گرے کا گریہ و زاری ۱۵ کو سکا ہے شا  
ہ جا دے آئیں آرمیوں کی بڑی ۲۵  
مارتے کھیلے سمیت جمنہ سے پھل  
میں ہے اس بستی کا گریہ و زاری ۷ کو  
س لے با ۲۱ کو س آئیں چوڑا ۱  
کو س ہے بہت سی ہمارتے تو ۹ لا  
ر سے لے کر ۵ لارہ روپے تک  
کی لاگت کی ہے آئیں اس سے ک  
م کی مت کی ہمارتوں کا کھل  
سا بن نہی۔

شہر کی طرف باغات  
زیادہ ہیں جن میں بڑی بڑی عمارتیں  
ہیں اس بستی کا گریہ و زاری ۲ کو س  
لے با ۱ کو س آئیں چوڑا ۱  
کو س ہے۔

کا بول اور جنوب میں مالوہ و دکن  
ہے

جمنہ جو ایک صاف و  
شفاف دریا ہو اگر کے بیچ میں ہو کر  
پیشا ہر دونوں طرف سے آدمیوں اور  
مال با کی آمد رفت کثرت کی ذریعہ ہو  
شہر بننا د کا دور جس میں  
صد مائیس خلافت رہی تھی حسب  
بیان مولفہ ظفر نامہ کے دو کروہ  
یعنی ۱۰ کو س رہی تہا اور اگر آباد  
کا دور پہلے فرخ یا پندرہ کو س تھی  
سے شاہزادوں اور امیروں کی  
لئے عمارتیں مع قلعہ کے جمنہ سے  
بچھ میں ہیں اس آبادی کا دور  
آٹھ کو س طول ڈھائی کو س  
اور عرض ایک کو س ہے بہت سی  
عمارتیں تو ایک سے پہلے لاکھ روپے  
تک کی قیمت کی ہیں اس سے کم  
قیمت کی عمارتوں کا تو کچھ حساب  
نہیں ہے۔

ہر طرف کی طرف باغات  
زیادہ ہیں جن میں بڑی بڑی عمارتیں  
ہیں اس بستی کا گریہ و زاری ۲ کو س  
لے با ۱ کو س آئیں چوڑا ۱  
کو س ہے۔





काबुल दकवन में मालबा और  
दकवन है -

کابل اور جنوب میں مالوہ و دکن  
ہے

जमना आगरे के बीच में हो  
कर बहती है दोनों तरफ से आ  
दमियों और माल असबाब  
का आना जाना नावों में होता है

جمنہ جو ایک صاف و  
شفاف دریا ہے اگرہ کے پنج میں ہو کر  
پہنچا کر دونوں طرف سے آدمیوں اور  
مال سہا ب کی آمد رفت کشتیوں کی ذریعہ ہوتی ہے

शहर वगदद का गिरदाव जि  
समें दोहड़ों बरस तक खलीफों  
की वादशाही रही थी जफरना  
में मे दकोसका लिखा है और आ  
गरे का गिरदाव १५ कोसका है शा  
हजादों और अमीरों की बडी २३  
मारतें किले समेत जमना से पच्छ  
म में है इस वस्ती का गिरदाव ७ को  
स लंबा २॥ कोस और चौड़ा १  
कोस है बहुत सी इमारतें तो १ ला  
ख से लेकर ५ लाख रुपये तक  
की लागत की हैं और इससे क  
म कीमत की इमारतों का कुछ हि  
सा बन ही -

شہر بغداد کا دور جس میں  
مد ما برس خلافت رہی تھی حسب  
بیان مولف ظفر نامہ کے دو کروہ  
یعنی ۶ کو س رسی تہا اور اکبر آباد  
کا دور پانچ فرسخ یا پندرہ کو س رسی  
ہے شاہزادوں اور امیروں کی  
لمنہ عمارتیں مع قلعہ کے جمنہ سے  
بچھ میں ہیں - اس آبادی کا دور  
آٹھ کو س طول ڈھائی کو س  
اور عرض ایک کو س ہے بہت سی  
عمار تیں ٹواک سے پانچ لاکھ روپے  
تک کی قیمت کی ہیں اس سے کم  
قیمت کی عمارتوں کا تو کچھ حساب  
نہیں ہے -

एरब की तरफ वाग जियादा है  
जिनमें बडे २ महल और नकान  
हैं इस वस्ती का गिरदाव २ कोस  
लंबा ३१ कोस और चौड़ा ३  
५ कोस है -

پورب کی طرف باغات  
بن میں بڑی بڑی عمارتیں  
حصہ کا دور دو کو س  
کو س اور عرض آدھ  
ہے





|                               |                               |
|-------------------------------|-------------------------------|
| دلی سے حسن ابدال ۱۷۶          | دلی سے حسن ابدال ۱۷۶          |
| ابدال سے کوٹاٹ ۳۷ کوس         | ابدال سے کوٹاٹ ۳۷ کوس         |
| دلی سے ریتا من ۲۲۰            | دلی سے ریتا من ۲۲۰            |
| دلی سے نارنگدہ سرسند نوکر ۱۰۲ | دلی سے نارنگدہ سرسند نوکر ۱۰۲ |
| دلی سے لاہور سے ایک           | دلی سے لاہور سے ایک           |
| ایک سے پیشورہ پیشور سے کابل   | ایک سے پیشورہ پیشور سے کابل   |
| ۷۶ جہلم سے براہ ایک کابل      | ۷۶ جہلم سے براہ ایک کابل      |
| ۱۱۶                           | ۱۱۶                           |
| دلی سے لاہور ۱۰۵              | دلی سے لاہور ۱۰۵              |
| مٹان ۷۰ مٹان سے بہکڑ ۱۰۶      | مٹان ۷۰ مٹان سے بہکڑ ۱۰۶      |
| ۱۷۷                           | ۱۷۷                           |
| دلی سے کابل ۲۷۰               | دلی سے کابل ۲۷۰               |
| بلخ ۹۷ بلخ سے بخارا ۱۱۱       | بلخ ۹۷ بلخ سے بخارا ۱۱۱       |
| ۱۲ دلی سے کابل ۲۷۰            | ۱۲ دلی سے کابل ۲۷۰            |
| نونی ۳۰ نونی سے قراباغ ۱۱۱    | نونی ۳۰ نونی سے قراباغ ۱۱۱    |
| کابل سے قندہار ۱۰۶            | کابل سے قندہار ۱۰۶            |
| ۱۳ دلی سے قندہار ۳۶۸          | ۱۳ دلی سے قندہار ۳۶۸          |
| بست ۳۱ بست سے ہرات ۱۰۶        | بست ۳۱ بست سے ہرات ۱۰۶        |
| ہرات سے شہدہ ۷۷ شہدہ سے       | ہرات سے شہدہ ۷۷ شہدہ سے       |
| اصفہان ۳۶۹ قندہار سے          | اصفہان ۳۶۹ قندہار سے          |
| اصفہان ۶۳                     | اصفہان ۶۳                     |
| دلی سے اصفہان ۷۷۱             | دلی سے اصفہان ۷۷۱             |
| ایران ۳۱                      | ایران ۳۱                      |
| دلی سے کابل ۲۷۰               | دلی سے کابل ۲۷۰               |
| ۱۵ دلی سے لاہور ۱۰۵           | ۱۵ دلی سے لاہور ۱۰۵           |
| ۱۶۳ لاہور سے شمشال ۱۶۵        | ۱۶۳ لاہور سے شمشال ۱۶۵        |

۱۔ دلی سے حسن ابدال ۱۷۶  
 ۲۔ ابدال سے کوٹاٹ ۳۷ کوس  
 ۳۔ دلی سے ریتا من ۲۲۰  
 ۴۔ دلی سے نارنگدہ سرسند نوکر ۱۰۲  
 ۵۔ دلی سے لاہور سے ایک  
 ۶۔ ایک سے پیشورہ پیشور سے کابل  
 ۷۔ ۷۶ جہلم سے براہ ایک کابل  
 ۸۔ ۱۱۶  
 ۹۔ دلی سے لاہور ۱۰۵  
 ۱۰۔ مٹان ۷۰ مٹان سے بہکڑ ۱۰۶  
 ۱۱۔ ۱۷۷  
 ۱۲۔ دلی سے کابل ۲۷۰  
 ۱۳۔ بلخ ۹۷ بلخ سے بخارا ۱۱۱  
 ۱۴۔ ۱۲ دلی سے کابل ۲۷۰  
 ۱۵۔ نونی ۳۰ نونی سے قراباغ ۱۱۱  
 ۱۶۔ کابل سے قندہار ۱۰۶  
 ۱۷۔ ۱۳ دلی سے قندہار ۳۶۸  
 ۱۸۔ بست ۳۱ بست سے ہرات ۱۰۶  
 ۱۹۔ ہرات سے شہدہ ۷۷ شہدہ سے  
 ۲۰۔ اصفہان ۳۶۹ قندہار سے  
 ۲۱۔ اصفہان ۶۳  
 ۲۲۔ دلی سے اصفہان ۷۷۱  
 ۲۳۔ ایران ۳۱  
 ۲۴۔ دلی سے کابل ۲۷۰  
 ۲۵۔ ۱۵ دلی سے لاہور ۱۰۵  
 ۲۶۔ ۱۶۳ لاہور سے شمشال ۱۶۵

और गलकुंडे की अमलदारी य  
६५२ को सयी-

अरवीरने इस विशाल राज्य

की राजधानी शाहजहाँ की बसा

इन्दुनन्दिद्वितीयजिसकोरा

हजहानाबादकहतहवहासबदर

श्रीमलकाद्यानादृशकरावा  
पा३८६वोटीविल३३१५०५०

नामका किल्ला ३३३ लोकसंख्या

इसमहतराज्यमेंजोबड़ेबड़े

शरजितनी २२१५ दिहनीसेथे

विनचिलि रेवजातहं

दिहरीसिन्हाहोर १०५ कोस-

दिह्वीस सरहिद ५२ सरहिद स

लाहोर पत्रिकास

दिल्ली से बिजगाबाद ५३ ५४

दिहली से नूरनगर ४३ नूरनगर

सेमुरवलिसपुर २१ मुरवलिस

पुसेकांगडादण ७२२५

॥ दिह्नीसिह्नीमाननीरह्नीमाननीसि

अबाला १८ अबालसमराहद  
अबालिनेन अममिकन

नकासाद) १६ नमः निवेदि

बान्ना १६ गोंडवाल सेला होर ३७



|                                     |                                       |
|-------------------------------------|---------------------------------------|
| दिहलीसेकशमीरपुरिचहोकर २००           | १५ दली से कश्मीर राह पुर्ग २०० कश्मीर |
| कशमीरसेछोटीतिबत ६९                  | से तबत २००                            |
| दिहलीसेआगरा ४४ बुरहानपुर १९०        | ६० दली से अगरे २४४ बुरहानपुर १९०      |
| बुरहानपुरसेसूरत ६० दोलताबाद १०      | ६० बुरहानपुर से सूरत १०               |
| द६४ दोलताबादसेओलवंदर ८१             | ८१ ओलवंदर से ओलवंदर ८१                |
| दिहलीसेअजमेर ८१ अहमदाबाद २०३        | १८ दली से अजमेर ८१ अहमदाबाद २०३       |
| द२५३ सूरत २०४                       | सूरत २०४                              |
| दिहलीसेसूरतबुरहानपुरहोकर ३१         | १५ दली से सूरत बुरहानपुर होकर ३१      |
| दिहलीसेअहमदाबाद २४४ अहमदाबाद २४४    | २० दली से अहमदाबाद २४४                |
| मदाबादसेसूरत १२५                    | से सूरत १२५                           |
| दिहलीसेइल्हाबाद गढमुक्तेसुधर १३     | २१ दली से इल्हाबाद गढमुक्तेसुधर १३    |
| होकर १३६ इल्हाबादसेवनारस २५         | २५ होकर १३६ इल्हाबादसेवनारस २५        |
| वनारससेसहसराम २६ सहसराम २६          | से सहसराम २६                          |
| सेपटना ४१ पटनासेपुंगेर ३० पुंगेर ३० | ३० से पटना ४१ पटनासेपुंगेर ३०         |
| रसेगढी ३१ गढीसेअकबरनगर २२           | ३१ रसेगढी ३१ गढीसेअकबरनगर २२          |
| (राजमहल) २२ अकबरनगरसे २२            | २२ (राजमहल) २२ अकबरनगरसे २२           |
| दाका ११६ ओमजडीसा १३०                | १३० दाका ११६ ओमजडीसा १३०              |
| दिहलीसेमथुरा ३१ धामूणी १२५          | २५ दली से मथुरा ३१ धामूणी १२५         |
| दिहलीसेसहारनपुर ३४ हरिद्वार ४४      | ३४ दली से सहारनपुर ३४ हरिद्वार ४४     |
| धामूणीसे ४४                         | ४४ धामूणीसे ४४                        |
| दिहलीसेरणथंजोर ६४                   | ६४ दली से रणथंजोर ६४                  |
| दिहलीसेहिसार ४४                     | ४४ दली से हिसार ४४                    |
| दिहलीसेइल्हाबादआगराहोकर २१          | २१ दली से इल्हाबादआगराहोकर २१         |
| २१५५ इल्हाबादसेजोनपुर २१            | २१ २१५५ इल्हाबादसेजोनपुर २१           |
| दिहलीसेआगरा ४४ आगरासेलखनऊ ६४        | ६४ दली से आगरा ४४ आगरासेलखनऊ ६४       |
| लखनऊ ६४ लखनऊसेअवध २४                | २४ लखनऊ ६४ लखनऊसेअवध २४               |



(अजोध्या) २७ अवधसे गोरख  
पुर २९  
दिहरीसे कन्नोज ८६ लखनऊ १२  
अजोध्या १३६ अजोध्यासे का  
बुल ३५०  
दिहरीसे आसिरका किला २९७  
दिहरीसे औरंगाबाद २६५ औरंगा  
बादसे हैदराबाद १०६ बीजापुर  
६२ शोलापुर ७२ बिदुर १०५ ऊ  
दगाद ६२ कज्जारी १२० गुज  
रानाबाद ६४ -

दिहरीसे हैदराबाद ३० हैदराबा  
दसे गोलकुंडा ३ कोस  
दिहरीसे बीजापुर ३५७  
दिहरीसे बिदुर ३०

### आगरेसे

आगरेसे गवालियर २८ गवालि  
यरसे सिरोंज ५८ सिरोंजसे न  
बदा ५१ नबदासे बुरहानपुर ४०  
बुरहानपुरसे औरंगाबाद ४४

आगरेसे अजमेर ८४

आगरेसे हिंडोन २७ हिंडोनसे  
ढोंक ३२

आगरेसे वाड़ी २० वाड़ीसे रूपवास

आगरेसे फतहपुर ८

आगरेसे सोनर १३ सोनरसे  
हंटावा २८

औरु से गोरखपुर २  
२८ दली से फुज ४५ कन्नो ११२ -

अजोध्या १३९ अजोध्या से  
काल ३००

२९ दली आसिरका किला २१६

३० दली से औरंगाबाद २६५

से जेदराबाद १०६ बीजापुर ७२ शोलापुर

६२ बिदुर १०५ ऊ दगाद ६२ कज्जारी १२०

गुजरानाबाद ६४ -

३१ दली से जेदराबाद ३० हैदराबाद

से गोलकुंडा ३ कोस

३२ दली से बीजापुर ३५७

३३ दली से बिदुर ३०

आगरेसे

आगरेसे गवालियर २८ गवालियर

से सिरोंज ५८ सिरोंजसे नबदा ५१

नबदासे बुरहानपुर ४० बुरहानपुरसे

औरंगाबाद ४४

३४ आगरेसे अजमेर ८४

३५ आगरेसे हिंडोन २७ हिंडोनसे

ढोंक ३२

३६ आगरेसे वाड़ी २० वाड़ीसे रूपवास

३७ आगरेसे फतहपुर ८

३८ आगरेसे सोनर १३ सोनरसे हंटावा २८

दीवान बेगी को समरकंद में नेज  
कर जहांगीर कज्जाक से मेल कर  
लिया लेकिन अबदुल रहमान  
ने कर गेजों के सरदार कतलक  
सेयद को फरेब से मार डाला -

सं. १०० में लेशकर कज्जाक ने ज  
हांगीर कज्जाक पर हमला किया  
मगर नजर मोहम्मद दरवां के अमी  
रों ने जाकर उस को जगा दिया -

संवत् १००१ में तुर्किस्तान के  
लोग नजर मोहम्मद दरवां की वदस  
लूकियों से बागी हो गये और खु  
जंद के किले पर कब्जा कर लिया  
नजर मोहम्मद दरवां के बेटा अबदु  
ल अजीज दरवां उन पर चढ़ कर ग  
या लेकिन बगैर फतह किये वा  
पस आ गया -

सं. १००२ में यक्केजवानों की जि  
ह्से मावखुलनगर (तुर्किस्तान)  
में अबदुल अजीज दरवां की आ  
नधु हाईफिरी और वल्ली यूनबाशी

دیوان بگی کو سمرقند میں پہنچ کر  
جہانگیر قزاق سے ہوا فقت  
کر لی مگر عبدالرحمن نے قزوین  
کے سردار قشق سپہ کو فریب سے  
مار ڈالا

۵۲۳ میں لشکر قزاق  
نے جہانگیر قزاق کے اوپر حملہ کیا  
لیکن نذر محمد خان کے امیروں نے  
کراؤ کو پہنکا دیا

۵۲۳ میں اہل ترکستان  
نذر محمد خان کے سلوک ناٹایم  
نے ناراض ہو کر فساد کیا اور  
مہنجنند میں قبضہ کر لیا  
محمد خان کا بیٹا عبدالعزیز  
سان اون کے اوپر لشکر  
بر گیا لیکن ناکام واپس

۵۲۳ میں ایک جو انون کی فصد سے  
ایضانی دارالنہر یعنی ترکستان جو نہر  
عمران اسطرف ہی کا خود بیخ الاول کو  
بدعزیز خان کے نام پر لڑ گیا اور بانی یوزبان

अपने बेटों समेत नज़र मोहम्मद  
खोंके पास हाज़िर हो गया मगर  
फसाद जगह रहोतारहा और हिं  
दुस्तान की फौज ने धावा करके क  
हमर्द को किले में अमल कर लि  
या राजा जगतसिंघ ने सुराब  
और इद्राब तक बढ़ कर मौरे खै  
बना लिये—

सं. ९७२ में "अलमानों" ने ज़ा  
मोयानदी से उतर कर अंदरबुंद को  
और आसोजसुद में अकक चै के जि  
ले को लूटा मगर निमिज के हाकि  
म ने पीछा करके उनको जेहूनदी  
से उतरते हुवे जामाराये अ  
लमान लोग मुसलमान थे तो  
जीबलख और बदखश में मु  
सलमानों को बहुत ही सताया  
करते थे कुतानों, मसजिदों, और  
मुहत्ताओं को जीजला देते थे जब  
ये लोग जोर जान के अफर जो ब  
लख से १

जैसे बूटों के खन के  
स हाज़र भोगिया हम फसाद जा बजा  
री रा और हन्दुस्तान की  
ज से हला कर के कले कहर  
सदल कर दिया राजे जकत स  
ने सराब और अंदराब  
स ब्रह्म कर मुरजब बना  
ये

जमादी الثانی سنه ۹۷۲  
دولمان نے آب آمویہ  
ور کر کے اندخود کو اور  
بان میں ملک و قلعہ کو لوٹا مگر  
برافوز حاکم ترند نے تعاقب  
کے انکو جو خون سے اترنے  
رہا مارا یہ المان مسلمان  
لی شیخ اور برفشان وغیرہ کے  
زندہ کیا کرتے تھے قرانوں  
مجدوں اور طوائف کو بھی  
چنانچہ حبیب یہ لوگ جو  
کے اوپر جوختے

|  |  |
|--|--|
| <p>تو سہی دھڑا ہی مہر کا ۱ مہر<br/>         ر مولوی ۵۰۰ لڑکوں کو کی جی<br/>         ن کے گلے میں کوران لٹ کے دھو دھے<br/>         سا پلے کر ان کی پیٹھا دے کے<br/>         گیا تھا مگر انہوں نے اس کو م<br/>         یات ما م لڑکوں کے ۱ مہر جی دے<br/>         لے جا کر آگ سے جلا دیا۔<br/>         فیر अबدول جی جی ربا و<br/>         نجر مہر مہر ربا و مہر<br/>         لڑا دے کی نو بے تہ پھوچی اور<br/>         بدول جی جی ربا و سہر کاند سے<br/>         تری می جت ک بڑا آیا تہ نجر<br/>         مہر مہر ربا و نے سولہ کر کے یہ<br/>         تہ ہر دے کی ماور ربا و نہر کام<br/>         لیک अबدول جی جی ربا و ۱ مہر<br/>         کولی ربا و کے ما فک دے دے اور<br/>         نجر ربا و ربا و نجر مہر مہر ربا و<br/>         کے پاس رہے۔<br/>         جب نجر مہر مہر ربا و ہندو<br/>         ستانی فوج کے آگے سے جا کر<br/>         ہوتا ہوا اس فوج میں پہنچا</p> | <p>سید ابراہیم و نیاں کا ایک مشہور<br/>         عالم چار سو لڑکوں کو جکے گلوں<br/>         میں قرآن لکھے ہوئے تھے<br/>         بطور شفاعت کے لیکر ان کی پیشکش<br/>         کو کیا مگر انہوں نے سید کو سہ<br/>         اون سب لڑکوں کے ایک<br/>         مسجد میں لپکا کر آگ سے جلا دیا<br/>         پھر عبدالعزیز خان اور نذر محمد<br/>         کے ہاں قصبہ و قصبہ قصبہ ہو کر<br/>         جنگ و جدل کی ہو چکی اور عبدالعزیز<br/>         خان سمرقند سے تہ نہر<br/>         چڑھ آیا تہ نذر محمد خان نے صلح<br/>         کر کے یہ بات طہرائی کر دے کہ<br/>         مالک عبدالعزیز خان بدستور<br/>         ابام فلیخان کے موافق ہو<br/>         اور نذر محمد خان کے قصبہ میں<br/>         رہے۔<br/>         جب نذر محمد خان ہندوستان<br/>         کی فوج سے جاکر مرو ہوتا ہوا<br/>         صفایان پہنچا</p> |
|--|--|

तो वह ईरान के बादशाह ने पेशवा  
 ईकर के बड़ी महरवानी से सुलाका  
 तकीर से मेरे को सत करंगी न और  
 रेशमी कपड़े बिछा दिये गये थे  
 सुलाकात के पीछे मकान पर आ  
 कर दोनों गद्दी पर बैठे खान १५ दि  
 गपीछे वहां से कुछ फौज काजलवा  
 शों की लेकर जी शंगह ने उस के सा  
 थ की मशहद में आया शंगह ने इस  
 आरसे में ५०००० नकद और जि  
 न्स कर के उस को दिया था और  
 अपनी फौज को हिरात से आगे  
 न बढ़ने को कह दिया था खान ने  
 यह बात फौज की चाल दखन से मा  
 लूम कर के उस को वहीं छोड़ा और  
 कहा कि मैं आगे जाता हूँ तुम हिरा  
 त में बहरो बुलाक जव आजाना  
 और खुद मर्व होकर चंचकतू में  
 आया और मेमने पर चढ़ाई की  
 मगर हिन्दुस्तानी किलेदार शंग  
 दरवां के मुकाबिल करने से बाध

तो वो वहाँ शाह ایران نے استقبال  
 کر کے بڑے تپاک سے اور سکی  
 ساتھ ملاقات کی ایک کو بس  
 راستہ میں رنگین اور شہین  
 کپڑے بچھا دیے گئے تھے  
 اور بعد ملاقات مکان پر اگر دونو  
 ایک گدہ ہی پر بیٹھے خان بندرہ  
 روزر ہر مہر مہر کی قدر فوج فریاد  
 کے جو شاہ نے اس کی مدد  
 کے لیے ہمراہ کی تھی شہید  
 میں آیا شاہ نے چار لاکھ روپیہ  
 کا نقد جنس اس عرصہ  
 میں اس کو دیا تھا مگر اپنی فوج  
 کو ہرات سے آگے بڑھنے کی ممانعت  
 کر دی تھی شاہ یہ بات فوج کی حرکت  
 و سکنت دو قوم کر کے اس کو وہاں ہی  
 چھوڑا اور کہا کہ میں آگے جانا ہوں تم  
 ہرات میں ٹھہرو جب بلالوں جانا اور خود  
 مروہر کے چنگو میں آیا اور وہاں سے  
 چکر کشی کی مگر یہ سب سب سے  
 بدین خیرہ شہیدستان

چلا گیا اور پھر اپنے بیٹے  
 قتل سلطان کو فتح کرنے کیلئے  
 بھیجا مگر وہ اپنے بھائی عبدالعزیز  
 خان والی پشاور کی فوج سے  
 چلا جا کر اپنے اوپر آئی تھی اس  
 کے آگے جو چہرہ ہوا وہ  
 اس کتاب میں لکھا جا چکا  
 ہے۔

## ایران

ایران میں پہلے تو شاہ عباس

صفوی بادشاہ تھا یہ غزوہ رمضان  
 ۱۵۷۸ء کو پیدا ہوا تھا اور ۱۵۷۸ء  
 میں تخت سلطنت پر بیٹھا ۲۰ ہجری  
 ۱۶۱۱ء کو مازندران میں  
 مر گیا چونکہ عبدالعزیز خان  
 والی توران نے مشہد میں  
 دھن کر کے شاہ طہا سب صفوی  
 کے مرقہ کی بہت خرابی کی تھی  
 اسلئے وزیر اعلیٰ ایران نے تین  
 صندوق بہت کے تیار کر کے  
 مشہد تک پہنچائے اور

کے تانکے کو بکسوں میں باندھ کر  
 کھڑا کر دیا اور اس کے ساتھ  
 کچھ گھوڑے بھی باندھ دیے  
 اور اس کے ساتھ کچھ فوج  
 بھی بھیج دی۔

को ने जे और तीनों जगह ही कबरे  
बनाई लेकिन शाह अब्बास की ल  
शाही सन्दूक में थी जिस का  
हाल कम किसी को ज्ञान म था -  
शाह अब्बास का बड़ा बेटा तो  
सफी मिरजा था जिसको शाह ने चेत सु  
द १ सं १६०१ को अपने गुलाम के हाथ  
से मरवा डाला था और बाकी रचे  
टों को अंधा कर दिया था सफी  
मिरजा का बेटा साम मिरजा शा  
ह के खौफ से जनाने में बहा कर  
लाया वजीरों ने शाह के पीछे उ  
सी को सं १६०५ के माह सुदि में  
असफ़हां के तरवत पर बैठा कर  
ईरान का बादशाह बनाया और  
शाह सफी नाम रक्खा -

शाह सफी ने सं १६५० में वान  
के हाकिम की मरजी से रुस्तम ख  
गुरजी को गुर्जस्थान के लशक  
रसमेत बान के ऊपर कबजा क  
रने को नेजा लेकिन रूस के सुल्तान

को بیجی اور تینوں جگہ قبریں  
میں لیکن شاہ عباس کی لاش  
سندوق میں تھی جس کا حال  
سیکو معلوم تھا  
شاہ عباس کا بڑا بیٹا تو شاہ  
نقی میرزا جسکو شاہ نے سلخ محرم  
۲۲ کو اپنے غلام کے ہاتھ  
سے مروا ڈالا تھا اور باقی دو بیٹوں  
اندھا کر دیا تھا صنی مرزا کا بیٹا -  
میرزا شاہ کے خوف سے زنجان  
میں رہ کر تھا وزیروں نے  
بعد شاہ عباس کے  
وہی کو بادشاہی الٹانی  
۳۰ سنہ میں صفہان کے تخت  
پر بیٹھا کر شاہ صنی نام

شاہ صنی نے سنہ ۱۰۰۰ میں ماکم  
وان کی شہر ایک سے رستم خان  
کرچی کو مدد لشکر کر جستان کے  
کے اوپر قبضہ کر کے واسطے

मुरादरवाने ४००००० सवदोंसे वहां  
पहुंचकर ईरानके लश्करको न  
गादिया फिर ऐरवां तबरेज और  
वगदादके फतह करनेको हुंम  
से रवाने होकर ऐरवां फतह कर  
लिया ये वे मुल्क थे कि जिनके  
शाहअब्बासने रूमियोंसे फतह  
कर लिया था मगर उसी अरसे  
में फरगियोंके अस्तबोलपर ह  
मला करनेकी खबर मशहूर हु  
ई इसलिये मुरादरवां तो रूमको  
लौट गया और शाहसफीदितव  
रेजेमें पहुंचकर ३ महीनेकी लड़ा  
ई और घेरेको पीछे जिसमें २०००  
कजलवाशामरे गये थे ऐरवां  
रूमियोंसे छीन लिया फिर गुर्दे  
स्थानके ईरानीहाकिम रवान  
अहमदने सुलतान मुरादरवां  
समिला कर ली जिसके हुक्म  
रे मोसिल काहा कि म कोचक  
और मह गुर्दे स्थानपर आया लेकिन

सुलतान मुरादखान रुमी ने मुराद  
जालीस शिराज और वरान के प्रमुख  
लश्कर ईरान को भेजा और बादशाह  
तैय्यार और वगदाद फतह करनेके  
रवाने होकर ईरान फतह कर लिया  
ये वे मुल्क थे कि जिनको शाह  
अब्बास ने रूमियों से फतह  
कर लिया था लेकिन उसी अरसे  
में फरगियोंके अस्तबोलके  
फतहकी खबर मशहूर होئی इसलिये  
मुरादखान वापस रूमको चला गया  
शहसफीद ने तैय्यार में  
पहुंचकर बादशाहसमक्ष  
में २० महीने के  
फतहकी खबर मशहूर  
होئی रूमियों से  
लश्कर ईरान की  
طرف से जहाँ  
सुलतान मुरादखान  
फतह करनेके  
रवाने होकर ईरान  
फतह कर लिया



شاہجہاں کے غلام سپاہ

شاہ عباس متوفی کے غلام سپاہ

شاہ صفی کے حکم سے وہاں پہنچے

شاہ صفی کے حکم سے وہاں پہنچے

چک احمد و دیگر سرداران روم کو

چک احمد و دیگر سرداران روم کو

سارداروں کے

سارداروں کے

لانا اور خان احمد کو نکال

لانا اور خان احمد کو نکال

دستان میں دوسرا

دستان میں دوسرا

کم مقہر کیا

کم مقہر کیا

۱۱ رجب ۱۰۲۸ کو سلطان

۱۱ رجب ۱۰۲۸ کو سلطان

مرادخان والی روم نے حملہ

مرادخان والی روم نے حملہ

کر کے بغداد کو فتح کیا شاہ ایران نے

کر کے بغداد کو فتح کیا شاہ ایران نے

علاقہ ورتکا و سکودیکر صلح کر لی

علاقہ ورتکا و سکودیکر صلح کر لی

بعد اس صلح کے شاہ صفی نے

بعد اس صلح کے شاہ صفی نے

قندھار واپس لینے کا ارادہ کیا اور

قندھار واپس لینے کا ارادہ کیا اور

اوسکا سارا سامان دو برس میں

اوسکا سارا سامان دو برس میں

تیار کر کے ۱۰۲۸ میں کوچ کیا

تیار کر کے ۱۰۲۸ میں کوچ کیا

مگر کاشان میں آکر ۱۲ صفر کو فوت

مگر کاشان میں آکر ۱۲ صفر کو فوت

ہو گیا اور اوس کے امیرون

ہو گیا اور اوس کے امیرون

نے قزوین میں جا کر اوس

نے قزوین میں جا کر اوس

بیٹے محمد مرزا کو بختاب شاہ عباس

بیٹے محمد مرزا کو بختاب شاہ عباس

نامی تخت سلطانی پر بیٹھا اور

نامی تخت سلطانی پر بیٹھا اور

خوج کشی کر کے قندھار کا قلعہ

خوج کشی کر کے قندھار کا قلعہ

شاہ جهان کے امیرون سے

شاہ جهان کے امیرون سے

لیا۔

لیا۔

خاتمہ

خاتمہ

محمد علیہ کراچی میں میرزا حسن

محمد علیہ کراچی میں میرزا حسن

جہان نامہ کا ختم ہوا ہم نے

جہان نامہ کا ختم ہوا ہم نے



# فہرست کتب مصنفہ شیخی بریشتاد صاحب

## دیگر کتب

|                        |   |                                  |   |                                    |
|------------------------|---|----------------------------------|---|------------------------------------|
| یہ کتابیں مطبع رضویہ   | ۵ | نامہ                             | ۱ | مادہ خرد و فروز یعنی قصہ           |
| دہلی سے ملتی           | ۵ | ستاد علم اخلاق ہوشیہ             | ۲ | م و بہر دوز                        |
| ناول طلسم فطرت         | ۵ | رسالہ چہل جواب تاریخی            | ۵ | ہم النساء جو توں کے پھنکی کی کتاب  |
| دہلی کی میا ختہ زبان   | ۵ | ریخ سر وہی مکمل                  | ۴ | نیا میواڑ قدیم زمانہ سے            |
| شہرت نے لکھا ہے آ      | ۵ | سوانح عمری راجہ کرن معاصر        | ۵ | نامہ نو آئین یعنی تقویم مولودین    |
| و بحسب قصہ ولطف انگ    | ۵ | علاؤ الدین خلجی                  | ۳ | لیف ہندی - اسم با سہمی             |
| مرزا سخوڑہ نول خزانہ   | ۳ | لطائف النظر                      | ۴ | سرخ عمری نوشیروان بادشاہ           |
| ہنسی کے مارے بیٹھا     | ۵ | سوانح عمری اکبر بادشاہ           | ۵ | سرخ عمری شاہ جہاں بادشاہ           |
| ہے قیمت ۵              | ۱ | سوانح عمری بابر بادشاہ           | ۲ | سرخ عمری جہانگیر بادشاہ            |
| ناول نو جہاں جہانگیر   | ۲ | سوانح عمری شہر شاہ بادشاہ        | ۱ | نئے نئے جہاں پیرانی                |
| ناول شہنشاہ جہانگیر نو | ۲ | سوانح عمری ہرمل مصفا اکبر بادشاہ | ۴ | سرخ عمری رانا ساگ                  |
| حالات دین لکھا گیا ہے  | ۳ | سوانح عمری تاترن سہی جہاںگیر     | ۴ | سرخ عمری رانا دوسے سنگ             |
| ہو چکی ہے اور دوسری    | ۴ | سوانح عمری رانا پرتاب سنگ        | ۴ | سرخ عمری رانا بیکہ جی بانی بیکانیر |
| ظریف اخبار چلتا پڑا    | ۲ | سوانح عمری راولوں کرن            | ۳ | سرخ عمری راجپوت سی جی              |
| ستہ سے چپتی ہے         | ۲ | سوانح عمری راولکھیاں تل جی       | ۲ | سرخ عمری راجہ پتھی اج دپول         |
| طلسم پوش افزا - عجیب   | ۲ | سوانح عمری راجہ بان سنگھ میاں    | ۲ | من بہشت اس راجگان ہے پڑا           |
| دستان قصہ میر عمرہ کے  | ۲ | سوانح عمری راولا دیوبند والی     | ۴ | نئی نو پاشانیان                    |
| کی گئی ہے جس کا خواہ   | ۲ | سوانح عمری                       | ۴ | من عدالت حکایات انصاف              |
| رکھتی ہے               | ۵ | تذکرہ شعرا نے بنود               | ۴ | من خواجہ غلامی حکما و ملت          |
| ۱۱                     | ۲ | تفریح الطلاب                     | ۵ | نئی نو پاشانیان                    |
|                        | ۵ | جواہر التعلیم                    | ۵ | من خواجہ غلامی حکما و ملت          |

# مجموعۃ التفتا ویر

## مرقعۃ المشاہیر

جین مشہور اور معروف شخصوں کی تصویریں مع سوانح عمری کے شتہ  
کیجاتی ہیں یہاں ہوا دار السر و شہر جو دیو سے شائع ہوتا ہے

پراسید چیرا ولی

نیرم

نجا دیر ویا ت مہا تپو ریاں کے چین و آتیا و تپا رین  
پر کا شیت کینے نجانے ہیں اور جی مہی نے کے مہی نے راج سیا  
ن جو دھ پور سے پراگت ہوتا ہے ॥

نیر قیمت سالانہ مع موصو لاک  
وار سیک گول ڈاک ویا یس  
ہیت

(۱) گورنٹ انگریزی لیاں ملک  
۱ اگریزی سارکار و راجوں مہا  
راجوں سے ..... ۳۱۵

(۲) حکام مسیحی اور امیر وں  
۲ ہاکل میں اور رڈ سوں اور  
امیروں سے ..... ۳۱۵

(۳) عام شائقین سے  
۳ سار ویا سار ویا ریک جنوں سے  
۴ طالب علموں سے ..... ۳

نیرت اندراج نمبر ہا  
۴ ویا ریک جنوں سے ..... ۳  
دس نام سوار کی سوا  
باکی سوانہ و مر و ت ر ویا

نیر گوں سے

